इस पञ्चांग में प्रयुक्त ज्ञातव्य सांकेतिक-शब्द

...ध्नी, अनुराधा (नक्षत्र)।
...(योग), अग्नि (बाण)।
अं.—अंग्रेजी (तारीख—मास), अंश।
आव.—आवश्यकता में।
उ.—उपरान्त, उदित, उत्तर।
उ.गो—उत्तर गोल।
क.—करण, कर्क, कला।
कृ.—कृष्णपक्ष, कृत्तिका (नक्षत्र)।
क्रा.सा—क्रान्तिसाम्य (महापात)।
गोध.—गोधूली (लग्न)।
घ.—घड़ी।
घं.—घण्टा
चौ.—चौर (बाण)।
ति.—तिथि।
द.—दक्षिण।
गो—दक्षिण गोल।
...न।
दि.ल.—दिन ...
न.—नक्षत्र।
नि.—निम्बार्कों के लिए।
नै.—नैऋत्य।
नृ.—नृप (बाण)।

भा.—भाद्रपद।
मा.—मार्गी।
मि.—मिनट, मिथुन।
मृ.—मृगशिरा, मृत्यु (बाण)।
या.—यावत् (= तक)।
रा.—रात्रि, राशि।
रो.—रोग (बाण), रोहिणी।
ल.—लग्न।
व.—वक्री, वक्रगति से, वणिक, वज्र
वरीयान (योग)
वा.—वार
वि.—विकला, विष्टि (करण), विष्कम्भ,
विशाखा।
वि.म.—विवाहमहूर्त।
वैं.—वैष्णवों के लिए, वैधृति (योग),
वैशाख।
व्र.स.—व्रत सबके लिए।
शु.—शुक्लपक्ष, शुक्रवार, शुक्र (ग्रह)
शुभ, शुक्ल (योग)।
श.—भारत सरकार द्वारा संचालित
तारीख-मास, शक संवत्।
स.—समाप्त।
सं.—संक्रान्ति, संवत्।
सां.का.—साम्पातिक काल।
सा.—सायन।
...ओं के लिए।

...तिक शब्दों को अनेक अर्थों में प्रयुक्त किया गया है उनका विशेष ... अर्थ प्रसंगवश जाना जा सकता है।

... पञ्चांग के लिए आवश्यक ...

(१) इस पञ्चांग का निर्माण ग्रीन्विच से पूर्व रेखांश ७६°।५२' अक्षांश ३०°।४४' के आधार पर किया गया है, अतः यहां जहां विशेष निर्देश न किया गया हो वहां 'सूर्योदय' से हमारा अभिप्राय इसी स्थल के सूर्योदय से रहता है।

(२) यहां सर्वत्र निरयणपद्धति को अपनाया गया है। जहां सायनगणना की गई है, वहां निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय अयनांश प्रामाणिक माने हैं। इस पञ्चांग में दिए गए अयनांश धूनन-संस्कार-संस्कृत (स्पष्ट) हैं।

(३) तिथि, नक्षत्र एवं करणों के सम्मुख दिए गए घटी-पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं।

(४) इस पञ्चांग में केवल सूर्योदय-व्यापी ही करण लिखे गए हैं, दूसरे नहीं।

(५) चन्द्रसञ्चार वाले कालम में राशियों के साथ दिए गए घड़ी-पल चन्द्रमा के राशिप्रवेश का काल बतलाते हैं।

(६) चन्द्र-संचार के आगे वाले कालमों में सूर्य के उदयास्त, जोकि भा.स्टैं.टा. में हैं, उपरोक्त स्थल के ही हैं। इनका सम्बन्ध सूर्यकेन्द्र से है। ये सूर्योदयास्तकाल किरण-वक्री-भवन संस्कार रहित हैं। प्रत्यक्ष देखने के लिए दो मिनट सूर्योदय में घटाएं एवं सूर्यास्त में जोड़ें।

(७) घड़ी-पलों वाले २४ पृष्ठों के लस्टर में पंचक-भद्रा की प्रारम्भ-समाप्ति ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग तथा राशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि के सभी काल भी घड़पलों में ही हैं। ये घड़ीपल उपरोक्त स्थल के सूर्योदय से बीता काल बतलाते हैं।

(८) पंक्तियों (अष्टमी, पूर्णिमा, अमावस्या) के स्पष्टग्रहों के नीचे दैनिक-गति, उसके नीचे मार्गी या वक्री, उसके नीचे उदित या अस्त, फिर चरणसहित नक्षत्र (जिसमें ग्रह है) उसका निर्देश किया गया है।

(९) पंक्तियों की सभी कुण्डलियां सूर्योदय-कालिक हैं।

(१०) पञ्चांग की गणित, आचार्यों एवं ऋषियों द्वारा अनुमोदित सूक्ष्म दृक्तुल्य पद्धति द्वारा की गई है।

(११) यहां दिए गए ग्रह एवं शर भूमध्य दृश्य हैं।

(१२) जिस घटीपलात्मक तिथि, योग, नक्षत्र के आगे (६०।०) लिखा है, उस तिथि योग नक्षत्र की वृद्धि समझें। घण्टामिनटात्मक तिथि, नक्षत्र योग के आगे (....) ऐसा चिन्ह योग की वृद्धि बतलाता है।

(१३) यहां दि... (I.S...) ८२°।३०' पूर्व रेखांश के स्थल का स्थानीयमध्यमकाल (L.M.T.) है।

(१४) ...के ... सारणियां चण्डीगढ़ के लिए हैं, ये सारणियां चित्रापक्षीय निरयणलग्नों का समाप्तिकाल (I.S.T.) बतलाती हैं।

(१५) पञ्चांग में क्षीणतिथि नक्षत्र, योग के समाप्तिक्षण ही दिए गए हैं, पूर्णभोग नहीं।

...मुद्रित।

संक्षिप्त-विषयसूची (सं. २०४० वि.)

[illegible]—इस पंचांग में घटीपलात्मक तिथ्यादि के बाद ८५ से ९१ पृष्ठ तक तिथि नक्षत्र आदि पंचांग घण्टा मिन्टों (भा. स्टै. टा.) में भी दिया है।

अनन्त श्री विभूषित श्री काञ्चीमठ कोटिपीठाधिपतिजगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी का शुभाशीर्वाद

(मुद्रा)

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीमच्छंकर भगवत्पाद-प्रतिष्ठित श्रीकाञ्चीकामकोटिपीठाधिपजगद्गुरु श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादादेशानुसारेण श्री-मज्जयेन्द्रसरस्वतीश्रीपादैः क्रियते नारायणस्मृतिः।

श्रीसदाशिवआप्टे-महोदयस्य शिष्यैः श्रीमुकुन्दवल्लभ-शर्मभिःप्रवर्तितम् "श्रीमार्तण्ड पञ्चांगम्" अधुना श्रीप्रियव्रतशर्म-श्रीशक्तिधरशर्म-श्रीमदिन्दुशेखर शास्त्रिभिः-तन्त्रद्वारा शुद्ध-स्फुट-गणित-रीत्या परि-शोध्य स्वीकृतया दृग्गणितपद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्-पञ्चांगम् धर्मशास्त्र-सम्मतैकमात्र-दृग्गणित-पद्धत्य-नुसारिव्रतपर्वादि-धार्मिककृत्यानुष्ठाने धार्मिकैः प्रयोज्यम्-इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादकः डा. शक्तिधरशर्मा ज्योतिष-गणितादि विषयेषु महत्प्रागल्भ्यं भजते, इति, अस्माभिः सः सप्रसादं 'दृक्सिद्धान्तभास्करः' इति विरुदेन पूर्वमेव सभाजितः अधुना श्रीमार्तण्डपञ्चांगमेतत् स्वर्णजयन्तीमहोत्सवमनुभवत् अशेषास्तिकलोकोपकारकं सत् श्री चन्द्रमौलीशकृपया प्रचुरं प्रचारं प्राप्नुया-दित्याशास्महे।

काञ्चीक्षेत्रम् — नारायणस्मृतिः
अनल चैत्रामावस्या (सन् १९७६ ई.)

इस वर्ष के नए विषय

ई० सन् १९८२ के दशहरा दीवाली की विवादास्पद तिथियों के विषय में [illegible]

भारत के दोनों संस्कृत विश्वविद्यालयों के ज्योतिष-विभाग एवं पंचांग विभाग के मूर्धन्य ज्योतिषाचार्यों द्वारा २७ सितम्बर को दशहरा तथा १६ अक्तूबर को दीपावली का समर्थन—

हमारे प्रतिपक्षियों द्वारा, जिनमें काशी के भी अनेक विद्वान् हैं, ऐसा भ्रामक प्रचार किया गया है कि प्रियव्रत शर्मा एवं शक्तिधर शर्मा ने ही सं २०३९ में सितम्बर और अक्तूबर में दशहरा दीपावली घोषित करके भारत में मतभेद उत्पन्न किया है। इस तरह का भ्रामक प्रचार हमें समाचार-पत्रों एवं पैम्फलेट्स में भी पढ़ने को मिला। हमने प्रकाशनों द्वारा इस प्रकार के मिथ्या प्रचार का प्रतिवाद भी किया है। हम इस विषय में अपने पंचांग के पाठकों को भी कुछ तथ्य ज्ञात करवा देना चाहते हैं।

वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय काशी एवम् कामेश्वरसिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा (बिहार)—केवल ये दोनों ही संस्कृत विश्वविद्यालय भारत या विश्व में हैं। इन विश्वविद्यालयों में भारतीय ज्योतिष–शास्त्र की उच्चतम शिक्षा दी जाती है। ज्योतिषाचार्य आदि स्नातकोत्तर उपलब्धियां इन विश्वविद्यालयों द्वारा दी जाती हैं। यह ध्यान देने योग्य बात है कि इन दोनों विश्वविद्यालयों के क्रमशः पंचांग-विभाग एवं ज्योतिष-विभाग के सभी शीर्षस्थ–ज्योतिषाचार्यों ने एकस्वर से सन् १९८२ में दशहरा और दीपावली की तिथियां २७ सितम्बर और १६ अक्तूबर ही प्रामाणिक मानी हैं और इन विश्वविद्यालयों द्वारा प्रकाशित किए गए सं० २०३९ के पंचांगों में ये पर्व इन्हीं तिथियों को लिखे गए हैं। यहां पर यह बतला देना भी आवश्यक है कि इन विश्वविद्यालयों के ये दोनों पंचांग जगद्गुरु श्री शंकराचार्य पुरी जी की उस घोषणा के लगभग ४-५ मास बाद प्रकाशित हुए हैं, जिसमें जगद्गुरु जी ने दशहरा दीपावली की अक्तूबर, नवम्बर की तारीखों को ही शास्त्रीय घोषित किया था। इन विश्वविद्यालयों के पंचांगविभाग के सभी विशेषज्ञ विद्वानों ने जगद्गुरु श्री शंकराचार्य पुरी की इस घोषणा को अशास्त्रीय कह कर अस्वीकार कर दिया। कामेश्वरसिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा के ज्योतिष विभाग के सभी विद्वान् ज्योतिषशास्त्रियों ने श्री [illegible] पुरी की इस घोषणा के बाद दरभंगा में एक ज्योतिर्वित्सम्मेलन भी [illegible]योजित किया, जिसमे जगद्गुरु श्री शंकराचार्यपुरी जी की इस घोषणा को अप्रामाणिक बतलाया।

इसके अतिरिक्त जयपुर (राजस्थान) का महाराजा संस्कृत कालेज भी उत्तर भारत का एक लब्धकीर्ति संस्कृत-शिक्षण-संस्थान है, जो ज्योतिषशास्त्र की उच्चतम शिक्षा के क्षेत्र में बनारस का प्रतियोगी है। जयपुर की विश्वप्रसिद्ध महाराजा जयसिंह द्वारा निर्मित वेधशाला भी इसी संस्थान से सम्बन्द्ध है। इस प्रतिष्ठित संस्थान के ज्योतिष विभाग के प्रो० रामपाल ज्योतिषाचार्य प्रो० कृष्णगोपाल ज्योतिषचार्य आदि [illegible] के लब्धप्रतिष्ठ सभी प्राध्यापकों ने भी २७ सितम्बर को विजयादशमी [illegible] को दीपावली का ही एक स्वर से समर्थन किया है। अक्तूबर-नवम्बर में दशहरा-दीपावली बतलाने वाले शंकराचार्य आदि कुछ धर्माचार्यों एव काशी के अनेक विद्वानों को इन नक्षत्र-वेत्ताओं ने शास्त्रोल्लंघन का दोषी ठहराया है। जुलाई १९८२ ई० में जयपुर में आयोजित एक विशाल ज्योतिर्वित्सभा में महाराज संस्कृत कालेज के इन सभी विद्वानों ने ज्योतिषशास्त्र से अनभिज्ञ अनेक धर्माचार्यों द्वारा इस दशहरा-दीपावली के विवाद में अनधिकृत हस्तक्षेप की निन्दा की और धार्मिक जनता से अनुरोध किया कि वह आश्विन को मलमास न मानते हुए २७ सितम्बर को विजया-दशमी तथा तदनन्तरवर्ती कार्तिक में १६ अक्तूबर को दीपावली मनाएं। बनारस के कुछ मीमांसकों द्वारा आश्विन को मलमास सिद्ध करने के प्रयास को इन सिद्धान्त मर्मज्ञ-ज्यतिषोचार्यों ने अधिमासोपपत्ति के सर्वथा प्रतिकूल एवं अशास्त्रीय घोषित किया।

इसके अतिरिक्त केरल, बिहार, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, बंगाल, राजस्थान एवं तामिलनाडू प्रदेशों के लगभग ९५ प्रतिशत पंचांगकारों ने भी आश्विन मास को अधिमास न मान कर दशहरा दीपावली की उपरोक्त तिथियों का ही समर्थन किया। शेष म. प्र., उ. प्र. आन्ध्र प्रदेश आदि प्रदेशों के सुप्रसिद्ध निर्णयसागर पंचाग, श्रीधरी पंचांग, वल्लभ मनीराम पंचाग, शताब्दी-पंचांग आदि अनेक पंचागों के विद्वान् सम्पादकों ने भी इन्हीं तिथियों को प्रामाणिक घोषित किया। इस प्रकार भारत के विभिन्न प्रान्तों से प्रकाशित होने वाले २०० से भी अधिक विख्यात-पंचागों ने आश्विन को मलमास न मानते हुए इन्हीं तिथियों को मान्यता दी।

भारत सरकार की सर्वोच्च ज्योतिष संस्था P.A.C. [Positional Astronomy Centre (खगोल स्थिति केन्द्र) Calcutta] द्वारा संस्कृत, English, हिन्दी, उर्दू एवं अन्य १० प्रान्तीय भाषाओं में प्रकाशित किए जाने वाले 'राष्ट्रीय पंचांगों' में भी इन्हीं (२७ सितं., १६ अक्तू.) तिथियों को ही प्रामाणिकता दी गई, क्योंकि P.A.C. को व्रतपर्वों का निर्णय करने वाली ज्योतिष एवं धर्मशास्त्र के विशेषज्ञ विद्वानों की समिति ने गम्भीर विचार विमर्श के अनुसार इन्हीं तिथियों को भारी बहुमत से प्रामाणिक ठहराया था। इस व्रतपर्व निर्णायक समिति में भारत के लगभग सभी प्रान्तों के ५० विशेषज्ञ विद्वान् सदस्य हैं। इन सदस्यों में से केवल एक ही सदस्य ने इन तिथियों का विरोध किया था। शेष सभी सदस्यों ने इन तिथियों को ही मान्यता देने के लिए P.A.C. से अनुरोध किया और तदनुसार ही P.A.C. ने १४ भाषाओं में प्रकाशित होने वाले भारत सरकार के अपने 'राष्ट्रीय-पंचांगों' में २७ सितं. को दशहरा और १६ अक्तू. को दीपावली लगाई।

ज्योतिषशास्त्र की उपरोक्त मूर्धन्य चार प्रतिष्ठित एवं आधिकारिक संस्थाओं

के विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा किए गए शास्त्रीय-निर्णय के प्रतिकूल भारत सरकार ने दशहरा-दीवाली के अवकाश परिवर्तित करके ज्योतिष शास्त्र के साथ वस्तुतः अन्याय किया है।

यह बात भी ध्यान देने योग्य है, कि दशहरा दीपावली के अवकाशों को, जोकि पहले P.A.C. के निर्णय के अनुसार ही भारत सरकार तथा सभी प्रान्तीय सरकारों के कैलेण्डरों में प्रकाशित थे, बदलने के लिए तीन बार लोकसभा में ध्यानाकर्षण प्रस्ताव रखा गया जोकि गृहमन्त्री द्वारा तीनों बार इस आधार पर अस्वीकृत कर दिया गया कि भारत सरकार की अपनी ही P.A.C. जैसी सर्वोच्च ज्योतिष संस्था के विशेषज्ञों द्वारा ये तिथियां निश्चित की गई थीं। अन्ततः चौथी बार प्रभावशाली कुछ धर्माचार्यों के आग्रह एवं प्रभाव के कारण मन्त्रिमण्डल ने P.A.C. के निर्णय को ठुकरा कर इन पर्वों के अवकाश की तिथियां बदल डालीं। ज्योतिष-शास्त्र को भारत की उन्नतम आधिकारिक इन उपरोक्त चार संस्थाओं के ज्योतिषशास्त्र के अग्रणी महाविद्वानों को ज्योतिष के ही विषय में अनादृत करके कुछ धर्माचार्यों को मान्यता देना भारत सरकार के लिए कहां तक उचित था, यह तो वही जाने।

भारत सरकार द्वारा दशहरा-दीपावली के अवकाश यद्यपि शास्त्र-विरुद्ध तिथियों (२७ अक्टू. १४ नव.) को घोषित किए जा चुके हैं फिर भी राजस्थान, बिहार, बंगाल, केरल, तमिलनाडु, जम्मू-काश्मीर, हि. प्र., पंजाब, हरियाणा में ९० प्रतिशत जनता इन [illegible] रामलीलोत्सव मना रही है। हमें विश्वास है दीपावली का पर्व भी यह [illegible] निर्णय को ही मनाएगी।

[illegible] श्री शंकराचार्य, अणुव्रत के जैनमुनि [illegible] (रामकृष्ण मिशन), पुष्पगिरि (आन्ध्र प्रदेश) [illegible] (पंजाब) पट्टी श्यामपुर (पंजाब) आदि पीठों के सैकड़ों धर्माचार्यों, एवं अखिल भारतीय ज्योतिर्वित् संसद गुरुवायूर (केरल), अखिल भारतीय ज्योतिर्विद एवं पंचांगकर्त्ता सम्मेलन दिल्ली, विद्वत्परिषद् बीकानेर, ज्योतिर्वित्परिषद् जयपुर, मारवाड़ी ज्योतिष-परिषद् जोधपुर, मिथिला पण्डितसभा दरभंगा (बिहार), सनातन धर्म महासभा दिल्ली तथा विद्वत्परिषद् जगाधरी (हरियाणा) आदि विद्वत्-संस्थाओं ने भारतीय सरकार द्वारा किए गए दशहरा-दीवाली के अवकाशों में परिवर्तन को अप्रामाणिक ठहराया है।

अन्त में एक और तथ्य हम यहां प्रकाशित कर देना आवश्यक समझते हैं—

सनातनधर्म प्रतिनिधिसभा पंजाब के मान्य महामन्त्री जी ने हि. प्र., पंजाब, हरियाणा की सभी धार्मिक संस्थाओं को प्रकाशित विज्ञापन द्वारा सूचित किया कि वि. सं. २०३९ वि. में आश्विन संसर्प मलमास है उसमें नवरात्र, दशहरा आदि व्रत-पर्व नहीं करने चाहिएं। आश्चर्य की बात है—बीसवर्ष पहले वि. सं. २०२० में जब इसवर्ष (सं. २०३९) की ही भांति बनारस के पंचांगों में क्षयमास आया था, तब भी आश्विन संसर्प था। उसवर्ष सनातनधर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के इन्हीं विद्वान् महामन्त्री महोदय ने आश्विन संसर्प को मलमास मानने वाले काशी के विद्वानों की भर्त्सना की थी उन्हें इन्होंने गलत बतलाया था। इन्होंने तब एतद्विषयक चार पृष्ठ का पैम्फलैट सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा की ओर से मुद्रित करवाकर साधारण जनता एवं पंचांगकारों में प्रसारित किया था। इस पैम्फलैट में इन्होंने आश्विन संसर्प को मलमास न मानकर उसी में नवरात्र और विजयादशमी मनाने के लिए धार्मिक जनता से अपील की थी। २० वर्ष पुराना उनका यह मुद्रित पैम्फलैट उनके द्वारा प्रसारित समाचार कटिंग हमारे पास आज भी सुरक्षित है। दुःख की बात है—विद्वान् लोग भी अपने सिद्धान्त को बदलते हुए सकुचाते नहीं हैं।

शक्तिधर शर्मा

२०—९—८२

[illegible] जिसमें सनवर्ष सं. २०३९ में २७ सित. को दशहरा एवं १५ अक्तूबर को दीपावली की शास्त्रीयता सिद्ध होती है। यह पंचांग कोणारम [illegible] इस पंचांग में अमान्तमान में ही दशहरा [illegible] आश्विन शु. [illegible] तथा कार्ति. शु. पक्षों के चित्र नीचे हैं। [illegible]

सं० २०३९ में दशहरा-दीपावली विवाद—

मासयुगलीकरण एक गणितीय-विसंगति है

गतवर्ष सं. २०३९ में अक्तूबर में दशहरा एवं नवम्बर में दीपावली लिखने वाले पंचांगकारों ने दो मलमास (आश्विन एवं फाल्गुन) लगाकर पौष तथा माघ मासों का युगलीकरण कर दिया। ध्यान रहे;—आश्विन संसर्प को मलमास मानना धर्मशास्त्र के **विरुद्ध है।** नीचे आयत-चित्रों (Block diagrams) से नामों का संस्थान दिखाया गया है, जिससे मासयुगलीकरण की बकालत करने वाले पण्डितों को इसपक्ष की अशास्त्रीयता का पता चल सकेगा। (इस बारे में गंभीर अध्ययन के लिए तो हमारी पुस्तक 'क्षयाधि-मास विमर्श' पढ़ें)। यहां शुक्लादिमास ही आयतों से द्योतित किए हैं। आश्चर्य है कि अनन्तश्री जगद्गुरु शंकराचार्य पुरी जी की ओर से प्रसारित कुछ पम्फलेटों में 'श्रीमार्त्तण्ड पंचाङ्ग' पर आक्षेप करते हुए अपना मत लिखा है, कि-"पौषमास का लोप है अतः 'पौष शुक्ल के पर्व मार्ग-शुक्ल में मनाएं तथा माघ कृष्ण के पर्व फाल्गुन कृष्ण में मनाएं"—यह बात कहां तक शास्त्रीय है? इस बात का स्पष्टीकरण हमारे निम्नांकित विवेचन से बालबोध शैली से हो जाता है।

मासयुगलीकरण की कैलेण्डर योजना वि. सं. २०३९ में निम्नलिखित प्रकार से रही है—

आश्विन (मलमास)	आश्विन निज	कार्तिक	मार्गशीर्ष	माघ	फाल्गुन (मल)	फाल्गुन निज

यहां पौष लुप्त है; इसके व्रतपर्व मनाने के लिए माघ को उभयात्मक (पौष-माघात्मक) मान लेने से पूर्णिमान्त पक्षानुसार शुक्लपक्ष कृष्णपक्ष की स्थिति निम्नलिखित होगी—

प्राकृत-क्रमानुसार

पौष शु.	माघ कृ.	माघ शु.	प्र. फाल्गुन कृ.

मासयुगलीकरण के अनुसार विकृतक्रम

पौष शु.	माघ कृ.	←— (लुप्तमास)
माघ शु.	प्र. फाल्गुन कृ.	←—(अधाक्रमास)

ऊपर के चित्रों से स्पष्ट है, कि—मासयुगलीकरण की व्यवस्था तो प्राकृतक्रम के प्रारम्भ के दो आयतों को (जोकि लुप्तमास के हैं) अग्रिम पक्षों के साथ जबर्दस्ती मिला देने से प्राप्त हुई है। यह स्पष्ट है, कि—यहां माघशुक्ल माघकृष्ण पक्ष से पहले आ गया है, अतः यदि कोई व्रतपर्व माघकृष्ण पक्ष में प्रारम्भ होकर माघशुक्ल में समाप्त होता है तो उस व्रत-पर्व की पारणा की तिथि पहले और प्रारम्भ की तिथि बाद में पड़ेगी। अर्थात् उनके पंचांगों के अनुसार यह व्रत-पर्व प्रारम्भ होने से पहले ही समाप्त हो जाएगा। ऊपर के आयतक्षेत्रों से यह भी स्पष्ट है, कि—यदि कोई व्रतपर्व पौषशुक्ल की किसी तिथि को प्रारम्भ होकर माघशुक्ल में समाप्त होता हो। तो उस व्रतपर्व के दिन १५ या इससे भी अधिक दिन कम पड़ जाएंगे। इसी प्रकार अन्यपक्षों के संचयों (Permutation Combination) में भी ऐसी स्थितियां बनेंगी। **इस प्रकार यह स्पष्ट है, कि—मासयुगलीकरण धर्मकृत्यों के लोप वा धर्मकृत्य-हानि का कारण बनता है। यह एक अक्षम्य अशास्त्रीय गणितीय विसंगति है।** इस मासयुगलीकरण-पद्धति का कोई भी समर्थक इसे सोपपत्तिक शास्त्रीय सिद्ध न कर सकेगा एवं धर्मशास्त्र विरुद्ध इस पक्ष को इसके समर्थक धर्माचार्य भी भविष्य में न बचा सकेंगे। यह व्यवस्था मासिक-व्रतपर्वों के लिए कभी भी गणितागत तर्कों एवं धर्मशास्त्र के आधार पर मान्यता नहीं प्राप्त कर सकेगी। **कुछ धर्माचार्यों द्वारा मासयुगलीकरण पक्ष का समर्थन धर्मशास्त्र के संविधान (संसर्पपक्ष) का उल्लंघन है।** इसवर्ष शासन ने तो धर्म की रक्षा करनी चाही थी, परन्तु कुछ धर्माचार्यों ने बिना विचारे ही धर्मशास्त्रों की अवहेलना करके अपना निर्णय घोषित कर दिया:—"वाह रे कलयुग तेरी महिमा"। एक मास बाद दशहरा दीपावली कहकर धर्मप्राण जनता में भारी भ्रान्ति फैला दी गई, जिससे हिन्दुधर्म का भारी उपहास हुआ है:—इसके लिये वे धर्माचार्य ही उत्तरदायी हैं, जिन्होंने धर्मशास्त्रीय संविधान का उल्लंघन करके दशहरा दीपावली को एकमास बाद घोषित किया।

राज्यसभा में ३१-३-८२ को एवं पुनः ११-८-८२ को लोकसभा में भी २९-७-८२ राज्यमन्त्री श्री वेंकटसुबैय्या एवं गृहमन्त्री श्री वेंकट रमन ने भारत के मूर्धन्य विद्वानों के मत पाकर सितं./अक्तूबर को दशहरा-दीपावली शास्त्र-शुद्ध घोषित करके तिथियों में परिवर्तन न करने की घोषणा की थी। लेकिन कुछ धर्माचार्यों के विरोध/राजनैतिक दबाव के कारण सितं./अक्तूबर के अवकाशों को दशहरा से कुछ दिन पूर्व ही ऐच्छिक घोषित करना पड़ा। इसके बावजूद भी भारत के हि.प्र., पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ़, जम्मू-काश्मीर, बंगाल, तमिलनाडु, राजस्थान आदि सभी प्रान्तों में गांवों नगरों में दशहरा २७ सितं. को ही मनाया जा चुका है, और दीपावली भी १६ अक्तूबर को ही मनाई जाएगी—यह संसर्पपक्ष की महान् विजय है।

— शतिधर शर्मा

सं० २०३९ वि० में आश्विनमास मलमास नहीं था

यद्यपि इस (सं० २०४० वि० के) पंचाग के प्रकाशित होने पर सं० २०३९ वि० का आश्विन मास लगभग आधा बीत चुकेगा, फिरभी सं० २०३९ वि० के दीपावली आदि अनेक व्रतपर्वों के विषय में अभी विवाद चल ही रहा होगा। इसलिए यहां सं० २०३९ वि० के संक्रान्तिहीन आश्विनमास के बारे में पाठकों को कुछ आवश्यक बातें बतला देना अनुचित नहीं होगा, क्योंकि सं० २०३९ में दशहरा, दीपावली आदि पर्वों की तिथियों के विषय में इस भारी मतभेद का मूलकारण यही संक्रान्तिहीन आश्विन मास है।

"जिस मास में संक्रान्ति नहीं होती, वह मास अधिकमास या मलमास होता है"—यह धारणा आम लोगों में बनी हुई है, क्योंकि प्रति तीसरे वर्ष वे पंचागों में संक्रान्तिरहित मास को अधिकमास (मलमास) के रूप में देखते हैं। यहां तक कि अनेक ऐसे ज्योतिषी एवं पंचांगकर्त्ता भी, जो अधिमास (मलमास) की उत्पत्ति के सिद्धान्त से अपरिचित हैं, इस बारे में ऐसी ही भ्रान्त धारणा के शिकार हैं। ऐसे ही भ्रान्त लोगों ने संवत् २०३९ वि० के दशहरा, दीपावली विवाद में आश्विनमास को केवल संक्रान्ति रहित देखकर ही अधिकमास या मलमास कह डाला और जिन सिद्धान्तवेत्ता विद्वान् पंचागकारों एवं अन्य ज्योतिर्विदों ने अधिमास के उत्पत्ति सिद्धान्तों को दृष्टि में रखकर आश्विन को अधिमास नहीं माना, उन्हें इन लोगों ने सहसा बिना विचारे ही ग़लत कह दिया।

सं० २०३९ वि० में आश्विन मास संक्रान्ति रहित होने पर भी अधिकमास (मलमास) क्यों नहीं है,—इसका विस्तृत शास्त्रीय-विवेचन हमने अपनी "क्षयाधिमास विमर्श" नामक पुस्तक में जो अभी प्रकाशित हुई है, किया है। उसे आप हमारे कार्यालय से प्राप्त करके पढ़ें, आपकी सभी शंकाएं पूरी तरह निवृत्त हो जाएगी।

अधिकमास की उत्पत्ति के सिद्धान्त के आधार पर सं० २०३९ वि० के आश्विन मास को मलमास क्यों नहीं माना गया—इसका स्पष्टीकरण काफी लम्बा विवेचन चाहता है, स्थानाभाव के कारण विस्तृत विवेचन करना यहां सम्भव नहीं। 'क्षयाधिमास विमर्श' पढ़कर विस्तृत विवेचन पाकर आप सन्तुष्ट हो सकेंगे। फिरभी हम यहां अत्यन्त सरल शैली में संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत करते हैं जिससे काफी कुछ स्पष्ट हो जाएगा कि सं० २०३९ वि० में आश्विनमास अधिकमास (मलमास या [illegible]) क्यों नहीं था :—

अधिमासोत्पत्तिसिद्धान्त के अनुसार ही अधिमासों का अन्तर कभी २८ मासों से कम नहीं हो सकता, यही कारण है, कोई भी अधिमास अपने पूर्ववर्ती अधिमास से तीसरे वर्ष में आया करता है।

जब कभी क्षयमास (दो संक्रान्तियों से युक्तमास) आता है तब एक ही वर्ष में ४-५ मासों के ही अन्तर पर दो संक्रान्तिहीन मास आ जाते हैं। इनमें से एक तो क्षयमास से पहले तीन मास के भीतर और दूसरा क्षयमास के बाद तीन मास के भीतर आया करता है। सर्व-साधारण व्यक्ति, यहां तक कि अनेक ज्योतिषी भी 'संक्रान्तिहीन मास अधिकमास होता है'—अधिक मास की इस परिभाषा के अनुसार इन दोनों संक्रान्तिहीन मासों को अधिकमास समझ बैठते हैं। ध्यान रहे—'संक्रान्ति-रहित मास अधिमास होता है'—अधिकमास की यह सामान्य परिभाषा है। धर्मशास्त्रकारों का कहना है कि क्षयमास से पहले और बाद में आने वाले संक्रान्ति-हीन मासों में से दूसरा संक्रान्तिहीन मास ही अधिकमास होता है, पहले संक्रान्तिहीन मास को, जिसे उन्होंने 'संसर्प' नाम दिया है, अधिकमास नहीं माना, उसे उन्होंने व्रतपर्वादि के लिए शुद्ध माना है।

जाबालि का वचन है—

एकस्मिन्नपि वर्षे चेद् द्वौ मासावधिमासकौ।
पूर्वो मासः प्रशस्तः स्यादुत्तरस्त्वधिमासकः ॥

[अर्थात्—यदि एक ही वर्ष के भीतर दो अधिकमास आ पड़ें तो उनमें से पहले को शुद्धमास और दूसरे को अधिमास समझना चाहिए।]

शातातप कहते हैं—

एकत्र मासद्वितयं यदि स्याद्वर्षेऽधिकं तत्र परोऽधिमासः।

[अर्थात्—यदि एक ही वर्ष में दो अधिमास आ जाए तो उनमें से दूसरा (परवर्ती) ही अधिमास है।]

इसी प्रकार निम्नांकित वाक्य भी स्पष्ट कह रहा है, कि यदि एक ही वर्ष के भीतर दो मासों में अधिमास का लक्षण (संक्रान्तिहीनता) दिखाई पड़े तो वहां दूसरे संक्रान्तिहीन मास को ही अधिमास मानना चाहिए—

'एकस्मिन्नपि वर्षे यद्येदं लक्ष्म दृश्यत उभयोः।
तत्रोत्तरोऽधिमासः ....॥

'स्मृतिमुक्ताफल'कार का वचन है—

'वर्षेऽप्येकस्मिन् यदि द्वौ मलमासौ पूर्वोऽसंक्रान्तोऽपि कर्मण्यः, परो मलमासः। ....असंक्रान्तत्वेन अधिकत्व-प्रसक्तियुक्तयोः मध्ये पूर्वस्य अधिमासत्वनिषेधात्।'

[अर्थात्—एक वर्ष में यदि दो मलमास आ पड़ें तो उनमें से पहिला संक्रान्तिहीन होते हुए भी कर्मार्ह (शुद्ध) है।......संक्रान्तिहीन होने के कारण यद्यपि इन दोनों में अधिमास का लक्षण लागू होता है लेकिन फिर भी इनमें से पहिले संक्रान्तिहीन मास को अधिमास नहीं माना जाता है।]

'जयसिंह कल्पद्रुम'कार भी यही कहते हैं—

'संसर्पोऽसंक्रान्तोऽपि न मलमासः किन्तु शुद्धतुल्यः, उत्तर एवासंक्रान्तः मलमासः।'

[अर्थात्—संसर्प मास (क्षयमास से पहले आने वाला संक्रान्तिहीन मास) [illegible] संक्रान्तिहीन होता है फिर भी मलमास (अधिकमास) नहीं माना जाता, केवल [illegible] बाद आने वाले संक्रान्तिहीन मास को ही मलमास माना गया है।]

प्रमुख प्रमुख व्रतपर्वों की सूची (१ जन० १९८३ ई० से १ अप्रैल १९८४ ई० तक)

व्रतपर्व	तारीख	व्रतपर्व	तारीख	व्रतपर्व	तारीख	व्रतपर्व	तारीख	व्रतपर्व	तारीख
सकट चतुर्थी	२ जन.८३	श्रीपरशुराम जय.	१४मई ८३	दूर्वाष्टमी	३१ अग.८३	दशहरा	१६अक्तू.	श्रीमहाकाल भैरवाष्टमी (कालाष्टमी)	[illegible]नवं.
लोहड़ी (पंजाब)	१३ ,,	अक्षय तृतीया	१५ ,,	गुग्गा नवमी	१सित.८३	भरत मिलाप	१७ ,,	स्कन्द षष्ठी	१०दिसं८३
मौनी अमावस	१४ ,,	श्रीगंगा जन्म	१८ ,,	गोकुलाष्टमी	१ ,,	शरत्पूर्णिमा	२१ ,,	चम्पा षष्ठी	१० ,,
अर्धकुम्भ प्रयाग	१४ ,,	श्री जानकी जयन्ती	२० ,,	कुशोत्पाटिनी अमावस	६ ,,	कार्तिक स्नान प्रा.	२१ ,,	मित्र सप्तमी	११ ,,
तिल चतुर्थी	१८ ,,	वैशाख स्ना. समाप्त	२६ ,,	पिठोरी अमावस	६ ,,	कोजागरी व्रत	२१ ,,	श्रीगीताजयन्ती	१६ ,,
वरद चतुर्थी	१८ ,,	भद्रकाली एकादशी	१७जून८३	नवतव्रत समाप्त	८ ,,	श्रीवाल्मीकि जयन्ती	२१ ,,	श्रीदत्त जयन्ती	१९ ,,
बसन्त (श्री) पंचमी	१६ ,,	वटसावित्री व्रत	११ ,,	साम उपाकर्म	९ ,,	करक चतुर्थी (करवा चौथ)	२५ ,,	लोहड़ी (पंजाब)	१३जन.१९८४
[illegible] सप्तमी पहल अरुणोदय में	२१ ,,	भावुका अमावस	११ ,,	हरितालिकाचतुर्थीव्र.	१० ,,	अहोईअष्टमी(पंजाब)	२९ ,,	माघस्नान प्रारंभ	१८ ,,
श्रीभीष्माष्टमी	२२ ,,	सूर्यग्रहण (केवल द. भारत में दृश्य)	११ ,,	कलंक चतुर्थी	१० ,,	गोवत्स द्वादशी	१नवं.८३	संकट चतुर्थी	२१ ,,
भारत गणतन्त्रदिवस	२६ ,,	रम्भा व्रत	१३ ,,	सिद्धि विनायक व्रत	१० ,,	धनत्रयोदशी	२ ,,	भारतगणतन्त्रदिवस	२६ ,,
माघस्नान समाप्त	२८ ,,	श्रीगंगादशहरा	२० ,,	ऋषिपंचमी व्रत	११सितं.८३	नरक चतुर्दशी	३ ,,	मौनी अमावस	१फर.८४
श्रीमहाशिवरात्रिव्र.	११फर.८३	निर्जला एकादशी	२१ ,,	सूर्यषष्ठी व्रत	१२ ,,	रूप चतुर्दशी	३ ,,	महोदय पर्व	१ ,,
मलमास प्रारम्भ	१३ ,,	श्री जगदीशरथोत्सव	१२जुला.८३	श्री राधाष्टमी	१४ ,,	श्रीहनुमान् जयन्ती	३ ,,	तिल चतुर्थी	५ ,,
मलमास समाप्त	१४मार्च८३	चातुर्मास्य व्रत प्रा.	२० ,,	श्रीमहालक्ष्मी व्र.प्रा.	१४ ,,	दीपावली	४ ,,	बसन्त पंचमी	७ ,,
सोमवती अमावस	१४ ,,	गुरु पूर्णिमा	२४ ,,	श्रीचन्द नवमी	१५ ,,	अन्नकूट	५ ,,	श्री पंचमी	७ ,,
होलाष्टक प्रा	२२ ,,	शिवशयनोत्सव	२४ ,,	वामन द्वादशी	१८ ,,	गोवर्धन पूजा	५ ,,	रथ सप्तमी	८ ,,
होलिकादहन	२८ ,,	हरयाली अमावस	८अग.८३	अनन्त चतुर्दशी	२१ ,,	बलि पूजा	५ ,,	श्री भीष्माष्टमी	१० ,,
होलाष्टक समाप्त	२८ ,,	नक्तव्रत प्रारम्भ	९ ,,	प्रोष्ठपदी पूर्णिमा	२१ ,,	यम द्वितीया(भाईदूज)	६ ,,	भीष्म द्वादशी	१४ ,,
धुलण्डी	२९ ,,	मधुश्रवा तृतीया	११ ,,	श्राद्ध प्रारम्भ	२३ ,,	विश्वकर्मा पूजा	६ ,,	माघस्नान समाप्त	१६ ,,
वैसाखी (पंजाब)	१४अप्रै.८३	सन्धारा तीज	११ ,,	श्रीमहालक्ष्मीव्र.समा.	२९ ,,	गोपाष्टमी	१३ ,,	श्रीमहाशिवरात्रि	२९ ,,
नवरात्र प्रा.	१४ ,,	वरद चौथ	१२ ,,	श्राद्ध समाप्त	६अक्तू.८३	अक्षय नवमी	१४ ,,	होलाष्टक प्रा.	११मार्च८४
गौरी तृतीया (गणगौर)	१६ ,,	भारत स्वतन्त्रतादिन	१५ ,,	गजच्छाया पर्व	६ ,,	कूष्माण्ड नवमी	१४ ,,	गोविन्द द्वादशी	१४ ,,
स्कन्द षष्ठी	१८ ,,	श्री दुर्गाष्टमी	१५ ,,	शारद नवरात्र प्रा.	७ ,,	भीष्मपंचक प्रारम्भ	१६ ,,	होलिका दहन	१६ ,,
श्रीदुर्गाष्टमी	२० ,,	रक्षाबन्धन	२३ ,,	उपाङ्ग ललिता व्रत	१० ,,	चातुर्मास्यव्रतसमाप्त	१६ ,,	होलाष्टक समाप्त	१७ ,,
श्रीरामनवमी	२१ ,,	यजु उपाकर्म	२३ ,,	सरस्वती आवाहन	१२ ,,	तुलसी विवाह	१७ ,,	होली	१७ ,,
अनङ्गत्रयोदशी	२५ ,,	बहुला चतुर्थी	२७ ,,	सरस्वती पूजन	१४ ,,	वैकुण्ठ चतुर्दशी	१८ ,,	वारुणी पर्व	२९ ,,
वैशाख स्नान प्रा.	[illegible]	श्रीचन्द्रषष्ठी व्रत	२९ ,,	श्रीदुर्गाष्टमी	१४ ,,	भीष्मपंचक समाप्त	२० ,,		
		श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	३१ ,,	महानवमी	१४ ,,	कार्तिकस्नानसमाप्त	२० ,,		
				सरस्वतीविसर्जन	१५ ,,				

वर्गीकृत व्रत-पर्वों की सूची (१ जन० १९८३ ई० से १ अप्रैल १९८४ ई० तक)

एकादशी व्रत

(सन् १९८३ ई०	
माघ कृ. (स.)	९ जन०
माघ शु. (स.)	२५ जन०
प्र. फाल्गु. कृ. (स.)	८ फर०
प्र. फाल्गु. शु. (स्मा.)	२३ फर०
द्वि. फाल्गु. कृ. (स.)	१० मार्च
द्वि. फाल्गु. शु. (स.)	२५ मार्च
चैत्र कृ. (स.)	९ अप्रैल
चैत्र शु. (स.)	२३ अप्रैल
वैशा. कृ. (स.)	८ मई
वैशा. शु. (स.)	२२ मई
ज्येष्ठ कृ. (स.)	७ जून
ज्येष्ठ शु. (स.)	२१ जून
आषाढ़ कृ. (स्मा.)	६ जुलाई
आषाढ़ शु. (स.)	२० जुलाई
श्रावण कृ. (स.)	५ अग०
श्रावण शु. (स.)	१९ अग०
भाद्रपद कृ. (स.)	३ सितं०
भाद्रपद शु. (स.)	१७ सितं०
आश्विन कृ. (स्मा.)	२ अक्तू०
आश्विन शु. (स.)	१७ अक्तू०
कार्तिक कृ. (स.)	१ नवं०
कार्तिक शु. (स.)	१६ नवं०
मार्ग. कृ. (स.)	३० नवं०
मार्ग. शु. (स.)	१६ दिसं०
पौष कृ. (स.)	[illegible] दिसं०
सन् १९८४ ई०	
पौष शु. (स.)	१४ जन०
माघ कृ. (स.)	२८ जन०
माघ शु. (स.)	१२ फर०
फाल्गु. कृ. (स.)	[illegible] फर०
फा. शु. (स्मा.)	१३ मार्च
चैत्र कृ. (स.)	२८ मार्च

स.—सब (स्मार्त व वैष्णवों) का एकादशीव्रत, स्मा—स्मार्तों का एकादशीव्रत। स्मार्तों के एकादशीव्रत के दूसरे दिन वैष्णवों का एकादशीव्रत समझना चाहिए।

प्रदोष व्रत

(सन् १९८३ ई०)	
माघ कृ. (भौ.)	११ जन०
माघ शु.	२६ जन०
प्र. फाल्गु. कृ.	१० फर०
प्र. फाल्गु. शु.	२५ फर०
द्वि. फाल्गु. कृ.	१० मार्च
द्वि. फाल्गु. शु. (श.)	२६ मार्च
चैत्र कृ.	१० अप्रैल
चैत्र शु.	२४ अप्रैल
वैशा. कृ. (भौ.)	१० मई
वैशा. शु. (भौ.)	२४ मई
ज्येष्ठ कृ.	८ जून
ज्येष्ठ शु.	२२ जून
आषाढ़ कृ.	८ जुलाई
आषाढ़ शु.	२२ जुलाई
श्रावण कृ. (श.)	६ अग०
श्रावण शु. (श.)	२० अग०
भाद्रपद कृ.	४ सितं०
भाद्रपद शु. (सो.)	१९ सितं०
आश्विन कृ. (भौ.)	४ अक्तू०
आश्विन शु.	१९ अक्तू०
कार्तिक कृ.	२ नवं०
कार्तिक शु.	१७ नवं०
मार्ग. कृ.	२ दिसं०
मार्ग. शु. (श.)	१७ दिसं०
पौष कृ. (श.)	३१ दिसं०
सन् १९८४ ई०	
पौष शु. (सो.)	[illegible] जन०
माघ कृ. (भौ.)	[illegible] जन०
माघ शु. (भौ.)	[illegible] फर०
फाल्गु. कृ. (भौ.)	[illegible] फर०
फाल्गु. शु.	१५ मार्च
चैत्र कृ.	२९ मार्च

श.—शनि प्रदोषव्रत। भौ.—भौम प्रदोषव्रत। सो.—सोम प्रदोषव्रत।

सत्यनारायण व्रत

सन् १९८३ ई०	
माघ	२८ जन०
प्र० फाल्गुन	२६ फर०
द्वि० फाल्गुन	२८ मार्च
चैत्र	२६ अप्रै०
वैशाख	२६ मई
ज्येष्ठ	२४ जून
आषाढ़	२४ जुलाई
श्रावण	२३ अग०
भाद्रपद	२१ सितं०
आश्विन	२१ अक्तू०
कार्तिक	२० नवं०
मार्गशीर्ष	१९ दिसं०
सन् १९८४ ई०	
पौष	१८ जन०
माघ	१६ फर०
फाल्गुन	१६ मार्च

संक्रान्तियां

सन् १९८३ ई०	
माघ	१४ जन०
फाल्गुन	१२ फर०
चैत्र	१४ मार्च
वैशाख	१४ अप्रै०
ज्येष्ठ	१५ मई
आषाढ़	१५ जून
श्रावण	१६ जुलाई
भाद्रपद	१७ अग०
आश्विन	१७ सितं०
कार्तिक	१७ अक्तू०
मार्गशीर्ष	१६ नवं०
पौष	१६ दिसं०
सन् १९८४ ई०	
माघ	[illegible] जन०
फाल्गुन	[illegible] फर०
चैत्र	[illegible] मार्च

श्रीगणेशचतुर्थी व्रत

(सन् १९८३ ई०)	
माघ	२ जन०
प्र० फाल्गुन	३१ जन०
द्वि० फाल्गुन	२ मार्च
चैत्र	३१ मार्च
वैशाख	३० अप्रै०
ज्येष्ठ	३० मई
आषाढ़	२९ जून
श्रावण	२८ जुलाई
भाद्रपद	२७ अग०
आश्विन	२५ सितं०
कार्तिक	१५ अक्तू०
मार्गशीर्ष	२३ नवं०
पौष	२३ दिसं०
सन् १९८४ ई०	
माघ	२१ जन०
फाल्गुन	१९ फर०
चैत्र	२० मार्च

अमावस्याएं

सन् १९८३ ई०	
माघ	१४ जन०
प्र० फाल्गु.(श०)	१२ फर०
द्वि०फाल्गु.(सो०)	१४ मार्च
चैत्र	१३ अप्रै०
वैशाख	१२ मई
ज्येष्ठ (श०)	११ जुन
आषाढ़	१० जुला०
श्रावण (सो०)	८ अग०
भाद्रपद	[illegible] सितं०
आश्विन	६ अक्तू०
कार्तिक	४ नवं०
मार्गशीर्ष	४ दिसं०
सन् १९८४ ई०	
पौष (भौ०)	३ जन०
माघ	१ फर०
फाल्गुन	२ मार्च
चैत्र	१ अप्रै०

दशावतार जयन्तियां

सन् १९८३ ई०	
श्री मत्स्य जयन्ती	१५ अप्रै०
श्री राम नवमी	२१ अप्रै०
श्री परशुराम जयन्ती	१४ मई
श्री नृसिंह जयन्ती	२५ मई
श्री बुद्ध जयन्ती	२६ मई
श्री कूर्म जयन्ती	२६ मई
श्री कल्कि जयन्ती	१३ अग०
श्री कृष्ण जन्माष्टमी	३१ अग०
श्री वराह जयन्ती	९ सितं०
श्री वामन जयन्ती	१८ सितं०

मुस्लिम त्यौहार

सन् १९८३ ई०	
जन्मदिन श्री हजरत अली	२७ अप्रै०
शब-ए-मिराज	११ मई
शब-ए-बरात	२९ मई
शहादत-ए-हजरत अली	३ जुला.
जमात-उल-विदा	८ जुला०
शब-ए-कदर	९ जुला०
इदुल फित्र	१२ जुला०
इदुज्जुहा	१८ सितं०
मुहर्रम	१७ अक्तू०
चेहलुम	२५ नवं०
आखिरी चहार शम्बा	३० नवं०
ईद-ए-मिलाद	१८ दिसं०

क्रिश्चियन त्यौहार

सन् १९८३ ई०	
पाम संडे	[illegible] मार्च
गुड फ्राइडे	१ अप्रैल
ईस्टर संडे	३ अप्रैल
क्रिसमस डे	२५ दिसं०

जैन पर्व

(सन् १९८३ ई०)	
मर्यादा महोत्सव	२१ जन०
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	२१ अप्रैल
श्री जैनमहावीर जयन्ती	२५
श्री महावीर केवल ज्ञान दिवस	२१ मई
श्री महावीर च्यवन	१५ जुला०
तेरापन्थ स्थापना दिवस	२४ जुला०
चातुर्मास्य प्रा०	२४ जुला०
श्री जयाचार्य निर्वाण	४ सितं०
पर्युषण पर्व प्रा: (चतुर्थी पक्ष)	४ सितं०
पर्युषण पर्व प्रा: (पंचमी पक्ष)	५ सितं०
संवत्सरी (चतुर्थी पक्ष)	११ सितं०
संवत्सरी (पंचमी पक्ष)	१२ सितं०
श्री कालू निर्वाण दिवस	१२ सितं०
आचार्य श्री तुलसी पट्टारोहण	१५ सितं०
आचार्य भिक्षु निर्वाण	१९ सितं०
श्री महावीर निर्वाण दिवस	४ नवं०
आचार्य श्री तुलसी जन्म	६ नवं०
चातुर्मास्य समाप्त	२० नवं
श्री महावीर दीक्षा दिवस	२१ नवं०
आचार्य श्री तुलसी दीक्षा दिवस	२४ दिसं०
सन् १९८४ ई०	
[illegible]	[illegible]
मर्यादा म[illegible]	[illegible]

भारत सरकार के अवकाश १ जन. १९८३ ई० से १ अप्रैल १९८४ ई. तक

अवकाश	तारीख	अवकाश	तारीख	अवकाश	तारीख
इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	१ जन. ८३	तिरु ओनम् दिवस	२२ अग.८३	इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	१जन. ८४
पोंगल	१४ ,,	रक्षा बन्धन	२३ अग.	जन्मदिन श्री गुरु गोविन्द सिंह जी	१० ,,
भारत गणतन्त्र दिवस	२६ ,,	श्री कृष्ण जन्माष्टमी	३१ ,,	पोंगल	१५ ,,
जन्मदिन श्री गुरु रवि दास जी	२८ ,,	इदुज्जुहा	१८ सित.	भारत गणतन्त्र दिवस	२६ ,,
श्री महाशिवरात्रि	११ फर.	जन्म दिन श्री म. गांधी	२ अक्तू.	जन्म दिन श्री गुरु रविदास जी	१६ फर.
गुड फ्राइडे	१ अप्रै.	श्री दुर्गाष्टमी	१४ ,,	श्री महाशिव रात्रि	२९ ,,
गुड़ी पड़वा	१४ ,,	महानवमी	१४ ,,		
वैशाखी	१४ ,,	विजया दशमी (दशहरा)	१६ ,,		
श्री रामनवमी	२१ ,,	मुहर्रम	१७ ,,		
श्री जैन महावीर जयन्ती	२५ ,,	महर्षि श्री वाल्मीकि जयन्ती	२१ ,,		
जन्म श्री हजरत अली	२७ ,,	दीपावली	४ नव.		
श्री बुद्ध जयन्ती	२६ मई	गोवर्धनपूजा	५ ,,		
जमत-उलविदा	८ जुलाई	श्री गुरु नानक जयन्ती	२० ,,		
इदुल फित्र	१९ ,,	शहीदी दिन श्री गुरुतेग बहादुर जी	९ दिसं.		
भारत स्वतन्त्रता दिवस	१५ अग.	ईद-ए-मिलाद	१८ ,,		
		क्रिस्मस	२५ ,,		

नोट—भारत सरकार के अवकाशों की लिस्ट को भारत-सरकार द्वारा प्रकाशित गजट से अवश्य मिला लें।

पंजाब, हरियाणा, हि० प्र०, जम्मू-काश्मीर आदि के मेले (१ जनवरी ८३ से १ अप्रैल १९८४ ई० तक)

मेला	तारीख	मेला	तारीख	मेला	तारीख
लोहड़ी (दाऊ) (पंजाब)	१३ जन.८३	शाड़ी जातर (नगर हि. प्र.)	१९से२४मई	दीपावली	४ नवं.
अर्धकुम्भ प्रयाग	१४ ,,	क्षीर भवानी (काश्मीर)	१८ जून८३	बाल मेला	१४ ,,
मुक्तसर (पंजाब)	१४ ,,	भून्तर (हि. प्र.)	१५से१७जून	बाबा रुद्रानन्द नारी (ऊना) (हि. प्र.)	१६ से २०
बसन्त पंचमी	१९ ,,	श्री गंगा दशहरा (हरिद्वार उ. प्र.)	२० ,,	रेणुका (हि. प्र.)	१६ नवं.
मस्तुआणां (पं.)	१ फर.	(नौमे गुरु) नमाणी एकादशी का मेला बरहे, (भटिंडा; पंजाब)	२१ ,,	जन्मोत्सव वीर बैरागी (नकोदर, पं.)	१८ ,,
श्री महाशिवरात्रि	११ ,,	श्री नयना देवी (हि. प्र.)	१५ अग.	राम तीर्थ-कपालमोचन (प०)	२० नवं.८३
मेला होला (आनन्दपुर साहिब) (पं.)	२९ मार्च	श्री चिन्त पूरणी (हि. प्र.)	१५ ,,	पुष्कर (राज.)	२० ,,
शीतला माता (कुराली (पं.)	३१ ,,	श्री अमर नाथ (काश्मीर)	२३ ,,	पुरमण्डल (देविका स्नान, जम्मू)	३ दिस.
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	२ अप्रैल	मागकपुर शरीफ (पं.)	२४से२६अग	जोड़मेला (पंजाब)	२६ से २८
बीरमदास बधौछी (पटियाला)	५ ,,	कैलाश यात्रा (काश्मीर)	५ से ६सितं	संगीतमेला बाबा हरवल्लभ (जालन्धर,	२८ ,,
मेला पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	१२ ,,	गोसांई आणां (कुराली)	८ ,,	लोहड़ी (दाऊ) (पंजाब)	१३ जन., ८४
मेला चीमा (नानकसर) (पं.)	१४ ,,	मेला पात (काश्मीर)	११से१३सितं	मुक्तसर (पंजाब)	१४ ,,
माईसर खाना (पं.)	१८ ,,	वामन द्वादशी (अम्बाला, पटियाला)	१८ ,,	मस्तुआणां (पंजाब)	१ फर.
श्री मनसा देवी (हर.)	२० ,,	मेला छपार (पं.)	२१ ,,	बसन्त पंचमी	७ ,,
मेला बाहु फोर्ट (जम्मू-काश्मीर)	२० ,,	गोइन्दवाल (पं.)	२२ ,,	श्रीमहा शिवरात्रि	२९ ,,
पीपलजातर (कुल्लू, हि. प्र.)	२९अप्रै.से१मई	ज्वालामुखी, तारा देवी (हि. प्र.)	१४ अक्तू.	होला मेला (आनन्दपुर साहिब)	१८ मार्च
पिंजौर (हरियाणा)	१२ मई	दशहरा (कुल्लू)	१६ ,,	बीरमदास बधौछी (पटियाला पं.)	२० ,,
ढूंगरीजातर (मनाली, हि. प्र.)	१५-१६मई	शाकम्भरी देवी (उ. प्र.)	२० ,,	श्री गुरु राम राय (देहरादून)	२१ ,,
बंजार (हि. प्र.)	१५से१९मई			श्री शीतला माता (कुराली प.)	२२ ,,
				मेला पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	३१ ,,

महापुरुषों के जन्मदिन (१ जन, ८३ से १ अप्रै., ८४ तक)

श्री स्वामी विवेकानन्द	५ जन, ८३	लो. मा. बाल गंगाधर तिलक	१ अग.८३
जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य	५ ,, ,,	गो. स्वा. श्री तुलसीदास	१५ अग. ,,
नेताजी सुभाष	२३ ,, ,,	श्री महात्मा गांधी	२ अक्तू. ८३
लाला लाजपत राय	२८ ,, ,,	श्री माधवाचार्य	१६ ,, ८३
श्री गुरु रविदास	२८ ,, ,,	श्री महर्षि बाल्मीकि	२१ ,, ,,
श्री रामकृष्ण परमहंस	१६ मार्च ,,	श्री जवाहर लाल नेहरु	१४ नवं. ,,
बाबा बीरमदास बघोछी (पं.)	५ अप्रै. ,,	वीर बन्दा वैरागी	१८ नवं. ,,
श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर	७ मई ,,	जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य	२० नवं. ,,
श्री वल्लभाचार्य	८ मई ,,	नेताजी सुभाष चन्द्र	२३ जन. ८४
छत्रपति शिवा जी	१४ मई ,,	श्री स्वामी विवेकानन्द	२४ जन. ,,
जगद्गुरु श्री शंकराचार्य	१७ मई ,,	ला. लाजपत राय	२८ जन. ,,
श्री रामानुजाचार्य	१८ मई ,,	श्री रामकृष्ण परमहंस	४ मार्च ८४
महाराणा प्रताप	१३ जून ,,		

सिक्खों के गुरु पर्व (१ जन, ८३ ई० से १ अप्रैल, ८४ ई० तक)

गुरुओं के अवतार दिन		गुरुओं के निर्वाण दिन	
श्री गुरु हरराय जी	२७ जन. ८८	श्री गुरु अंगद देव जी	१७ अप्रै. ८३
श्री गुरु तेग बहादुर जी	२ मई ,,	श्री गुरु हरगोविन्द जी	१८ ,,
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	४ मई ,,	श्री गुरु हर किशन जी	२५ ,,
श्री गुरु अंगददेव जी	१३ मई ,,	श्री गुरु अर्जुन देव जी	१४ जून ,,
श्री गुरु अमरदास जी	२५ मई ,,	श्री गुरु रामदास जी	९ सित. ,
श्री गुरु हरगोविन्द जी	२६ जून ,,	श्री गुरु अमरदास जी	२२ सित ,,
श्री गुरु हरकिशन जी	३ अगस्त ,,	श्री गुरु नानक देव जी	२ अक्तू. ,,
श्री गुरु रामदास जी	२३ अक्तू. ,,	श्री गुरु हरराय जी	३० अक्तू. ,,
श्री गुरु नानक देव जी	२० नवं. ,,	श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	९ नव. ,,
श्री गुरु गोविन्द सिंह जी	१० जन. ८४	श्री गुरु तेगबहादुर जी	९ दिसं. ,,
श्री गुरु हरराय जी	१५ फर. ८४		

मण्डमूल-नक्षत्रों का आरम्भ और समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) सं० २०४० वि.

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
तारीख (१९८३ ई०)	समय घं. मि.	तारीख (१९८३ ई०)	समय घं. मि.	तारीख (१९८३ ई०)	समय घं. मि.	तारीख (१९८३ ई०)	समय घं. मि.
१२ अप्रैल	१८।२४	१४ अप्रै.	१४।१९	२० जुलाई	२२।५५	२३ जुलाई	३।३५
२१ ,,	[illegible]	२३ ,,	४।२६	३० ,,	२३।१८	२ अगस्त	२।१४
३० ,,	[illegible]	२ मई	६।१६	८ अगस्त	१६।२२	१० ,,	१०।१८
९ मई	[illegible]	११ ,,	२३।२९	१७ ,,	४।४८	१९ ,,	९।२७
१८ ,,	[illegible]	२० ,,	१०।१७	२७ ,,	४।५५	२९ ,,	८।२५
२६ ,,	१०।२६	२९ ,,	[illegible]	५ सित.	२।५१	६ सित.	२।१६
६ जून	[illegible]	८ जून	[illegible]	१३ ,,	११।५४	१५ ,,	१५।५३
[illegible] ,,	[illegible]	१६ ,,	[illegible]	२३ ,,	१०।४५	२५ ,,	१३।५३
२३ ,,	[illegible]	२५ ,,	[illegible]	२ अक्तू.	[illegible]	४ अक्तू.	७।३
१ जुलाई	[illegible]	४ जुलाई	[illegible]	[illegible] ,,	[illegible]	१२ ,,	२३।३४
१२ ,,	[illegible]	१४ ,,	[illegible]	२० ,,	[illegible]	२२ ,,	२०।१८

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
तारीख (१९८३-८४)	समय घं. कि.	तारीख (१९८३८४)	समय घं. मि,	तारीख (१९८४ ई.)	समय घं. मि.	तारीख (१९८४ ई.)	समय घं. मि.
२९ अक्तू.	१७।५८	३१ अक्तू.	१४।४९	७ फर.	२।२०	९ फर.	७।१५
७ नवं.	६।१६	९ नवं.	८।२२	१६ ,,	३।५	१७ ,,	२०।५४
१७ ,,	२।१२	१९ नवं.	४।३४	२४ ,,	९।५३	२६ ,,	१२।५६
२५ ,,	२३।१५	२७ नवं.	२०।१९	५ मार्च	८।१९	७ मार्च	१३।२३
४ दिसं.	१५।१३	६ दिसं.	१७।१५	१४ ,,	१३।४६	१६ ,,	८।१५
१४ ,,	११।८	१६ दिसं.	१५।१८	२२ ,,	१७।३४	२४ ,,	१९।२६
२३ ,,	६।७	२५ ,,	२।४	१ अप्रै.	१४।२२		
३१ ,,	२२।२२	३ जन.,८४	११२				
१० जन.८४	१९।२४	१२ जन.	२३।२८				
१९ ,,	१५।४३	२१ ,,	१०।१३				
३० ,,	४।१	३० ,,	७।१७				

पञ्चक का आरम्भ और समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) (सं० २०४० वि०)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
तारीख (१९८३ ई०)	समय घं. मि.	तारीख (१९८३ ई०)	समय घं. मि.	तारीख (१९८३ ई०)	समय घं. मि.	तारीख (१९८३ ई०)	समय घं. मि.	तारीख (१९८३ ई०)	समय घं. मि.	तारीख (१९८३ ई०)	समय घं. मि.	तारीख (१९८३-८४)	समय घं. मि.	तारीख (१९८३-८४)	समय घं. मि.
६ अप्रैल	४।२४	१० अप्रैल	[illegible]	२७ जुलाई	[illegible]	१ अगस्त	[illegible]	१६ अक्तू.	२२।१९	२१ अक्तू.	१९।१६	६ जन.	२।१५	११ जन.	[illegible]
२ जून	१२।१९	७ जून	[illegible]	२३ अगस्त	[illegible]	२८ ,,	[illegible]	१३ नवं.	५।१४	१८ नव.	०।४०	३ फर.	४।४	८ फर.	[illegible]
२९ जून	१५।२०	४ जुलाई	[illegible]	१९ सित.	[illegible]	२४ सित.	[illegible]	१० दिसं.	१३।१२	१५ दिसं.	१२।५८	१ मार्च	१०।१९	६ मार्च	[illegible]

भारत सरकार के अवकाश १ जन. १९८३ ई० से १ अप्रैल १९८४ ई. तक

अवकाश	तारीख	अवकाश	तारीख	अवकाश	तारीख
इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	१ जन. ८३	तिरु ओनम् दिवस	२२ अग. ८३	इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	१जन. ८४
पोंगल	१४ ,,	रक्षा बन्धन	२३ अग.	जन्मदिन श्री गुरु गोविन्द सिंह जी	१० ,,
भारत गणतन्त्र दिवस	२६ ,,	श्री कृष्ण जन्माष्टमी	३१ ,,	पोंगल	१५ ,,
जन्मदिन श्री गुरु रवि दास जी	२८ ,,	इदुज्जुहा	१८ सित.	भारत गणतन्त्र दिवस	२६ ,,
श्री महाशिवरात्रि	११ फर.	जन्म दिन श्री म. गांधी	२ अक्तू.	जन्म दिन श्री गुरु रविदास जी	१६ फर.
गुड फ्राइडे	१ अप्रै.	श्री दुर्गाष्टमी	१४ ,,	श्री महाशिव रात्रि	२९ ,,
गुड़ी पड़वा	१४ ,,	महानवमी	१४ ,,		
वैशाखी	१४ ,,	विजया दशमी (दशहरा)	१६ ,,		
श्री रामनवमी	२१ ,,	मुहर्रम	१७ ,,		
श्री जैन महावीर जयन्ती	२५ ,,	महर्षि श्री वाल्मीकि जयन्ती	२१ ,,		
जन्म श्री हजरत अली	२७ ,,	दीपावली	४ नव.		
श्री बुद्ध जयन्ती	२६ मई	गोवर्धनपूजा	५ ,,		
जमत-उलविदा	८ जुलाई	श्री गुरु नानक जयन्ती	२० ,,		
इदुल फित्र	१९ ,,	शहीदी दिन श्री गुरुतेग बहादुर जी	९ दिस.		
भारत स्वतन्त्रता दिवस	१५ अग.	ईद-ए-मिलाद	१८ ,,		
		क्रिस्मस	२५ ,,		

नोट—भारत सरकार के अवकाशों की लिस्ट को भारत-सरकार द्वारा प्रकाशित गजट से अवश्य मिला लें।

पंजाब, हरयाणा, हि० प्र०, जम्मू-काश्मीर आदि के मेले (१ जनवरी ८३ से १ अप्रैल १९८४ ई० तक)

मेला	तारीख	मेला	तारीख	मेला	तारीख
लोहड़ी (दाऊ) (पंजाब)	१३ जन.८३	शाड़ी जातर (नगर हि. प्र.)	१९से२४मई	दीपावली	४ नवं.
अर्धकुम्भ प्रयाग	१४ ,,	क्षीर भवानी (काश्मीर)	१८ जून८३	बाल मेला	१४ ,,
मुक्तसर (पंजाब)	१४ ,,	भन्तर (हि. प्र.)	१५से१७जून	बाबा रुद्रानन्द नारी (ऊना) (हि. प्र.)	१६ से २०
बसन्त पंचमी	१९ ,,	श्री गंगा दशहरा (हरिद्वार उ. प्र.)	२० ,,	रेणुका (हि. प्र.)	१६ नवं.
मस्तुआणां (पं.)	१ फर.	(नौमे गुरु) नमाणी एकादशी का मेला बरहे, (भटिंडा; पंजाब)	२१ ,,	जन्मोत्सव वीर वैरागी (नकोदर, पं.)	१८ ,,
श्री महाशिवरात्रि	११ ,,	श्री नयना देवी (हि. प्र.)	१५ अग.	राम तीर्थ-कपालमोचन (पं०)	२० नवं.८३
मेला होला (आनन्दपुर साहिब) (पं.)	२९ मार्च	श्री चिन्त पूरणी (हि. प्र.)	१५ ,,	पुष्कर (राज.)	२० ,,
शीतला माता (कुराली (पं.)	३१ ,,	श्री अमर नाथ (काश्मीर)	२३ ,,	पुरमण्डल (देविका स्नान, जम्मू)	३ दिस.
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	२ अप्रैल	मा.कपुर शरीफ (पं.)	२४से२६अग	जोड़मेला (पंजाब)	२६ से २८
बीरमदास बधोछी (पटियाला)	५ ,,	कैलाश यात्रा (काश्मीर)	५ से ६सितं	संगीतमेला बाबा हरवल्लभ (जालन्धर)	२८ ,,
मेला पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	१२ ,,	गोसांई आणां (कुराली)	८ ,,	लोहड़ी (दाऊ) (पंजाब)	१३ जन., ८४
मेला चीमा (नानकसर) (पं.)	१४ ,,	मेला पात (काश्मीर)	११से१३सितं	मुक्तसर (पंजाब)	१४ ,,
माईसर खाना (पं.)	१८ ,,	वामन द्वादशी (अम्बाला, पटियाला)	१८ ,,	मस्तुआणां (पंजाब)	१ फर.
श्री मनसा देवी (हर.)	२० ,,	मेला छपार (पं.)	२१ ,,	बसन्त पंचमी	७ ,,
मेला बाहु फोर्ट (जम्मू-काश्मीर)	२० ,,	गोइन्दवाल (पं.)	२२ ,,	श्रीमहा शिवरात्रि	२९ ,,
पीपलजातर (कुल्लू, हि. प्र.)	२९अप्रै.से१मई	ज्वालामुखी, तारा देवी (हि. प्र.)	१४ अक्तू.	होला मेला (आनन्दपुर साहिब)	१८ मार्च
पिंजौर (हरियाणा)	१२ मई	दशहरा (कुल्लू)	१६ ,,	बीरमदास बधोछी (पटियाला पं.)	२० ,,
ढूंगरीजातर (मनाली, हि. प्र.)	१५-१६मई	शाकम्भरी देवी (उ. प्र.)	२० ,,	श्री गुरु राम राय (देहरादून)	२१ ,,
बंजार (हि. प्र.)	१५से१९मई			श्री शीतला माता (कुराली प.)	२२ ,,
				मेला पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	३१ ,,

महापुरुषों के जन्मदिन (१ जन, ८३ से १ अप्रै., ८४ तक)

नाम	तिथि
श्री स्वामी विवेकानन्द	५ जन, ८३
जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य	५ ,, ,,
नेताजी सुभाष	२३ ,, ,,
लाला लाजपत राय	२८ ,, ,,
श्री गुरु रविदास	२८ ,, ,,
श्री रामकृष्ण परमहंस	१६ मार्च ,,
बाबा श्रीरमदास बधोछी (पं.)	५ अप्रै. ,,
श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर	७ मई ,,
श्री वल्लभाचार्य	८ मई ,,
छत्रपति शिवा जी	१४ मई ,,
जगद्गुरु श्री शंकराचार्य	१७ मई ,,
श्री रामानुजाचार्य	१८ मई ,,
महाराणा प्रताप	१३ जून ,,
लो. मा. बाल गंगाधर तिलक	१ अग. ८३
गो. स्वा. श्री तुलसीदास	१५ अग. ,,
श्री महात्मा गांधी	२ अक्तू. ८३
श्री माधवाचार्य	१६ ,, ८३
श्री महर्षि वाल्मीकि	२१ ,, ,,
श्री जवाहर लाल नेहरु	१४ नव. ,,
वीर बन्दा बैरागी	१८ नवं. ,,
जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य	२० नव. ,,
नेताजी सुभाष चन्द्र	२३ जन. ८४
श्री स्वामी विवेकानन्द	२४ जन. ,,
ला. लाजपत राय	२८ जन. ,,
श्री रामकृष्ण परमहंस	४ मार्च ८४

सिक्खों के गुरु पर्व (१ जन, ८३ ई० से १ अप्रैल, ८४ ई० तक)

गुरुओं के अवतार दिन

नाम	तिथि
श्री गुरु हरराय जी	२७ जन. ८८
श्री गुरु तेग बहादुर जी	२ मई ,,
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	४ मई ,,
श्री गुरु अंगददेव जी	१३ मई ,,
श्री गुरु अमरदास जी	२५ मई ,,
श्री गुरु हरगोविन्द जी	२६ जून ,,
श्री गुरु हरकिशन जी	३ अगस्त ,,
श्री गुरु रामदास जी	२३ अक्तू. ,,
श्री गुरु नानक देव जी	२० नवं. ,,
श्री गुरु गोविन्द सिंह जी	१० जन. ८४
श्री गुरु हरराय जी	१५ फर. ८४

गुरुओं के निर्वाण दिन

नाम	तिथि
श्री गुरु अंगद देव जी	१७ अप्रै. ८३
श्री गुरु हरगोविन्द जी	१८ ,,
श्री गुरु हर किशन जी	२५ ,,
श्री गुरु अर्जुन देव जी	१४ जून ,,
श्री गुरु रामदास जी	९ सित. ,,
श्री गुरु अमरदास जी	२२ सित ,,
श्री गुरु नानक देव जी	२ अक्तू. ,,
श्री गुरु हरराय जी	३० अक्तू. ,,
श्री गुरु गोविन्द सिंह जी	९ नव. ,,
श्री गुरु तेगबहादुर जी	९ दिसं. ,,

मण्डमल-नक्षत्रों का आरम्भ और समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) सं० २०४० वि.)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
तारीख (१९८३ ई०)	समय घं. मि.	तारीख (१९८३ ई०)	समय घं. मि.	तारीख (१९८३ ई०)	समय घं. मि,	तारीख (१९८३ ई०)	समय घं. मि.	तारीख (१९८३-८४)	समय घं. मि.	तारीख (१९८३-८४)	समय घं. मि.	तारीख (१९८४ ई.)	समय घं. मि	तारीख (१९८४ ई.)	समय घं. मि.
१२ अप्रैल	१३।२४	१४ अप्रै.	१४।५९	२० जुलाई	२२।५५	२३ जुलाई	३।३५	२९ अक्तू.	१७।५८	३१ अक्तू.	१४।४९	७ फर.	३।२०	९ फर.	७।१५
२१ ,,	[illegible]	२३ ,,	४।२६	३० ,,	२३।८	२ अगस्त	२।१४	७ नवं.	६।१६	९ नवं.	८।२२	१६ ,,	३।५	१७ ,,	२०।५४
३० ,,	[illegible]	२ मई	६।१६	८ अगस्त	१६।२२	१० ,,	१०।१८	१७ ,,	२।१२	१९ नवं.	४।३४	२४ ,,	९।५३	२६ ,,	१२।५६
८ मई	[illegible]	११ ,,	२३।२१	१७ ,,	४।४८	१९ ,,	९।२७	२५ ,,	२३।१५	२७ नवं.	२०।१९	५ मार्च	८।१९	७ मार्च	१३।२३
१७ ,,	[illegible]	२० ,,	१०।२७	२७ ,,	४।५५	२९ ,,	८।२५	४ दिस.	१५।१३	६ दिस.	१७।१५	१४ ,,	१३।४६	१६ ,,	८।१५
[illegible]	[illegible]	२९ ,,	१३।२३	५ सित.	२।५१	६ सित.	२२।६	१४ ,,	११।८	१६ दिस.	१४।८	२२ ,,	१७।३४	२४ ,,	१९।२६
६ जून	[illegible]	८ जून	९।५	१२ ,,	११।५४	१५ ,,	१५।५३	२३ ,,	६।७	२५ ,,	२।४	१ अप्रै.	१४।२२		
[illegible]	[illegible]	१६ ,,	१६।४६	२३ ,,	१०।४६	२५ ,,	१३।५३	३१ ,,	२२।२२	३ जन.,८४	१।२				
२२ ,,	[illegible]	२५ ,,	[illegible]	२ अक्तू.	११।२३	४ अक्तू.	७।२	१० जन.,८४	१९।२४	१२ जन.	२३।२८				
३ जुलाई	[illegible]	४ जुलाई	[illegible]	१० ,,	२०।३९	१२ ,,	२३।३४	१९ ,,	१५।४३	२१ ,,	१०।१३				
११ ,,	[illegible]	१४ ,,	[illegible]	२० ,,	[illegible]	२२ ,,	२०।१८	३० ,,	४।१	३० ,,	७।१७				

[illegible] का आरम्भ और समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) (सं० २०४० वि०)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
तारीख (१९८३ ई०)	समय घं. मि.	तारीख (१९८३ ई०)	समय घं. मि.	तारीख (१९८३ ई०)	समय घं. मि.	तारीख (१९८३ ई०)	समय घं. मि.	तारीख (१९८३ ई०)	समय घं. मि.	तारीख (१९८३ ई०)	समय घं. मि.	तारीख (१९८३-८४)	समय घं. मि.	तारीख (१९८३-८४)	समय घं. मि.
६ अप्रैल	४।२४	१० अप्रैल	[illegible]	२५ जुलाई	[illegible]	१ अगस्त	[illegible]	१६ अक्तू.	२२।१९	२१ अक्तू.	१९।१६	६ जन.	२।१५	११ जन.	[illegible]
२ जून	१८।१९	७ जून	[illegible]	२३ अगस्त	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१३ नवं.	५।१४	१८ नवं.	०३।४०	३ फर.	४।४	८ फर.	[illegible]
२९ जून	१९।२७	४ जुलाई	[illegible]	१९ सित.	[illegible]	२६ सित.	[illegible]	१० दिस.	[illegible]	१५ दिसं.	१२।५८	१ मार्च	१०।१९	६ मार्च	[illegible]

प्रणयविवाह का मुहूर्त्त

लेखक ;—प्रियव्रत शर्मा

प्रणयविवाह (Love-Marriage), जिसे शास्त्रों में गान्धर्व-विवाह की संज्ञा दी गई है, यद्यपि उत्कृष्टकोटि की विवाहप्रणाली के रूप में शास्त्रकारों द्वारा समर्थित नही है, तथापि इस प्रणाली का कुछ प्रचलन अब भारत में भी पाश्चात्य, सभ्यता के प्रभाव के कारण दिखाई पड़ने लगा है। प्रणयविवाह करने वाले प्रेमी-प्रेमिका विवाह-बन्धन में बंधने के लिए अक्सर इतनी शीघ्रता में होते हैं, कि वे शास्त्रप्रतिपादित मुहूर्त्तकाल की प्रतीक्षा नहीं कर पाते; कुण्डली मिलान की बात तो दूर रही। बिना कुण्डली मिलान करवाए, बिना मुहूर्त्त के ही मन्दिर आदि में जाकर एक दूसरे के गले में वर-माला डालकर पति-पत्नी बन जाना ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से यद्यपि अपराध है, फिर भी "प्रेमावेश किसी भी प्रकार के नियन्त्रण को सहन नहीं करता"—इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को दृष्टि में रखकर हम यहां मुहूर्त्तसम्बन्धी दो आवश्यक बातें बतला रहे हैं, जिन्हें यदि प्रणयविवाह के समय ध्यान में रखा जाए तो प्रेमी-प्रेमिका का दाम्पत्य-जीवन कुछ दृष्टियों से पर्याप्त सुख समृद्धिमय हो सकता है। वे दो आवश्यक बातें ये हैं :—

(१) प्रेमविवाह के समय मृत्युबाण के समय को सावधानीपूर्वक छोड़ देना चाहिए। इससे दोनों जीवन-साथी अकाल मृत्यु से बचे रहेंगे।

हम यहां दो कोष्ठक (१), (२) दे रहे हैं, इनकी सहायता से बड़ी आसानी से यह जाना जा सकता है, कि मृत्युबाण किस दिन कब से कब तक रहेगा।

मृत्युबाण एक वर्ष में ४८ बार आता है। जब भी यह आता है, तब यह लगभग २५½ घण्टे तक रहता है। कोष्ठक (१) में "मृत्युबाण की लगभग तारीखें" (जिन तारीखों के आस-पास मृत्युबाण प्रतिवर्ष आया करता है) दी गई हैं। यदि प्रणय-विवाह की तारीख का कोष्ठक (१) में दी गई "मृत्युबाण की लगभग तारीख" से अन्तर आगे या पीछे तीन दिन से अधिक हो तब उस दिन प्रणयविवाह निःशंक होकर किया जा सकता है। क्योंकि कोष्ठक (१) में दी गई इन "मृत्युबाण की लगभगतारीखों" से मृत्युबाण के काल का अन्तर आगे या पीछे तीन दिन से ज्यादा कभी नहीं होता। यदि प्रणय-विवाह का दिन कोष्ठक (१)

कोष्ठक (१)

मृत्युबाण की लगभग तारीख	वा. घं. मि.	मृत्युबाण की लगभग तारीख	वा. घं. मि.
जन. ३	४।१८।२८	जुला. ५	५। ९।२९
१२	६।१४।२७	१४	०।२०। ७
१५	२।१३। ९	१७	३।२३।३७
२४	४। ९।२३	२७	६। ९।४७
फर. २	६। ५।५४	अग. ५	१।१९।३६
११	१। ३। ४	१५	४। ४।५४
१४	४। २।१८	१८	०। ७।४७
२३	६। ०।२७	२७	२।१५।५५
मार्च ३	०।२३।३०	सितं. ५	४।२३।१३
१२	२।२३।१६	१५	०। ५।३०
१५	५।२३।३१	१८	४। ७।२०
२५	१। ०।५४	२७	५।१२। ४
अप्रै. ३	३। ३।२०	अक्तू. ६	०।१५।४४
१२	५। ७।००	१५	२।१८।१४
१५	१। ८।२९	१८	५।१८।४९
२४	३।१३।३८	२७	०।१९।४७
मई ३	५।१९।४९	नवं. ५	२।१९।४७
१३	१। ५। ८	१४	४।१८।४८
१६	४। ५।४७	१७	०।१८।१४
२५	६।१४।१४	२६	२।१६। १
जून ३	१।२३।२५	दिसं. ५	४।१३।१४
१३	४। ९।१८	१४	६। ९।५३
१६	०।१२।४३	१७	२। ८।३८
२५	२।२२।५९	२६	४। ४।४३

कोष्ठक (२)

ई. सन्	वा. घं. मि.	ई. सन्	वा. घं. मि.	ई. सन्	वा. घं मि.
१९८०	१। ६। ९	२०१०	३।२२।४४	२०४०	६।१५।१९
१९८१	२।१२।१८	२०११	५। ४।५३	२०४१	०।२१।२८
१९८२	३।१८।२७	२०१२	६।११। २	२०४२	२। ३।३७
१९८३	५। ०।३७	२०१३	०।१७।११	२०४३	३। ९।४६
१९८४	६। ६।४६	२०१४	१।२३।२१	२०४४	४।१५।५६
१९८५	०।१२।५५	२०१५	३। ५।३०	२०४५	५।२२। ५
१९८६	१।१९। ४	२०१६	४।११।३९	२०४६	०। ४।१४
१९८७	३। १।१३	२०१७	५।१७।४८	२०४७	१।१०।२३
१९८८	४। ७।२२	२०१८	६।२३।५७	२०४८	२।१६।३२
१९८९	५।१३।३२	२०१९	१। ६। ६	२०४९	३।२२।४१
१९९०	६।१९।४१	२०२०	२।१२।१६	२०५०	५। ४।५०
१९९१	१। १।५०	२०२१	३।१८।२५	२०५१	६।११। ०
१९९२	२। ७।५९	२०२२	५। ०।३४	२०५२	०।१७। ९
१९९३	३।१४। ८	२०२३	६। ६।४३	२०५३	१।२३।१८
१९९४	४।२०।१७	२०२४	०।१२।५२	२०५४	३। ५।२७
१९९५	६। २।२७	२०२५	१।१९। १	२०५५	४।११।३६
१९९६	०। ८।३६	२०२६	३। १।११	२०५६	५।१७।४५
१९९७	१।१४।४५	२०२७	४। ७।२०	२०५७	६।२३।५५
१९९८	२।२०।५४	२०२८	५।१३।२९	२०५८	१। ६। ४
१९९९	४। ३। ३	२०२९	६।१९।३८	२०५९	२।१२।१३
२०००	५। ९।१२	२०३०	१। १।४७	२०६०	३।१८।२२
२००१	६।१५।२२	२०३१	२। ७।५६	२०६१	५। ०।३१
२००२	०।२१।३१	२०३२	३।१४। ६	२०६२	६। ६।४०
२००३	२। ३।४०	२०३३	४।२०।१५	२०६३	०।१२।५०
२००४	३। ९।४९	२०३४	६। २।२४	२०६४	१।१८।५९
२००५	४।१५।५८	२०३५	०। ८।३३	२०६५	३। १। ८
२००६	५।२२। ७	२०३६	१।१४।४२	२०६६	४। ७।१७
२००७	०। ४।१७	२०३७	२।२०।५१	२०६७	५।१३।२६
२००८	१।१०।२६	२०३८	४। ३। १	२०६८	६।१९।३५
२००९	२।१६।३५	२०३९	५। ९।१०	२०६९	१। १।४५

में दी गई "मृत्युबाण की लगभग तारीख" से एक दो या तीन दिन आगे या पीछे हो, तब
संभव है, कि उसदिन मृत्युबाण हो। ऐसी स्थिति में मृत्युबाण की वास्तविक तारीख
और टाईम का ज्ञान कोष्ठक (१) और कोष्ठक (२) की सहायता से इसप्रकार कर
लीजिए—

जिसदिन तारीख के आसपास प्रणयविवाह करने की इच्छा है, उस तारीख के
समीप वाली "मृत्युबाण की लगभग तारीख" के आगे कोष्ठक (१) में लिखे वार घं. मि.
उठा लें। इन्हें अपने ईस्वी सन् के आगे कोष्ठक (२) में दिए गए वार घं. मि. में जोड़
दें;—यह मृत्युबाण शुरू होने का वार और टाईम (भा. स्टै. टा.) होगा। इस वार के
अनुसार मृत्युबाण के शुरू होने की ठीक तारीख का निर्णय किया जा सकता है। यह
तारीख (मृत्युबाण शुरू होने की तारीख) "मृत्युबाण की लगभग तारीख" (जो हमें
कोष्ठक (१) से मिली है) से दो दिन से ज्यादा आगे पीछे नहीं हो सकती, जैसाकि पहले
भी बतला चुके हैं, मृत्युबाण २५ घं. ३० मि. (अर्थात् १ दिन १ घं. ३० मि.) रहता है।
अतः मृत्युबाण शुरू होने के वार और टाईम में १ दिन (वार), १ घं. ३० मि. जोड़ देने
पर इसकी समाप्ति का वार घं. मि. (भा. स्टै. टा.) मालूम हो जाएंगे।

मान लीजिए, ७ जनवरी १९८३ ई. के दिन मृत्युबाण ज्ञात करना है। कोष्ठक
(१) में जनवरी की ३ और १२ तारीखें "मृत्युबाण की लगभग तारीखें" लिखी हैं, जो
हमारी ७ जनवरी के समीप की तारीखें हैं। इन दोनों तारीखों से ७ जनवरी का अन्तर
तीन दिन से ज्यादा है, अतः स्पष्ट है कि इसदिन मृत्युबाण नहीं होगा।

मान लीजिए—४ जन. १९८३ को मृत्युबाण मालूम करना है, इस तारीख के
समीप वाली "मृत्युबाण की लगभग तारीख" कोष्ठक (१) में ३ जन. है। इस कोष्ठक में
३ जन. के आगे ४ वार, १८ घं. २८ मि. लिखा है। कोष्ठक (२) से ई. सन् १९८३ के
आगे लिखे [illegible] इसमें ४।१८।२८ जोड़ने पर २ वार (२ वार) १९
[illegible] के प्रारम्भ होने का वार और भा. स्टै.टा. है। १९८३
[illegible] कि मृत्युबाण १९८३ ई. को ३
[illegible] जनवरी [illegible] के ७ बजकर ५ मि. पर प्रारम्भ
[illegible] अतः इसकी समाप्ति २
[illegible] वार [illegible] पर] अर्थात्
[illegible] सारांश यह हुआ, कि—यह मृत्यु
[illegible] प्रारम्भ होकर ४ जन. १९८३ ई. को २०
[illegible] इस अवधि में प्रणयविवाह नहीं करना चाहिए।
[illegible]

ध्यान रहे, इन कोष्ठकों से [illegible] मृत्युबाण का वार अंग्रेजी पद्धति के अनुसार
रात के बारह बजे शुरू होने वाला है। १ संख्या से रविवार, २ से सोमवार इत्यादि
समझें। ० या ७ संख्या में शनिवार समझना चाहिए।

(२) मृत्युबाण का विचार कर लेने के बाद प्रणयविवाह (परस्पर वर माला
डालने) के समय के लग्न का विचार कर लेना भी नितान्त आवश्यक है। विवाह के

समय लग्नेश यदि लग्न, चतुर्थ, पंचम, नवम्, दशम, या ग्यारहवें भाव में हो अथवा गुरु, शुक्र या बुध में से
कोई भी ग्रह लग्न, चतुर्थ, पंचम, नवम्, या दशम भाव में पड़ा हो तो उस समय किया गया विवाह-सम्बन्ध
अटूट, पारस्परिक-प्रेम का पोषक एवं अनेकविध सुख सम्पदाओं को देने वाला माना जाता है। मुहूर्त्तकारों
का कहना है, कि इस प्रकार की ग्रह स्थिति वाले लग्न के समय यदि विवाह किया जाए तो मुहूर्त-सम्बन्धी
अनेक महादोष लगभग समाप्त हो जाते हैं।

नक्षत्र-जातक

ज्योतिष-शास्त्रेतिहासज्ञ वैदेशिक विद्वान् राशि-चक्र एवं राशि फलादेश को ग्रीक की देन समझते
हैं। उनके अनुसार भारतीयों की जातक फलादेश में कोई देन नहीं। परन्तु "भारतीयों ने जन्म-नक्षत्रों के
आधार पर जातक-फलादेश का विकास किया था।"—यह तथ्य बृहज्जातकादि ग्रन्थों के परिशीलन से स्पष्ट
हो जाता है, इस प्रकार वैदेशिकों की धारणा निराधार सिद्ध होती है। आजकल साधारणतया ज्योतिषी लोग
राशिफलादेश को ही प्रयोग में लाते हैं। अतः सर्व-साधारण के लाभार्थ नक्षत्र-फलादेश 'नक्षत्र जातक'
शीर्षक के अन्तर्गत संक्षेप में प्रस्तुत है।

—शक्तिधर शर्मा

बृहज्जातक के अध्याय १६, (ऋक्ष-शीलाध्याय) में जन्म नक्षत्रों के फलादेश इस प्रकार हैं—

अश्विनी में पैदा हुए जातक बुद्धिमान, सुन्दर, आभूषण-प्रिय, सभी काम करने में चतुर होते हैं।

भरणी में जन्म हो तो, जातक सत्य-वक्ता, स्वस्थ एवं चतुर, स्फूर्ति वाला होता है।

कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति बहुभक्षी, परस्त्रीगामी असहिष्णु विख्यात होता है।

रोहणी में जिसका जन्म हो, वह सत्यवादी, पवित्रात्मा, प्रियवक्ता, दृढ़निश्चयी एवं सुन्दर होता है।

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला चञ्चल, चतुर डरपोक, उत्साही एवं धनी होता है।

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य कठिन-हृदय, अभिमानी, कृतघ्न, हिंसक पापी होता है।

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्म लेने वाला क्लेश सहन करने वाला, सुखी सुशील, रोगी तथा थोड़े में ही सन्तुष्ट
होने वाला होता है।

पुष्य नक्षत्र में उत्पन्न शान्त-स्वभाव, सर्वप्रिय, विद्वान्, धर्म तत्पर, धनी होता है।

आश्लेषा नक्षत्र में जन्म लेने वाला धूर्त, सर्वभक्षी, पापी कृतघ्न होता है।

मघा नक्षत्र में जन्म लेने वाला धनी, नौकरों से युक्त, देवताओं एवं मातापिता का भक्त, उद्यमी होता
है।

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य प्रियवादी, दाता, कान्तिमान् भ्रमणशील एवं सरकारी नौकर
होता है।

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्म लेने वाला सभी को प्यारा, अर्थकरीविद्या वाला, भोगी और सुखी होता
है।

हस्त नक्षत्र में उत्पन्न व्यक्ति उत्साही, निर्लज्ज, मदिरा पीने वाला, निर्दयी और चोर होता है।

चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न व्यक्ति अनेक रंग के वस्त्र एवं मालाएं धारण करने वाला, सुन्दर लोचन और
सुन्दर शरीर वाला होता है।

स्वाती नक्षत्र में पैदा हुआ व्यक्ति क्लेश सहने वाला, तपस्वी, उदार-स्वभाव, व्यापार में रुचि रखने
वाला, कृपालु, मधुरभाषी होता है।

विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य ईर्ष्यालु, लोभी, कान्तिमान्, बोलने में चतुर और कलही होता है।

अनुराधा में उत्पन्न धनी, परदेशी, भ्रमणशील होता है।

ज्येष्ठा में उत्पन्न व्यक्ति थोड़े मित्रों वाला, सन्तोषी धर्मात्मा परन्तु क्रोधी होता है।

मूल नक्षत्र में उत्पन्न पुरुष मानी, धनी, सुखी, अहिंसक, स्थिरचित्त, और भोगी होता है।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में पैदा व्यक्ति इच्छानुसार आचरण करने वाली स्त्री से युक्त, मानी और पक्की मैत्री
[illegible] होता है।

शेष पृष्ठ १७ पर

सरल मुहूर्त

लेखक—प्रियव्रत शर्मा

कोई भी कार्य प्रारम्भ करने के लिए मुहूर्त निकालना कोई सरल काम नहीं है। मुहूर्तकाल जानने के लिए अनेक योगायोग विचारने पड़ते हैं। अनेक बार तो मुहूर्त-शास्त्रों में बतलाए गये सभी निर्देशों का पालन सम्भव भी नहीं होता है। शीघ्रता या अन्य किसी विशेष कारणवश हमें कार्य करने के लिए तत्काल कोई मुहूर्त अपेक्षित होता है। ऐसी स्थिति के लिए मुहूर्तशास्त्रों में वार, नक्षत्र, तिथि और लग्न के आधार पर ही शुभ बेला के निर्णय का निर्देश स्थान-स्थान पर मिलता है। ऐसे अनेक शुभयोग (सर्वार्थ सिद्धि, रवियोग आदि) इस पंचांग के अन्त में दिए रहते है। इन योगों में प्रारम्भ किया गया कोई भी कार्य सफल होता है, ऐसा मुहूर्तकार कहते हैं।

कुछ लोग यह प्रश्न करते हैं, कि जब मुहूर्तशास्त्रों में भद्रा, व्यतिपात, ग्रह स्थिति, क्रान्तिसाम्य, पंचांगशुद्धि आदि बीसों चीजों का विचार कर मुहूर्तकाल निर्धारित करने का आदेश है, तब इतने संक्षेप (Short cut) में केवल नक्षत्र वार, तिथि या लग्न के आधार पर ही मुहूर्त का निश्चय कर लेना कहां तक तर्कसंगत है। इसका उत्तर यह है, कि शुभ और अशुभ काल के निर्णय के लिए मुहूर्तजगत् में अनेक शैलियां भिन्न-भिन्न आचार्यों और ऋषियों ने परीक्षणार्थ अपनाई। उसी के परिणाम-स्वरूप मुहूर्त निकालने के ये भिन्न-भिन्न प्रकार हमें शास्त्रों में मिलते हैं। ये सभी प्रकार उन अनेक ऋषियों के अनुभवों के परिणामस्वरूप ही विकसित हुए है।

मुहूर्तों के अनेक भेद भारत एवं अन्य देशों के कुछ सीमित क्षेत्रों में ही परम्परा के अनुसार प्रयोग में लाये जाते हैं। ऐसे मुहूर्त, जो देश के किसी एक प्रान्त में ही प्रचलित है, उन्हें बिना किसी हिचकिचाहट के दूसरे प्रदेशों में भी प्रयोग में लाया जा सकता है। यहां हम एक ऐसी सरल मुहूर्तपद्धति का परिचय अपने पाठकों को दे रहे हैं, जो दक्षिण भारत में प्रचलित है। इस सरल पद्धति के अनुसार आप आवश्यकता के समय किसी ग्रहस्थिति आदि का विचार किए बिना ही विद्यारम्भ, गृहारम्भ, नौकरी, यात्रा और प्रणय विवाह—इन पांच और इनसे सम्बद्ध अन्य कार्यों के लिए शुभकाल (मुहूर्त) जान सकते है। इस पद्धति से मुहूर्तज्ञान का प्रकार इस तरह है :—

यहां एक कोष्ठक (Table) दिया गया है, इस कोष्ठक के बांई ओर पहले कालम में तिथियां और कोष्ठक की सबसे ऊपर वाली पंक्ति में लग्नों के नाम दिये गये हैं। जिस समय आप विद्यारम्भ आदि का मुहूर्त जानना चाहते हैं उस समय जो तिथि है, उसे इस कोष्ठक के पहले कालम में देखिए। इस तिथि के आगे लग्नों के नीचे १, २, ४, ६, व ८ अंक लिखे हुए हैं। ये अंक हमें बतलाते हैं, कि इस तिथि के समय इस लग्न में कौन-कौन सा काम करना शुभ नहीं है। जिस लग्न के नीचे १ संख्या लिखी हैं, उस लग्न में उस तिथि के समय प्रणयविवाह नहीं करना चाहिए। जिस लग्न के नीचे २ संख्या लिखी है उस लग्न में उस तिथि के समय गृहारम्भ नहीं करना चाहिए। इसमें ऐसा काम भी बर्जित करना चाहिये, जिसमें आग या बिजली का प्रयोग हो या ज्वलन-

शेष पृष्ठ १४ पर

—: सरलमुहूर्त्त कोष्ठक :—

तिथि ↓ / लग्न →		मेष	वृष	मि.	कर्क	सि.	कन्या	तुला	वृश्चि	ध.	म.	कुं.	मी.
शुक्ल	१	१	२		४		६		८		१	२	
	२	२		४		६		८		१	२		४
	३		४		६		८		१	२		४	
	४	४		६		८		१	२		४		६
	५		६		८		१	२		४		६	
	६	६		८		१	२		४		६		८
	७		८		१	२		४		६		८	
	८	८		१	२		४		६		८		१
	९		१	२		४		६		८		१	२
	१०	१	२		४		६		८		१	२	
	११	२		४		६		८		१	२		४.
	१२		४		६		८		१	२		४	
	१३	४		६		८		१	२		४		६
	१४		६		८		१	२		४		६	
	१५	६		८		१	२		४		६		८
कृष्ण	१		८		१	२		४		६		८	
	२	८		१	२		४		६		८		१
	३		१	२		४		६		८		१	२
	४	१	२		४		६		८		१	२	
	५	२		४		६		८		१	२		४
	६		४		६		८		१	२		४	
	७	४		६		८		१	२		४:		६
	८		६		८		१	२		४		६	
	९	६		८		१	२		४		६		८
	१०		८		१	२		४		६		८	
	११	८		१	२		४		६		८		१
	१२		१	२		४		६		८		१	२
	१३	१	२		४		६		८		१	२	
	१४	२		४		६		८		१	२		४
	३०		४		६		८		१	२		४	

गणकमार्तण्ड से उद्धृत —

३८०० वर्ष का कैलेण्डर

प्रियव्रत शर्मा

जो ईस्वी सन् ४ से पूरी तरह विभाजित हो जाए, वह लीप इयर होगा (अर्थात् उस वर्ष फरवरी २९ तारीख की होगी)—यह नियम १६ वीं शताब्दी तक चलता रहा। इस नियम में त्रुटि होने के कारण १६ वीं शताब्दी के एक ज्योतिष के विद्वान् पोप (इसाई पादरी) ने इसमें संशोधन किया और लीप इयर के निर्णय का एक शुद्ध नियम बनाया।

इस नियम के अनुसार शताब्दी वाला वही वर्ष लीप इयर माना गया जो ४०० से पूरी तरह विभाजित हो सके। इस नये नियम के अनुसार १५००, १७००, १८००, १९०० और २१०० आदि शताब्दी वाले वर्ष यद्यपि ४ से पूरी तरह विभाजित हो जाते हैं, फिर भी ये लीप इयर नहीं है, क्योंकि ये ४०० से पूरी तरह विभाजित नहीं होते। लेकिन पुराने नियम के अनुसार ये शताब्दी वर्ष लीप इयर ही हैं। इस नए नियम के अनुसार १६००, २०००, २४०० आदि शताब्दी वर्ष लीप इयर हैं, क्योंकि ये ४०० से पूरी तरह विभाजित होते हैं। ध्यान रहे—इस नये नियम के अनुसार शताब्दी वर्षों के अतिरिक्त शेष वे सभी वर्ष जो ४ से पूरी तरह विभाजित हो जाते हैं, पुराने नियम की ही भांति लीप इयर माने जाते हैं। इस नए नियम को New Style (नई शैली) या 'ग्रेगरियन शैली' कहते हैं। पुराने नियम को Old Style (पुरानी शैली या) 'जुलियन शैली' भी कहते हैं। जुलियन और ग्रेगरियन शैली के बारे में अधिक जानकारी के लिये पृष्ठ १५ पर दिया लेख पढ़ें। ग्रेगरियन शैली (नई शैली) के कलैण्डर का प्रारम्भ अधिकतर यूरोपियन देशों में १५ अक्तूबर १५८२ ई० सन् से हुआ है, इससे पूर्व सर्वत्र जुलियन शैली (पुरानी शैली) का ही कलैण्डर प्रचलित रहा। इस वर्तमान २०वीं शताब्दी के प्रारम्भिक कुछ वर्षों तक कुछ इने गिने देश प्राचीन शैली के कलैण्डर को ही प्रयोग में लाते रहे हैं। लेकिन अब विश्व के सभी देश नई शैली के ही कलैण्डर का प्रयोग करते हैं। अब पुरानी शैली का कलैण्डर कहीं भी प्रयोग में नहीं आता।

ध्यान रहे—भारत में अंग्रेज लोग नई शैली का कलैण्डर ही लेकर आए थे, अतः यहां नई शैली का कलैण्डर ही हमेशा प्रयोग में आया है। यहां हम तीन कोष्ठक दे रहे हैं, इनके द्वारा जुलियन या ग्रेगरियन कलैण्डर की ३८०० ई० सन् (A.D.) तक की किसी तारीख का वार (day) इस प्रकार ज्ञात कर सकते हैं :—

कोष्ठक (१) से शताब्दी वर्ष (A.D.) के आगे लिखा वार, कोष्ठक (२) से शेष वर्षों का वार और कोष्ठक (३) से अभीष्ट मास का वार लेकर इन्हें अपने मासकी तारीख की संख्या में जोड़ दें। योगफल को सात से विभाजित करने पर १ शेष बचे तो रविवार २ शेष बचे तो चन्द्रवार, इत्यादि समझें। ० या ७ शेष बचने पर शनिवार समझना चाहिए।

यहां कोष्ठक (३) का प्रयोग करते समय यह ध्यान में रखें, कि लीप इयर हो तो "लीप वर्ष" वाला स्तम्भ (कालम), लीपइयर न हो तो सामान्य वर्ष वाला स्तम्भ प्रयोग में आयेगा। इसी प्रकार कोष्ठक (१) का प्रयोग करते हुए यह ध्यान रखें कि पुरानी शैली के कलैण्डर के लिये 'पुरानी शैली' वाला कालम और नई शैली वाले कलैण्डर के लिये 'नई शैली' वाला कालम प्रयोग में लाया जायेगा।

उदाहरण (१)—ई० सन् १४१० की १० जन को वार बतलाइये। स्पष्ट है,—यह तारीख पुरानी (जुलियन शैली) के कलैण्डर की ही है। कोष्ठक (१) के "पुरानी शैली" वाले कालम में १४०० के आगे वार २ है। कोष्ठक (२) में शेष वर्ष १० के आगे वार ५ है। कोष्ठक (३) में सामान्यवर्ष वाले कालम में जनवरी के आगे ३ वार है। इन तीनों के योग (२+५+३=१०) को जनवरी की तारीख की संख्या १० में जोडने पर २० हुए। इन्हें ७ से भाग देने पर शेष ६ बचे। अतः स्पष्ट हुआ कि इस दिन 'शुक्रवार' था।

कोष्ठक (१)

(पुरानी शैली) शताब्दी (A.D.)	वार	(नई शैली) शताब्दी (A.D.)	वार
००	२	१५००	५
१००	१	१६००	४
२००	०	१७००	२
३००	६	१८००	०
४००	५	१९००	५
५००	४	२०००	४
६००	३	२१००	२
७००	२	२२००	०
८००	१	२३००	५
९००	०	२४००	४
१०००	६	२५००	२
११००	५	२६००	०
१२००	४	२७००	५
१३००	३	२८००	४
१४००	२	२९००	२
१५००	१	३०००	०
१६००	०	३१००	५
१७००	६	३२००	४
१८००	५	३३००	२
१९००	४	३४००	०
		३५००	५
		३६००	४
		३७००	२
		३८००	०

कोष्ठक (२)

वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष	वार
०	२८	५६	८४	०
१	२९	५७	८५	१
२	३०	५८	८६	२
३	३१	५९	८७	३
४	३२	६०	८८	५
५	३३	६१	८९	६
६	३४	६२	९०	०
७	३५	६३	९१	१
८	३६	६४	९२	३
९	३७	६५	९३	४
१०	३८	६६	९४	५
११	३९	६७	९५	६
१२	४०	६८	९६	१
१३	४१	६९	९७	२
१४	४२	७०	९८	३
१५	४३	७१	९९	४
१६	४४	७२	—	६
१७	४५	७३	—	०
१८	४६	७४	—	१
१९	४७	७५	—	२
२०	४८	७६	—	४
२१	४९	७७	—	५
२२	५०	७८	—	६
२३	५१	७९	—	०
२४	५२	८०	—	२
२५	५३	८१	—	३
२६	५४	८२	—	४
२७	५५	८३	—	५

कोष्ठक (३)

मास	सामान्य वर्ष वार	लीप वर्ष वार
जन.	३	२
फर.	६	५
मार्च	६	६
अप्रै.	२	२
मई	४	४
जून	०	०
जुला.	२	२
अग.	५	५
सित.	१	१
अक्तू.	३	३
नव.	६	६
दिस.	१	१

उदाहरण (२)—ई० सन् १५०० की १८ फर को क्या वार था ? कोष्ठक (१) के पुरानी शैली वाले कालम में १५०० के आगे वार १ है । कोष्ठक (२) में शेष वर्ष ० के आगे वार ० है । कोष्ठक (३) में लीप वर्ष वाले कालम में फर. के आगे वार ५ है । इन तीनों के योग (१+०+५=६) को तारीख की संख्या १८ में जोड़ने पर २४ हुए इसे ७ का भाग देने पर शेष ३ शेष बचे, अतः मंगलवार मिला ।

उदाहरण (३)—नई शैली के अनुसार ई० सन् १६०० की २५ फर. को वार बतलाइये । क्योंकि १६०० ई० सन् के कुछ वर्षों बाद तक भी कुछेक रूस आदि देशों में पुरानी शैली का ही कलैण्डर प्रचलित रहा । अतः यहां पर यह स्पष्टीकरण बहुत आवश्यक था कि यह तारीख पुरानी शैली के कलैण्डर की नहीं, नई शैली के कलैण्डर की है । कोष्ठक (१) में 'नई शैली' कालम में १६०० के आगे वार ५ कोष्ठक (२) में शेष वर्ष ० के आगे वार ०, और कोष्ठक (३) में सामान्य वर्ष वाले कालम में फर. के आगे वार ६ है । इन तीनों के योग (५+०+६=११) को तारीख संख्या २५ में जोड़ने पर ३६ हुए, इसे ७ से भाग देने पर १ शेष बचा, अर्थात् इस दिन रविवार था ।

पृष्ठ ११ का शेष

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में पैदा व्यक्ति विनयी, धर्मात्मा, अधिक मित्रों वाला, कृतघ्न और सर्वजनप्रिय होता है । ।

श्रवण में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति लक्ष्मीवान् पण्डित, उदार पत्नी वाला, धनवान्, और विख्यात होता है ।

धनिष्ठा में उत्पन्न व्यक्ति दाता, धनी, शूर, गीत-प्रिय, और धन का लोभी होता है ।

शतभिषा नक्षत्र में पैदा होने वाला स्पष्टवक्ता, व्यसनी, शत्रुओं पर विजय पाने वाला, बिना विचारे काम करने वाला, किसी के वश में न आने वाला होता है ।

पूर्वाभाद्रपदा में उत्पन्न व्यक्ति दुःखित-हृदय, स्त्री के वश में रहने वाला, धनवान् पण्डित और कृपण होता है ।

उत्तराभाद्रपदा में उत्पन्न होने वाला मनुष्य अच्छा वक्ता, सुखी, बहुत पुत्र पौत्रादि से युक्त, शत्रुओं को जीतने वाला धर्मात्मा होता है ।

रेवती में जन्म लेने वाला स्वस्थ सुन्दर अंगों वाला, सर्वजनप्रिय, शूरवीर, पवित्रहृदय और धनवान् होता है ।

पृष्ठ १२ का शेष

शील पैट्रोल, तेल आदि से उसका सम्बन्ध हो । जहां ४ संख्या है वहां (उस तिथि और लग्न में) नौकरी प्रारम्भ (Join) न करें । जहां ६ लिखा है, वहां (उस तिथि व लग्न में) यात्रा के लिए प्रस्थान न करें और जहां ८ संख्या लिखी है, वहां (उस तिथि और लग्न में) विद्यारम्भ न करें और गुरु से मन्त्रदीक्षा भी न लें । जिन लग्नों के नीचे कोई संख्या नहीं लिखी हुई है, उस लग्न में उस तिथि के समय ये विद्यार०.. आदि पांचों शुभ काम किए जा सकते हैं ।

उदाहरण के रूप में मान लीजिए कि २० अप्रैल १९८३ ई० को कोई व्यक्ति मकान का शिलान्यास करना चाहता है । मालूम करें, कौन से लग्न में शिलान्यास करना ठीक रहेगा ? इस दिन प्रातः से सायंकाल तक पूरा दिन चैत्र शुक्ल अष्टमी तिथि है । कोष्ठक में देखा—शुक्लअष्टमी के आगे २ संख्या केवल कर्क लग्न के नीचे लिखी है । अतः स्पष्ट है—कर्क लग्न को छोड़कर शेष किसी भी लग्न में इस दिन मकान का शिलान्यास किया जा सकता है ।

इसी प्रकार दूसरा उदाहरण लीजिए—कोई व्यक्ति १ मई १९८३ को यात्रा प्रारम्भ करना चाहता है । इस दिन दोपहर के १ बजकर २० मिनट तक वैशा. कृष्ण चतुर्थी है और इसके बाद पंचमी है । कोष्ठक में कृष्ण चतुर्थी के आगे ६ संख्या कन्या लग्न के नीचे है । अतः कृष्ण चतुर्थी में कन्या लग्न यात्रा के लिए शुभ नहीं है । लेकिन इसी दिन कन्या लग्न चतुर्थी में आता ही नहीं है, अतः स्पष्ट है । इस दिन चतुर्थी तिथि में किसी भी लग्न में यात्रा प्रारम्भ की जा सकती है । लेकिन इसी दिन यदि दोपहर के १ बजकर २० मिनट बाद पंचमी तिथि में यात्रा आरम्भ करनी है तो सिंह लग्न को छोड़ देना होगा क्योंकि कोष्ठक में कृष्ण पंचमी के आगे ६ संख्या सिंह लग्न में लिखी है ।

यहां यह ध्यान रखना आवश्यक है कि यहां दिए गए कोष्ठक का प्रयोग करते समय तिथि तात्कालिक ही ली जाए अर्थात् जिस समय आप कोई विद्यारम्भ आदि करना चाहते हैं, उस समय जो तिथि है, उसे ही इस कोष्ठक में देखें ।

यदि इस पद्धति से निकाले गए मुहूर्त के समय सर्वार्थसिद्धि, रवियोग या सिद्धि-योग भी हो तो यह मुहूर्त बहुत अच्छा समझा जाएगा ।

इस पद्धति से निकाले गए मुहूर्त में प्रणयविवाह करने पर पति-पत्नी की लम्बी आयु होती है, यात्रा आरम्भ करने पर यात्रा में चोर ठग आदि से हानिभय नहीं रहता, गृहारम्भ आदि करने पर अग्निभय नहीं होता, नौकरी आरम्भ करने पर अधिकारी से अनबन नहीं होती एवं विद्यारम्भ करने पर विद्यार्जन के समय व्यक्ति स्वस्थ एवं नीरोग रहता है ।

'गणकमार्त्तण्ड' से उद्धृत—

ये हजारों-लाखों वर्षों के कैलेण्डर

लेखक—प्रियव्रत शर्मा

(आगामी एवं अतीत काल के हजारों, यहांतक कि लाखों वर्षों के कैलेण्डर आपने देखे होंगे। इन कैलेण्डरों को बनाने वालों का दावा है, कि इन कैलेण्डरों से हजारों, लाखों वर्षों की अवधि में पड़ने वाली किसी तारीख का वार (day) सरलतापूर्वक जाना जा सकता है। क्या इतनी लम्बी अवधि के कैलेण्डर बनाना ज्योतिषसिद्धान्त की दृष्टि से तर्कसंगत है?—इस प्रश्न का उत्तर इस लेख में बहुत ही सरल शैली में अत्यन्त साधारण गणित के माध्यम से दिया गया है। इसे पढ़िये, आप समझ जायेंगे कि आश्चर्यजनक कालावधि के कैलेण्डर बनाने वाले ये तथाकथित ज्योतिषी लोग क्या भारी गलती करते हैं। लेखक ने यह सिद्ध किया है कि लगभग ३ हजार वर्ष ई० पूर्व (B.C.) से लगभग साढ़े चार हजार वर्ष ई० सन् (A.D) तक की कालावधि वाले कैलेण्डर ही शुद्ध होते हैं। इनसे जितना ज्यादा B.C. और A.D. का काल कैलेण्डर में दिखाया होगा, कैलेण्डर उतना ही ज्यादा अशुद्ध होगा। —सम्पादक)

जनवरी, फरवरी आदि महीनों वाले कैलेण्डर (जिसे भारत में सामान्यतया अंग्रेजी कैलेण्डर कहा जाता है) की एक सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह ऋतुओं से पूरी तरह सम्बद्ध है। जनवरी आदि महीनों में जैसी ऋतु एक प्रान्तविशेष में रहती है, वह अनन्तकाल तक के लिये उस महीने में वहां वैसी ही रहेगी। २१ मार्च और २२ सितम्बर को सूर्य भूमध्यरेखा पर ही रहता है। २१ जून को सूर्य हमेशा भूमध्यरेखा से उत्तर की ओर और २२ दिसम्बर को दक्षिण की ओर परम अन्तर पर होता है। इस प्रकार इस अंग्रेजी कैलेण्डर का यह दिन की वृद्धि, क्षय, परमाल्पता, परमाधिकता आदि से पूर्ण सम्बद्ध है। सूर्य लगभग २१ मार्च को बसन्तसम्पात (Vernal Equinox) पर होता है। बसन्तसम्पात [illegible] बिन्दु है, जहां सूर्य आकाशीय भूमध्यरेखा (नाड़ी वृत्त Celestial Equator) से [illegible] की ओर बढ़ता [illegible] होता है और यहां जब सूर्य होता है, [illegible] बराबर हो जाते हैं। जितने समय में अपनी कक्षा [illegible] पुनः बसन्तसम्पात पर आता है, उसे (भ्रमण [illegible]) का पूरा [illegible] सायन सौरवर्ष ३६५ दिन, ५ घण्टे ४८, सायन सौरवर्ष (Tropical Year) कहते हैं। [illegible] दिन) का होता है। अर्थात् बसन्त [illegible] के बराबर समय लेता [illegible] अंग्रेजी कैलेण्डर में प्रतिवर्ष [illegible] दिन [illegible] दिन है। [illegible] ३६५ दिन से [illegible] दिन [illegible] दिन अधिक है। [illegible] यह नियम बनाया गया कि— होते हैं। [illegible] कैलेण्डर में [illegible] दिन का मान लिया जाए और [illegible] दिन बनते हैं। अतः प्रत्येक चौथे वर्ष को [illegible] दिन [illegible] जाए। इस वर्ष को लीप इयर वर्ष फरवरी की तारीखें २८ की जगह २९ मानी जाएं। [illegible] नियम बना दिया (Leap Year) का नाम भी दिया गया है और [illegible] के लिए यह [illegible] हो जाय उसे Leap गया कि यह प्रत्येक ईस्वी सन् जो ४ से पूरी तरह विभाजित [illegible] Year मान लिया जाए। इस नियम के अनुसार [illegible] शताब्दी तक लीप इयर का

निर्णय किया जाता रहा है। लीप इयर का निर्णय करने वाली इस पद्धति को 'जुलियन पद्धति' या Old Style (प्राचीन पद्धति) कहते हैं। इस जुलियन पद्धति के अनुसार एक शताब्दी में कुल ३६५×१००+२५=३६५२५ दिन होते हैं। लेकिन एक शताब्दी (१०० सायनवर्षों) की वास्तविक दिनसंख्या ३६५·२४२१९०४१×१००—३६५२४·२१९०४१ है।

इसका अर्थ यह हुआ—जुलियन पद्धति के अनुसार हर चार वर्ष बाद लीप वर्ष मानने पर एक शताब्दी की दिनसंख्या वास्तविक दिनसंख्या से ·७८०९५९=(३६५२५—३६५२४·२१९०४१) दिन ज्यादा हो जाती है। दूसरे शब्दों में यूं कहिए कि वह लगभग १ दिन ज्यादा हो जाती है। अतः Pope Gregory XIII ने १५८२ ई० में इस ओर नक्षत्रवेत्ताओं (Astronomers) का ध्यान आकृष्ट किया और बतलाया कि हमारे मूल कैलेण्डर में २१ मार्च की तारीख बसन्तसम्पात के दिन पड़ती थी, लेकिन अब (१५८२ ई० सन् में) वह प्रचलित जूलियन कैलेण्डर के अनुसार बसन्त सम्पात वाले दिन से लगभग १० दिन बाद पड़ने लगी है, क्योंकि जूलियन पद्धति के अनुसार ईस्वी सन् के प्रारम्भ से लेकर १५८२ ई० तक इस कैलेण्डर में लगभग १० दिन अधिक जुड़ चुके हैं। इस अशुद्धि को दूर करने के लिए ग्रेगरी पोप XIII ने १५८२ ई० में ४ अक्तूबर के बाद एकदम अक्तूबर की १५ तारीख मानने का परामर्श दिया, जिसे यूरोप के लगभग सभी देशों ने स्वीकार कर लिया। शेष देशों ने भी इसे कालान्तर में स्वीकार किया। इससे २१ मार्च, जो Easter festival से सम्बद्ध तारीख थी, ठीक बसन्तसम्पात के दिन पुनः पड़ने लगी। (Easter festival बसन्तसम्पातदिवस से सम्बद्ध उत्सव है।)

जूलियन पद्धति के कैलेण्डर में एक शताब्दी में २५ और चार शताब्दियों में १०० लीप इयर माने जाते हैं। इस पद्धति के अनुसार ४०० वर्षों की दिन संख्या १४६१०० (=३६५×४००+१००) होती है। लेकिन वास्तविक दिन संख्या १४६०९६·८७६१६४ (=३६५.२४२१९०४१×४००) है। अथवा यूं कहिए ४०० वर्षों की वास्तविक दिन संख्या लगभग १४६०९७ है, इससे स्पष्ट है—जूलियन कैलेण्डर के ४०० वर्षों के दिनों में वास्तविक दिनसंख्या से ३ दिन अधिक हैं। जूलियन कैलेण्डर की इस त्रुटि से बचने के लिये ग्रेगरी पोप ने लीप इयर के निर्णय के नियम में एक संशोधन किया कि ४०० वर्षों (चार शताब्दियों) में १०० लीप इयर न मानकर केवल ९७ लीप इयर ही माने जाएं, ताकि वह जो अशुद्धि पिछली १५ शताब्दियों में उत्पन्न हो गई थी, भविष्य में वह फिर उत्पन्न न हो सके। इसके अनुसार ग्रेगरी ने यह नियम बनाया, कि शताब्दी वाले वर्षों में केवल उन शताब्दी वर्षों को ही लीप इयर माना जाए, जो ४०० से पूरी तरह विभाजित हो जाते हैं। इस नियम के अनुसार १९००, २१००, २२००, २३०० आदि शताब्दी वर्ष लीप इयर नहीं होंगे, लेकिन २०००, २४००, २८०० आदि शताब्दी वर्ष लीप इयर माने जायेंगे। शेष वे सभी वर्ष, जो ४ से पूरी तरह विभाजित हो जाते हैं, जूलियन पद्धति की ही भांति ग्रेगरी के मत से भी लीप इयर माने गये। लीप इयर का निर्णय करने वाले ग्रेगरी के इस नए नियम के अनुसार जो अंग्रेजी कैलेण्डर सन्

१५८२ अक्तूबर ४ के बाद प्रचलित हुआ, उसे ग्रेगरियन कैलेण्डर या New Style (नई शैली) का कैलेण्डर कहा जाने लगा। तब से जूलियन कैलेण्डर को Old Style (पुरानी शैली) का कैलेण्डर भी कहा जाता है। आजकल सारे विश्व में ग्रेगरियन कैलेण्डर ही प्रयोग में लाया जाता है।

इसमें सन्देह नहीं है, ग्रेगरी द्वारा निर्धारित लीप इयर का निर्णय करने वाले इस नियम के अनुसार यद्यपि मार्च की २१ तारीख वसन्तसम्पात के दिन से दीर्घकाल तक जुड़ी रहेगी। लेकिन कुछ हजार वर्षों में इस नियम के अनुसार भी इसमें धीरे-धीरे अन्तर अवश्य आयेगा। आज से लगभग ३ हजार वर्ष बाद यह अन्तर एक दिन का हो जायेगा। यह बात नीचे दिये गये विवरण से स्पष्ट है :—

क्योंकि ग्रेगरियन कैलेण्डर में ४०० वर्षों के दिन १४६०९७ माने गये हैं। लेकिन ४०० वर्षों की वास्तविक दिन संख्या १४६०९६·८७६१६४ (=३६५·२४२१९०४१ × ४००) है। इस प्रकार स्पष्ट है—ग्रेगरियन कैलेण्डर में चार सौ वर्षों की दिन संख्या वास्तविक दिन संख्या से ०·१२३८३६ दिन अधिक मान ली गई है, जिसके परिणाम स्वरूप इस ग्रेगरियन कैलेण्डर मे भी प्रत्येक ३२३० $\left(= \frac{\text{४०० वर्ष} \times \text{१ दिन}}{\text{१२३८३६ दिन}}\right)$ वर्षों में १ दिन का अन्तर पैदा होने लगेगा। इसलिये २१ मार्च का वसन्तसम्पात के दिन से स्थायी सम्बन्ध बनाए रखने के लिए इस ग्रेगरियन कैलेण्डर में १५८२ A.D. के बाद वाले प्रत्येक ३२३०वें (अथवा प्रत्येक ३२३०वें वर्ष के समीपतम) लीप इयर को लीप इयर न मानकर एक सामान्य वर्ष (अर्थात् ३६५ दिन का वर्ष) मानना होगा। उदाहरण के रूप में ४८१२ A.D., ८०४० A.D., ११२७२ A.D. और १४५०० A.D. आदि वर्ष लीप इयर नहीं माने जाने चाहियें। यदि इस नियम को न अपनाया गया तो ग्रेगरियन कैलेण्डर भी, जो जनवरी, फरवरी आदि मासों की तारीखों का अपनी अपनी ऋतुओं से स्थायी सम्बन्ध बनाये रखने के लिए जूलियन कैलेण्डर के स्थान पर ग्रेगरी पोप XIII द्वारा चलाया गया है, ऋतुओं से सम्बन्ध खो बैठेगा और प्रत्येक ३२३० वर्षों में १ दिन का अन्तर इस ग्रेगरियन कैलेण्डर की तारीखों की ऋतुओं में भी पैदा होता रहेगा। १५८२ A.D. के बाद के प्रत्येक ३२३०वें (अथवा इसके समीपतम किसी) लीप इयर को सामान्य वर्ष मान लेने पर इस ग्रेगरियन कैलेण्डर की तारीखों की ऋतुओं मे आगामी सुदीर्घकाल तक कोई अन्तर नहीं आ सकेगा—यह गणित बतलाती है।

ऊपर दिए गए गणितीय विवेचन से स्पष्ट है कि इस ग्रेगरियन पद्धति के अनुसार बनाया जाने वाला कैलेण्डर ४८१२ A. D. में एक दिन का संस्कार (Correction) चाहेगा। इसके बाद भी प्रत्येक ३२३०वें वर्ष यह संस्कार एक-एक दिन बढ़ता जायेगा। यह संस्कार आगामी वर्षों में ही बढ़ेगा,—ऐसी बात नहीं है। ईस्वी पूर्व (B.C.) के वर्षों में भी यह इसी अनुपात से बढ़ता जायेगा। अतः स्पष्ट है, ईस्वी पूर्व (B.C.) और ईस्वी सन् (A.D.) के हजारों वर्षों के जो कैलेण्डर ग्रेगरियन लीपइयर प्रणाली से बनाये जाते हैं, वे सिद्धान्त की दृष्टि से अक्सर ठीक नहीं होते। सामान्यतया हम यह कह सकते हैं कि लगभग ३ हजार वर्ष ई० पूर्व (B.C.) से लेकर लगभग साढ़े चार हजार वर्ष ई० सन् (A.D.) तक की अवधि वाले ग्रेगरियन कैलेण्डर में कोई अशुद्धि नहीं होती। इससे जितना ज्यादा B.C. और A.D. का काल इस कैलेण्डर में दिखाया होगा, कैलेण्डर उतना ही ज्यादा अशुद्ध होता जायेगा। ज्यादा लम्बी कालावधि की तारीखें एवं वार बतलाने वाले ग्रेगरियन पद्धति से बनाये गए ये सभी कैलेण्डर ज्योतिष-सिद्धान्त की दृष्टि से दोषपूर्ण हैं। कैलेण्डर के ऋतुसम्बन्धी गुण (Seasonal Quality) का, जोकि इस कैलेण्डर का प्रमुखतम अथवा यूं कहिये एकमात्र गुण है, ये तथाकथित Perpetual (अनन्तकालिक) कैलेण्डर सर्वथा उपेक्षा करते हैं। ग्रेगरियन पद्धति से भविष्य के हजारों वर्षों के जो इस प्रकार के तथाकथित अनन्तकालिक कैलेण्डर बनाए गये हैं, उनके द्वारा जाना गया २१ मार्च का दिन अगामी वर्षों में वसन्त-सम्पात के दिन से कितने दिन आगे खिसकता जायेगा—यह नीचे दिखाया गया है :—

४८१२ A. D.	में	१ दिन
८०४२ ,,	,,	२ ,,
११२७२ ,,	,,	३ ,,
१४५०२ ,,	,,	४ ,,
३३८८२ ,,	,,	१० ,,
९८४८२ ,,	,,	३० ,,

इस प्रकार स्पष्ट है, कि ३३८८२ ई० सन् (A.D.) में वसन्तसम्पात के दिन (जिस दिन रातदिन बराबर होते हैं उस दिन) प्रचलित ग्रेगरियन लीप इयर की प्रणाली से बने कैलेण्डर के अनुसार ११ मार्च होगा। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि तब फिर वही और उतनी ही अशुद्धि इस कलेण्डर में पैदा हो चुकेगी, जिसे दूर करने के लिये सन् १५८२ A.D. में पोप ग्रेगरी XIII ने जुलियन कैलेण्डर में १० दिन का संस्कार किया था और ऐसी अशुद्धि को भविष्य में उत्पन्न होने से रोकने के लिए लीप इयर के नियम में संशोधन किया। इनसे स्पष्ट है, ग्रेगरी द्वारा बनाया गया लीप इयर निर्णय करने का यह प्रचलित नियम भविष्य की लगभग २८ शताब्दियों तक तो बिना किसी संशोधन के प्रयोग में लाया जा सकता है। लेकिन इसके अन्तर यह संशोधन की अपेक्षा रखता है। अन्यथा यह ग्रेगरियन कैलेण्डर भी भावी सहस्राब्दियों में ऋतुओं से धीरे-धीरे सम्बन्ध तोड़ता जायेगा, जिससे न तो ग्रेगरी के सिद्धान्त से ही इसका सामंजस्य बैठेगा और न ही इस कैलेण्डर के मूल सिद्धान्त से।

इस प्रकार सिद्ध है—प्रचलित ग्रेगरियन लीपइयर प्रणाली से तथाकथित Perpetual (सार्वकालिक) कैलेण्डर बनाना ग्रेगरी के मूल सिद्धान्त के विरुद्ध तो है ही, कैलेण्डर के ऋतु समन्वयात्मक सिद्धान्त के भी यह सर्वथा विरुद्ध है। सर्व साधारण को चौंका देने के उद्देश्य से ही इस प्रकार के सुदीर्घकालीन कैलेण्डर बनाए जाते हैं। वैसे इस प्रकार के कैलेण्डर बनाना एक अत्यन्त ही साधारण बात है।

मिलानपद्धति

(किस लड़के और लड़की का विवाहसम्बन्ध करना ज्योतिष की दृष्टि से ठीक है ?)

लेखक :—प्रियव्रत शर्मा

किसी लड़के और लड़की का विवाहसम्बन्ध करने से पहिले उन दोनों के जन्मनक्षत्र और जन्मकालिक ग्रहस्थिति (जन्म कुण्डली) का मिलान करना बहुत आवश्यक है। ज्योतिषशास्त्र द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार मिलान ठीक होने पर ही विवाह-सम्बन्ध करना चाहिए अन्यथा पति-पत्नी में वैमनस्य, सन्तानहीनता, (शेष पृष्ठ [illegible] पर)

नक्षत्रवर्णादि चक्र

नक्षत्र	चरण	राशि	वर्ण	वश्य	योनि	राशीश	गण	नाडी
अश्वि.	१,२,३,४		क्षत्रिय	चतुष्पद	अश्व	मंगल	देव	आदि
भर.	१,२,३,४	मेष	,,	,,	गज	,,	मनुष्य	मध्य
कृत्ति	१		,,	,,	मेष	,,	राक्षस	अन्त्य
कृत्ति.	२,३,४		वैश्य	चतुष्पद	मेष	शुक्र.	राक्षस	अन्त्य
रोहि.	१,२,३,४	वृष	,,	,,	सर्प	,,	मनुष्य	,,
मृग.	१,२		,,	,,	,,	,,	देव	मध्य
मृग.	३,४		शूद्र	द्विपद	सर्प	बुध	देव	मध्य
आर्द्रा	१,२,३,४	मिथुन	,,	,,	श्वान	,,	मनुष्य	आदि
पुन.	१,२,३		,,	,,	मार्जार	,,	देव	,,
पुन.	४		ब्राह्मण	जलचर	मार्जार	चन्द्र	देव	आदि
पुष्य	१,२,३,४	कर्क	,,	,,	मेष	,,	देव	मध्य
आश्ले.	१,२,३,४		,,	,,	मार्जार	,,	राक्षस	अन्त्य
मघा.	१,२,३,४		क्षत्रिय	वनचर	मूषक	सूर्य	राक्षस	अन्त्य
पू.फा.	१,२,३,४	सिंह	,,	,,	,,	,,	मनुष्य	मध्य
उ.फा.	१		,,	,,	गौ	,,	,,	आदि
उ.फा.	२,३,४		वैश्य	द्विपद	गौ	बुध	मनुष्य	आदि
हस्त.	१,२,३,४	कन्या	,,	,,	महिष	,,	देव	,,
चित्रा	१,२		,,	,,	व्याघ्र	,,	राक्षस	मध्य

नक्षत्र	चरण	राशि	वर्ण	वश्य	योनि	राशीश	गण	नाडी
चित्रा	३,४		शूद्र	द्विपद	व्याघ्र	शुक्र	राक्षस	मध्य
स्वाती	१,२,३,४	तुला	,,	,,	महिष	शुक्र	देव	अन्त्य
विशा	१,२,३		,,	,,	व्याघ्र	शुक्र	राक्षस	अन्त्य
,,	४		ब्राह्मण	कीट	व्याघ्र	मंगल	राक्षस	अन्त्य
अनु.	१,२,३,४	वृश्चि.	,,	,,	मृग	मंगल	देव	मध्य
ज्ये.	१,२,३,४		,,	,,	मृग	मंगल	राक्षस	आदि
मूल.	१,२,३,४		क्षत्रिय	द्विपद	श्वान	गुरु	राक्षस	आदि
पू.षा.	१,२,३,४	धनु	,,	,,	वानर	गुरु	मनुष्य	मध्य
उ.षा.	१		,,	,,	नकुल	गुरु	मनुष्य	अन्त्य
उ.षा.	२,३,४		वैश्य	जलचर	नकुल	शनि	मनुष्य	अन्त्य
श्रव.	१,२,३,४	मक.	,,	,,	वानर	शनि	देव	अन्त्य
धनि.	१,२		,,	,,	सिंह	शनि	राक्षस	मध्य
धनि	३,४		शूद्र	द्विपद	सिंह	शनि	राक्षस	मध्य
शत.	१,२,३,४	कुम्भ	,,	,,	अश्व	शनि	राक्षस	आदि
पू.भा.	१,२,३		,,	,,	सिंह	शनि	मनुष्य	आदि
पू.भा.	४		ब्राह्मण	जलचर	सिंह	गुरु	मनुष्य	आदि
उ.भा.	१,२,३,४	मीन	,,	,,	गौ	गुरु	मनुष्य	मध्य
रेव.	१,२,३,४		,,	,,	गज	गुरु	देव	अन्त्य

वर्णगुण चक्र (१)

कन्या \ वर	ब्राह्म.	क्षत्रि.	वैश्य	शूद्र
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

वश्यगुण चक्र (२)

कन्या \ वर	चतुष्पद	कीट	वनचर	द्विपद	जलचर
चतुष्पद	२	१	०	१	१
कीट	१	२	०	०	१
वनचर	०	०	२	०	१
द्विपद	१	०	०	२	½
जलचर	१	१	१	½	२

योनिगुण चक्र (४)

कन्या \ वर	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	३	३	३	१	३	०	२	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	१	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	२	२	२	२	०	२	२	१
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	३	३	२	३	२	२	१
मूषक	३	३	३	१	२	०	४	३	३	२	३	३	१	२
गौ	३	३	३	२	२	३	३	४	३	०	३	२	२	१
महिष	०	३	३	२	२	३	३	३	४	१	२	२	२	१
व्याघ्र	१	१	१	२	२	२	२	०	१	४	१	२	२	१
मृग	३	३	३	२	०	३	२	३	३	१	४	२	२	१
वानर	२	२	०	१	२	२	२	२	२	२	२	४	२	१
नकुल	२	२	२	०	२	२	१	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	२	२	२	१	१	२	१	२	२	४

गणगुण चक्र (६)

कन्या \ वर	देव	मनुष्य	राक्षस
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

नाडीगुण चक्र (८)

कन्या \ वर	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अंन्त्य	८	८	०

भकूट गुण चक्र (७)

कन्या \ वर	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धन.	मकर	कुम्भ	मीन
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

तारागुण चक्र (३)

कन्या \ वर	अ. म. मू.	भ. पू.फा. पू.षा.	कृ. उ.फा. उ.षा.	रो. ह. श्रव.	मृ. चि. ध.	आ. स्वा. श.	पुन. वि. पू.भा.	पु. अनु. उ.भा.	आश्ले. ज्ये. रेव.
अ. म. मू.	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३
भ. पू.फा. पू.षा.	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½
कृ. उ.फा. उ.षा.	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½	१½
रो. ह. श्रव.	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½	१½
मृ. चि. ध.	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½	१½
आ. स्वा. श.	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½	१½
पुन. वि. पू.भा.	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३	१½
पु. अनु. उ.भा.	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३	३
आश्ले. ज्ये. रेव.	३	१½	१½	१½	१½	१½	१½	३	३

राशीशमैत्री गुण चक्र (५)

कन्या \ वर	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	½	½
मंगल	५	४	५	½	५	३	½
बुध	४	१	½	५	½	५	४
गुरु	५	४	५	½	५	½	३
शुक्र	०	½	३	५	½	५	५
शनि	०	½	½	४	३	५	५

पृष्ठ १७ का शेष

वैधव्य, विधुरता, दारिद्र्य, चरित्रभ्रंश आदि किसी एक दोष या अनेक दोषों के कारण दाम्पत्य जीवन संकटमय हो सकता है। दाम्पत्य जीवन को अधिकाधिक सुख समृद्धिमय बनाने के लिए वर (लड़के) और कन्या के जन्म नक्षत्रों एवं जन्म कुण्डलियों के अनुसार मिलान करना बहुत ही आवश्यक है। मिलान करने के लिए नीचे लिखे चार पदार्थ (चीजें) अपेक्षित हैं।

(१) वर का जन्म नक्षत्र एवं नक्षत्र चरण
(२) वर की जन्म कुण्डली,
(३) कन्या का जन्म-नक्षत्र-चरण,
(४) कन्या की जन्मकुण्डली।

मिलान में वैसे तो विचारणीय छोटे-मोटे विषय अनेक हैं परन्तु उनमें से निम्नांकित दो विषय विचारणीय हैं—

(१) अष्टकूट
(२) मंगलीदोष

इन दोनों का विवेचन हम नीचे कर रहे हैं—

(१) अष्टकूट

अष्टकूट का अर्थ है—आठकूट। ये आठ कूट निम्नांकित हैं—

(१) वर्णकूट
(२) वश्यकूट
(३) ताराकूट
(४) योनिकूट
(५) राशीश मैत्री कूट अथवा ग्रह मैत्रीकूट
(६) गणकूट
(७) भकूट अथवा राशिकूट
(८) नाड़ीकूट

इन आठ कूटों का निर्णय वर-कन्या के जन्म नक्षत्रों से किया जाता है। वर्णकूट का एक गुण, वश्यकूट के २ गुण, ताराकूट के ३ गुण, योनिकूट के ४ गुण, राशिश मैत्री कूट के ५ गुण, गणकूट के ६ गुण, भकूट के ७ गुण तथा नाड़ीकूट के ८ गुण माने जाते हैं। इस तरह इन आठों कूटों के कुल गुण ३६ होते हैं। वर-कन्या के नक्षत्रों के अनुसार यदि कोई कूट ठीक न हो (अर्थात् दोषपूर्ण हो) तो उसके गुण या तो कुछ कम हो जाते हैं या ज्यादा दोष होने पर शून्य ही रह जाते हैं। इन आठों कूटों के गुणों को वर और कन्या के जन्मनक्षत्रों के अनुसार नीचे लिखी पद्धति से ज्ञात करके उनका योग कर लेना चाहिए। अगर इन आठों गुणों का योग १८ से कम हो तो उन [illegible] का विवाह-सम्बन्ध नहीं करना चाहिए।

वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी—इन छः कूटों के गुणों का ज्ञान नीचे लिखी पद्धति से करें—

पृष्ठ १७ पर दिए गए "नक्षत्र वर्णादि चक्र" से वर एवं कन्या के जन्म नक्षत्र और उसके चरण से उनके वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण एवं नाड़ी ज्ञात कर लें। तदनन्तर पृष्ठ १८ पर दिए गए वर्ण, गुण, आदि चक्रों (कोष्ठकों) से इनके गुण मालूम कर लें। जैसे—वर का नक्षत्र कृत्तिका और उसका चरण तीसरा है, पृष्ठ १७ पर दिए गए "नक्षत्र वर्णादि चक्र" में कृत्तिका के तीसरे चरण के आगे वर्ण-वैश्य, वश्य-चतुष्पद, योनि-मेष, राशीश-शुक्र, गण-राक्षस और नाड़ी-अन्त्य मिली: इसी प्रकार यदि लड़की का नक्षत्र चित्रा और चरण चतुर्थ हो तो इसी "नक्षत्र वर्णादि चक्र" में चित्रा के चतुर्थ चरण के आगे वर्ण शूद्र, वश्य द्विपद, योनि-व्याघ्र राशीश-शुक्र, गण राक्षस एवं नाड़ी मध्य मिली। अब पृष्ठ १८ पर दिए गए "वर्ण-गुण चक्र" आदि द्वारा वर और कन्या के इन वर्ण-वश्य आदि के अनुसार गुण ज्ञात किए जा सकते हैं, जैसे वर का वर्ण वैश्य, कन्या का वर्ण शूद्र है। इसलिए "वर्ण गुण चक्र" से हमें ज्ञात हुआ कि यहां वर्णकूट का गुण १ है। इसी प्रकार वश्य आदि कूटों के गुण भी ज्ञात कर लें।

ऊपर बतलाई गई पद्धति से केवल ६ कूटों के गुण ज्ञात होते हैं। शेष दो कूटों (ताराकूट और भकूट) के गुणों का ज्ञान पृष्ठ १८ पर दिए गए तारा गुण चक्र और 'भकूट गुण चक्र' से वर-कन्या के नक्षत्रों और राशियों के अनुसार एकदम मालूम हो जाते हैं।

इस प्रकार मालूम किए गए इन आठों कूटों के गुणों को जोड़ लेना चाहिए।

दोषपूर्ण कूटों के परिहार

राशीश मैत्री कूट, गणकूट, भकूट और नाड़ीकूट के दोषों के परिहार मुहूर्त शास्त्रों में लिखे गए हैं जो इस प्रकार हैं—

राशीश मैत्रीकूट दोष परिहार—अगर भकूट के गुण ७ मिलें, तब राशीश मैत्री कूट के दोष का परिहार हो जाता है। इसका परिहार होने पर राशीश मैत्री कूट के गुण ० हो तो तो २½, आधा हो तो ३, एक हो तो ३½, हो तीन तो ४½ चार हों तो ५ समझने चाहिएं।

गणकूट दोष परिहार—वर एवं कन्या के राशियों के स्वामियों या नवांश के स्वामियों की मित्रता हो तो गणदोष का परिहार हो जाता है गणदोष का परिहार होने पर गणदोष के गुण शून्य हों तो उसे ३, एक हो तो उसे ४, पांच हो तो उसे ६ समझना चाहिए।

भकूट दोष परिहार—वर-कन्या के राशियों के स्वामियों की मित्रता होने पर भकूट दोष का परिहार हो जाता है। भकूट-दोष का परिहार होने पर भकूट के ० गुण की जगह ५½ गुण समझें।

नाड़ीकूट दोष का परिहार—नाड़ीदोष का परिहार नीचे लिखी स्थितियों में होता है—

(१) वर एवं कन्या का जन्म एक ही नक्षत्र के भिन्न-भिन्न चरणों में हो।
(२) वर-कन्या की राशि एक हो तथा जन्मनक्षत्र अलग-अलग हों।

(३) वर-कन्या के नक्षत्र एक हों परन्तु राशियां भिन्न-भिन्न हों।

(४) पादवेध न हो,

यदि वर-कन्या के जन्म-नक्षत्रों के चरण प्रथम और चतुर्थ या द्वितीय और तृतीय हों, तो पादवेध कहलाता है। अर्थात्—यदि वर का जन्म किसी नक्षत्र के प्रथम चरण में तथा कन्या का जन्म किसी नक्षत्र के चतुर्थचरण में हो अथवा वर का जन्म किसी नक्षत्र के द्वितीय चरण में और कन्या का तृतीय चरण में हो तो पादवेध कहलाता है। इसी प्रकार कन्या का जन्म, नक्षत्र के प्रथमचरण में और वर का चतुर्थचरण में अथवा कन्या का जन्म द्वितीयचरण में, वर का जन्म तृतीयचरण में हो तो भी पादवेध कहलाता है। यदि इस प्रकार का पादवेध न हो तो नाड़ीदोष का परिहार माना जाता है।

नाड़ीदोष का परिहार होने पर नाड़ीकूट के ० गुण की जगह ४ गुण समझने चाहिएं।

ध्यान रहे, पृष्ठ १८ पर दिए गए वर्ण गुण आदि के ८ चक्रों से प्राप्त किए गए गुणों के योग में परिहारों से मिले गुण भी जोड़ देने चाहिएं। इस प्रकार प्राप्त गुणों का जोड़ यदि १६ से कम हो तो विवाह सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। यदि ये गुण १६ से अधिक हों तब उन दोनों की कुण्डलियों में मङ्गली दोष का विचार करने के बाद ही वर-कन्या का विवाह सम्बन्ध किया जा सकता है।

(२) मंगलीदोष

आठ कूटों के गुण यदि १६ से कम हों तो वर-कन्या का विवाह सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। यदि १६ से अधिक हों तो भी उनको सम्बन्ध करने की अनुमति ज्योतिषी को तब तक नहीं देनी चाहिए जब तक कि वह उन दोनों की कुण्डलियों में मंगलीदोष का विचार नहीं कर लेता।

यदि लग्न या चन्द्र से १, ४, ७, ८ या १२वें भाव में मंगल या कोई अन्यक्रूर ग्रह (शनि-राहु-केतु-सूर्य) पड़ा हो तो वह जातक मंगली कहलाता है। लग्न एवं चन्द्र से इन भावों में जितने अधिक क्रूरग्रह पड़े होंगे उतना ही मंगली योग (या मंगली दोष) प्रबल माना जाएगा। उन्हीं वर और कन्या का विवाह सम्बन्ध करना चाहिएं। जिनकी कुण्डलियों में मंगली दोष का बल समान हो। ध्यान रहे, सप्तमेश नीचस्थ या त्रिकस्थ (६, ८, १२ भावों में) हो तो भी मंगली जैसा ही योग बनता है।

मंगली दोष नीचे लिखी स्थितियों में भंग (समाप्तप्राय) या कम हो जाता है—

(i) मंगली योग बनाने वाले ग्रह पर गुरु या शुक्र की एकपाद, द्विपाद, त्रिपाद, तथा पूर्णदृष्टि होने पर मंगलीदोष क्रमशः $\frac{1}{2}, \frac{1}{3}, \frac{1}{4}$, एवं पूर्णतया समाप्त हो जाएगा।

(ii) सप्तमेश उच्चस्थ हो, तो मंगली दोष प्रायः समाप्त हो जाता है।

(iii) सप्तमेश पर गुरु या शुक्र की दृष्टि हो तो मंगलीदोष प्रायः नहीं रहता।

(iv) सप्तमभाव पर सप्तमेश की दृष्टि हो तो मंगली दोष काफी प्रभावहीन हो जाता है।

(v) यदि सप्तम भाव पर गुरु या शुक्र की दृष्टि हो तो भी मंगली दोष काफी कम हो जाता है।

(vi) यदि १, ४, ७, ८ या १२वें भाव में स्थित क्रूरग्रह सप्तमेश होकर अपने (सप्तम) भाव को देख रहा हो तो मंगलीदोष समाप्तप्राय हो जाता है।

(vii) नीचस्थ या त्रिकस्थ सप्तमेश यदि सप्तम भाव को देख रहा हो, तो उससे उत्पन्न होने वाला मंगली दोष दूर हो जाएगा।

(viii) यदि मंगलीदोष या मंगली जैसा दोष पैदा करने वाला ग्रह उच्चस्थ हो तो वह विशेष दोष कारक नहीं माना जाता।

इस प्रकार दोनों (वर-कन्या) की कुण्डलियों में मंगलीदोष और उसके परिहारों को विचारना चाहिए। यदि दोनों का मंगली दोष लगभग बराबर सा हो तो दोनों के सम्बन्ध की अनुमति दैवज्ञ को दे देनी चाहिए।

अब हम यहां मिलान का एक उदाहरण लेते हैं—

मान लीजिए—वर का जन्मनक्षत्र के चतुर्थचरण में तथा कन्या का जन्म उ० पा० नक्षत्र के तीसरे चरण में है। इन दोनों की कुण्डलियां निम्नलिखित हैं—

वर की कुण्डली

३ | १शु | रा. २गु. चं | १२ सू. | श. ४ | ५ | ११बु. | ६ | ८के. | १० | ७ | ९मं.

कन्या की कुण्डली

५ | ३ | ६ | ४श. | २रा. | ७गु. | १सू. बु. | ८के. | १०मं. चं. | १२शु. | ९ | ११

इन दोनों के जन्म नक्षत्रों के अनुसार आठ कूटों के गुण पूर्वोक्त प्रकार से इस तरह प्राप्त हुए—

कूट	गुण
वर्ण	१
वश्य	१
तारा	३
योनि	०
राशीश मैत्री	५
गण	६
भकूट	०
नाड़ी	०
गुणों का योग	=१६

यहां ८ कूटों के गुण जो हमें १८ पृष्ठ पर दिए गए चक्रों (कोष्ठकों) से मिले हैं, केवल १६ ही हैं। यहां नाड़ीदोष होने से नाड़ी का गुण ० है। क्योंकि वर-कन्या के जन्म-राशियों के स्वामी (शुक्र-शनि) परस्पर मित्र हैं, अतः पहले बतलाए गए नियम से नाड़ीदोष का परिहार हो जाता है, अतः इन १६ गुणों में ४ गुण और जोड़ लेने होंगे। इस तरह आठ भकूटों के वास्तविक गुण २० माने जाएंगे। गुणों की दृष्टि से तो यह मिलान ठीक है। अब केवल मंगलीक दोष का विचार करना बाकी है।

यहां वर की कुण्डली में मंगल लग्न एवं चन्द्र से आठवें है। इसलिए यहां काफी प्रबल मंगली योग है। यह मंगल सप्तमेश होकर [illegible] में बैठा है, इससे मंगलीयोग और भी प्रबल हो जाता है। लेकिन इसपर बृहस्पति की त्रिपाद दृष्टि है। इस मंगल पर शुक्र की भी त्रिपाद दृष्टि है। अतः यहां प्रबल मंगलीदोष भी काफी कम हो गया है। स्थूलरूप से हम कह सकते हैं कि मंगलीदोष यहां ७५ प्रतिशत के लगभग समाप्त है। यहां चन्द्र के साथ लग्न में राहु और सप्तम में केतु भी मंगलीदोष बनाते हैं, यहां केतु पर गुरु की पूर्ण तथा शुक्र की त्रिपाद दृष्टि है, अतः सप्तमस्थ केतु का दोष भी समाप्त हो जाता है। यहां सप्तम भाव पर भी गुरु की पूर्ण दृष्टि है। इससे भी मंगली दोष चिन्तनीय नहीं रहता। सारांश यह है कि वर की कुण्डली में मंगली दोष नगण्य रह गया है।

कन्या की कुण्डली में लग्नस्थ शनि, चन्द्र से सप्तम बैठा है। यह भी मंगली जैसा ही दोषकारक है। लेकिन शनि सप्तमेश है, जोकि सप्तमभाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है, अतः यह दोष कारक नहीं है। इसपर गुरु की एकपाद दृष्टि या शुक्र की त्रिपाद दृष्टि भी है। अतः यहां शनि का दोष काफी कम माना जाएगा।

यहां चन्द्र के साथ मंगल सप्तम भाव में है जोकि मंगलीदोष कारक है लेकिन इसपर बृहस्पति की त्रिपाद दृष्टि है तथा मंगल स्वयं उच्चस्थ भी है, अतः यह विशेष दोष कारक नहीं है। यहां पर चन्द्र से चतुर्थ भाव में स्थित सूर्य भी यद्यपि मंगली जैसा ही दोष बनाता है, फिर भी इसपर गुरु की पूर्णदृष्टि होने से यह दोष कारक नहीं रहता। इस प्रकार इस कुण्डली में भी मंगलीदोष नगण्य सा ही है। अतः इन दोनों का विवाह [illegible] करने की अनुमति बिना किसी संकोच से दी जा सकती है।

(१) [illegible] आठ कूटों के गुण जानने के लिए इस पंचांग में पृष्ठ १२४, १२५ पर 'मेलापक सारणी' दी गई है। ध्यान रहे, इस 'मेलापक सारणी' में नाड़ी दोष आदि के परिहारों से प्राप्त होने वाले गुण नहीं जोड़े गए हैं। परिहार से मिलने वाले गुण जोड़ने पर अष्टकूटों के गुणों का योग अधिक बढ़ माना जाता है।

(२) यदि किसी की जन्मपत्री न हो, जन्मसमय की ज्ञात न हो तब नाम नक्षत्र [illegible] उसी के आधार पर अष्टकूटों के गुण मालूम [illegible] कि वर और कन्या दोनों में से [illegible] दोनों के नाम नक्षत्रों से ही अष्टकूटों के [illegible] गुणमिलान [illegible] कभी नहीं करना चाहिए।

(३) अगर गुण अधिक हों तो वर एवं कन्या में से किसी एक का मंगली दोष दूसरे से थोड़ा बलवान् होने पर भी दोनों का सम्बन्ध किया जा सकता है।

नोट—अगले वर्ष के पंचांग में हम कुण्डली-मिलान के बारे में एक और विशेष लेख देंगे, जिसमें कई ऐसे नौ[illegible] दिए जाएंगे जिनसे वर एवं कन्या की कुण्डली के मंगलीदोष का बल प्रतिशत में निकाला जा सकेगा।

पृष्ठ ५ का शेष

'पुरुषार्थचिन्तामणि'कार ने स्पष्ट लिखा है—

'रविणा लंघितो मासः अनर्हः सर्वकर्मसु'—इत्यादि वचनानि क्षयमासात् प्राचीने संसर्पाख्ये असंक्रान्ते मासे न प्रवर्त्तन्ते, किन्तु उत्तराऽसंक्रान्तमास एव प्रवर्त्तन्ते।'

[अर्थात्—'रविलंघित मास (संक्रान्तिहीन मास) सभी कार्यों के लिए वर्जित है' इस प्रकार के जितने भी वचन हैं वे क्षयमास से पहले आने वाले संसर्पनाम के संक्रान्ति-हीन मास पर लागू नहीं होते, अपितु वे क्षयमास के बाद आने वाले संक्रान्तिहीन मास पर ही लागू होते हैं।]

इस प्रकार सभी जाबालि आदि ऋषियों एवम् माधव, कमलाकरभट्ट, अनन्तदेव, म०म० वाचस्पति मिश्र, वैद्यनाथ दीक्षित आदि निबन्धकारों ने संसर्प मास को एक स्वर से शुद्ध बतलाया है। इसके अनुसार सं० २०१९ वि० में आश्विन संसर्प सर्वथा शुद्ध है, उसे अधिमास मानना शास्त्रोल्लंघन है।

संसर्प को अधिमास मान लेने पर एक मास हमारे पंचाङ्ग से लुप्त हो जाता है। इस लुप्तमास को ये (संसर्प को अधिमास मानने वाले) लोग क्षयमास में मिला देते हैं, और क्षयमास को दो मासों का मिश्रण बना देते हैं, जिससे अनेक ऐसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं, जिनका समाधान सम्भव ही नहीं है। सं० २०३९ के उन पंचाङ्गों में, जिनमें आश्विन संसर्प को अधिमास माना गया है, क्षयमास माघ में पौषमास समाविष्ट कर दिया गया है, जिससे इन पंचाङ्गों में माघकृष्णपक्ष माघशुक्लपक्ष के बाद आया है। माघस्नान जो एक महीने तक चलता है, इन पंचाङ्गों के अनुसार समाप्त हो गया है, माघ और पौष के व्रत-पर्वों का हजारों वर्षों से चला आ रहा क्रम बुरी तरह बिगड़ गया है—इसी प्रकार की अन्य अनेकों अव्यवस्थाएं संसर्प को अशुद्ध मानने से उत्पन्न हुई हैं।

क्षयमास और संसर्प के विषय में परिपूर्ण जानकारी के लिए हमारा नया प्रकाशन—"क्षयाधिमास विमर्श" (पृष्ठ सं० २००, मूल्य २५ रु०) मंगवाइए। आप इसे पढ़कर पूरी तरह संसर्प को शुद्ध मानने के पक्ष में हो जाएंगे। इस पुस्तक में १५० वर्ष पुराने एक ऐसे पंचांग के दो मासों के पृष्ठों के चित्र भी दिए गए हैं, जिसमें आश्विन संसर्पमास में नवरात्र, दशहरा आदि व्रतपर्व लिखे हुए हैं। इस प्रमाणिक पुस्तक को पढ़ लेने पर आपको पूरी तरह स्पष्ट हो जाएगा, कि सं० २०३९ में सितम्बर अक्तूबर में दशहरा-दीपावली मनाने का निर्देश करने वाला मत ही एकमात्र शास्त्रीयमत है, इसे केवल श्री मार्तण्ड पंचांग के सम्पादकों का ही मत बतलाने वाला प्रचार सर्वथा भ्रामक है।

अधिकारी विद्वानों ज्योतिर्विदों एवं पंचांगकारों को यह बहुमूल्य पुस्तक उपहार के रूप में दी जा रही है, आप भी इस बारे में अपना संक्षिप्त परिचय देते हुए हमें इसके लिए पत्र लिख सकते हैं।

इन्दुशेखर शर्मा M.A.
मार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय,
मु० पो० कुराली
(रोपड़) पंजाब।

ग्रहण विवरण (सं. २०४० वि.)

संवत् २०४० वि. में भूमण्डल पर निम्नलिखित केवल तीन ग्रहण होंगे :—

(१) खग्रास सूर्यग्रहण (११ जून १९८३ ई०)
(२) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (२५ जून १९८३ ई०)
(३) कंकण सूर्यग्रहण (४ दिसम्बर १९८३ ई०)

उल्लिखित ग्रहणों में से केवल ११ जून १९८३ ई० वाला सूर्य ग्रहण ही भारत के एक थोड़े से भाग में (केवल अन्तिम दक्षिणी छोर पर) दिखाई देगा।

भारत में न दिखाई देने वाले शेष दोनों ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:—

(१) **खण्डग्रास चन्द्रग्रहण** (२५ जून १९८३ ई०)—यह ग्रहण भा. स्टै. टा. के अनुसार दिन के १२ बजकर ४५ मिनट पर प्रारम्भ होकर दोपहर के बाद ३ बजकर ० मिनट पर समाप्त होगा। जहां इस ग्रहण के समय रात्रि होगी, वहां अमेरिका आदि में यह ग्रहण दिखाई देगा, भारत में इस ग्रहण के समय दिन होने से **यह ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा।**

ग्रहण का फल—जहां यह ग्रहण दृश्य होगा वहां प्राकृतिक प्रकोप से खेती को हानि पहुंचेगी।

(२) **कंकण सूर्यग्रहण** (४ दिसम्बर १९८३ ई०)—यह ग्रहण दक्षिणी अमेरिका के उत्तरी छोर पर वेनेजुएला, सुरिनाम, गयाना, कोलम्बिया आदि में, कनाडा के पूर्वी भाग में, लगभग पूरी अफ्रीका, U. A. R., फ्रांस, स्पेन, इटली, ग्रीस में तथा रूस के पश्चिमी भाग में दिखाई देगा। यह ग्रहण पाकिस्तान के पश्चिमी छोर पर सूर्यास्त के समय प्रारम्भ हो रहा होगा। इस ग्रहण की कंकण-आकृति अफ्रीका के कांगो, केन्या, इथोपिया और सोमालिया देशों में देखी जा सकेगी।

ग्रहण फल—मुस्लिम देशों में विशेषत: पश्चिमी पाकिस्तान में आन्तरिक अशान्ति पैदा होगी, फ्रांस, स्पेन, इटली में राजनैतिक अशान्ति युद्ध आदि से वातावरण खराब हो।

भारत में दिखाई पड़ने वाले सूर्यग्रहण का विस्तृत विवरण

खग्रास सूर्यग्रहण (११ जून सन् १९८३ ई०)—यह ग्रहण ११ जून १९८३ ई० (ज्येष्ठ अमावस, शनिवार सं २०४० वि.) को मैलागासी, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, इण्डोनेशिया, मलाया, बर्मा, लंका, थाईलैण्ड, कम्बोडिया, फिलिपाइन्स में और चीन के कुछ दक्षिणी पूर्वी भाग में दिखाई देगा।

भारत के केवल केरल और मद्रास के अन्तिम दक्षिणी भाग में ही यह ग्रहण खण्डग्रास के रूप में दिखाई देगा। इस ग्रहण की खग्रास आकृति इण्डोनेशिया के कुछ द्वीपों में ही देखी जा सकेगी।

यहां भारत के मानचित्र का दक्षिणी भाग दिया गया है। इस चित्र पर अंकित 'उ म' रेखा के नीचे वाले भाग में (केवल केरल और मद्रास के दक्षिणी प्रान्त में) ही यह ग्रहण थोड़ी सी देर के लिए खण्डग्रास के रूप में देखा जा सकेगा। भारत के शेष किसी भी भाग में यह ग्रहण नजर नहीं आएगा। इस मान चित्र में ('——') इस प्रकार की टूटी हुई रेखाएं ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ) काल (भा. स्टै. टा.) और...इस प्रकार बिन्दुओं से बनी रेखाएं मोक्ष (समाप्ति) काल (भा. स्टै. टा.) बताती हैं। 'उ म' रेखा के नीचे (दक्षिण में) लंका की ओर इस ग्रहण का ग्रास और पर्वकाल उत्तरोत्तर बढ़ता जाएगा। भारत के इन प्रदेशों (केरल, मद्रास) में सूर्यबिम्ब दक्षिण की ओर से ग्रस्त दिखाई देगा। रामेश्वरम् में सर्वाधिक ग्रास होगा, लेकिन रामेश्वरम् में भी ग्रहण इतना कम होगा, कि बहुत ही सावधानी से देखने पर ही यह दिखाई देगा। **ग्रहण को नंगी नजर से न देखें।**

सूर्यग्रहण ११ जून १९८३ ई० (भा. स्टै. टा.)

नगर	प्रारम्भ प्रातः घं. मि.	ग्रहण मध्य प्रातः घं. मि.	ग्रहण समाप्त प्रातः घं. मि.	पर्वकाल मिनट
कन्याकुमारी	८।४६	९।७	९।२८	४२
कारिकाल	९।५	९।१४	९।२३	१८
क्वीलोन	८।५७	९।५	९।१४	१७
टुटिकोरिन	८।५०	९।९	९।२८	३८
तिरुनेलवेल्ली	८।५१	९।८	९।२६	३५
त्रिवेन्द्रम्	८।५१	९।७	९।२३	३२
नागपट्टिनम्	९।२	९।१३	९।२५	२३
नागरकायल	८।४७	९।७	९।२७	४०
मदुरै	९।४	९।१०	९।१६½	१२
रामेश्वरम्	८।५०	९।११	९।३२	४२
तिरुच्चेन्दूर	८।४७	९।८	९।२९	४२
देवीपत्तनम्	८।५२	९।१०	९।२८	३६
देव कोट्टै	८।५७	९।११	९।२५	२८
तिरुमंगलम्	८।५९	९।९	९।१९	२०

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक १० जून १९८३ ई० की सायं ८ बजकर ४५ मिनट (भा. स्टै. टा.) पर प्रारम्भ हो जाएगा। जहां यह ग्रहण दिखाई देगा, वहीं पर ग्रहण का सूतक माना जाएगा।

ग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण वृष राशि और मृगशिरा नक्षत्र वालों के लिए विशेष अशुभ, कुम्भ, तुला, मिथुन राशि वालों के लिए अशुभ, मेष, मकर, वृश्चिक, कन्या राशि वालों के लिए साधारण एवं शेष राशि वालों के लिए शुभ है।

ग्रहण का अन्य फल—केरल, मद्रास में वर्षा की न्यूनता से खेती को हानि पहुँचेगी अनाज महंगा हो।

ग्रहण विवरण (सं. २०४० वि.)

संवत् २०४० वि. में भूमण्डल पर निम्नलिखित केवल तीन ग्रहण होंगे :—

(१) खग्रास सूर्यग्रहण (११ जून १९८३ ई०)

(२) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (२५ जून १९८३ ई०)

(३) कंकण सूर्यग्रहण (४ दिसम्बर १९८३ ई०)

उल्लिखित ग्रहणों में से केवल ११ जून १९८३ ई० वाला सूर्य ग्रहण ही भारत के एक थोड़े से भाग में (केवल अन्तिम दक्षिणी छोर पर) दिखाई देगा।

भारत में न दिखाई देने वाले शेष दोनों ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:—

(१) **खण्डग्रास चन्द्रग्रहण** (२५ जून १९८३ ई०)—यह ग्रहण भा. स्टै. टा. के अनुसार दिन के १२ बजकर ४५ मिनट पर प्रारम्भ होकर दोपहर के बाद ३ बजकर ० मिनट पर समाप्त होगा। जहां इस ग्रहण के समय रात्रि होगी, वहां अमेरिका आदि में यह ग्रहण दिखाई देगा, भारत में इस ग्रहण के समय दिन होने से **यह ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा।**

ग्रहण का फल—जहां यह ग्रहण दृश्य होगा वहा प्राकृतिक प्रकोप से खेती को हानि पहुंचेगी।

(२) **कंकण सूर्यग्रहण** (४ दिसम्बर १९८३ ई०)—यह ग्रहण दक्षिणी अमेरिका के उत्तरी छोर पर वेनेजुएला, सूरिनाम, गयाना, कोलम्बिया आदि में, कनाडा के पूर्वी भाग में, लगभग पूरी अफ्रीका, U. A. R., फ्रांस, स्पेन, इटली, ग्रीस में तथा रूस के पश्चिमी भाग में दिखाई देगा। यह ग्रहण पाकिस्तान के पश्चिमी छोर पर सूर्यास्त के समय प्रारम्भ हो रहा होगा। इस ग्रहण की कंकण-आकृति अफ्रीका के कांगो, केन्या, इथोपिया और सोमालिया देशों में देखी जा सकेगी।

ग्रहण फल—मुस्लिम देशों में विशेषतः पश्चिमी पाकिस्तान में आन्तरिक अशान्ति पैदा होगी, फ्रांस, स्पेन, इटली में राजनैतिक अशान्ति युद्ध आदि से वातावरण खराब हो।

भारत में दिखाई पड़ने वाले सूर्यग्रहण का विस्तृत विवरण

खग्रास सूर्यग्रहण (११ जून सन् १९८३ ई०)—यह ग्रहण ११ जून १९८३ ई० (ज्येष्ठ अमावस, शनिवार स० २०४० वि.) को मेलागासी, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, इण्डोनेशिया, मलाया, बर्मा, लंका, थाईलैण्ड, कम्बोडिया, फिलिपाइन्स में और चीन के कुछ दक्षिणी पूर्वी भाग में दिखाई देगा।

भारत के केवल केरल और मद्रास के अन्तिम दक्षिणी भाग में ही यह ग्रहण खण्डग्रास के रूप में दिखाई देगा। इस ग्रहण की खग्रास आकृति इण्डोनेशिया के कुछ द्वीपों में ही देखी जा सकेगी।

यहां भारत के मानचित्र का दक्षिणी भाग दिया गया है। इस चित्र पर अंकित 'उ म' रेखा के नीचे वाले भाग में (केवल केरल और मद्रास के दक्षिणी प्रान्त में) ही यह ग्रहण थोड़ी सी देर के लिए खण्डग्रास के रूप में देखा जा सकेगा। भारत के शेष किसी भी भाग में यह ग्रहण नजर नहीं आएगा। इस मान चित्र में ('———') इस प्रकार की टूटी हुई रेखाएं ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ) काल (भा. स्टै. टा.) और... इस प्रकार बिन्दुओं से बनी रेखाएं मोक्ष (समाप्ति) काल (भा. स्टै. टा.) बताती हैं। 'उ म' रेखा के नीचे (दक्षिण में) लंका की ओर इस ग्रहण का ग्रास और पर्वकाल उत्तरोत्तर बढ़ता जाएगा। भारत के इन प्रदेशों (केरल, मद्रास) में सूर्यबिम्ब दक्षिण की ओर से ग्रस्त दिखाई देगा। रामेश्वरम् में सर्वाधिक ग्रास होगा, लेकिन रामेश्वरम् में भी ग्रहण इतना कम होगा, कि बहुत ही सावधानी से देखने पर ही यह दिखाई देगा। **ग्रहण को नंगी नजर से न देखें।**

सूर्यग्रहण ११ जून १९८३ ई० (भा. स्टै. टा.)

नगर	प्रारम्भ प्रातः घं. मि.	ग्रहण मध्य प्रातः घं. मि.	ग्रहण समाप्त प्रातः घं. मि.	पर्वकाल मिनट
कन्याकुमारी	८।४६	९।७	९।२८	४२
कारिकाल	९।५	९।१४	९।२३	१८
कयीलोन	८।५७	९।५	९।१४	१७
टुटिकोरिन	८।५०	९।९	९।२८	३८
तिरुनेलवेल्ली	८।५१	९।८	९।२६	३५
त्रिवेन्द्रम्	८।५१	९।७	९।२३	३२
नागपट्टिनम्	९।२	९।१३	९।२५	२३
नागरकायल	८।४७	९।७	९।२७	४०
मदुरै	९।४	९।१०	९।१६	१२
रामेश्वरम्	८।५०	९।११	९।३२	४२
तिरुच्चेन्दूर	८।४७	९।८	९।२९	४२
देवीपत्तनम्	८।५२	९।१०	९।२८	३६
देव कोट्टै	८।५७	९।११	९।२५	२८
तिरुमंगलम्	८।५९	९।९	९।१९	२०

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक १० जून १९८३ ई० को सायं ८ बजकर ४५ मिनट (भा. स्टै. टा.) पर प्रारम्भ हो जाएगा। जहां यह ग्रहण दिखाई देगा, वहीं पर ग्रहण का सूतक माना जाएगा।

ग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण वृष राशि और मृगशिरा नक्षत्र वालों के लिए विशेष अशुभ, कुम्भ, तुला, मिथुन राशि वालों के लिए अशुभ, मेष, मकर, वृश्चिक, कन्या राशि वालों के लिए साधारण एवं शेष राशि वालों के लिए शुभ है।

ग्रहण का अन्य फल—केरल, मद्रास में वर्षा की न्यूनता से खेती को हानि पहुंचेगी अनाज महंगा हो।

"फलित-शास्त्र के गूढ़ रहस्य"—

ग्रहयोग के फल का समय

जन्मकाल के अशुभ योग पर गोचर के अशुभ योग का दृष्टि वा स्थान-सम्बन्ध हो, तो उस भाव सम्बन्धी उस समय अशुभफल होगा। ऐसे ही जन्मकाल के शुभ योग पर गोचर के शुभयोग का दृष्टि वा स्थान सम्बन्ध हो तो उस समय उस भाव सम्बन्धी शुभफल वृद्धि, सुख आदि होगा। अर्थात् जन्मकुण्डली में कारक ग्रह से जो शुभाशुभ योग बना हो, उसी योगा योग स्थान पर गोचर भ्रमण के शुभाशुभ ग्रहों की दृष्टि अथवा उसी स्थान पर शुभाशुभ ग्रहों के भ्रमण से शुभाशुभ फल विचार कर कहे, ठीक चमत्कारी फल मिलेगा।

जन्मसमय में जन्मकुण्डली के ग्रह जिस राशि अंश में हो, उनसे गोचर भ्रमण के ग्रह का परस्पर योग जब उतने ही अंशों पर बने तभी उन योगों के शुभाशुभ परिणाम का फल ग्रहों के धर्म के अनुसार कार्य का लाभ हानि समझना चाहिए। पापग्रह बली हो या केन्द्रकोण के स्वामी हो राशिचार के समय भी शुभ स्थान में हो तो द्रव्य लाभ व सुखशान्ति मिलती है। केन्द्र-त्रिकोण एवं लाभस्थान के ग्रह का फल शुभ होता है, त्रिक में हानिकारक होता है।

ज्योतिष में अनेकों धन-दायक तथा भाग्यवृद्धि सूचक योगों का विवेचन है, जैसे—

गजकेसरी, रुचक, राजयोग, लक्ष्मी-योग आदि। अनेक जन्मकुण्डलियों में ऐसे योग होते हुए भी देखने में विपरीत फल दिखाई देता है। बहुत से जन्मपत्रों में निर्धन दुर्योग दिखाई देते हैं, फिर भी वे धनी है, इसका कारण क्या है? श्री पराशर मत के अनुसार इसका उत्तर यह है कि सारे ग्रहयोग तभी फलप्रद होते हैं, जब वह योग कारक ग्रहों की दशा के नक्षत्रों में हो।

जन्म कुण्डलियों में स्थितग्रह किस नक्षत्र और किस दशाधिपति के नेतृत्व में हैं,—यह ज्ञान ज्योतिष के विद्यार्थियों को होना परम आवश्यक है। उसका सूक्ष्म-दशाधिपति कौन है? कहीं योगकारक ग्रह स्वयं भी जन्मनक्षत्र से ३रे ५वें ७वें नक्षत्र में तो नहीं हैं यदि ऐसा है, तो शुभ योग उतने सफल नहीं होंगे, जितनी अपेक्षा रखी जाती है।

ध्यान रहे, कि—

कुण्डली के योगों के परीक्षण में सर्वप्रथम ग्रह किस नक्षत्र में है, इसका परिज्ञान कर उसके दशेश की विंशोत्तरी गणना के चक्र में देख लें, फिर जन्मलग्नानुसार योग-कारक ग्रह की दशा के नक्षत्र में वह ग्रह है या नहीं,-देख लें, तब फलादेश का निश्चय करें।

किसी भी भाव का स्वामीग्रह यदि त्रिकेश (६-८-१२) भाव के स्वामियों की दशा के नक्षत्रों में होगा तो उसभाव का अशुभ फल करेगा। यदि लग्न पंचम नवमेश की दशा के नक्षत्रों में,होगा तो शुभफल करेगा। सूर्य-चन्द्र को छोड़कर शेषग्रह दो राशियों के स्वामी होते हैं, ऐसी अवस्था में कोई ग्रह शुद्ध त्रिकोणेश की दशा के नक्षत्रों में हो तो शुभ, यदि ग्रह त्रिकेश व त्रिकोणेश (दोनों ही का एक) है तो पहले वह अपनी अशुभ राशि का फल देगा, फिर शुभ राशि का फल देगा, यह फल प्रत्येक लग्नानुसार भिन्न-भिन्न होगा अतः लग्नानुसार योग कारक ग्रहों की सूची निम्नलिखित है—

लग्नानुसार योग कारक		
	लग्न	योग कारक
१	मेष	सू.चं. गु.
२	वृष	सू.बु.श.
३	मिथुन	बु.शु.चं.
४	कर्क	गुरु.
५	सिंह	गुरु.
६	कन्या	गु.शु.
७	तुला	चं.बु.श.
८	वृश्चिक	सू.चं.गु.
९	धनु	सू.बु गु.
१०	मकर	बु.शु.
११	कुम्भ	बु.शु.
१२	मीन	चं.गु.

राहु तथा केतु यदि त्रिकोण में बैठे हों और केन्द्रेश से सम्बन्ध करें अथवा केन्द्र में बैठ कर त्रिकोणेश से सम्बन्ध करे तो वे भी योग कारक होते हैं अन्यथा जिस स्थान में जैसे ग्रहों के साथ होते हैं वे उसी प्रकार का शुभाशुभ फल देते हैं।

(१) मेष लग्न से गुरु भाग्येश, द्वादशेश होने पर भी भाग्येश है और योगकारक है। यह गुरु उत्तराषाढ़ा में होने से सूर्य की दशा के नक्षत्रों में हुआ। सूर्य मेष लग्न से योगकारक है। यहां गुरु यद्यपि दशा स्थान में मकर राशिस्थ होने के कारण नीच का है तथापि यहां गुरु योगकारक सूर्य की दशा के नक्षत्रों में होने के कारण शुभफल दायी है।

ऐसी अवस्था में चन्द्र-गुरु की प्रतियुति (परस्पर सप्तम) है और कर्क का चन्द्र यद्यपि पुनर्वसु के चतुर्थ पाद में है तो भी इस गजकेशरी योग का अतीव शुभफल होकर व्यक्ति लक्षाधीश बनेगा। अब यदि इसी योग में सूर्य भी मेष या सिंह का हो तो व्यक्ति और भी महाधनी होगा। मान लीजिए उत्तराषाढ़ा का गुरु धनराशि का स्वयं ही है और चन्द्र भी इसी के साथ हैं तो यह गुरु-चन्द्र युति से बना गजकेशरी योग उत्तम फलदायी होगा, क्योंकि ऐसी अवस्था में चन्द्र भी उत्तराषाढ़ा में ही होगा, जोकि मेष लग्न के योगकारक सूर्य के दशा नक्षत्रों में ही है।

यदि सूर्य पंचम भाव में सिंह का है और साथ में शत्रुग्रह शनि की उससे युति है तो स्वयं ही सूर्य की अपेक्षा शनि निर्बल होगा अतः शुभ फल ही होगा। यदि शनि सूर्य की युति दशम स्थान में मकर राशि की है तो शनि की अपेक्षा सूर्य के निर्बलत्व के कारण यह योग मध्यम फल देगा।

मानलो,-चन्द्र-मिथुन का और गुरु धनु का है दोनों की प्रतियुति हो रही है। चतुर्थेश भाग्येश की यह प्रतियुति के समय चन्द्र यदि मृगशिरा और पुनर्वसु नक्षत्र में जन्म समय में है और गुरु यदि पूर्वाषाढ़ा या उत्तराषाढ़ा में हो तो शुभफल ही देगा।

इसके विपरीत मेष लग्न में चन्द्र गुरु की प्रतियुति के समय चन्द्र मेष राशि का गुरु तुला का है। चन्द्र अश्विनी नक्षत्र अर्थात् केतु की दशा के नक्षत्र में और उधर गुरु स्वाती नक्षत्र में अर्थात् राहु की दशा के नक्षत्र में होने से गजकेशरी आदि शुभ योगों का शुभफल नहीं होगा, योग नष्ट हो जाएगा। क्योंकि मेष लग्न के योग कारक सू. चं. गु. इनके किसी भी दशा नक्षत्र में चन्द्र वा गुरु नहीं है। हां, राहु यदि केन्द्रस्थ है और उसके साथ मंगल का योग है तो इसी योग का मध्यम फल मिलेगा। या राहु त्रिकोणस्थ है और इसके साथ शुक्र का योग है तो शुभफल अवश्य होगा।

यदि इसके विपरीत ये गुरु और चन्द्र (कृतिका) सूर्य दशा के नक्षत्र व विशाखा में गुरु दशा के नक्षत्र में हो तो शुभ फल ही होगा।

(२) मेष-लग्न में मंगल हस्त में (चन्द्र दशा के नक्षत्र का) हो तो यह मंगल षष्ठ स्थान में होगा तो भी शुभ फलप्रद रहेगा। मंगल के साथ सूर्य की युति हो तो लग्नेश पंचमेश योग से राजयोग होगा। सूर्य यदि उत्तरा फाल्गुनी में हो वा हस्त में हो तो यह राजयोग षष्ठ भवन में भी श्रेष्ठ फलदायी होगा; क्योंकि ऐसी अवस्था में सूर्य स्वयं अपनी या चन्द्र के नक्षत्रों की दशा में होगा जो कि मेष लग्न के लिए योग कारक है।

(३) इसी तरह कुयोग 'काल सर्पादि' के अशुभ लक्षण भी योग कारक ग्रहों के दशा नक्षत्रों में आने से नष्ट हो जाते है जैसे वृश्चिक लग्न के एक सेठ की कुण्डली में तुला का राहु द्वादश में है मेष का केतु षष्ठ भवन में है और मध्य में सारे ग्रह आने से 'काल सर्प' नामक कुयोग बना है इसका फल है अल्पायु (निर्धनता) परन्तु राहु विशाखा अर्थात् गुरु की दशा के नक्षत्रों में है और केतु भरणी अर्थात् शुक्र की दशा के नक्षत्रों में है।

फलतः यह कुयोग नष्ट हो गया क्योंकि राहु गुरु पंचमेश या धनेश की दशा के नक्षत्रों में है और गुरु वृश्चिक लग्न में योग कारक भी है परन्तु शुक्र शुभ ग्रह तो है फिर भी सप्तमेश होकर मारक भी है अतः यह व्यक्ति चिरायु है पर शारीरिक कष्ट है धनाढ्य है पर अपने में असन्तोषी है।

(४) प्रत्येक ग्रह अपने लग्नानुसार कारक, योगकारकादि ग्रहों की दशा के नक्षत्रों में की गोचर में जब आता है तब तब अपने भावों का उत्तम फल करता है। इस तरह चाहे कोई योग हो या न हो परन्तु अपने मित्र के क्षेत्र में या उनकी दशा के नक्षत्रों में हो [illegible] है—यह बात सदा ध्यान में रखकर ही फलादेश कहना चाहिए। [illegible] ग्रह का सम्बन्ध दोनों के परस्पर ५ अंश के अन्तर पर आने [illegible] यदि एक ग्रह शुभ एवं एकग्रह अशुभ हो तो अधिक बली पर [illegible] विचार जन्मलग्न एवं चन्द्रलग्न दोनों ग्रह के अनुसार [illegible] कारक ग्रहों की युति शुभस्थान या धनेश के घर में हो [illegible] तो वह भी शुभफल देते है।

[illegible] यन्त्रों के अद्भुत चमत्कार

[illegible]

सूर्य यन्त्र

६	३२	३	३४	३५	१
७	११	२७	२८	८	३०
१९	१४	१६	१५	२३	२४
१८	२०	२२	२१	१७	१३
२५	२९	१०	[illegible]	२६	१२
३६	५	३३	४	२	३१

मन्त्र [illegible] नमः"

इस सूर्ययन्त्र को [illegible] कार्य सिद्ध होते है [illegible] को [illegible] तो धनैश्वर्य की वृद्धि और इच्छित कार्य सिद्ध होते है।

"गौ भैंस दूध देवे"

(मन्त्र) ॐ ह्रीं करालिनि पुरुष सुखं सुखं ठं ठः

विधि—इस मन्त्र को हरे घास या गुड़ पर १०८ बार अभिमन्त्रित कर खिलावें साथ ही नीचे लिखे यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर गौ के गले में और भैंस के सींग में गुग्गल की धूप देकर बांधे तो गौ बच्छा लगाने लगेगी और दूध ठीक देने लगेगी।

यन्त्र यह है—

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	५	३०	३१

देर से चली आ रही कुटुम्ब की गरीबी दूर करने का अनुभूत मन्त्र

ॐ क्लीं नन्दादि गोकुलत्राता दाता दारिद्रयभञ्जनः। सर्वमंगलदाता सर्व काम प्रदायकः। श्री कृष्णाय नमः।

विधि :—इस मन्त्र को शुभमुहूर्त में प्रारम्भ करें। प्रतिदिन नियमपूर्वक ५ माला श्रद्धा से भगवान् श्रीकृष्ण का ध्यान करके जप करता रहे। शीघ्र ही गरीबी दूर होकर ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। अनुभूत है।

"सुख प्रसव मन्त्र"

ॐ नमो भगवते मकर केतवे पुष्पधन्विने प्रतिचालित सकल सुरासुर चित्ताय युवती भगवासिने ह्रीं गर्भं चालय चालय स्वहा।

विधि :—इस मन्त्र से दूध को ११ बार अभिमन्त्रित करके स्त्री को पिला देवें तो बच्चे का जन्म सुखपूर्वक हो साथ ही इन तीस के यन्त्र को लाल चन्दन से लिखकर स्त्री को देखने को देवें।

यन्त्र

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

"सन्तान निरोधक तन्त्र"

आजकल महंगाता के जमाने में छोटा परिवार सुखदाई रहता है। इसके लिए सरकार की ओर से नसबन्दी आदि बहुत से उपाय बताये जाते है परन्तु उनसे दाम्पत्य सुख में कमी हो जाती है परन्तु निम्नलिखित तन्त्रों से ऐसा नहीं होता।

ऋतु स्नान के बाद प्रातः एरंड का एक बीज साबत ही निगल लेवे तो उस मास में गर्भ नहीं होता।

पलाश (ढाक) के बीज आक के दूध में खूब पीस कर गोला सा बना लें। किसी के बिच्छू आदि जहरीला जीव लड़ जावे तो तुरन्त काटे स्थान पर पानी में घिस कर इसे लगा दें, तुरन्त आराम होगा।

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(सं. २०४० में किन-किन दिनों में और कब कब यन्त्र-मन्त्र आदि की साधना करें ?)

हम प्रतिवर्ष इस पंचांग में लोकोपकारक यन्त्र मन्त्र एवं तन्त्रों के निर्माण और प्रयोग की विधियां देते आ रहे हैं। यन्त्र आदि की सिद्धि के लिए सामान्यतया सूर्य-चन्द्र ग्रहण का काल तथा दीपावली की रात्रि उपयोगी मानी जाती है, परन्तु साधना में विशेष रुचि रखने वाले व्यक्ति के लिए यह काल थोड़ा है। साधना के लिए ज्योतिष और धर्मशास्त्र की दृष्टि से बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा सूर्य-चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) का काल ठीक उतना ही महत्त्वपूर्ण माना गया है, जितना कि सूर्य चन्द्र ग्रहण का। संहिता तथा ज्योतिष ग्रन्थों में इस विषय के अनेक वचन उपलब्ध हैं। पुलस्त्य का कथन है कि — "स्नान-दान-जप-श्राद्ध-व्रत-होमादि-कर्मभिः। सुकृतं-चल-संक्रान्तौ अक्षय्यं पुरुषोऽश्नुते।" मुहूर्तचिन्तामणिकार ने भी यही बात कही है "दाने जपादौ बहु पुण्यदास्ते।" महापात (सूर्य-चन्द्र के क्रान्ति साम्य) के समय को तो तन्त्रादि की सिद्धि के लिए स्पष्ट रूप से ग्रहण के समान ही ऋषियों ने फलप्रद माना है। वशिष्ठ का वाक्य है—"महापातो वैधृतिश्च उपराग-समः सदा।" 'सूर्य सिद्धान्त' में भी लिखा है, कि महापात के प्रारम्भ और समाप्ति के मध्यवर्ती काल (ग्रहण काल के समान) विवाहादि शुभ कृत्यों में वर्जित हैं। परन्तु इस समय स्नान, दान और मन्त्र आदि का जप करने से सफलता मिलती है। "आद्यन्त-कालयोर्मध्ये कालो ज्ञेयोऽति दारुणः। प्रज्वलज्ज्वलनाकारः सर्व-कर्मसु गर्हितः। स्नान-दान-जप-श्राद्ध-व्रत-होमादि-कर्मसु॥ प्राप्यते सुमहच्छ्रेयः तत्काल-ज्ञानतस्तथा॥" आचार्य श्री भास्कर ने भी 'सिद्धान्त-शिरोमणि' में कहा है, कि यदि जप-अनुष्ठान आदि महापात के समय किया जाये, तो उस के फल की वृद्धि होती है— "पात-स्थिति-कालान्तमंगल-कृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान-जप-होम-दानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्॥" यन्त्र, मन्त्र, तन्त्रों की साधना में विशेष अभिरुचि वाले पाठकों के लिए हम यहां सं० २०४० की बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्य काल तथा महापात के प्रारम्भ और समाप्तिकाल भा. स्टॅ. टा. में दे रहे हैं। इन कालों में यन्त्र-तन्त्रों का निर्माण और मन्त्रों का जप प्रारम्भ कीजिए, और सिद्धि प्राप्त कीजिए। ध्यान रहे— प्रत्येक महापात का प्रारम्भ और समाप्ति काल जानने के लिए, चन्द्र ग्रहण के समान श्रम करना पड़ता है। एक वर्ष में महापात अधिक से अधिक २६ बार आता है। हम प्रतिवर्ष यह श्रमसाध्य गणित अपने साधक पाठकों के लिए पंचांग के इसी स्तम्भ में देते हैं।

सायन संक्रान्ति पुण्यकाल

प्रारम्भ		समाप्त	
तारीख १९८३ ई.	समय घ. मि.	तारीख १९८३ ई.	समय घ. मि.
२० अप्रै.	१५।२१	२१ अप्रै.	३।२१
२१ मई	१४।३८	२२ मई	२।३८
२१ जून	२२।३७	२२ जून	१०।३७
२३ जुलाई	९।३४	२३ जुला.	२१।३४
२३ अग.	१६।३६	२४ अग.	४।३६
२३ सितं.	१४।१०	२४ सितं-	२।१०
२३ अक्तू.	२३।२५	२४ अक्तू.	११।२५
२२ नवं.	२०।४८	२३ नवं.	८।४८
२२ दिसं.	१०।१	२२ दिसं	२२।१
२०जन.'८४	२०।३५	२१जन.'८४	८।३४
१९ फर.	१०।४८	१९ फर.	२२।४८
२० मार्च	९।५५	२० मार्च	२१।५५

नोट—(१) यहां सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल एवं क्रान्तिसाम्य का समय 'भारतीय स्टॅण्डर्ड टाईम' में दिया गया है।

(२) यहां क्रान्तिसाम्य का काल लगभग है।

क्रान्ति साम्य

प्रारम्भ		समाप्त	
तारीख १९८३ ई.	समय घ. मि.	तारीख १९८३ ई.	समय घ. मि.
२३ अप्रै.	८।६	२३ अप्रै.	१३।०
६ मई	१०।११	६ मई	१६।४५
१८ मई	२२।४	१९ मई	५।५
३१ मई	२०।४२	१ जून	७।४०
१३ जून	१९।२५	१४ जून	८।१४
२४ जून	१५।४४	२५ जून	९।२५
८ जुला.	१५।१४	९ जुला.	१।३२
२० जुला.	१८।३६	२१ जुला.	३।२०
३ अग.	१४।६	३ अग.	२०।४
१५ अग.	७।१९	१५ अग.	१२।५६
२६ अग.	१।५६	२८ अग.	७।५
९ सितं.	२२।३९	१० सितं.	२।५५
५ अक्तू.	१७।३६	५ अक्तू.	२१।५०
१८ अक्तू.	१८।३५	१९ अक्तू.	०।३
३१ अक्तू.	१०।४९	३१ अक्तू.	१६।६
१३ नवं.	४।४८	१३ नवं.	११।२१
२६ नवं.	२।३०	२६ नवं.	८।६
८ दिसं.	२०।१२	९ दिसं.	६।४९
२२ दिसं.	१०।१०	२२ दिसं.	२१।१४
१ जन. ८४	७।४२	१ जन. ८४	१७।५५
२७ जन.	४।३०	२७ जन.	११।३
९ फर.	२३।४३	१० फर.	५।८
२९ फर.	१८।२८	२१ फर.	२२।३०
५ मार्च	७।५३	६ मार्च	१२।२०
३१ मार्च	१५।२०	३१ मार्च	१९।३९

सावधान—यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप में सद्यः सफल बनाने के लिए शास्त्र-विहित-काल में ही साधना कीजिये, अन्यथा सिद्धि की अप्राप्ति से आगम-शास्त्र पर साधक की निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

नोट—ऊपर दिए गए क्रान्तिसाम्य के प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल लगभग हैं।

व्यापार-विमर्श (सं. २०४० वि.)

जीवन के सभी पहलुओं पर विचार करने से यह बात निस्सन्देह सत्य सिद्ध हो चुकी है, कि भाग्य में जितना आपको लाभ होना लिखा है, उतना ही होगा। भाग्य के द्वारा निर्धारित अधिकार से अधिक आपका परिश्रम एवं विद्या भी आपको नहीं दिला सकते —"भाग्यं फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम्।" मनुष्य की बुद्धि भी भाग्य के संकेत पर ही मनुष्य को हानि लाभ की ओर प्रेरित करती है। मनुष्य के भाग्य में हानि लाभ के संकेत को पढ़ने के लिए ग्रहगति का रहस्यात्मक-ज्ञान मनुष्य को ऋषियों से प्राप्त हुआ है। अतः व्यापार बढ़ाने से पहिले संभावित हानि से बचने के लिए अपनी व्यक्तिगत ग्रहगति को ध्यान में रखना परमावश्यक है, अपनी कुण्डली में नेष्टग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें, आपके लिए इस वर्ष जो ग्रह लाभप्रद है उससे सम्बन्धित वस्तु के व्यापार से लाभ ले सकते हैं। अतः वर्षारम्भ में ही जन्मपत्र भेजकर व्यापारिक दृष्टि से विचार करा लेना आवश्यक है।

संवत् २०४० में शनि, राहु, मंगल, यूरेनस, नेपच्यून और प्लूटो आदि के चार एवं युति, प्रतियुति के आधार पर यह स्पष्ट घोषणा की जाती है, कि इस साल व्यापारिक जगत में विशेष उथल-पुथल होगी। अनाजों में भयंकर तेजी मन्दी आएगी, बरसों, तिल तेल, घी, रुई, गुड़, खाण्ड एवं रेयान आदि के भावों में भी जबरदस्त उतार-चढ़ाव आयेंगे। कहने का तात्पर्य यह है, कि इस वर्ष व्यापारिक क्षेत्र में रंक से राजा एवं राजा से रंक बना देने वाले विशेष योग हैं, अतः धार्मिक ग्राहक बनकर समय-समय पर ताजा परामर्श प्राप्त करके उत्तम लाभ प्राप्त कर सकेंगे। इस वर्ष ग्रहचाल के खिलाफ चलने वाले व्यापारी भारी हानि में रहेंगे। नोट कर लें।

'व्यापार विमर्श' में हम ग्रहचाल के मुताबिक सभी व्यापारियों को सावधान करते रहे हैं, गतवर्ष भी हजारों व्यापारी सोना, चांदी एवं अन्य जिन्सों में लाभ उठा चुके हैं, ताजा परामर्श प्राप्त करके हमारे ग्राहक व्यापारी लाखों का लाभ उठा गए है। इस वर्ष भी इस सं० २०४० में ग्रहगति के अनुसार तेजी मन्दी की विशेष लाईनों का संकेत यहां देने तथा सम्बन्धित तेजी मन्दी का भी विवेचन करेंगे। फिर भी व्यापारियों से आग्रह है, कि वे निम्नांकित हिदायतों को ध्यान में रखते हुए अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करने के लिए आगे बढ़ें।

सट्टा-व्यापारियों के लिए हिदायतें

(१) सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें, जितनी साधारणतया हानि उठाने की सामर्थ्य हो। (२) सदैव ध्यान रखें, कि अपना व्यापार में नुकसान की लिमिट बांध कर काम करें, स्थायी नुकसान व घबराहट से बच जाओगे, तब नुकसान पे सौदा काट देना अक्लमंदी है। (३) व्यापार करते समय ध्यान रहे — कि सबसे पहले अपने मन में व्यापारिक बाजार के साथ-साथ ग्रह-गति के आधार पर निर्णय कर लें, कि उस समय इस वस्तु में मोटी तेजी का है या मोटी मन्दी का ? मन में यह धारणा बांध कर बाजार का रुख देखें। यदि व्यापार की लहर तेजी की चल रही हो तो हमारे परामर्श से तेजी का व्यापार करके लाभ उठावें। (४) यदि यह योग भी मन्दे का हो और बाजार में मन्दी के मोटे कारण भी दिखलाई देने लगें और व्यापार के वक्त भी बाजार का रुख मन्दे का हो तो ऐसी स्थिति में हर बढ़े भाव में बेचान करते रहिए, थोड़ा-थोड़ा सौदा काट कर नफा से गुलटते रहिए।

(५) व्यापार की लहर तेजी की है या मन्दी की ? यह जानने के लिए 'खास' वस्तु के भावों को देखना चाहिए। यदि उस वस्तु में हर तीसरे चौथे आठवें दिन मन्दी के या तेजी के नए २ भाव आते चले जाएं, जैसे तीसरे दिन नया भाव मन्दी का आवे तो जान लो, कि वस्तु में अब मन्दे की लहर चल रही है, उसे मन्दे के उछाले में बेच दें। (६) यदि मन्दी के भाव छूटते चले जाएं और तेजी के भाव तीसरे या चौथे दिन नए बनते जाएं तो समझ लें, कि तेजी की लहर चल रही है, ऐसे समय जब ग्रहचाल से भी तेजी नजर आए तो तेजी का व्यापार करके प्रायः लाभ उठाया जा सकता है। (७) बाजार के खिलाफ कभी काम न करें। मानलो, आपने तेजी का काम किया, उधर सौदा करते ही बाजार में मन्दे की लहर चल रही हो तो किसी भी समय तेजी का उछाला आते ही सौदा खत्म कर दो, बड़े नुकसान से बच जाओगे। हमेशा ग्रहयोग को आधार मान कर और बाजार के रुख को ध्यान में रखते हुए अपनी पाराशरी शुभदशा में व्यापार से अच्छा लाभ उठाया जा सकता है। इसके विरुद्ध खोटी ग्रहस्थिति वाले व्यापारियों को वायदे का व्यापार भूलकर भी नहीं करना चाहिए, क्योंकि भारी हानि हो सकती है, सट्टा तो सितारे का साथी है। अतः समयानुसार पत्र द्वारा अपनी दशा के अनुसार हमारे सुझावों द्वारा लाभ उठा सकते है।

इस वर्ष ग्रीष्म सस्यजातक कुण्डली के अनुसार गेहूं, जौं, चना आदि की फसल को प्राकृतिक प्रकोप से हानि पहुंचेगी, जिससे व्यापारिक क्षेत्र विशेषतः प्रभावित होगा। शरत् सस्यजातक कुण्डली के अनुसार मूंग, मोठ, बाजरा आदि में भी अच्छे उतार-चढ़ाव आएंगे, समय पर ताजा परामर्श प्राप्त करना आवश्यक है।

ग्रहों के अध्ययन से इसवर्ष जो तेजी या मन्दी का विचार बना है, वह व्यापारियों की सुविधा के लिए नीचे दे रहे हैं, ईश्वर कृपया विचारपूर्वक काम करके वे अवश्य लाभ ले सकेंगे।

अप्रैल—४ अप्रैल को बुध अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में प्रविष्ट होगा, मेष राशि में मंगल अस्त होकर बैठा है, साथ ही बुध भी अस्त है। बुध-मंगल पर वक्री शनि की पूर्ण दृष्टि है। बुध जब भी अशुभ ग्रहों के साथ मेल करता है तभी यह क्रूर ग्रह भी वैसा ही व्यवहार करता है अतः शनि-मंगल के साथ बुध का सम्बन्ध बाजारों में तेजी कारक ही रहेगा। गेहूं, ज्वार, बाजरा, जौं, चना एवं अलसी, गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, तिल तेल में तेजी का ही रुख रहेगा, चांदी में अच्छी घटा बढ़ी बनेगी। ८ अप्रैल को गेहूं, चना, जौं, ज्वार, बाजरा में अचानक तेजी का उछाल आएगा, इस समय तेजी से लाभ ले सकते हैं।

ध्यान दें, साथ ही ८ अप्रैल को शुक्र वृष राशि में आकर वृहस्पति की दृष्टि में आ जाता है। वृष राशि शुक्र की अपनी राशि है। शुक्र खास तौर पर गुड़, खाण्ड, कपास, रूई एवं चांदी के बाजारों पर अपना प्रभाव रखता है। शुक्र पर वृहस्पति की दृष्टि होने से फसल की पैदावार अच्छी होने की अफवाह मे बाजार का रुख मन्दे का बनेगा। रूई-कपास एवं अनाजों में अच्छी मन्दी बन जाने का योग है, साथ ही सोना-चांदी के बाजारों में भी अच्छी घटा बढ़ी बनेगी, तेजी में रहने वाले हानि में रह सक्ते हैं। इस समय बारदाना खाण्ड एवं तिलहन में भी मन्दे का रुख बनेगा। ११ अप्रैल को भरणी नक्षत्र का बुध गेहूं, चावल आदि अनाजों में तेजी बनाएगा।

१४ अप्रैल को मेष संक्राति होने पर सूर्य, मंगल, बुध तीनों पर शनि की दृष्टि है, बुध, सूर्य के साथ मिलकर विशेष तेजी का वातावरण बना देता है, अतः १४ अप्रैल से रूई, कपास, सूत, घी, तिल, तेल, सरसों, अलसी, नारियल, सुपारी, बादाम, सोना-चांदी, मेथी, लौंग एवं अनाजों में तेजी का वातावरण रहेगा। इस मास में मेष संक्रान्ति एवं अमावस दोनों गुरुवारी हैं, यह एक प्रकार का खप्पर योग बनता है, कुछ स्थानों पर खड़ी फसल को नुकसान होगा जिसका प्रभाव ज्यादा व्यापार पर होगा। १६ अप्रैल से लगभग २० अप्रैल तक बाजारों का रुख मन्दे की ओर रहेगा। विशेषतः अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, रूई, कपास, चांदी में भी मन्दे का रुख रहेगा। २१ अप्रैल से कुछ तेजी का ट्रेण्ड बनेगा।

ध्यान दें—२५ अप्रैल को बुध के वृष में आने पर गेहूं, जौं, चना, चावल, मटर, रूई, कपास, सूत, अफीम, तिल, तेल आदि के भाव मे अच्छी तेजी या मन्दी बन जाने की आशा है, क्योंकि वृष राशि के शुक्र के साथ बुध का योग विशेष तेजी या विशेष मन्दी लाया करता है। वैसे बुध, शुक्र की राशि मे मन्दा ही करता है। जब भी बुध, मकर-कुम्भ, वृष-तुला, कन्या-मिथुन राशियों में अकेला भ्रमण करता है तो अनेक प्रकार की अफवाहों से बाजारों में मन्दे का रुख बना देता है। यदि पहिले मन्दा चल रहा हो तो नोट कर लें कि २५ अप्रैल से व्यापारिक वस्तुओं में जोरदार मन्दा बनेगा, अगर बाजार तेजी में हो तो ध्यान रखें कि बुध-शुक्र योग से बाजारों में जोरदार तेजी आएगी। इस समय विचारपूर्वक काम करके अच्छा लाभ उठा सकेंगे। लेकिन हमारा विचार इस समय गुड़, खाण्ड, रूई, कपास, पाट बारदाना, तिलहन और चांदी में विशेष तेजी का नहीं, क्योंकि शुक्र-बुध पर वृहस्पति की पूर्णदृष्टि है। तेजी में न रहें तो अच्छा रहेगा। २७-२८ अप्रैल को रूई और अलसी में कुछ मन्दा, धातुओं में, अनाजों, तिलहन एवं रसकस में कुछ तेजी रहेगी।

[३० अप्रैल को शुक्र और राहु की अंशात्मक युति को विशेष ध्यान में रखें, राजनैतिक गतिविधि का प्रभाव व्यापारिक क्षेत्रों पर होगा। इस समय गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों, अलसी, एरण्ड, तिल, तेल, घी एवं गेहूं, चावल, जौं आदि अनाजों में और चांदी, कपास, में जोरदार तेजी आने की आशा है।]

मई—२ मई को बुध और नेपच्यून वक्री हो रहे हैं। बाजार का रुख बदलेगा। चान्दी और शेयरों में विशेष तेजी आएगी। रूई, कपास, सूत में भी कुछ तेजी बने। लेकिन तुरन्त कृत्तिका नक्षत्र का मंगल एवं बुध का पश्चिम में अस्त होना साथ ही शुक्र का वृष राशि में आना रूई, कपास आदि में मन्दा करेगा। क्योंकि बुध वक्री हो कर अस्त हुआ है अतः गेहूं, मूंग, मोठ, चना, चावल में तेजी रहेगी। शेयरों में मन्दा रहेगा।

७ मई को मंगल, वृष में आकर रूई, कपास, जूट, चांदी, सोना एवं शेयरों के बाजार में, वृहस्पति की दृष्टि होने से तेजीकारक नहीं रहेगा। गुड़, रसकस, कपूर, केसर, ताम्बा आदि में साधारण तेजी सम्भव है। [८ मई को बुध वक्री होकर मेष में आ जाता है। जब बुध वक्री होकर सूर्य के साथ मेल करता है तो बाजारों में जबरदस्त तेजी ला देता है, यहां वक्री बुध सूर्य के साथ मेल कर रहा है तथा शनि की पूरी नजर भी है अतः व्यापारी नोट कर लें कि यह चांस इस वर्ष उनके लिए काफी लाभप्रद हो सकता है, हमारे विचार से तिलहन बाजारों में जोरदार तेजी आ जाने का है।] ९ मई को शुक्र के आर्द्रा में आने पर चांदी, कपास एवं अनाजों में मन्दा चलेगा। लेकिन नोट करें, कि ११ मई को सूर्य कृत्तिका एवं राहु मृग शिरा ३ में आता है अतः रूई, कपास, चांदी, सोना, पाट बारदाना तिलहन एवं बिनौला में भारी तेजी आने की आशा है।

१५ मई को वृष संक्रान्ति के बाद सूर्य-मंगल के मेल से वायदा व्यापार कुछ प्रभावित होगा, चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रूई, बादाम, सुपारी, नारियल, तिलतेल, सरसों, आदि तेज होंगे। जौ, चना, गेहूं, मटर, अरहर, मूंग, चावल में कुछ मन्दी आएगी। ध्यान दें, १५ मई को वृहस्पति एवं यूरेनस की युति कुछ तेजीकारक ही रहेगी।

इस मास में सूर्य पीछे है, मंगल आगे चल रहा है, अतः वर्षा की खींच रहने से भी व्यापारिक वस्तुओं मे तेजी का संचार रहेगा। **"भौमस्य पृष्ठतो याति भानुश्चेज्जल शोषकः। भवत्यत्र न संदेहो विपरीतो जलप्रदः।"**

२० मई को अनुराधा ३ में वक्री वृहस्पति के आने पर एवं २१ मई को शुक्र के पुनर्वसु में आने पर सोना, चांदी, रूई, सूत, कपास में मन्दे का वातावरण रहेगा। २५ मई को मंगल के रोहिणी में आने पर तथा बुध के उदित होने पर रूई, कपास, सूत, वस्त्र-रेशम, सरसों, तिल तेल, लाल मिर्च, पाट हेसियन हींग और शेयरों में तेजी आती है। २६ मई को सावधानी से काम लें, अचानक बाजार का रुख बदलने का योग है। २६ मई को बुध के मार्गी होने पर रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, एवं कपूर, चन्दन आदि में भी मन्दे का रुख बनेगा।

नोट करें—कभी-कभी अकेला शुक्र ही बाजारों में उत्तम तेजी या मन्दी ला देता है लेकिन २१ मई को कर्क राशि के शुक्र को शनि देख रहा है, कर्क राशि के शुक्र पर वृहस्पति की भी दृष्टि है। अतः गुड़, खाण्ड, रूई, कपास, पाट, बारदाना, तिलहन, चांदी आदि में अच्छी घटाबढ़ी के बाद तेजी प्रधान रहेगी।

आगे १ जून को मंगल-सूर्य की युति का प्रभाव भी ३१ मई को बाजारों पर भी हो सकता है। विचारपूर्वक कार्य करें।

जून—१ जून को मंगल और सूर्य की अशात्मक युति होगी, इस युति का प्रभाव व्यापारिक वस्तुओं पर प्रायः तेजी कारक ही रहेगा। गेहूं, चना, चावल, आदि अनाज, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं जूट एवं चांदी, सोना, रूई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, तेल, अनाज, सोना, शेयर, हल्दी और काली मिर्च में तेजी बनेगी। ३ जून को पुष्य नक्षत्र का शुक्र रूई, सूत, सण, रेशम, ऊन व धान्य में तेजी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में साधारण मन्दे का रुख बनेगा। ८ जून तक बाजारों में साधारण तेजी मन्दी चलेगी। ८ जून से सूर्य मृगशिरा में एवं बुध वृष राशि में आता है और इसी दिन प्लूटो चित्रा ३ में प्रविष्ट होगा, रूई में कुछ मन्दी होकर पीछे से तेजी आएगी। गेहूं जौ, चना, चावल, रूई, कपास, सूत, तिल तेल के भाव में तेजी आएगी १० जून को मृगशिरा नक्षत्र में मंगल के दाखिल होने पर तिल और चांदी में तेजी आएगी। रूई में पहले मन्दी होकर फिर तेजी, अन्य व्यापारिक वस्तुओं का झुकाव प्रायः मन्दे की ओर रहेगा। १२ जून को मिथुन राशि में चन्द्रदर्शन, एवं चन्द्रमा का [illegible] शूल की भांति होने से प्रत्येक वस्तु में तेजी का सूचक है। १५ जून को मिथुन संक्रान्ति के बाद कन्दमूलफल पाट बारदाना रेशम, कपास, रूई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूंग, उड़द, गेहूं, चना, चावल आदि प्रत्येक [illegible] के अनाजों में तेजी हो, सोना, चांदी में भी तेजी का रुख रहे। १६ जून को [illegible] आता है, सोना, चांदी, अनाज, रूई, [illegible] अनुराधा २ में आ जाता है, सोना, चांदी, अनाज, रूई, [illegible] में मन्दा बनेगा। १७ जून को बुध रोहिणी में आकर ऊनी [illegible] मन्दा बनेगा। [illegible] तेजी के बाद मन्दी आए। रसकस एव तिल-[illegible] में मन्दी, रूई में भी तेजी के बाद मन्दी आए। [illegible] में तेजी रहेगी।

[illegible] मिथुन राशि में आकर व्यापार में तेजी-मन्दी की लाईन [illegible] १८-१९ जून को बादल वर्षा [illegible] वर्षा की कमी (खंड) रहेगी [illegible] एक तरफा लाईन बनेगी। अगर बाजार [illegible] उत्तम लाभ प्राप्त करेंगे, अगर [illegible] निश्चय ही जबरदस्त मन्दा [illegible] अधिकतर तेलवाला, [illegible] याद रखें १९ जून [illegible] हमारे विचार से उत्तम तेजी [illegible] प्राप्त करें। [illegible] आने का विचार है। [illegible] अल्पकाल में ही [illegible] अलसी, चावल, [illegible] वर्षा की कमी [illegible] जून तक बाजार [illegible] व्यापार में तेजी से उत्तम लाभ प्राप्त कर सकते हैं। [illegible]

नक्षत्र में रहने से अनाजों में एक मास में ही अच्छी तेजी की सूचना मिलती है—
"रौद्र नक्षत्रगावेतौ यदि सूर्य महीसुतौ। मासं समर्घतां यान्ति धान्यानि स्वच्छतां पुनः॥
२५ जून को मृगशिरा का बुध चांदी, गेहूं, तिल, सरसों, उड़द में मन्दी का संचार होगा। इस पक्ष में सू. मं. रा. के मिथुनस्थ होने से राजनैतिक गतिविधि का प्रभाव व्यापार पर पड़ेगा। शासकीय गतिविधि को भी ध्यान में रक्खें।

२८ जून को बुध अस्त होकर मिथुन राशि में प्रविष्ट होता है। मिथुन राशि में मं० रा० सू० पहिले ही बैठे हैं अतः अनाज, घी, रूई, चांदी, सोना में पहले तेजी बीच में मन्दी फिर तेजी अन्त में तेजी रहेगी। क्रूर ग्रहों के साथ बुध का योग बाजारों में चली आ रही लाईन को और बढ़ावा देती है, हमारे विचार से तेजी का काम करने वाले कमाई कर लेंगे। तेजी ज्यादा नहीं ठहरेगी, जल्दी ही नफा लेकर सौदा काट देने में ही लाभ है। गेहूं, चना, चावल, गुड़, खण्ड, लाल मिर्च, तिल, तेल, घी आदि में अच्छी तेजी से लाभ लेने का चांस है। मासान्त में बाजार मन्दे के रहेंगे।

जुलाई—जुलाई मास के आरम्भ से मध्य तक बुध अतिचारी रहता है तथा सूर्य, राहु, मंगल, साथ में है, अतः सभी बाजारों में जबरदस्त तेजी आएगी, व्यापारी विचारपूर्वक काम करके मोटा नफा कमा सकते हैं—२५ जुलाई तक जब भी अच्छा नफ़ा मिले, ले लें। तिलहन एवं अनाजों के व्यापारी विशेष लाभ ले सकेंगे। लेकिन ध्यान दें कि—मास के प्रारम्भ में ही शुक्र सिंह में प्रवेश करता है, सिंह का शुक्र पहले मन्दी करता है। इस समय व्यापारियों को विशेष सावधानी से काम लेना है क्योंकि खाण्ड, रूई, कपास, चांदी, तिलहन में मन्दे का ट्रेण्ड बनेगा। अगर इस समय मन्दा बने तो स्टाक करें, आगे उत्तम लाभ का चांस आने वाला है। अनाज के व्यापारी इस समय स्टाक करके आगे उत्तम लाभ प्राप्त करेंगे, ताजा परामर्श प्राप्त करें—नोट कर लें। २ जुलाई को शनि मार्गी हो जाता है, ६ दिन में रूई में अच्छी मन्दी आकर फिर तेजी का रुख बनेगा। तिलहन एवं अनाजों में भी कुछ मन्दा आ सकता है। [३ जुलाई को मंगल एवं बुध का अंश साम्य होगा, बुध अतिचारी भी है। इस अंशयुति का प्रभाव सट्टा बाजार पर पड़ेगा, सोना, चांदी एवं गुड़, खाण्ड, घी, में [illegible] तेजी से लाभ ले सकेंगे। ८ जुलाई को वेंकटेश (प्लूटो) मार्गी होगा, शनि-वेंकटेश दोनों तुला में ही हैं, तुला राशि वायदा व्यापार की राशि है, अरः सरकारी नीति से सट्टे के व्यापार पर असर पड़ सकता है, वायदा के व्यापारी सावधान रहें इस समय राजनैतिक गतिविधि को ध्यान में रखकर काम करें। हमारे विचार से तो वायदा बाजारों में काम बढ़ेगा, सरकार बन्धन हटाएगी, तेलवाला, रूई, कपास में [illegible] ८ जुलाई के लगभग तेजी मालूम देती है।]

५ जुलाई को ही बुध पुनर्वसु में आता है, ९ जुलाई को सूर्य-बुध की युति भी है। बुध जुलाई के प्रारम्भ से ही अतिचारी है, अतः राजनैतिक दृष्टि से समय कुछ उलझन पूर्ण है, व्यापार भी सामयिक गतिविधि से प्रभावित हो सकता है। चांदी चावल में मन्दा आने की आशा है।

१२ जुलाई को बुध, कर्क में एवं १३ जुलाई को राहु वृष में एवं केतु, वृश्चिक में आता है, एवं बुध-केतु पर गुरु की पूर्ण दृष्टि है—मामूली तेजी आकर फिर मन्दा आएगा, अनाज एवं तिलहन में मन्दा आते ही स्टाक करने पर आगे उत्तम लाभ प्राप्त कर सकेंगे। १६ जुलाई को कर्क संक्रान्ति शनिवार को है, आगे मगर संक्राति भी शनिवार पड़ेगी—यह योग नेष्ट है, खड़ी फसल को नुकसान होगा, किसी भाग में दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी, राजनैतिक विशेष घटनाचक्र का प्रभाव व्यापार पर पड़ेगा। हमारे विचार से शनिवारी कर्कसंक्रान्ति रूई, सूत, बादाम, सुपारी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, चना, जौ, मटर, अरहर, उड़द, मूंग, चावल में तेजी बनेगी। २० जुलाई तक तेजी प्रधान रहेगी।

२१ जुलाई को बुध पश्चिम में उदय होता है, आगे श्रावण में शुक्र अस्त होगा—यह योग अनाज के व्यापारियों के लिए सर्वोत्तम है, जिनके पास स्टाक है, वे आगे भयंकर तेजी आने से मोटा नफ़ा कमाएगे—इसमें सन्देह नहीं "आषाढ़मासे यदि शुक्ल पक्षे चन्द्रस्य पुत्रोऽभ्युदयं करोति। शुक्रस्तु चेच्छ्रावण मासि चास्तं धान्य सुवर्णेन समं तदा स्यात्।" इस चांस से हाजर के व्यापारी लाभ लेंगे।

२६ जुलाई को वक्री नेपच्यून मूल १ में तथा २८ जुलाई को मघा सिंह में बुध, साथ ही २९ जुलाई को गुरु मार्गी होता है। वायदा बाजार की लाईन बदल सकती है, फिर भी व्यापारी ध्यान दें, कि बुध सिंहराशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा, यदि बाजार में मन्दा चले तो जोरदार मन्दा आएगा, अगर तेजी चले तो जोरदार तेजी आएगी—यह विचार में रखते हुए काम करें। हमारे विचार में मन्दा आ सकता है। नोट—२८ मार्च से २८ जुलाई तक गुरु वक्री चला है तथा २७ मार्च से १ अगस्त तक मंगल अस्त रहता है। अतः गुरु के मार्गी होने पर तथा मंगल के उदित होने पर बाजार के रुख को देखकर ही काम करें—अन्यथा अचानक लाईन बदलने से हानि हो सकती है।

अगस्त—२ अगस्त को मंगल के उदित होने पर सरसों, तिल, रूई, उड़द एवं रूई में तेजी या मन्दे का झटका आएगा,—व्यापारी विचारपूर्वक कार्य करें। यदि पहले मन्दा चल रहा हो तो तेजी आएगी, यदि तेजी चल रही हो तो मन्दा आने की उम्मीद रक्खें। हमारे विचार से तेजी आने की उम्मीद है। ध्यान दें कि ४ अगस्त से मासान्त तक शनि मंगल का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध विशेष महत्त्वपूर्ण है, राजनैतिक परिस्थिति एवं प्राकृतिक प्रकोप का प्रभाव व्यापार पर अवश्य पड़ेगा। इस अवधि में खाद्य वस्तुओं, विशेषतः अनाजों के भावों में अप्रत्याशित रूप से तेजी आ जाए तो कोई आश्चर्य नहीं। इस अवधि में ताजा परामर्श प्राप्त करके उत्तम लाभ प्राप्त कर सकेंगे। ३ अगस्त को सूर्य आश्लेषा में, मंगल अपनी नीचराशि कर्क में तथा शुक्र वक्री होगा। सूर्य मंगल पर शनि की दृष्टि है, अतः रूई, चांदी एवं सोना के बाजारों में तथा तेलवाना कपास, जूट एवं शेयर बाजारों एवं गेहूं चावल, ज्वार में अच्छी तेजी आएगी। ५ अगस्त को प्लूटो चित्रा ४ विचार में प्रवेश करेगा। वायदा बाजारों में उतार-चढ़ाव आएंगे, रूई, कपास, तेलवाना में तेजी का संचार रहेगा। ७ अगस्त को बुध-शुक्र की सिंहराशि में अंशात्मक युति होगी। इस युति का प्रभाव वायदा बाजारों पर विशेष होगा, झटके के साथ बाजारों में उतार-चढ़ाव आएगे, अफवाहों के द्वारा बाजार में तेजी मन्दी का संचार होगा, कहीं बाढ़ आदि की स्थिति बनेगी खड़ी फसल को नुकसान होगा, कहीं सूखा की स्थिति से बाजार प्रभावित होंगे। विचारपूर्वक काम करें। क्योंकि शुक्र वक्री एवं अस्त है, अतः बुध के साथ युति करके झटके के साथ मन्दी एवं झटके के साथ मन्दी लाएगा। अतः मन्दे में खरीदें तथा तेजी में बेचने का सिद्धान्त बनाकर काम करें। हमारे विचार से घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना आदि में विशेषतः तिलहन बाजारों में अच्छी तेजी के बाद ८ अगस्त को सोमवती अमावस के कारण अच्छा मन्दा बनेगा। फिर साधारण तेजी के बाद १४ अगस्त को यूरेनस के मार्गी होने पर तथा १५ अगस्त को शुक्र के अस्त होने पर व्यापारी तेजी में न रहें, अलसी, एरण्ड, बिनोला, गुड़, खाण्ड, रूई, कपास, सोना, चांदी, सूत, घी, चावल, पाट बारदाना आदि में झटके के साथ मन्दा बनेगा। लेकिन सिंह संक्रान्ति होने पर तेजी का वातावरण बनेगा, रूई और सोना, चांदी, चावल, गुड़, खाण्ड, कपास, घी, सूत एवं तिलहन में तेजी बनेगी।

१९ अगस्त को बुध कन्या में आ जाता है। कन्या राशि में अकेला बुध मन्दे का वातावरण बनाता है, मन्दे की अफवाहों से बाजार में मन्दे के झटके आएगे। वायदा व्यापारी सूझ-बूझ से काम लें। तिलहन बाजारों में अच्छे उतार-चढ़ाव आएगे। हमारे विचार से रूई, चांदी मन्दी गेहूं में, जौ, चना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, हल्दी में तेजी बनेगी। व्यापारी ध्यान दें कि पहले ही अनाजों का स्टाक कर लेने वाले व्यापारी आगे उत्तम लाभ प्राप्त करेंगे—**विशेष सुझाव के लिए प्रत्यक्ष मिलें या पत्र व्यवहार करके ताजा परामर्श प्राप्त करें।**

२५ अगस्त को सूर्य-शुक्र की अंशयुति को भी ध्यान में रखना आवश्यक है, रूई, खाण्ड, अलसी, मूंगफली, चावल आदि अनाज चांदी, रूई में तेजी आएगी। २६ से २९ अगस्त तक बाजारों में साधारण तेजी-मन्दी चलेगी, लेकिन मासान्त में शुक्र के उदय होने पर, रूई, सूत, चांदी, चावल, घी एवं सोना में तेजी आएगी।

सितम्बर—३ सितम्बर को बुध वक्री हो जाता है। वक्रीग्रह प्रायः तेजी करते हैं, लेकिन बुध जैसे शीघ्रगति वाले ग्रह वक्र होने पर कुछ चीजों में मन्दे का वातावरण बना देते हैं। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रूई, चांदी में साधारण तेजी के बाद मन्दी आएगी।

८ सितम्बर को बुध पश्चिम में अस्त होता है, व्यापारी **इस मास में बुध की पोजीशन को ध्यान में रखें।** पाट, हेसियन, शेयरों एवं रूई में मन्दे का संचार होगा, अनाजों में तेजी रहेगी। १० तारीख तक सभी बाजारों में प्रायः मन्दा प्रधान रहेगा। **११ सितम्बर को शुक्र वक्री होकर** राशि बदल लेता है—यह नोट करें। **शुक्र, कर्क राशि में मंगल के साथ है, शनि और गुरु की इस पर दृष्टि है, निर्यात (फ़ोरेन ऐक्सपोर्ट) वायदा व्यापार एवं सट्टे के धन्धे पर इसका प्रभाव होगा।** आयात-निर्यात आदि के समाचारों से बाजारों में घटा-बढ़ी होगी। रूई, कपड़ा, सूत, गुड़, चांदी, चावल आदि

में तेजी आने का विचार है। १४ सितम्बर को वक्री बुध भी कन्या राशि को छोड़ कर सिंह राशि में आ जाता है बुध का वक्री होकर राशि बदलना महत्त्वपूर्ण है। इस समय जोरदार तेजी मालूम होती है। सरसों, तेल, घी, गुड़, खाण्ड एवं अन्य तिलहनों में अच्छी तेजी बनेगी। फिर भी बाजार का रुख देख कर काम करें, बाजार के खिलाफ न चलें। १५ सितम्बर को बुध और सूर्य की अंश युति अनाजों एवं तिलहन बाजारों में और भी तेजी लावेगी। ऐसा मालूम देता है। चांदी, सोना के बाजार भी तेजी में रहेंगे। साथ ही १५ सितम्बर को ही शुक्र मार्गी हो रहा है। अतः १५ सितम्बर को सायंकाल से बाजार का रुख बदल सकता है, बाजार के रुख को देखकर काम करें।

१७ सितम्बर को कन्या संक्रान्ति के बाद १८ सितम्बर को मंगल-शुक्र की अंशयुति होगी, तत्पश्चात् १९, २० सितम्बर को मंगल-शुक्र भी सिंह राशि में आ जाते हैं। इस प्रकार मंगल शुक्र एवं बुध तीनों सिंह राशि में हैं। यह योग सोना, चांदी, रूई, तिलहन एवं चना, गेहूं, जौ, चावल आदि के व्यापारियों के लिए महत्त्वपूर्ण है। सोना, चांदी, तांबा, रूई एवं तिलहन, घी, तेल, आदि में जोरदार तेजी का उछाला आएगा। लाभ उठाने का अवसर है। यह भी ध्यान में रखें कि अगर मन्दे का बाजार चले तो जबरदस्त मन्दा आएगा। बाजार को देखकर आगे बढ़ें। लेकिन हमारा विचार तो तेजी का ही है।

२३ सितम्बर को बुध उदय होता है, २५ सितम्बर को बुध मार्गी है तथा इसी दिन गुरु-युरेनस की युति भी हो रही है, अतः बाजार में जो पहले तेजी या मन्दे का वातावरण था वह नहीं रहेगा, रुख बदलेगा, क्योंकि बुध मंगल के साथ है अतः हमारा विचार तो और भी तेजी आ जाने का है गेहूं, जौ, चना एवं अनाज में तेजी रहेगी, रेशम, तेल, अलसी, [illegible], गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन, में कुछ मन्दा आकर तेजी [illegible] रूई, सोना, चांदी में भी तेजी ही रहेगी। फिर भी बाजार के रुख को देख कर ही सौदा करें तो अच्छा रहेगा।

[illegible] अनाजों एवं तिलहनों में, रूई, कपास, गेहूं, जौ, ज्वार में तेजी रहेगी।

अक्तूबर—[illegible] अक्तूबर को उ. फा. को बुध उदय, मूंग, मोठ, अगर, [illegible] में कुछ तेजी बनेगा रूई और चांदी में कुछ मन्दी आएगी। [illegible] अक्तूबर को बुध, कन्या में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। सूर्य, बुध तीनों [illegible] शनि-मंगल से घिरे हुए हैं, तिलहन बाजार में एवं गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी में अच्छी तेजी आएगी। सोना, चांदी, रूई [illegible] में भी तेजी आएगी। [illegible] अक्तूबर को चित्रा नक्षत्र का सूर्य ११ अक्तूबर को पू. फा. [illegible] का मंगल सोना, चांदी, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर गेहूं, चना, तिल, तेल, अलसी, सरसों, नारियल, केसर, कपूर, में तेजी करेंगे।

१२ अक्तूबर को बुध, सूर्य से अस्त हो रहा है, अनाज, घी, आदि मन्दे [illegible], रूई में घटाबढ़ी पहले तेज, बीच में मन्दी अन्त में फिर तेज, [illegible] घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। वर्षाण की वस्तुओं में तेजी आए।

१४ अक्तूबर को शनि अस्त है—रूई, कपास, तिलहन, बाजारों में मन्दे का रिएक्शन आएगा। अनाजों में तेजी रहेगी। १९ अक्तूबर को तुला संक्रान्ति के बाद सूर्य-शनि का योग गेहूं, जौ, चना, अलसी, सोना, तांबा, तिल, तेल, सरसों में अच्छी तेजी लाने वाला है—पत्र से ताजा परामर्श करने पर पूर्ण लाभ ले सकेंगे। १८ एवं २१ अक्तूबर को चित्रा का बुध एवं ज्येष्ठा का गुरु चांदी में कुछ मन्दा करेंगे लेकिन सोने में तेजी का रुख रहेगा। २२ अक्तूबर को बुध तुला राशि में आकर शनि और सूर्य के साथ मेल करेगा, अतः इन दिनों गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, दालें, रूई, गुड़, खाण्ड, तेल, घी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनोला, मूंगफली, सोना, चान्दी में तेजी की लाईन बनेगी। व्यापारी नोट करें। आगे २४ अक्तूबर को सूर्य-प्लूटो एवं २५ अक्तूबर को बुध-वेंकटेश तथा मंगल-शुक्र की युति होगी। व्यापारियों के लिए बहुत ही लाभ का मौका है। गुड़, खाण्ड, रूई, कपास, पाट-बारदाना, तिलहन और गेहूं, जौ, चना चावल, दालें तथा सोना, चांदी में धमाके की तेजी का विचार है, फिर भी बाजार के रुख को देखकर ही चलें, बाजार के खिलाफ चलने से नुकसान हो सकता है।

२६, २७, २८ अक्तूबर को साधारणतया बाजार तेजी में रहेंगे। ३० अक्तूबर को सूर्य-बुध ३१ अक्तूबर को सूर्य-शनि एवं बुध-शनि की अंशात्मक-युति भी बहुत ध्यान देने योग्य है—तात्पर्य यह है, कि—यह ग्रहस्थिति पहले चल रही तेजी की लाईन को और बढ़ावा देगी, बाजार अफवाहों से तेजी की ओर रहेगा, [illegible]ना, चांदी, तिलहन, तेल, एवं अनाजों के व्यापारी उत्तम लाभ प्राप्त कर सकते [illegible] इस समय पत्राचार द्वारा ताजा परामर्श प्राप्त करना श्रेष्ठ रहेगा।

नवम्बर—२ नवम्बर को उ. फा. नक्षत्र का मंगल, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी योगकारक है, ३ नवम्बर को विशाखा नक्षत्र में बुध आने पर रूई और चांदी में मन्दे का वातावरण बनेगा। इसी दिन शुक्र कन्या राशि में आ जाता है, अनाजों में तेजी चलेगी। ७ नवम्बर को मंगल, कन्या राशि में आकर शुक्र के साथ योग करेगा। रूई, चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, सरसों, अलसी, तोरिया, जूट, गेहूं एवं शेयर, बाजारों में अच्छी तेजी आएगी। चांदी, सोने के व्यापारी विशेष लाभ ले सकते हैं।

१० नवम्बर को वृश्चिक राशि में बुध आने पर घी, तेल, सरसों, रूई और चांदी में तेजी बनी रहेगी। १२ नवम्बर को यदि अनाज का भाव मन्दा हो तो स्टाक करें, आगे शीघ्र ही अच्छा लाभ मिलेगा। १६ नवम्बर को वृश्चिक संक्रान्ति होने पर रूई, तांबा, चांदी, सोना में तेजी का ही वातावरण रहेगा। लेकिन १७ नवम्बर को शनि के उदित होने पर रूई, शेयर, अलसी, सरसों, बिनौला और मूंगफली में अचानक कुछ अस्थायी मन्दा आ सकता है, बाजार का रुख देखकर काम करें। १९ नवम्बर से घी, गुड़, खाण्ड, चावल, चना, अन्न में तेजी आएगी। २० नवम्बर को बुध प्लूटो तथा २१ नवम्बर को गुरु-केतु की अंशात्मक युति को ध्यान में रखें, इस समय स्टाक संग्रह के विचार से बाजार में अस्थायी उतार चढ़ाव आएंगे। हमारा तेजी का ही विचार है। २२ नवम्बर को बुध के उदित होने पर रूई में तेजी ही आएगी, क्योंकि

जब बुध मार्गशीर्ष में उदित होता है तो रूई में मन्दे की बजाय तेजी ही आती है। २५ नवम्बर बुध-केतु एवं २६ नवम्बर को बुध-गुरु की युति इस मास में महत्वपूर्ण है, वायदा व्यापार में अच्छे उतार-चढ़ाव आएंगे, बाजार का रुख देख कर काम करें। २९ नवम्बर को बुध मूल धनु में आ जाता है, धनुराशि में बैठे बुध पर मंगल की पूर्ण दृष्टि है, अत: रूई, कपास, सूत, ऊन, चांदी, में तेजी बनेगी। यह मास विशेष तेजी वाला हमें मालूम नहीं देता, अत: इस मास में मन्दा आने पर स्टाक करें। आगे भी लाभ के चांस आएंगे।

दिसम्बर—प्रारम्भ में ही शुक्र-तुला में आकर शनि के साथ योग करेगा। तुला राशि का मालिक स्वयं शुक्र ही है। माल का निर्यात तथा वायदे के व्यापार भी तुला राशि से विशेष सम्बन्ध है। रूई, गुड़, खाण्ड, चांदी, घी, तेल, सरसों, चावल में एकतरफा लाईन बन जाने का योग है, बाजार का रुख अगर मन्दे का हो तो मन्दे में रहें, अगर बाजार का रुख तेजी का हो तो तेजी में रहें। इस समय हमारा विचार तो तेजी आने का है, फिर भी वायदा-व्यापारी सूझ से काम लें। २ दिसम्बर को सूर्य एवं यूरेनस की युति, साथ ही बृहस्पति का अस्त होना तथा ३ दिसम्बर को बुध-नेपच्यून की युति अनाजों, रूई एवं शेयरों में तथा अन्य वस्तुओं के वायदा व्यापार में तेजी का संकेत देती है। ७ सिम्बर को शुक्र-प्लूटो की युति एवं ९ दिसम्बर को सूर्य-केतु की अंश-युति के वक्त विशेष सावधान रहें।

चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तोरिया, मूंगफली, लालमिर्च, चावल एवं छोटे मोटे अनाजों में जोरदार तेजी का झटका आ सकता है। मासारम्भ से ९ दिसम्बर तक हमें तेजी का ही बोलबाला लगता है। बीच में ५ दिसम्बर में तेलवाना और चांदी रूई में तेजी का झटका आ सकता है क्योंकि शुक्र-शनि दोनों स्वाती नक्षत्र में हैं। इस समय उड़द, गेहूं, जौ, अरहर, ऊन, कम्बल एवं सरसों, तेल आदि में भी तेजी आने की पूरी संभावना है। १५ दिसम्बर को धनु संक्रान्ति के प्रभाव व्यापार पर पड़ेगा, क्योंकि धनु राशि में बुध-सूर्य पर शनि-मंगल की पूर्ण दृष्टि से अत: रूई कपास, सूत, तिलतेल, सोना, चांदी आदि में तेजी होगी। इसके बाद १७ दिसम्बर को शुक्र-शनि की अंशात्मक युति बहुत महत्वपूर्ण है, शुक्र अपनी प्रकृति के अनुसार क्रूर ग्रह से मिलकर चली आ रही लाईन को बढ़ावा देता है, अगर तेजी की लाईन चले तो अब और तेजी का विचार करके काम करें, अगर मन्दे का बाजार हो तो कुछ मन्दा आ जाने की आशा रखें। हमारे विचार से तो यहां चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड, रूई, कपास, बारदाना एवं तिलहन, चावल, में तेजी ही आएगी। रूई, चांदी, ऊन, सोना के व्यापारी विशेष लाभ उठा सकेंगे। २९ दिसम्बर को मार्ग-शुक्ल-पूर्णिमा मंगलवारी है, अत: धान्यादि सभी वस्तुओं से तेजी प्रधान रहेगी। तेजी से निकल जावे, आगे मन्दा आ सकता है।

२१ दिसम्बर को बुध धनु राशि में वक्री हो जाता है, साथ ही इसी दिन बृहस्पति अपनी धनु राशि में प्रवेश करेगा। गुरु अस्त है। धनु राशि के बुध-गुरु-सूर्य पर शनि-मंगल की पूर्ण दृष्टि है। इस ग्रह स्थिति को ध्यान में रखना अत्यावश्यक है, क्योंकि शीघ्रगामी ग्रह बुध वक्र होकर तथा धनुराशि में गुरु मूलरूप से मन्दीकारक है। गुरु का असर तेलवाना, कपास व सभी बाजारों पर विशेष होता है। क्योंकि शनि-मंगल की गुरु पर पूर्ण दृष्टि है, अत: व्यापारियों को इस समय बहुत ही विचार से काम करना चाहिए—जबरदस्त मन्दी या तेजी के झटके आएंगे। हमारे विचार से कपास, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल तेल, घी, सोना, चांदी, चावल, पीतल, लोहा, तांबा, कांसी, सिक्का आदि में अकस्मात् मन्दा आकर एकदम अच्छी तेजी आएगी। चांदी और शेयरों में खूब तेजी बनेगी। गेहूं, जौ, चना में भी तेजी का झटका आएगा। गुरु पर शनि-मंगल की दृष्टि होने से तेजी प्रधान रहेगी—लेकिन फिर भी बाजार के रुख के खिलाफ काम करने से हानि हो सकती है। अत: विचारपूर्वक काम करें, इस समय ताजा परामर्श प्राप्त करें। २५ दिसं. को बुध अस्त होगा, रुई में मन्दे का झटका आने का योग है। २६ दिसं. को वृश्चिक राशि में शुक्र के आने पर सभी प्रकार के अनाजों में तेजी आएगी—जौ, गेहूं, चना, मूंग, मोठ आदि में तेजी का विचार है। २७ दिसं. को गुरु के उदित होने पर चांदी एवं अनाजों में और तेजी आएगी। रुई, सोना, सण में भी तेजी रहेगी।

३० दिसं. को मंगल तुला राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा, ३१ दिसं. को सूर्य-बुध की अंशात्मक युति होगी, इस प्रकार जबरदस्त तेजी का योग बन रहा है, व्यापारी सूझ से काम करें अच्छा लाभ मिलेगा। जलवायु का प्रभाव व्यापार पर पड़ेगा। तिल, तेल, घी, तिलहन, चांदी, सोना, रुई, कपास, गुड़, खाण्ड, पाट, बारदाना, बाजारों में जोरदार हलचल होगी। लम्बी तेजी की लाईन बन जाने का योग है। पत्र द्वारा ताजा परामर्श प्राप्त करके तेलवाना के व्यापारी इस शनि-मंगल योग में विशेष लाभ उठा सकते हैं।

जनवरी (सन् १९८४ ई)—मासारम्भ में ही बुध वक्री होकर मूल में आ जाता है, अनाज, सोना, चांदी में मन्दी बने। आगे पौष कृष्ण अमावस मंगलवारी है, अत: व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का वातावरण बनेगा। ९ जनवरी तक सोना, चांदी, चावल, सरसों, तिल, तेल, रुई, सूत एवं छोटे-मोटे अनाजों में साधारण तौर से तेजी मन्दी रहेगी। १० जनवरी को बुध मार्गी तथा इसी दिन शुक्र एवं यूरेनस की अंशयुति होगी। ११ जनवरी को मंगल स्वाती में तथा १२ जन. को शुक्रकेतु की अंशयुति का वायदा व्यापार पर विशेष प्रभाव होगा। चांदी, सोना, चावल, कपास एवं अन्य वायदा व्यापारिक चीजों में विशेष उतार-चढ़ाव आएंगे, मन्दे में खरीदें और तेजी में बेचें, बाजार के रुख को जांच कर व्यापार करने से अच्छा लाभ ले सकेंगे। इन दिनों उड़द, मूंग, चना, गेहूं, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रेशम, तेल, अलसी, बिनौला आदि में भी तेजी का योग है। इस मास में १४ जन. को मकर-संक्रान्ति शनिवारी है, १५ जन. को मंगल एवं प्लूटो की अंशात्मकयुति होगी—तेलवाना, रुई, कपास, जूट, चांदी, सोना तथा शेयर बाजारों में एकदम तेजी बनेगी। २० जन. को शुक्र धनुराशि में आकर बुध एवं गुरु के साथ मेल करेगा। इस समय यदि बाजार में तेजी हो तो तेजी का बल और बढ़ेगा अगर बाजार का रुख मन्दे का है तो मन्दा जोरदार आएगा—यह ध्यान में रखकर ही व्यापार बढ़ावें। हमारे विचार से तो गेहूं, जौ, चना आदि अनाज तथा चांदी, सोना, तांबा आदि

धातु एवं शेयरों में तेजी रहेगी, रुई, सूत, कपास में कुछ मन्दी के बाद तेजी आएगी। १९ से २३ जन. तक मन्दे का वातावरण रहे। २६ जन. को शुक्र-नेप्च्यून की अंशात्मक युति के कारण चांदी, रुई में मन्दे या तेजी का वातावरण बनेगा—बाजार के अनुसार काम करने से लाभ होगा। हमारे विचार से मन्दे का काम करने पर लाभ रहेगा। २७ जनवरी को गुरु-शुक्र की युति भी बहुत महत्त्वपूर्ण है—गुरु-शुक्र-बुध तीनों धनु राशि में हैं, अतः एक तरफा लाईन चलेगी। ध्यान दें—बाजार के रुख के खिलाफ काम करने वाले भारी नुकसान में रहेंगे। अगर बाजार में मन्दा चले, तो बेधड़क मन्दे का काम करें, वरना तेजी में रहें। ३१ जनवरी को पू. षा. नक्षत्र का सूर्य मूंग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों में मन्दे का वातावरण बना देगा।

फरवरी—मासारम्भ में ही केतु-यूरेनस की अंशात्मक-युति का प्रभाव मौजूदा खड़ी फसलों पर होगा। खड़ी फसलों के खराब होने की खबर से बाजारों में अस्थाई तेजी का संचार होगा, बुलियन चांदी, तिलहन, सोना तथा जनरल चीजों में तेजी आएगी। ४ फरवरी को बुध मकर में आकर सूर्य से मेल करेगा, मंगल की बुध-सूर्य पर पूर्ण दृष्टि है, इसी दिन प्लूटो वक्री हो रहा है, तिलहन, चांदी, गुड़, खांड, सोना एवं अनाजों में तेजी आएगी। १२ फर. तक व्यापारिक वस्तुओं में साधारण तेजी रहेगी। १३ फर. को कुम्भ संक्रान्ति होगी तथा इसी दिन शुक्र मकर में गुरु के साथ योग करेगा। शुक्र-गुरु पर शनि की दृष्टि है। घी, तेल, नमक, सरसों, मूंगफली राई में तेजी, चांदी, रुई, अनाज, गुड़, खांड, शक्कर में कुछ मन्दे के बाद तेजी बनेगी। १५ फरवरी को शनि-मंगल की अंशयुति इस मास में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। इस युति का प्रभाव विश्व के प्रमुख बाजारों पर अवश्य होगा। विश्व में अशान्तिमय वातावरण बनेगा। शनि-मंगल दोनों ही क्रूर ग्रह हैं अतः पैदावार में कमी, प्राकृतिक-प्रकोप से खेती को हानि हो घी, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी में अच्छी तेजी आने की आशा रखें। फिर भी बाजार के रुख के खिलाफ काम न करें।

नोट करें :—अगर बाजारों में मन्दा चलने लगे तो लम्बी लाईन मन्दी की बनेगी, अगर तेजी चलने लगे तो तेजी की लम्बी लाईन बनेगी—यह ध्यान रखें।

२२ फर. तक हमें तेलवाना एवं सोना चांदी, अनाजों में तेजी का आभास हो रहा है। २३ फर. को कुम्भ में बुध आने पर तथा २४ फर. को शनि के वक्री होने पर घी, तेल तेलवीया, रसकस, गुड़, खांड एवं अनाजों में विशेष तेजी या मन्दी के झटके आएंगे। विचारपूर्वक बाजार का रुख देखकर काम करें।

मार्च—ग्रहगति के अनुसार ३ मार्च तक बाजार में तेजी रहेगी। ४ मार्च को रुई, चान्दी, रसकस एवं कर्याणा की चीजों में मन्दी आएगी। लेकिन ६ मार्च को अचानक गुड़, रुई, सोना, चान्दी आदि धातुओं के भाव तेज रहेंगे अन्य वस्तुओं के भाव भी प्रायः तेजी की ओर ही रहेंगे। ९ मार्च को शुक्र कुम्भ में आएगा तथा शनियुत-मंगल की इस पर दृष्टि है, अतः चान्दी, रुई, तिलहन एवं दालों के बाजारों में उछाला आने की आशा है, ध्यान रहे, शुक्र कुम्भ के २३ अंश पर आकर इस मास के तीसरे सप्ताह के अन्तिम दिनों में रुई में विशेष तेजी करेगा। ८ मार्च के लगभग ग्रह स्थिति के अनुसार चावल, चना, गेहूं, तिलहन, रुई, गुड़, खाण्ड में विशेष तेजी आएगी ११ मार्च को मीन का बुध, १३ मार्च को मीन संक्रान्ति के बाद सूर्य से मेल करेगा तथा बुध अतिचारी है अतः तिलहन बाजारों में जबरदस्त तेजी आएगी—व्यापारी ताजी सलाह प्राप्त करें, उत्तम लाभ का अवसर है। इस समय गुड़, खाण्ड, रुई, सोना, दालों एवं अनाजों में भी तेजी रहेगी। १९ मार्च तक उत्तम-मध्यम रूप से तेजी का प्रभाव रहेगा। तत्पश्चात् अस्थाई तौर पर कुछ मन्दे का रिएक्शन आ सकता है, २७ मार्च को बाजार के रुख को अच्छी तरह समझ कर काम करें— अन्यथा हानि में रहेंगे। चान्दी में अच्छी मन्दी व तेजी के झटके आएंगे। लेकिन मासान्त तक प्रत्येक बाजार में हमें प्रायः तेजी का संकेत मिलता है।

सूचना—तेजी-मन्दी के लिए ताजा परामर्श प्राप्त करने के लिए एवं वर्ष में गिने-चुने उत्तम लाभ के चान्स प्राप्त करने के लिए आज ही नीचे पते पर २५ रुपये भेज कर अपना नाम दर्ज करा लें।

पता—ज्योतिर्भूषण पं० इन्दु शेखर शास्त्री, M.A.,
मार्त्तण्ड कार्यालय,
मु. पो. कुराली (जि० रोपड़) पंजाब

आकाशी कौंसिल का विचार (सं. २०४० वि.)

विश्व की सामाजिक-आर्थिक एवं राजनैतिक-स्थिति पर ग्रहों का प्रभाव

विधि के विधान को समझना तो बहुत ही कठिन है, लेकिन आकर्षण-विकर्षण से प्रभावित अनन्तकोटि-खगोलीय-पिण्ड अपनी वक्र-मार्ग आदि गति द्वारा प्राणीमात्र को ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित करते रहे हैं। विश्व में घटित होने वाली घटनाओं एवं महत्त्वपूर्ण-परिवर्तनों की भविष्यवाणी करके महर्षियों ने ज्योतिष-शास्त्र की वैज्ञानिकता का साक्षित्व स्थापित किया है। प्रत्येक ग्रह उस जगत्पिता की अदृश्य अलौकिक इच्छा-शक्ति से प्रभावित होकर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को प्रभावित करता है। ग्रहगति से प्रभावित स्थावर एवं जंगमजगत् तदनुरूप ही कर्मानुष्ठान के लिए प्रेरित हो जाता है, इस ग्रहगतिजन्य प्रभाव के परिणाम को हम **'भवितव्यता'** किंवा **'इश्वरेच्छा'** कहकर स्वीकार करते हैं :—

'अवश्यभव्येष्वनवग्रह-ग्रहाः यया दिशा धावति वेधसः स्पृहा।
तृणेन वात्येव तयानुगम्यते लोकस्य चित्तेन भृशाऽवशात्मनः ॥"

उस ग्रहगति से प्रभावित व्यक्ति किंवा विश्व की स्थिति, तीव्र-वायुवेग से प्रताड़ित तिनके (तृण) की भांति ही है, जो एकक्षण में ही अपने अस्तित्व को खोकर वायुदिशा (विधाता की इच्छा) के अनुकूल चलने को विवश हो जाता है। इस ग्रहगतिजन्य प्रभाव को समझाने के लिए जिन ऋषिमहर्षियों ने अपने सम्पूर्ण जीवन की साधना लगा दी है, उनके हम सर्वदैव ऋणी हैं। उन महर्षियों के द्वारा निर्दिष्ट-सिद्धान्तों के आधार पर अपनी अल्पविषया बुद्धि, के अनुसार सूक्ष्म-ग्रहगति से प्राप्त 'संकेतग्रह' को ही 'भविष्यवाणी' के रूप में प्रतिफलित करके विश्व में घटित होने वाली घटनाओं का चित्र आपके समक्ष उपस्थित करते हुए ५५ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। आपके इस पंचांग में प्रकाशित आश्चर्यचकित कर देने वाली अव्यभिचरित-भविष्यवाणियों में सर्वसाधारण व्यक्ति से लेकर **भारतरत्न श्री नेहरू** जैसे महान् ऐतिहासिक नेताओं की अभिरुचि रही है। आज भी आपका प्रिय पंचांग अपनी सफल भविष्यवाणियों के कारण सुप्रतिष्ठित नेताओं एवं सम्पूर्ण पाठकों के लिए विशेष आकर्षण का विषय बना हुआ है। साथ ही सूक्ष्मातिसूक्ष्म ग्रहणगणित एवं अपने विशिष्ट-लेखों के कारण भारत के सभी विद्वानों एवं परमश्रद्धेय धर्माचार्यों के आशीर्वाद के परिणामस्वरूप जो श्रेय-सम्मान इस पंचाग को प्रतिवर्ष प्राप्त होता है, वह हमारे लिए बड़ी उपलब्धि है।

श्री मार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग की गतवर्षों की सफल भविष्यवाणियों का कुछ दिग्दर्शन इस प्रकार है—

भारत के स्वतन्त्र होने की घोषणा, श्री महात्मागांधी एवं नेहरू जी के स्वर्गवास होने की भविष्यवाणी, रूस के बुल्गनिन-ख्रुश्चेव के अपदस्थ होने की घोषणा, चीन के चाऊ-माऊ के निधन का संकेत, अमेरीका के रीगन की सफलता, इससे पूर्व पाक का विभाजन-रक्तपात एवं समय-समय पर सत्तापरिवर्तन, कांग्रेस में दो बार विभाजन जनता-पार्टी की विजय एवं पतन की आश्चर्य चकित कर देने वाली भविष्यवाणी पुनः श्रीमती गांधी के नेतृत्व की उपलब्धि की घोषणा, ईरान-ईराक का युद्ध एवं ऐतिहासिक-भूकम्पों की भविष्यवाणी, इसके अतिरिक्त स्वदेशीय एवं विभिन्न देशों में घटित होने वाली प्रमुख-प्रमुख घटनाओं की असंख्य-सफल भविष्यवाणियां करने का श्रेय आपके इस पंचाग को प्राप्त हो चुका है। स्थानाभाव के कारण यद्यपि सभी सफल भविष्यवाणियों को यहां देना संभव नहीं। पुनरपि कुछ भविष्यवाणियां सं. २०३९ के पञ्चाङ्ग से ही उद्धृत हैं—पृ. २६ (कालम १, पंक्ति १५) पर भविष्यवाणी की थी :—

"राजा शुक्र का सलाहकार मन्त्री युद्धप्रिय मंगल है। मंगल मेघेश होने से इस वर्ष आकालिक वर्षा तथा कहीं सूखा आदि से जनजीवन को अस्त-व्यस्त करेगा।"

पाठक जानते हैं, कि इस वर्ष उत्तर प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, बिहार-बंगाल, तथा हिमाचल प्रदेश के कुछ भाग भी सूखाग्रस्त घोषित करने पड़े हैं। तथा पंजाब आदि में वर्षा ऋतु से पूर्व ही (आकालिक) वर्षा से लोग विस्मित रहे हैं।

पृ. २६ (कालम १, पंक्ति २५) पर की गई मुस्लिम देशों में घोर अशान्ति की सूचना तारीख सहित दी गई है—

"१२ मई को मंगल अपनी वक्रगति को छोड़ेगा। बीच में ९ अप्रैल को मंगल-बुध की अंशात्मक युति होगी। परिणामस्वरूप मुस्लिम देशों में घोर अशान्ति पैदा होगी।"

ईराक-ईरान में तथा अन्य मुस्लिम राष्ट्रों में मई में ही युद्ध से घोर अशान्ति का सूत्रपात हुआ। आगे चलकर पृष्ठ २६ (कालम २, पंक्ति २४ पर) स्पष्ट घोषणा की थी जोकि अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई है—

"हमारे विचार से १९८२ में कुछ यावन देश परस्पर इस प्रकार युद्ध में उलझेंगे जिससे विश्वशान्ति को खतरा पैदा होगा। सीमावर्ती कुछेक शान्तिप्रिय राष्ट्र भी विवशता में अपनी शान्ति भंग करने पर विवश होंगे। लेकिन बृहस्पति आदि ग्रहों की स्थिति से मालूम होता है, कि इस वर्ष शान्तिप्रिय राष्ट्रों की मध्यस्थता से स्थिति सुलझ जाएगी।"

स्पष्ट है सीरिया-लीबिया, फिलस्तीन, इजराइल, लेबनान, ईराक-ईरान इन सब युद्ध की विभीषिका इतनी भयंकर हो गई थी कि समीपस्थ देशों को भी अपनी सेना को शान्त्यर्थ लेबनान भेजना पड़ा।

आगे पृ. २७ (कालम १) पर मुस्लिम-राष्ट्रों की कुण्डली के आधार पर स्पष्ट भविष्यवाणी की थी, कि—

"पश्चिमी एशिया की शान्ति भंग होगी। सीरिया-इजराइल में शत्रुता बढ़ेगी, फिलस्तीन में मुक्ति संघर्ष जोर पकड़ेगा ।......जुलाई एवं सितम्बर का अन्तिम समय मुस्लिम राष्ट्रों के लिए ऐतिहासिक घटनाओं वाले होंगे ।"

इस भविष्यवाणी के बारे सभी जानते हैं कि इसवर्ष में इजराइल ने हजारों निर्मम लोगों की हत्या करके इतिहास में बर्बरता की चरमसीमा का उदाहरण पेश किया तथा यहां युद्धाग्नि का विस्फोट तथा बर्बरतापूर्ण कृत्य जुलाई एवं सितम्बर के अन्तिम सप्ताह तक ही चले हैं।

भारत की राजनीति के बारे में लिखा था—देखें पृ. २८, कालम २) पर—

"१९८४ से पहले कांग्रेस का सशक्त विकल्प विरोधी दल न बन पाएगा। विपक्ष में जागरूकता का कोई दीप अभी नजर नहीं आता।"

सभी जानते हैं, कि विपक्ष में एकता का प्रश्न उठने पर भी वे किसी एक मंच पर संगठित नहीं हो पाए हैं, इस दृष्टि से विपक्ष के सशक्त विकल्प बनने की अभी कोई किरण नजर नहीं आई। 'पंजाब' प्रान्त के बारे लिखा था :—**"यहां अशान्ति का वातावरण बनेगा, राजनीति से प्रेरित कुछ उग्रवादी शान्ति भंग करेंगे। तोड़फोड़, अपहरण एवं हत्याकाण्ड अधिक होंगे।** इन पंक्तियों की यथार्थता के बारे पाठक जानते ही हैं।

पृ. २९ (कालम २) पर 'कश्मीर' शीर्षक के अन्तर्गत लिखा था—"प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होगा।"—इस भविष्यवाणी के अनुसार ८ सितम्बर को श्री शेख अब्दुल्ला के निधन से प्रधान पद रिक्त हुआ।

ऊपर कुछ भविष्यवाणियां सं. २०३९ वि. के पंचांग से उद्धृत की हैं ताकि फलितशास्त्र पर आक्षेप करने वाले व्यक्ति भी इस शास्त्र की वैज्ञानिकता के बारे में अपनी एक धारणा बना सकें। अस्तु, इन भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय लेखक को नहीं, यह श्रेय तो उन ऋषियों को जाता है जिन्होंने अपना सारा जीवन इस शास्त्र की साधना में लगाया है। भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय उन पाठकों का भी है, जो भविष्यकथन की सत्यता को पग देकर प्रमाणित करते रहते हैं तथा प्रतिवर्ष कुछ लिखने को प्रोत्साहित करते हैं। अब ग्रहस्थिति के आधार पर सं. २०४० वि. की घटनाओं पर संक्षेप से विचार करेंगे।

ग्रहस्थिति का विश्व पर प्रभाव

विश्व को संचालित करने के लिए एक विशिष्ट दिव्य शक्तिशाली ग्रहपरिषद् का निर्माण हुआ करता है। इस परिषद् में सर्वाधिकारी ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुरूप विश्व में उलटफेर आदि शुभाशुभ घटनाएं हुआ करती हैं।

इसवर्ष ग्रहपरिषद् के चुनाव में पांच स्थान शुभ ग्रहों को एवं पांच स्थान क्रूर ग्रहों को उपलब्ध हुए हैं। सत्ता का विभाजन सन्तुलित होने पर भी कुछेक ग्रह बालग्रह होने से तथा वर्ष का राजा एवं मन्त्री दोनों पदों पर एक ही ग्रह होने से यह वर्ष अघटित घटनाओं वाला सिद्ध होगा। विश्व के कुछ देशों में शासकों को विषम एवं कठिन स्थिति में से गुजरना पड़ेगा। कहीं शासक की मनमानी से गृहयुद्ध की स्थिति पैदा होगी। इस स्थिति में प्रधानशासक को भारी संकट का सामना करना होगा। भयंकर अग्निकाण्डों से जनधन की हानि के समाचार अधिक मिलेंगे, विश्व में लूटपाट, चोरी, ठगी, बलात्कार आदि अनैतिक कार्य अधिक होंगे।

"स्वयं राजा स्वयं मन्त्री अग्नि-चौरादिजंभयम्" इस शास्त्रीय प्रमाण के अनुसार किसी प्रधान शासक की कुनीति के परिणामस्वरूप देश में अग्निकाण्ड एक साम्प्रदायिक कलह रक्तपात आदि उपद्रव हुए हैं तथा अन्ततः देश को भारी हानि उठानी पड़ी है। इस वर्ष बालग्रह बुध को मेघेश और प्रतिरक्षामन्त्री का पद प्राप्त हुआ है। जगत् लग्नकुण्डली में मेघेश-दुर्गेश बुध का मंगल सूर्य के साथ होने से क्रूर युक्त है। अतः बालग्रह बुध के प्रभाव का अध्ययन करने से मालूम होता है कि इसवर्ष विश्व के प्रमुख देश विकासशील देशों पर अपना प्रभुत्व बनाए रखने करने के लिए विभिन्न प्रकार की नीति से काम लेंगे। कहीं युद्धाग्नि प्रज्वलित करने के लिए कूटनीति का प्रयोग होगा। परिणामस्वरूप बड़े समर्थ राष्ट्रों की नीति विश्व में अशान्ति का कारण बनेगी।

हिन्दमहासागर पर बड़ी शक्तियों का जमाव चिन्ता का कारण बनेगा :—हिन्द महासागर शान्तिक्षेत्र घोषित न हो सकेगा अपितु समर्थ देश अपने सैनिक अड्डे यथावत् बनाए रखेंगे। जिससे विश्व में अशान्ति बढ़ेगी।

ग्रह परिषद् के निर्वाचन में समस्त श्रमिक वर्ग के प्रतिनिधि ग्रह-शनि को सस्येश, नीरसेश तथा धनेश ये तीन पद प्राप्त हुए हैं।

जगत् लग्न कुण्डली में शनि-मंगल का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध है। अतः विश्व के समस्त प्रमुख देशों में मुद्रास्फीति की समस्या बढ़ेगी। अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति निरन्तर बिगड़ेगी, विघटनकारी तत्त्व विश्व के शान्तिप्रिय देशों की स्थिति को बिगाड़ने में गुप्त रूप से सक्रिय रहेंगे। विश्व के कुछ देश तो आर्थिक संकट के कारण समृद्ध देशों का सहारा चाहेंगे, परिणामस्वरूप गुटबन्दी की भावना बढ़ेगी। विश्व के प्रमुख देशों में आवासित लोगों की समस्या विकटरूप धारण करेगी, कलह, उपद्रव होंगे कुछ देशों में बेरोजगारी की समस्या शासकों के लिए विषम बनेगी। कुछ देशों में सूखा की स्थिति होने से विश्व तत्काल चिन्तित होंगी। विश्व में कुछ देशों को विकट खाद्य समस्या का सामना करना पड़ेगा। श्रमिक वर्ग में अशान्ति बढ़ेगी। महंगाई की समस्या बढ़ती जाएगी। शनि-मंगल का दृष्टि सम्बन्ध इस वर्ष मुस्लिम राष्ट्रों के लिए भयंकर स्थिति बनाएगा। विशेषतः अरब राष्ट्रों में अत्याचार आतंक बढ़ेंगे। युद्ध विभीषिका पड़ोसी देशों को भी परेशानी में डालेगी। शस्त्रास्त्रों प्रयोग जन-धनहानि का कारण बनेगा। विश्व युद्ध का भय अभी नहीं है—यह घोषणा हम गतवर्ष के पंचांग में भी कर चुके हैं। इसवर्ष विमान एवं यान दुर्घटनाएं तथा विमान अपहरण आदि की घटनाएं अधिक

होंगी। इसवर्ष प्रभाव राशियों पर ग्रहदृष्टि के विचार से चीन, जापान, मिश्र, आस्ट्रिया, तिब्बत, वर्मा, जर्मनी, फिलस्तीन, इग्लैंड, अरब, स्पेन, हंगरी, आस्ट्रेलिया एवं अमेरीका आदि देश शनि के प्रभाव क्षेत्र में आ रहे हैं। यहां के शासकों को जनता के विश्वास को प्राप्त करने में भारी कठिनाई आएगी। प्रमुख देश के किन्हीं दो नेताओं को पद-त्याग के लिए बाधित होना पड़ेगा। कुछ साधन-सम्पन्न देश अन्य देशों को शस्त्रास्त्र देकर प्रछन्नरूप से युद्धार्थ प्रेरित करेंगे। किसी देश के प्रमुख नेता को अपदस्थ करके सत्ता परिवर्तन रक्त क्रान्ति से होगा। पश्चिमी एशिया के देशों में भारी अशान्ति बनेगी। गल्फ खाड़ी के देशों में भारी संकट की स्थिति परस्पर कलह के कारण पैदा होगी। मई में मंगल, बुध एवं शुक्र राहु की युति के परिणामस्वरूप विश्व में अधिक अशान्ति बढ़ेगी।

३ जून को सूर्य-मंगल, १८ सित. को मंगल-शुक्र एवं २४ अक्तूबर को सूर्य-प्लूटो की अंशात्मक युति तथा ३१ अक्तूबर को बुध-शनि, १७ दिस. को शुक्र-शनि, की अंशयुति के समय विश्व के देशों के समक्ष जटिल समस्याएं उपस्थित होंगी। जनवरी (१९८४ ई.) में मंगल-प्लूटो तथा फरवरी में शनि-मंगल का अंशसाम्य विशेष चिन्ता-जनक स्थिति पैदा करेगा। कहीं रक्तपात, शासक के विरुद्ध बगावत, यान दुर्घटना में हानि किंवा किसी नेता का दुःखद अवसान होगा। मार्च १९८४ के उत्तरार्ध में कहीं भयंकर भूकम्प, तूफान व अन्य प्राकृतिक प्रकोप से जनधन हानि का योग है।

इस संवत् में शनि की दृष्टि पश्चिम में ही है। अतः पश्चिमी देशों में विशेष ऐतिहासिक-घटनाएं घटित होंगी। कहीं देश के मानचित्र में परिवर्तन होगा। इस संवत् में किसी मुस्लिम देश में जनता एवं शासक में व्यवहार अशान्तिमय होने से शासक को सत्ता से च्युत होना पड़ेगा या रक्तपात के बाद क्रान्ति आएगी। अगर शासक ने विवेक से काम न लिया तो भारी जन-धन-हानि के बाद आगे देश को भारी क्षति का सामना करना पड़ेगा;—ईश्वर विश्व के पश्चिमी देशों के शासकों को सद्बुद्धि दे।

यूरोप के देशों की कुण्डली में उच्च-शनि के साथ प्लूटो का योग है, अतः यूरोप के देशों की आर्थिक स्थिति में गिरावट आएगी। ब्रिटेन, अर्जेन-टीना, फ्रांस, इटली, रोम, स्पेन, कैनाडा में आर्थिक स्थिति की विषमता से प्रवासी समस्या भी उभरेगी, जनता में प्रवासी लोगों के प्रति आक्रोश पैदा होगा। महंगाई, बेरोजगारी की समस्या यूरोप के देशों में उभरेगी। लेकिन स्थिति अभी विषम होती नजर नहीं आती; क्योंकि कुण्डली में नवमेश-शुक्र उच्चस्थ मंगल के साथ है, अतः ये देश अपनी प्रतिष्ठा को फिर बरकरार रखेंगे। हां,

यूरोप के देशों की कुण्डली
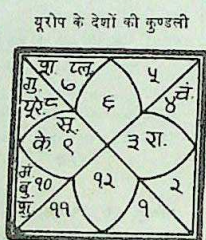
(१ जनवरी, १९८३ ई.)

आय स्थान पर मंगल की नीच दृष्टि होने से तथा शनि की दृष्टि होने से किसी आन्तरिक आपदाओं के कारण यहां की आमदन पर बुरा प्रभाव अवश्य पड़ेगा। ये देश आर्थिक दृष्टि से स्थिति को सम्भालने में असमर्थ होंगे। यहां के शासक अपनी नीति के कारण पश्चिम एवं विकासशील देशों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने में कार्यरत दीखेंगे। इण्डोनेशिया, कांगो, ब्राजील, न्यूजीलैंड एवं दक्षिणी अफ्रीका के राष्ट्रों में वातावरण चिन्तनीय बनेगा। आवासित-विदेशियों की समस्या का हल शीघ्र संभव न होगा। लेकिन कुछ देशों से विदेशियों के निष्कासन का पग उठाया जाएगा। जिससे एशियाई लोग चिन्तित होंगे। चीन, ताइवान, वियतनाम, समुद्रीद्वीपों पर प्रभाव रखने के लिए सक्रिय रहेंगे। मध्यपूर्व में कुछ शान्ति के बाद सन् १९८४ में जन. से मार्च तक विशेष अशान्तिमय वातावरण बनेगा। इस समय यूरोप के देशों में युद्ध के वातावरण की स्थिति से चिन्ता पैदा होगी, समाधानार्थ बड़े राष्ट्र सक्रिय सहयोग देंगे। कुछ राष्ट्रों की सत्ता में अचानक परिवर्तन एवं कहीं क्रान्ति से सत्ता में परिवर्तन आएगा। सन् १९८४, जनवरी की यूरोप देशों की कुण्डली में श. म. प्लूटो का योग एक बार स्थिति को विषम बनाकर विरोधी देशों में समस्या समाधान की प्रवृति को जन्म देता है। इन देशों की आर्थिक नीति में विशेष परिवर्तन होंगे, कुछ क्रियात्मक पग भी उठाए जाएंगे। उ. कोरिया एवं द. कोरिया की समस्या भी इस सवत् में सामने आएगी। इनमें परस्पर संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होगी लेकिन स्थिति विषम न होगी। पोलैंड भी इस अवधि में किन्हीं दो बड़े देशों में विवाद का कारण बनेगा। समस्या गम्भीर न होकर यथावत् बनी रहेगी। अफ़गानिस्तान का हल इस वर्ष सम्भव है। पश्चिमी जर्मनी में संयुक्त पार्टियों का गठन होकर शासन मे परिवर्तन का योग है। यूरोप के देशों में अणुशास्त्र क्षेत्र में उच्चता प्राप्त करने की होड़ लगी रहेगी। १३ जुलाई के बाद शीघ्र ही यूरोप के किसी देश के प्रधानपद में परिवर्तन होगा; जिससे विश्व शान्ति में सहयोग मिलेगा।

मुस्लिम राष्ट्रों की कुण्डली में अष्टमभाव में नीच चन्द्र के साथ मंगल-यूरेनस हैं। मुस्लिम राष्ट्रों में शत्रुभाव बढ़ेगा, परस्पर इराक-ईरान में शत्रुता चरम सीमा पर पहुंचेगी एवं आपस में एक-दूसरे को हानि पहुंचाने में कसर न छोड़ेंगे। २२ दिसम्बर के बाद यावन देशों की स्थिति अधिक खराब होगी, अगर मुस्लिम राष्ट्रों को ठीक मध्यस्थता न मिली तो परिणाम भयानक होंगे। वर्षमध्य तक मिश्र, अफ्रीका, आस्ट्रिया आदि में अशान्ति बनेगी। मिश्र में वर्तमान शासन सत्ता का तख्ता पलट जाएगा। यहां अचानक रक्तहीन क्रान्ति से परिवर्तन आएगा। मुस्लिम राष्ट्रों की कुण्डली में सप्तम भाव में स्थित

मुस्लिम देशों की कुण्डली
(हिजरी सन् १४०३)
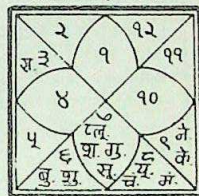
(१९ अक्तूबर, १९८२)

बृहस्पति से संकेत मिलता है, कि अशान्ति के वातावरण के समय किसी बड़े देश की मध्यस्थता से शान्ति का वातावरण बनेगा। कुछ मुस्लिम देशों की विदेश नीति में विशेष परिवर्तन होगा। शस्त्रास्त्रों के भण्डारण की होड़ लगी रहेगी। फ्रांस शस्त्रास्त्रों द्वारा यवन देशों को प्रबल बनाने की चेष्टा करेगा। सीरिया, फिलस्तीन, लेबनान आदि में पुनः अशान्ति पनपेगी, इजराइल के साथ पुनः उलझने की स्थिति बनेगी। केन्या में अकस्मात् सत्ता परिवर्तन होगा। अफ्रीका में रंगभेदनीति के परिणाम चिन्ताजनक होंगे। अफ्रीका के राष्ट्रों से प्रवासी लोगों को तुला के शनि में ही निकलने के लिए विवश होना पड़ेगा। इराक में आगे सैनिक क्रान्ति का प्रयास वहां के शासकों के लिए चिन्ता का कारण बनेगा। पूर्वी टर्की यूनान में भी कहीं विद्रोह, भ्रान्ति एवं पारस्परिक तनाव की स्थिति बनेगी। इटली-फ्रांस भी आगे लेबनान की समस्या के समाधान में ससैन्य योगदान देंगे। वर्षारम्भ से ही ३ जुलाई तक शनि-गुरु वक्री हैं, ३० अप्रैल को म. रा. की युति के समय किसी मुस्लिम राष्ट्र में शासन के विरुद्ध विद्रोह होगा। इस वर्ष कुछ मुस्लिम राष्ट्रों में साम्राज्य की विस्तारवादी नीति से उन्हें हानि उठानी पड़ेगी। जून मध्य के बाद सूर्य-मंगल-राहु का योग किसी देश में प्रधान शासक के लिए कष्टप्रद है, कोई दुःखद घटना घटित होगी। जुलाई प्रारम्भ से जुलाई मध्य तक बुध अतिचारी है; किसी देश में सैनिक क्रान्ति होगी। आगे फरवरी १९७८ ई. के मध्य शनि-मंगल युति का प्रभाव मध्य देश., पर देखा जा सकेगा। अमेरिका आदि बड़े देशों का प्रभावक्षेत्र मध्य देशों तक बनेगा। खाड़ी के देश महंगाईवश अधिक हानि उठाएंगे। कुवैत, घाना, सऊदी अरब, कोरिया आदि में भी आंशिक अशांति रहेगी।

हिजरी सन् १४०४ (८ अक्तूबर १९८३ ई.) की मुस्लिम देशों की कुण्डली के अनुसार इन देशों की स्थिति और भी विस्फोटक हो जाएगी तथा कुछ राष्ट्रों के मानचित्रों में ऐतिहासिक परिवर्तन आएंगे तथा कुछ राष्ट्रों की स्थिति इतनी विषम होगी कि पड़ोसी देश भी अपनी शान्ति भंग करने को विवश होंगे। ध्यान रहे—यह स्थिति यवन देशों में ही होगी, किसी महायुद्ध की स्थिति अभी नहीं बनेगी।

भारत एवं भारत सरकार
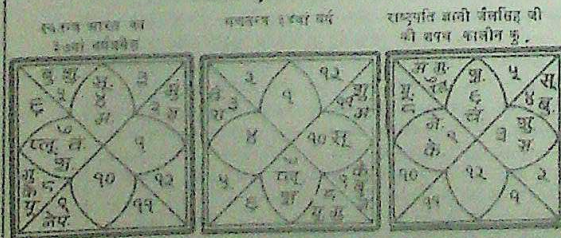
इस वर्ष [illegible]

देश के लिए नई समस्याओं को देने वाला है, जिससे प्रधान नेतागण को देश का नेतृत्व करने में काफी परेशानी का सामना करना पड़ेगा। प्रधान शासक को इस वर्ष बहुत ही विवेक से कार्य करना होगा; विपक्षीदल पदारूढ़ पार्टी के लिए सरदर्द बन सकता है। राजा-मन्त्री का कार्य एक ही ग्रह के अधीन होने से देश में प्राकृतिक प्रकोप से हानि, अग्निकाण्ड से विनाश, लूटमार, चोरी ठगी आदि अनैतिक की घटनाओं को विशेष बल मिलेगा। वर्षेश गुरु, वर्षारम्भ में ही वक्र चल रहा है, शनि-गुरु दोनों ३ जुलाई तक इकट्ठे वक्र स्थिति में रहेंगे। यह अवधि वरिष्ठ व्यक्तियों के लिए चिन्ता एवं कष्टप्रद है। यदि यह कहा जाए कि यह वर्ष भारत सरकार के लिए अग्नि परीक्षा है,—तो कोई अतिशयोक्ति नहीं। स्वतन्त्र भारत की ३६वीं वर्षकुण्डली में तृतीयेश चन्द्र द्वादशस्थ होकर सप्तमेश-मंगल से देखा गया है, जोकि सरकार की प्रगतिकारक योजनाओं में गतिरोध पैदा करने वाला है, लेकिन बृहस्पति की दृष्टि होने से भारत सरकार प्रगतिप्रद योजनाओं का कार्यान्वित करने में निस्सन्देह सफल रहेगी। वर्ष कुण्डली में छठे भाव में बैठा मंगल शत्रु देशों के मानमर्दन करने में सक्षम है। शास्त्रस्त्र-निर्माण योजनाएं बनेगी, सैन्यबल में वृद्धि होगी, भारत सुदृढ़ एवं सशक्त बनेगा। चन्द्रमा उच्चाकांक्षी है अतः भारत देश के योग्य शासकों का मनोबल कठिन परिस्थिति में भी बना ही रहेगा। भारत की आर्थिक स्थिति पर विचार करने पर ज्ञात होता है कि वर्ष कुण्डली में धन स्थान पर शनि की दृष्टि है तथा राहु धनस्थान में है, अतः इस वर्ष भारी आर्थिक चुनौती का सामना करना पड़ेगा। अर्थतन्त्र चिन्ता का विषय होगा। आर्थिक स्थिति को दृष्टि में रखते हुए कुछ नई योजनाएं बनानी होंगी। वर्षेश शुक्र, पराक्रम स्थान में बृहस्पति से इत्थशाल योग बना रहा है, शनि नवमेश दशमेश होकर त्रिकोणस्थ है, मुंथेश-मंगल की मुंथा पर दृष्टि है; अतः केन्द्रीय शासन में दृढ़ता आएगी। अन्ततः विपक्ष भी देशहित में अपनी भूमिका निभाने में योगदान देगा।

१५ अगस्त १९८३ के बाद भारत के सूक्ष्म-वेधसिद्ध निरयण वर्षमान के अनुसार मालूम होता है, कि-क्षेत्रीयता एवं साम्प्रदायिकता का उन्माद इस वर्ष के उत्तरार्ध में ज्यादा बढ़ेगा। किसी प्रान्त में धर्म को राजनीति में समाविष्ट करने की प्रवृत्ति आगे बढ़कर शासन के लिए विषम समस्या पैदा कर देगी, कहीं भाषा के आधार पर प्रान्त के पुनर्गठन का प्रश्न खड़ा होगा। प्रान्तीय-सीमा विवाद भी शासन के समक्ष आएगा। इसके इलावा कुछ ऐसी समस्याएं भी सामने आएंगी जो देश को एकता एवं प्रगति की ओर ले जाने की बजाय पृथकतावाद व साम्प्रदायिकता की ओर ले जाएंगी। पंजाब, आसाम, बंगाल, केरल, तामिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक आदि प्रान्तों में ये तत्व अधिक सक्रिय होंगे। वर्षारम्भ में ही ३० अप्रैल को मंगल-राहु की अंशात्मक युति होगी, इस युति का प्रभाव भारत के उपरोक्त प्रान्तों में विशेष दिखाई देगा। कुछ देशद्रोही तत्व सत्ता की लालसा में प्रान्तीयता एवं क्षेत्रीयता को बढ़ावा देंगे-- जनता ऐसे व्यक्तियों से सावधान रहे। अप्रैल के अन्तिम सप्ताह में कोई दुर्घटना घटित होगी, जिससे जन-धन की अपूरणीय क्षति होगी। कहीं आगजनी की घटना किंवा किसी

प्राकृतिक प्रकोप से भी हानिमय है। वरिष्ठ नेताओं की ग्रहस्थिति के अनुसार यह वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से कष्टप्रद है। १५ मई को बृहस्पति-यूरेनस की युति का प्रभाव भारत के व्यापार वर्ग को प्रभावित करेगा ; अकस्मात् वाणिज्य-सम्बन्धी कुछ नियमों से व्यापारवर्ग अशान्त रहे। ७ मई को मंगल-बुध एवं शु. श. का युद्ध भी विशेष ध्यान देने योग्य है ; जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में भयंकर तेजी का प्रभाव होगा, जनता में शासन के प्रति क्षोभ बढ़ेगा। सामूहिक ग्रहस्थिति को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष ज्ञात होता है, कि महंगाई इतनी बढ़ जाएगी कि जनता का विश्वास शासन के प्रति डगमगा जाएगा तथा पदारूढ़ पार्टी को कुछ प्रान्तीय-निर्वाचन क्षेत्रों में जनमानस को जीतने में भारी कठिनाई होगी। परिणामस्वरूप पश्चिमी बंगाल, केरल, तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश एवं कर्नाटक तथा अन्य दक्षिणी भारत में विशेष पृथकतावाद एवं साम्प्रदायिकता का आश्रय लेकर केन्द्र में पदारूढ़ पार्टी के प्रभाव को इन प्रान्तों में नगण्य बनाने का प्रयत्न करेगा, सफलता भी मिलेगी।

जून में सूर्य मंगल राहु का योग कहीं अग्निकाण्ड, प्राकृतिक प्रकोप, एवं अन्य किसी दुर्घटना से हानिप्रद सिद्ध होगा। जुलाई के प्रारम्भ से जुलाई मध्य तक बुध अतिचारी रहेगा, कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी एवं कहीं दुःखद घटना घटित हो—

"यदा शुभ ग्रहः कश्चिदतिचारं करोति च।
तदा नृपाः क्षयं यान्ति दुर्भिक्षं तत्र दारुणम्।"

इसवर्ष कर्क एवं मकर संक्रान्ति शनिवारी होने से कुछ प्रान्तों में भयंकर दुर्भिक्ष एवं किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पदरिक्त होगा। केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में कुछ आवश्यक परिवर्तन करने पड़ेंगे। २७ मार्च से २८ जुलाई तक का समय भारत में विशेष घटनापूर्ण रहेगा। तीन अगस्त से १९ सितम्बर तक शनि-मंगल का दृष्टि सम्बन्ध सीमा प्रान्तों पर सैन्यबल को सतर्क रखने की आवश्यकता पर बल देगा। कुछ प्रान्तों में साम्प्रदायिक तनाव भी चिन्ता का कारण बनेगा। लेकिन भारत का कुशल नेतृत्व इन सब समस्याओं को हल करने में सफल रहेगा। १३ दिस. को शनि-मंगल का युद्ध, कहीं, आन्दोलन, नारेबाजी तोड़ फोड़ की घटना कराएगा। सीमाप्रान्तों पर अशान्ति बढ़ेगी।

२१ दिस. को बृहस्पति धनु राशि में आकर भारत में सुख समृद्धिप्रद योजनाओं को कार्यान्वित कराएगा। प्रतिष्ठित नेताओं का सम्मान बढ़ेगा। खाद्य वस्तुओं के भाव कुछ नियन्त्रण में आजाएंगे। भारत की विदेश नीति बहुत सफल रहेगी। चीन का व्यवहार कुछ मित्रतापूर्ण नजर आएगा अन्ततः इस ओर से चिन्ताकारक वातावरण बनेगा। रूस का व्यवहार उत्तम एवं परममित्रतायुक्त रहेगा। पड़ोसी देशों के सम्बन्धों में सुधार होगा। लेकिन लगभग (१९८४ ई०) से प्रारम्भ हो रहा शनि-मंगल का योग १५ जनवरी को मंगल-प्लूटो की युति, २७ जनवरी गुरु-शुक्र युद्ध एवं १५ फरवरी को शनि-मंगल की अंशात्मक युति देश में अघटित घटनाओं को जन्म देने वाली है। कहीं तोड़ फोड़, हत्याकाण्ड, कहीं, सीमाविवाद विषमरूप धारण करेगा। उत्तर-पश्चिमी सीमाप्रान्तों पर विशेष चिन्ताजनक स्थिति बनेगी। भारतीय सेना का मनोबल प्रबल रहेगा। इस अवधि में कुछ प्रान्तों में अशान्ति के वातावरण से प्रधान नेता को चिन्तित रहना पड़ेगा। जनवरी से मार्च मध्य तक का समय विशेष सावधानी का है।

गणतन्त्र कुण्डली पर विचार करने से ज्ञात होता है, कि भारत अपने सिद्धान्तों एवं संविधान के सम्मान को बनाए रखेगा, संविधान में इस वर्ष जनहित में परिस्थितिवश कुछ संशोधन परिवर्तन की आवश्यकता पड़ेगी।

महामहिम राष्ट्रपति की पदारूढ़ कुण्डली के विचार से संकेत मिलता है कि राष्ट्र-चिन्तन एवं देशहित में तन मन से लगे रहेंगे। लेकिन कुछ राष्ट्रीय-समस्याएं ऐसी उपस्थित होंगी, जिससे चिन्ता एवं स्थिति को नियन्त्रित करने के लिए कुछ प्रान्तों पर राष्ट्रपति शासन लागू करना पड़ेगा। शपथकालीन कुण्डली में शनि-चन्द्र का मेल स्वास्थ्य के लिए चिन्ता कारक है। जनवरी ८४ से कष्ट एवं चिन्ता बढ़ सकते हैं। ईश्वर भारत के इन सशक्त कर्णधारों को सर्वदैव स्वस्थ रखे ताकि देश का पथप्रदर्शन ठीक ढंग से चल सके।

तात्पर्य यह है, कि इस वर्ष अनेकविध विशेष अन्तर्देशीय समस्याओं के बावजूद भी भारत अपनी प्रतिष्ठा को बरकरार बनाए रखेगा। भारत के नेतृत्व का यश विश्व में फैलेगा। व्यापारिक-सामाजिक एवं राजनैतिक दृष्टि से भारत बहुमुखी योजनाएं बनाएगा, भारत का गणतन्त्र अक्षुण्ण रहेगा।

भारत का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार—वर्ष कुण्डली के अनुसार भारत की व्यापारिक क्षेत्र में अनेक उच्च देशों की कोटि में गणना होगी। फ्रांस, रूस एवं जापान तथा अन्य अनेकों देशों से व्यापारिक-सम्बन्ध बनेंगे। देशों के सहयोग से नए निर्माणों का उपक्रम बनेगा। व्यापारिक सम्बन्धों में आदान प्रदान प्रक्रिया से भारत की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। हवाई जहाज निर्माण कार्य अधिक बढ़ेगा। औद्योगिक वस्तुओं का निर्यात अधिक होगा। चमड़ा, रासायनिक पदार्थ, कपड़ा, कलपुर्जे, ऊनी वस्त्र एवं कुछ अन्य वस्तुओं का निर्यात होगा। जर्मनी, इटली, स्वीडन, रूस आदि देशों से नए व्यावसायिक सम्बन्ध सुदृढ़ होंगे।

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब—प्रभावराशि मीन है। जगत् लग्न कुण्डली में मीन पर गुरु दृष्टि होने से साम्प्रदायिक एवं क्षेत्रीय समस्याओं का हल निकलेगा। प्रधाननेता को कठिन परिस्थिति सामना करना पड़ेगा। संवत् के आरम्भ के तीन महीनों में इस प्रान्त के मानचित्र में कुछ परिवर्तन संभव है। केन्द्र का सहयोग समस्या समाधानार्थ होगा। प्रान्त की प्रगति एवं जनहित को सामने रखते हुए ज्ञात होता है, कि कुछ विशेष कानून बनेंगे जिससे शान्ति बनेगी। यहां कृषि में प्रगति होगी, कपास के उत्पादन में कमी आएगी। परिवहन एवं यातायात साधनों में सरकार विशेष संशोधन करेगी। कुछ विदेशी शक्तियां प्रान्त में साम्प्रदायिकता को गुप्तरूप से बढ़ावा देंगी लेकिन शासन अडिग रहेगा, समस्या का समाधान शान्तिपूर्ण ढंग से संभव न होगा। जनवरी '८४ के बाद का समय प्रधान शासक के लिए कष्टप्रद है।

हरियाणा—प्रभावराशि मिथुन है, इसवर्ष में राजनैतिक गतिरोध पैदा होंगे। जन. '८४ से मार्च तक शनि-मंगल का योग प्रधान शासक के समक्ष नई समस्याएं खड़ी करेगा। युवा राजनैतिक कार्यकर्ताओं में असन्तोष बढ़ेगा—लेकिन कुशल शासक निश्चय ही स्थिति पर काबू पा लेंगे। १३ जुलाई १९८३ के बाद का समय भी प्रान्त में

कुछ गतिरोध वाला है। विद्युत् कमी से यहां के उद्योग प्रभावित होंगे। प्रधान शासक के समक्ष कोई प्रान्तीय समस्या उभरेगी जिसके लिए केन्द्र का सहयोग लेना होगा। प्रधानशासक सफल एवं यशस्वी रहेगा।

हिमाचल—प्रभावराशि मीन है। प्रधान शासक की नामराशि के आधार पर विचार करने से ज्ञात होता है कि शनि उनके समक्ष नानाविध राजनैतिक समस्याओं को खड़ी करेगा, विरोधी पक्ष राजनैतिक गतिरोध पैदा करेगा, अप्रैल से जुलाई तक का समय नेष्ट है, जन-'८४ से मार्च तक भी अशान्तिमय वातावरण को बनाता है। फलों की उपज में कमी आएगी। भीषण राजनैतिक-आर्थिक संकट पैदा होंगे, महगाई बढ़ेगी। विपक्ष का प्रभाव बढ़ेगा। सत्तारूढ़ पार्टी में भी प्रधान शासक के प्रति असन्तोष रहे; अतः यहां के प्रधानपद में मई से पूर्व ही परिवर्तन का योग है। सिचाई एवं पेयजल योजनाओं में प्रगति होगी।

उत्तर प्रदेश—तुला के शनि में अनेक स्थानों पर हड़ताल आदि की घटनाएं अधिक होंगी। ३० अप्रैल से जुलाई तक का समय एवं दिसंबर से मार्च तक का समय प्रधानशासकों के लिए समस्यापूर्ण रहेगा। कहीं साम्प्रदायिक तनाव व अशान्ति बने, कुशल शासक समस्याओं से दृढ़ता और निष्पक्षता से निपटने में अक्षम रहेंगे। किसी भाग में बाढ़ आदि से हानि का भी योग है। दिसम्बर में बृहस्पति के धनु राशि में आने पर प्रगतिप्रद योजनाएं बनेंगी।

राजस्थान—प्रभावराशि तुला में शनि होने से दिसं.'८३ से मार्च (१९८४) तक का समय प्राकृतिक प्रकोप एवं राजनैतिक दृष्टि से चिन्ताप्रद है। प्रधानपद में इस वर्ष परिवर्तन सम्भव है। बीच में अप्रैल के अन्तिम सप्ताह से जुलाई तक भी प्रगतिप्रद योजनाओं को कार्यान्वित करने में बाधा पैदा होगी। किसी भाग में सूखा की स्थिति बनेगी।

बिहार—३० अप्रैल को मंगल-राहु की युति का प्रभाव मई जून तक चलेगा। प्रधान शासक को सख्ती से काम लेना पड़ेगा। किसी भाग में सूखे की स्थिति बिगड़े। मजदूर वर्ग में अशान्ति एवं असंतोष है।

महाराष्ट्र—अप्रैल तक का समय सत्तारूढ़ दल के लिए कठिन है। जनता का विश्वास प्राप्त करने में कठिनाई अनुभव हो। विपक्ष से चिन्ता बने। मन्त्रिमण्डल में विशेष परिवर्तन मई तक होने का योग है।

मध्यप्रदेश—प्रभाव राशि वृष है। जनवरी १९८४ से मार्च तक का समय [illegible] समस्याओं से बाधा रहेगा। कुछ भाग बाढ़ग्रस्त हों। बीच [illegible] की राजनैतिक [illegible] से प्रगतिप्रद योजनाओं को क्रियान्वित करने में कठिनाई आए। मन्त्रिमण्डल में कुछ परिवर्तन हो।

बंगाल—[illegible] बृहस्पति की [illegible] है अतः अपेक्षाकृत कुछ शान्ति रहेगी। [illegible] में कोई परिवर्तन न होगा। जुलाई में कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि का योग है। कहीं [illegible] आदि से क्षति होगी।

आन्ध्र प्रदेश—बृहस्पति के अनुसार [illegible] का प्रभाव क्षीण होगा, [illegible] प्रभाव [illegible] राजनीति में प्रवेश के [illegible] होगी, [illegible] बनेगा। राजनैतिक अस्थिरता का योग है।

काश्मीर—[illegible] राशि मीन है। [illegible] की युति [illegible] है। [illegible] में इस क्षेत्र में कुछ [illegible] होने के [illegible] ही [illegible] सरकार बनेगी। [illegible] के होने से

विशेष संशोधन होगा, किसी पार्टी योग से प्रभाव क्षेत्र बढ़ेगा। फरवरी ८४ से मार्च तक का समय सीमा प्रान्तों पर विशेष सावधानी का है। इस वर्ष केन्द्र एवं यहां के शासन तन्त्र में किसी विशेष समस्या को लेकर मतभेद बढ़ेगा, केन्द्र का पक्ष भारी रहेगा।

विश्व के प्रमुख राष्ट्र

अमेरीका—मिथुन प्रभाव राशि है। १२ जुलाई तक प्रधान शासक के सामने अन्दरूनी समस्याएं खड़ी हों। समय प्रधान शासक के अनुकूल नहीं। शस्त्रास्त्र निर्माण में प्रगति एवं कुछ देशों को शस्त्र देकर अशान्ति की ओर प्रेरित करे। भारत के साथ सम्बन्ध प्रायः ठीक रहेंगे। पोलैंड का विवाद आगे वृश्चिक के शनि में चिरकाल बाद हल होगा। शस्त्रास्त्रों के परीक्षण से अणु क्षेत्र में प्रभाव बढ़ेगा।

रूस—तुला राशि में शनि होने से यहां की राजनीति में विशेष प्रगति होगी। प्रभाव क्षेत्र बढ़ेगा। पराक्रम क्षेत्र पर शनि की दृष्टि होने से नए नए आयुधों का निर्माण हो। भारत के साथ प्रगाढ़ मैत्री सम्बन्ध रहेंगे। सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति होगी। तुलास्थ शनि के अन्तिम दिनों में प्रधानपद में परिवर्तन हो।

चीन—तुला राशि में शनि देश के लिए प्रभाव बढ़ाने वाला है। अपनी उच्च राशि में शनि यहां स्थायी शासन का संकेत देता है। वर्ष के पूर्वार्ध में ही आर्थिक नीति में विशेष परिवर्तन होंगे, पड़ोसी देशों से सम्बन्ध बढ़ने का भी योग है। इस देश की विस्तारवादी नीति में भी संशोधन होंगे। यहां दिसं. ८३ से मार्च ८४ तक प्राकृतिक प्रकोप से विशेष हानि होगी। इस समय यहां के शासकों की नीति में कुछ संशोधन से पड़ोसी देशों के साथ पुनः सम्बन्ध बिगड़ने का योग भी है। यहां के प्रधानपद में परिवर्तन का योग भी बनता है।

ब्रिटेन—प्रभाव राशि मेष है। इस देश के प्रभाव क्षेत्र पर शनि की नीच दृष्टि है। आन्तरिक अशान्ति से प्रधान शासक चिन्तित रहे। आवासित लोगों में अशान्ति तथा प्रधानपद में परिवर्तन का योग है। आयरलैंड में भी उपद्रव होंगे। भारत के साथ सम्बन्ध ठीक रहेंगे।

पाकिस्तान—कन्या राशि से शनि निकल चुका है, अतः यहां पर निरंकुश शासन सत्ता में परिवर्तन अवश्य होगा। लोकतन्त्र का स्वप्न शीघ्र पूरा होने वाला नहीं। दिसम्बर' १९८३ से मार्च १९८४ के अन्दर विशेष घटना क्रम जारी होगी। इस वर्ष यहां पर राजनैतिक विद्रोह, उलटफेर से एकबार अशान्ति का वातावरण बनकर पुनः शान्ति बनेगी। परमाणु क्षेत्र में कार्य जारी रखेगा। शस्त्रास्त्रों के भण्डारण की प्रवृत्ति बढ़ेगी। सिन्धुघाटी से अरब की खाड़ी तक मुस्लिम राष्ट्र बनाने की लालसा पूरी न होगी। आर्थिक उलझनें बढ़ेंगी। वर्षारम्भ से पूर्व ही विश्व के किसी स्त्री नेता की मृत्यु का योग है।

पाठको! यथार्थ भविष्य देखने की क्षमता तो इस कलियुग में कठिन ही है। पुनरपि ज्योतिर्विज्ञान दृष्ट्या एवं प्रभुकृपा से राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जो शुभाशुभ घटनाएं अल्पविषया मति में स्फुरित हुई हैं, आपके समक्ष प्रस्तुत कर दी हैं। उस प्रभु की प्रबल मायाशक्ति के सम्मुख मुझ जैसे अल्पज्ञ की भविष्य-लेखन में प्रवृत्ति बालचापल ही तो है—

"नाहं [illegible] वेद्मि कदाचन।"

श्री मार्तण्ड भवन, कुराली।
ता. ४ अक्तूबर १९८२

शुभचिन्तक—
इन्दुशेखर शर्मा

प्रसूति-लग्न विचार

मेष—जन्म समय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर, उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलिन। ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

वृष—माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आईं, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से मे सूतिका स्थान, श्वेत-स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया, १।२८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ६० वर्ष जीवे।

मिथुन—माता का सिर पश्चिम में उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे, ४।१०।१४।३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवायें। यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव के पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के बामांग में लहसन आदि का चिन्ह, देर से रोया, ५।२५।४०।५८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों में प्रवेशसमय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना-कल्याणप्रद है।

सिंह—माता का पश्चिम या पूर्व में सिर, मलीन सा लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, ५।१३।२८।३६।४८ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्य नारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में सिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी-चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया। घर के नैऋत कोण में सूतिका-स्थान, ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक हैं। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला—माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी, जन्म समय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्म समय कुछ ठहर कर अर्द्ध शब्द करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका-स्थान, ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त वा दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आईं, दीपक स्वस्थान मे टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, छींक भी किया, दीर्घकेश, घर के पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु—माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, पीत वा रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्म समय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया, और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान, २।१०।१८।३१।३८।४२।६७ इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर—माता का सिर दक्षिण में, ऊपर काला वा जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जल पान किया था। जन्म समय स्त्रियां २, पीछे से १ आई, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्टकारक वर्षों से बचे, तो ६५ वर्ष जीवे।

कुम्भ—माता का शिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आईं। उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका-गृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन—माता का सिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र सा अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान, १।८।१३।३६।४८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह-शान्ति हवन मृतसञ्जीवनी मेन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे।

स्मरण रहे, कि अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें-वही बालक का जन्मलग्न जानना, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

सुता जन्म सिंहराशि में, घन-मृग जन्मे बाल। अर्ध-शब्द शिशुकरत भयो भाषत बुद्धि रसाल॥

पितृपरोक्ष ज्ञान—(१) जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध-शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो, इन चार योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जहां राहु शैय्या तहां भय जहां कुज होय। रविस्थान में दीप कही शनी लोह कही सोय?

जन्म कुण्डली में दिशा ज्ञान—प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय, तृतीय—ईशान। चतुर्थ—उत्तर। पञ्चम, षष्ठ—वायव्य। सप्तम—पश्चिम। अष्टम, नवम—नैऋत। दशम—दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

प्रसूति-स्थान से पाकशालादि विचार

जन्मकुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और

शनि से अशुभ (मैला) स्थान जानना चाहिए। दोहा—लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। या लग्नर्थ दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार ॥ केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली (स्वराशिमित्रोच्च व मूल त्रिकोण राशि का) केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा-लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है। ग्रहों की दिशा—सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैऋत्य।

चन्द्रातैल-ज्ञानम्—चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तेल ज्यादा कहना यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तेल कहना, यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तेल कहना। सो० तनुस्थान शशि आई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्म तब आई, तब कहि दीपक तैल नहि। सित शनिदशमें धाम, पंचम चतुर्थ चन्द्रमा, शिशु जन्मे तब धाम, दीपक तैल सो युक्त कहि।

लग्नाद्दीपवर्ति-ज्ञानम्—जन्म लग्न के कम अंश हो तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हो तो छोटी कहे।

चन्द्रलग्नान्तर्गतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिकाः—यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों, तो उसकी गणना करें अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हो और उसके अंश लग्न से अधिक हो तब ही उसकी संख्या जोड़ें अन्यथा नहीं जोड़ें। [illegible] कोई ग्रह [illegible] का हो तो तीन गुना करना और स्वराशि [illegible] में हो तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के अस्त [illegible] के हों उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इस में भी विशेष यह ध्यान में रखने योग्य है कि यह लग्न चन्द्रान्तर्गत ग्रहलग्न [illegible] के बाहर समीप में, और सप्तम भाव [illegible] अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो शुभ- [illegible] दुश्चरित्रा कहें। [illegible]

[illegible] शिर व पाद विचार

[illegible] पाया। लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहना, अर्थात् [illegible] में पूर्व, [illegible] में आग्निकोण, [illegible] में दक्षिण, [illegible] में [illegible] नैऋत्य, [illegible] में पश्चिम, [illegible] में वायव्यकोण, [illegible] में उत्तर और १२ लग्न में ईशानकोण की तरफ जानना। [illegible] स्थान पायें जानना। इन स्थानों में से जिस स्थान में पाप ग्रह युक्त हो, [illegible] पाया टूटा समझना।

दो०—मीन-मिथुन-सिंह-तुला, [illegible] ॥

अथ चिह्नज्ञानम्—दोहा [illegible] बालक के लहसन अरु गर्भवचन परमाण ॥ भानु [illegible] कहें [illegible] घट् अगली भाषत कविवृन्द। [illegible] वा मस्तके अवश्य चिह्न दरशाह ॥ सुहृद भाव मे कवि तम भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न ॥ नौमें पांचे भृगु बसे तनु का चौथे मन्द। मृत्यु जाये बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।

प्रसवकष्ट दूर—प्रसवकाल में पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनि देकर कटि में बांधे और साथ ही "ओंमुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि मारिच मारिच स्वाहा ॥" इस मंत्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीस का यन्त्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मन्त्र तथा तन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर चलता कर लेवें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दो०-लग्नाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशी जो खीन। कण्टक शुभ लगना असी, वेगि ताहि यमलीन। बसे चन्द्रा द्वादसे अष्ट भवन २ पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप ॥ लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु [illegible] संताप। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव ॥

अथ काणयोगा—तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसे त्रिकधाम। धा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुत भवन बसे त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय ॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रियघर नाथ ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान ॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान ॥

मूकयोगा—पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय ॥ शुक्र त्रिके गुर्वसह अज. दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।

कुब्जयोगा—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश। जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश ॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृ पुप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु पुना निश्वावीन ॥ पापग्रहयुत लग्नपति परे लग्न मे आय। वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजलाय ॥

बन्धनयोगा—क्रूर रहे धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर मूर कसूर परि [illegible] कारागार ॥

सर्पवेष्टितयोगा—यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है।

यमल जन्मयोगा—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धन के उत्तरार्द्ध) का वर्ग होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे—शनि लग्न से ४।७।१० स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु-समय-विचार—जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हों, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब कहना। अथवा—जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा जब लग्न राशि में आता है, तब मरण कहना। अथवा, वर्ष के भीतर जब जिस योग युक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मरण कहना चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इस वास्ते आयु का प्रथम विचार कर फिर मृत्यु कहे।

सुखयोगा:—अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह २ परे तो जानो सुख संग ॥ जन्मलग्न में उच्च ग्रह जो काहू के होय। मित्र दृष्टि ता पर परे सर्व सुखी नर होय ॥

क्लीब (नपुंसक) योगा:—दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्र भवन ते रिष्फ पट बसे विलब भानु ॥

कुष्ठयोगा:—लग्नप बुध कुज शशि युते राहु युक्त या केतु। श्वेत कुष्ठ को योग यह बरणत गुणी सचेतु ॥ भौम भास्कर मन्दयुत रक्तकृष्ण कहू कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट ॥ जलगंडयुत चन्द जो ग्रन्थिगंडे कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनु नाथ ॥ आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयी रोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।

केमद्रुम:—आगे पीछे चन्द्र के जो न परें ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय ॥ उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय ॥

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है, भूलि न व्याहेउ कोय ॥ जाके कुज दशमे बसें ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु। क्रूर युक्त लग्नेश जो पापग्रहों के .च। सो कन्या व्याभिचारिणी बुधवर कहे कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कठोर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहे पति को तजे तमारि ॥ छठे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवें भवन में सो पति करैं है भंग ॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटकं शुभ सो .ीन ताको पति जीवित रहे वर्ष दोय या तीन ॥ द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसें त्रिकधाम। राण्ड होय कछु दिवस में कहत गणक गुणग्राम ॥ पाप ग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नाशे कुल दुवो भाषत कविकुल वृन्द ॥ सप्तम भृगु जाके बसें सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृगु बसें बुधजन कहत विचारि ॥

वैधव्य विषकन्यायोगा:—चौ० रविवार द्वितीया जो होय। श्लेषा ताहि दिन में जोय ॥१॥ कृत्तिका होय शनिश्चर वार ॥ साते तिथि का करो विचार ॥२॥ होय शत-भिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार ॥३॥ इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जाने सोय ॥४॥ जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय। एक पापग्रह नभ १० में जोय ॥५॥ शत्रु क्षेत्र में ह्वै ग्रह मानो। तो कन्या को विधवा जानो ॥६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय ॥ मन्दवार युत लीजो जोय ॥७॥ परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार ॥८॥ रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय ॥९॥ ऐसो योग लखी जो परे। तो कन्या को विधवा करे ॥१०॥ दो०—सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान। सूर्य होत सुत सदन में कन्या विधवा मान ॥११॥

वैधव्य विषकन्याभंगयोगा:—जन्मलग्न वा चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय ॥

काकवन्ध्यादियोग:—शे अष्टमे काकवन्ध्या। मन्दार्कविष्टमे वन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या ॥

स्त्रीणां राजयोगा:—चौपाई-केन्द्रधात नभगा शुभ होई। नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके। मन प्रसन्न होई है सुत वाके—चन्द्रज तुग बसे तनु जाई। लाभ धन गुरु आवे धाई ॥ सो त्रिय होय नृपति की नारी। जन विख्यात होय सुकुमारी ॥ जो षट्वर्ग शुद्ध गुरु होई। शशि दृग केन्द्र भवन में होई ॥ ऐसे योग जन्म सुकुमारी ॥ रानी होय सदन धनभारी ॥ दोहा......कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरि युत ताकों पति नृप शूर ॥ लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुरु परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन ॥

स्त्रीणां पुत्रभावविचार:—पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत् ॥

अशुभ प्रसव मास—कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथिनी, श्रावण में गधी वा घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊंटनी, पौष में बकरी, चैत में कुतिया के बच्चे जन्में तो ६ मास में पिता वा घर वाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन में घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे, कि यहां सर्वत्र सौरमास का ग्रहण है, प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर व्याहृति मन्त्रों से घृतक्त श्वेत सरसों का हवन करे, बच्चा जन्मे तो कार्तिक शान्ति करने से शुभ है।

त्रिखलजन्म फल—यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लड़का पिता को भय, धनहानि आदि कष्ट होते हैं, कृपणता छोड़कर त्रिखल शांति करे तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (चांदी, सोना, तांबा) दान करे।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दांत निकले हों तो माता-पिता, को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से युक्त जन्मे तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। एक मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवें में ज्येष्ठ बन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, ७वें में पितृसुख, ८वें में पुष्टि, ९ में धनी, १० में सुख, ११वें में सुख, १२वें में धनी।

अर्धकनक्षत्रजनन-फलम:—वृद्ध गर्ग कहते हैं कि यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

जन्म-कुण्डली से विशेष विचार

लघु-भ्राता का जन्म समय जानना—(१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जो जोड़ें राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है।

(२) तृतीयेश तृतीयस्थग्रह तृतीयस्थ राशि की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना—(१) जन्मलग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावे, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(३) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल-स्पष्ट घटावे—(यथा)—ल० तृ० शे०। शेष राशि में से जब गोचर का शनि आता है तब भ्रातृ कष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम इन चारों स्पष्टों को जोड़ कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचरस्थ शनि होता है उस काल में भ्रातृ-कष्ट होता है।

(५) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृ कष्ट जानिये।

माता की मृत्यु का समय जानना—(१) जन्म के सूर्य स्पष्ट में से चन्द्रस्पष्ट को घटाने से शेष के उस राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि या गुरु होता तब माता की मृत्यु का समय जानना।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुखे	स्कन्धे	हृदये	बाह्वो	हस्ते	गुह्ये	जंघा	जान्वो	पादे	स्थानम्
५	६	५	५	५	४	६	४	४	१०	घटी
[illegible]	[illegible]	[illegible]	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्य	फलम्

कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठा	विशाखा
फलम्	([illegible]) श्वसुरहानि	([illegible]) सास नाश	ज्येष्ठ नाश	(४च) देवर नाश

[illegible]

[illegible]

अथ गण्डमूल नक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते है, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि बालक शरीर कष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमल में उत्पन्न पुत्र के ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करने चाहिए, तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरण जन्मफल

मूल पाद फल		आश्लेषा पाद फल	
चरण	फल	चरण	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

मूलजनने वृक्षविभाग फलम्

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्पे	फलम्	शिखा	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पदम्	मन्त्री पदम्	विपुल लाभ	अल्प जीव	फल

अथ मूलपुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाह्वो.	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जान्वो	पाद	स्थान
५	७	४	८	४	६	२	१०	६	६	घटी
राजा	पि. मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा,	मतिमा,	फलम्

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातः संहरते कुलम्॥ यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्॥ दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गण्डातिगण्डे च परिघे यमघण्टके॥ ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्॥

यथा [illegible] मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते॥ [illegible] सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि॥ [illegible] तत्स्नाने विधिः सम्पादितो यदि। जपहोमप्रदानेन कुर्यात् स्यान्मांगल्यं ध्रुवम्॥ [illegible] मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः॥

अभुक्तमूलविचार—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र आदि की चार घटी विशेष बाधी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस

समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग करदे या आठ वर्ष, असमर्थ हो तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे । धनगंडे दरिद्रोऽपि शान्तिं कुर्यात्स्वशक्तितः । अन्यथा नाशमाप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः ॥

गण्डमूलात्पन्न बालक का जन्मकाल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	प्रातः	समय
मू० ज्ये० पिता को भय	मू० श्ले० माता को भय	रे० अश्वि० शरीर भय	पशु हानि	फल

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्य-ग्रह-फलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	सिरअगपीड़ा	कान्तिमुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन २	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज ३	नीरोगी	कीर्तिमान	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत् ४	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहा	दुःखी
सुत ५	सुतहानि	धनी पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु ६	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री ७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहा
मृत्यु ८	अल्पायु	योगी	शरीरपी	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म ९	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म १०	शूर	तेजयुत	तेजस्वी	कीर्तिमान्	संपत्तिमान्	सर्पत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहानि
लाभ ११	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान	सुख्यात	धनी
व्यय १२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदारह	दरिद्री	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	वन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन २	दरिद्रा	बहुधन	वन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्त्ता
सहज ३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत् ४	सपीडा	दुर्भगा	दुःखार्त्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत ५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुत्ता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु ६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति ७	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु ८	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म ९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोकयुक्त
कर्म १०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ ११	सधना	गुणज्ञा	सलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय १२	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढ़ा	दुष्टा	रोगिणी

अश्विनीजातस्य फलम्—अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्यं, तृतीय में मन्त्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है ।

मघाफलम्—मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन विद्या लाभ होवे ।

ज्येष्ठापाद फलम्—प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है । ज्येष्ठांत्यपादजो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका । न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा ।

रेवतीपाद फलम्—रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान दूसरे में मन्त्री या मुख्तार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों ।

अथ मातृसुखनाश योगाः—(१) पापग्रह युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे, (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हों, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मंगल होवे, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो, इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिए ।

पितृनाश योगाः—(१) सूर्य मंगल दशवें वा नवमे गये हो (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो, (३) शत्रु राशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो, इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो ।

भ्रातृनाश योगाः— भ्रातृ ग्रह को ईश जो भौम संगत्रिक होय ।
जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय ।।

सन्तानसुख नाशयोगाः—गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव । ऐसा यो जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव । पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे, त्रिक धान । जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान ।

रोगिणी स्त्रीयोगाः—शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हों तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है ।

नीचयोगाः—सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई । भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई ।। सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल । म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल । जिनके बुध भग राहु संग सप्तम भाव विराज । लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्याबाज ।

जारज योगाः—भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न । सो शिशु है परपुरुष को भाषन ज्योतिषमग्न ।। रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार । तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार ।।

गोचर-ग्रहाणां द्वादशभाव-फल बोध-चक्रम्

ग्रह.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानना.	भय	श्रीः	मानभग	दैन्य	विजयः	मार्गः	पीड़ा	सुकृना.	सिद्धिः	धनलाभ	द्रव्यना.
चन्द्रः	अन्नलाः	धननाश	सुख	रोगः	कार्यनाश	धनला.	स्त्रीला.	रोगः	धर्मला.	सौख्य	धनलाभ	धनना.
भौमः	शत्रुभीः	धननाश	धनलाभ	शत्रुभीः	धननाश	धनला.	द्रव्यना.	शत्रुभी.	शत्रुभी.	शोकः	धनलाभ	धननाश
बुधः	बन्धनं	धनलाभ	शत्रुभी.	पशुलाभ	सुख	स्थानला	पीड़ा	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
गुरुः	भयं	धनलाभ	क्लेश	धननाशः	सुखं	शोकः	राजमान	पीड़ा	सौख्य	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुना.	धनलाभ	सौख्य	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभी.	शोकः	धनला.	वस्त्रला.	दुःख	धनलाभ	धनला.
शनिः	भय	धननाश	ऐश्वर्यं	शत्रुभीः	पुत्रनाशः	धनला.	दोषः	पीड़ा	धर्मना.	दौर्मन.	धनलाभ	धनना.
राहु	हानिः	धननाश	धनलाभ	वैर	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्यु	दुःख	वैर	सुख	शोकः
केतु	रोगः	वैर	सुखं	भय	सुख	धनला.	कलहः	रोगः	पाप	शोकः	कीर्तिः	शत्रुभी.

उपरोक्त गोचर फल जन्म राशि या जन्मलग्न के अंश आदि से लेकर अग्रिम राशिके उतने अंश तक प्रथम भाव एवं द्वादश भावों के अंशों पर कल्पना करने से अधिक मिलता है। केवल राशि से फल में अधिक अन्तर रहता है।

अथ ग्रहाणामेकर्क्षे भोगफल-समयादि ज्ञानम्

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा के	ग्रहाः
मा. १	दि. २॥	मा. १॥	मा. १	मा. १२	मा. १	मा. ३०	मा. १८	एकराशिभोग
आदौ	अन्ते	आदौ	मध्ये	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते	फलसमयः
दि. ५	घ. ३	दि. ८	दि. ७	मा. २	दि. ७	मा. ६	मा. ३	गतभवनाद् प्राक्फलम्

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थं धारणाय मणयः

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवालः	पन्ना	पुष्परागम्	हीरा	नीलम	गोमेदम्	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पूतनादर्शित लक्षण एवं शान्ति

[illegible] ... बिछौने पर अकेली जगह में छोड़ [illegible] को सुला [illegible] देने से पूतना नाम राक्षसी का [illegible] होने से बच्चा बीमार हो जाता है। तब पूतना की [illegible] से अच्छा होता है। जब कभी बच्चा [illegible] दिन [illegible]

मालूम हो कि किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि उसे महापूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लोभादि के वश में आकर कुलदेवता या ग्रामदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुमती स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना जल के गमन करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्रता में ही बालक के साथ सो जावे तो बालकुन्तला नाम की राक्षसी का दोष

होगा। बच्चे को इतर फुलेल और फूल माला पहिना कर बाहर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है। सिर खुले जूठे बालक को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्प रेवती का दोष होता है। कदाचित् बालक खेलता २ गिर जाय अथवा उसे उल्टी हो या हाथ-पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मलमूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है। जो नित्य कर्म संध्या वंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

चेष्टा—जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आवे, डर लगे, मन को उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जावे, उसे ग्रहाविष्ट जानना।

उद्वर्तनम्—दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज, इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते मुलट्ठी, लसूड़े के पत्ते इनका काढ़ा बनाकर स्नान करावे यह रोग दूर होगा।

सर्वबालग्रहशान्त्यर्थं देवालये ज्योतिर्दानं निवासश्च तत्र रात्रौ—ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव॥ इत्यस्य जपः ततोऽनेनैव मन्त्रेण सदीपदधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्तिः॥

अथ बाल रक्षा विधि (प्रयोगसारे)

यदि दुष्ट दृष्टि (नजरादिदोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग कष्ट हो जाय तो—ॐ वासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः। रक्षति त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्॥१॥ कृष्ण! रक्ष शिशुं शङ्ख मधुकैटभ-मर्दनः। प्रातः सङ्गव मध्याह्ने सायाह्ने सुच सन्ध्ययोः॥२॥ महानिशि सदा रक्ष कंसारिष्ट निषूदनः। यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि॥३॥ बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्। त्राहि त्राहि हरेनित्य त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम्॥४॥

इन चार मन्त्रों से अभिमन्त्रित हुई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

अथ बाल पूतना विधान—आगे लिखे बाल कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थान-स्पर्श निम्न-लिखित मन्त्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान विधि तीन दिन निरन्तर करें। चौथे दिन पलास, अश्वत्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ, इनके पत्तों को उबाल कर बालक को मन्त्र पाठपूर्वक स्नान कराना तदन्तर कल्याणार्थ यथा शक्ति भिक्षुकों तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान्न भोजन कराना ॥ तदनन्तर ओं द्यौशांतिरन्तरिक्ष ॐ इत्यादि शांति मन्त्रों व मार्जन व मन्त्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखा-स्थान-स्पर्श पूर्वक यह मन्त्र पढ़े—ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर ! ग्रहस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥ ओं सर्वमातर इम ग्रह सहरतु हुं रादयर स्फोटय २ स्वाहा। गर्ज २ से २ गृह्ण २ आमर्दय २, हिम २, ध्रुवः एव सिद्धि रुद्रो ज्ञापय स्वाहा ॥ इति रक्षा मन्त्रः ॥

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है ?	मूर्ति निर्माणार्थ द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलि विधान व समय	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत चन्दन तिलक, श्वेत पुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहबान	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली (सुहाली) १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	ओं ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बाल मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।	राई, खस, आक के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्ब-पत्र, गोघृत
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	१० दीपक, १० झण्डी, पुष्प चावलों के आटे के सतिये १०	भात एक सेर आटे के पूड़े मत्स्य व बकरे का मांस, संध्या समय पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखना।	ओं नमश्चामुण्डायै विच्चे-ह्रांह्रां ह्रीं ह्रीं हूं हूं, दुष्टाग्रहा गच्छ-न्त्वितः स्थानाद्राज्ञया स्वाहा	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्त चन्दन, रक्त पुष्प, श्वेत ध्वजा, दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १०।	एक सेर लाल भात, आधे सेर पूर्ण पोली, (सुहाली) पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे।	सुनन्दना विधानोक्त	
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुख मंडिका	तिल-चूर्ण एक सेर	श्वेत पुष्प श्वेत ध्वजा ५, दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प	भात, सेर आटे के पूड़े आध सेर पूर्ण पोली, सायं, पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे।	सुनन्दना विधानोक्त	लसुन, गौशृंग, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल गोघृत
पञ्चम दिन मास वर्ष में, बिडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये।	श्वेत भात, ७ पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे	ओं भगवती ह्रींह्रीं हूं हूं, मुञ्च रक्षां कुरु कुरु बलि गृह्ण गृह्णस्त्र ठःठः चामुंडे सर्वार चण्डिकेठःठः स्वाहा।	
षष्ठ दिन मास वर्ष में, वट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७पूड़ियां, १ प्रहर दिनचढ़े पूर्व में चौरास्ते पर	योगिनी विधानोक्त	
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	चावलों का आटा एक सेर	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	भात, ७ पूड़िया साय काल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर	बिडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्त चन्दन ५, रंग की झण्डी५ दीपक ५।	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग छाग मांस संध्या में चौरास्ते पर	बिडालिका विधानोक्त	कूठ, गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत।
नवम दिन मास वर्ष में, मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प ५ दीपक, ५ रंग की झण्डी ५।	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी, सुहाली उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर	ओं नमो भगवतेवासुदेवाय कृष्णाय मंडल बलिमादाय हन२ हुंफट्स्वाहा	
दशम दिन मास वर्ष में, रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	गुड़ के घी भुने चावल, गौ घृत, सायं, दक्षिण में चौरास्ते पर	ओं नमों भगवते वैश्वदेवाय हन हु फट् स्वाहा	गौशृंग, लसुन, सांप की कांचली, निम्बपत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत
एकादश दिन मास वर्ष में, सुर्दशना	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद झण्डी, २५ आटे के सतिये।	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर	ओं नमो भगवते रावणाय चन्द्र हास वज्र हस्ताय ज्वल २ दुष्ट ग्रहादीन् ओं ह्रीं फट् स्वाहा	
द्वादश दिन मास वर्ष में, अद्भुता	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, १३ झण्डी, १३ सतिये आटे के।	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियां ७, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर।	ओं नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय२ हुं३ हन २ दुष्टानां ह्रांह्रं स्वाहा	

अथ नक्षत्र-कष्टावली

रोग नक्षत्र	रोगशांत्यर्थं दान	नक्षत्रपादवशाद् रोग दिनसंख्या १च	२च	३च	४च	रोगशांत्यर्थं जपनीयमन्त्राः	रोगनिवृत्यर्थं बलि
अश्विनी	भोजनदानम्	९	११	१	२०	मृत्युञ्जयमन्त्र जपः	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य देवे।
भरणी	गो-अन्नादिदान	०	६०	४०	११	यमायत्वेति मन्त्रः	हाथी के मुख में तिल चावल
कृत्तिका	स्वर्णदानम्	९	११	१६	२३	अग्निर्मूर्धेति मन्त्रः	कछुए के मुख में घी दें
रोहिणी	घृतदानम्	३	९	१८	३०	ब्रह्मयज्ञेति मन्त्रः	सर्प को दूद दही खिलावे
मृगशिरा	तिलदानम्	९	५	७	१०	इम देवेति मन्त्रः	खरगोश को दूध पिलावे
आर्द्रा	गोदान	०	१८	०	०	नमस्ते रुद्रइति मन्त्रः	बकरी के मुख में रक्त डालें
पुनर्वसु	पीतवस्त्रदानम्	७	१८	२	२१	अदितिर्द्यौ रितिमन्त्रः	सूअर को धान्य खिलावे
पुष्य	तैलान्नदानम्	६	७	१०	२१	बृहस्पतेति मन्त्रः	बकरे के मुख में दही डाले
आश्लेषा	गोऽन्नादिदानम्	०	०	४१	०	नमोऽस्तुसर्पेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलावे
मघा	[illegible]	१५	७	१७	२०	पितृभ्य इति मन्त्रः	बन्दर को तिल उड़द खिलावे
पू. फा.	भोजनदानम्	०	१५	०	३०	भगप्रणेति मन्त्रः	ऊंट के मुख में शहद दे
उ. फा.	अन्नदानम्	७	१८	७	६०	दध्यावइति मन्त्रः	गाय को शाक खिलावे
हस्त	तैलदानम्	१२	१३	१२	०	उदुत्यजातवेदेति मन्त्रः	भैंसे को कमल के फूल खिलावे
चित्रा	[illegible]	११	०	६	१६	त्वष्टा तुरीयेति मन्त्रः	बाघ के लिए तगर व धतूरे के फूल वन में रखे
स्वाती	[illegible]	१०	१३	२०	०	वायोरग्नेति मन्त्रः	भैंसे को गुड़ चावल खिलावे
विशाखा	[illegible]	१५	०	४	१३	इन्द्राग्नी इति मन्त्रः	बाघ के मुख में गुड़ भात की बलि दे
अनुराधा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] मन्त्रः	बकरे को कुलथी सहित भात गुड़ दे
ज्येष्ठा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बन्दरों को गुड़ तिल डाले
मूल	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलावे
पू. षा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] मन्त्रः	कछुए के मुख में नागरमोथे की बलि दे
उ. षा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	गौ को धान्य डाले
श्रवण	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	भैंसे के मुख में रक्त मीठा की बलि दे
धनिष्ठा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] मन्त्रः	मनुष्य के मुख में दही अन्न की बलि दे
शतभिषा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] मन्त्रः	घोड़े को चावल खिलावे
पू. भा.	भोजनदानम्	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] मन्त्रः	शेर के मुख में फल की बलि दे
उ. भा.	अन्नदानम्	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] मन्त्रः	गाय को चावल खिलावे
रेवती	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	हाथी के मुख में पूरी-पूओं की बलि दे

जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है उसे यहां कष्टावली में 'रोग नक्षत्र' का नाम दिया है। रोग नक्षत्र को जानकर इन कोष्ठकों में लिखा उपाय एवं यथोचित दान करने से रोग शान्त होता। 'रोग निवृत्यर्थ बलि' वाले खाना में घोड़ी हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में उसी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलि द्रव्य देकर धूप दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें। ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	६	९	१०
नक्षत्र	मूल	भ.	कृ.	रो.	श्लेषा

जन्मे सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गये गए ना बहुरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना—(१) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब सन्तान उत्पन्न होती है।

(२) चं० ल० गु० इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है।

विवाह स्त्रीसुख होने का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है।

(२) चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर व गुरु चन्द्र होवें तब विवाह होता है।

(४) ला० चं० सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय जानना—(१) गुलिक स्पष्ट से सूर्य-स्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो तो उन की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

नोट—

इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मन्त्र पृथक् पृथक् लिखा है वह न कर सके तो महामृत्युञ्जय ही करे। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है उस चरणानुसार कष्ट दिन जाने, शून्य से विशेष भय जाने, दान जप करे।

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१) रोग के शुरु दिन में जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र वा यमघंट कुयोग हो।

(२) सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो।

(३) सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११) हो।

(५) बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा (२।७।१२) आश्ले. हो।

(६) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (३।८।१३) व मघा हस्त हो।

(७) शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा श्रवण या रिक्ता ४।९।१४ आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पू.षा. या हस्त व पू.भा. या पूर्णा (५।१०।१५) व भरणी हो।

(९) सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।९।१२।१४।३० तिथि, भरणी कृत्ति. आर्द्रा आश्ले. पूर्वा ३ विशा. ज्ये. धनि. शत. नक्षत्र हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना। क्योंकि विना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं हां, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुला दान, गोदान तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है।

अथ रोगत्रिनाड़ीचक्रम्

आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमा
पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल.	श्रवण	पू.भा.	अश्वि	रो	मध्या
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वा	पूषा	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.	अन्त्या

सूर्य नक्षत्र दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र 'रोगात्रिनाड़ीचक्र' में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है, मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन निःसंदेह रोगी की मृत्यु कहे। यह रोग-त्रिनाड़ीचक्र यात्रा तथा रण के समय भी वर्जित करना।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३ संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०—१८वां, नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़ा) होती है। काल के मुख दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की मृत्यु पर्यन्त हालत होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह-युद्ध में जाने पर काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

तिथिकष्टावली यन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदि	बलि	दान
१	अग्नि	१२	शर्कराज्यबलि	घृतनदान
२	ब्रह्मा	५	पायसबलि	भोजनदान
३	काम	७	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
४	गणेश	१६	मोदकान्नबलि	मूंगादान
५	सर्प	२१	पायसबलि	दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
७	सूर्य	८	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिष्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्करावलि	सुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि	क्षौद्रशाकभो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि	रोप्यदान
३०	पितर	१८	सूपकान्नबलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली यन्त्रम्

वा.	वारेश	क. दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायसबलि सूर्यदान
चं.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधु बलि शुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि शनिदान

कालांग चक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अङ्ग विशेष में पीड़ा कष्ट घाव फोड़ा आदि चर्मविकार किंवा वायु—विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो दैवज्ञ तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगाकर निम्न-लिखित कालांग चक्र में दिए भावों के अनुसार उस 'पीड़ित-भाव' को देखे। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की सम्भावना है। शान्ति के लिए उस ग्रह की शान्ति करावे। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभ ग्रह दृष्ट हो तो रोग (कष्ट) शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

कुछ दैवज्ञ यहां भावों की जगह मेषादि राशियों की कल्पना करके इसी तरह से विचार करते हैं।

कालांक चक्र

भाव→	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अङ्ग→	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	वस्ति (मूत्राशय)	लिङ्ग गुदा	जंघाएं	घुटने	पिण्डलियां	पाद-युगल

बाल-रक्षार्थ धूप

राई, लाख, नीम के पत्ते, बांस का छिलका, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल अगर, गाय का घी, इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय "खूं खुर्दनं खं हुं फट् स्वाहा"—इस मन्त्र का उच्चारण करे।

ग्रहगोचराद्यैर्वंशा क्रमार्थग्रहकृतानिष्ट-फल-शमनार्थं प्रत्येक-ग्रहाणां-दान-पदार्थाः												जप संख्या	जपनीय-मंत्राः	दानसमय	हवन-समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंग रक्तगौ	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कर्पूर श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केशर	कस्तूरीरक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	प. २शेषदिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कर्पूर शस्त्र	फल	१९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	प. ५शेषदिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उदड़	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णांग भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्ने	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल घोड़ा	शष्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नम	रात्रौ	दूर्वा
केतु	लहसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	कंबल बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रौ	कुशा
मुख्या	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कर्पूर	मसरी श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुख्येशवत्	मुख्येशमन्त्रः	मुख्येशकाले	

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति को कोई ग्रह गोचर से या दशा-अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत-विधान ब्रह्मचर्य पूर्वक करने से अशुभ फल निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि—सूर्य का व्रत रविवार को करें। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से आरम्भ करके वर्ष पर्यन्त तीस या कम से कम १२ व्रत करें। उस रोज केवल गेहूं की रोटी घी लाल खाण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डाल कर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिलकुल न खावें। भोजन से पूर्व हो सके तो लाल वस्त्र पहनकर ऊपर यथोक्त बीज-मन्त्र की पांच माला जप करें। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत रक्त पुष्प-दूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करें। अपने मस्तक में लाल चन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण भोजन करावे। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परिणित हो जावेगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्र रोग, चर्म रोग एवं अन्य शारीरिक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्य शान्ति का सरल उपचार :—लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग जैसे चादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार के व्रत की विधि—चन्द्रमा का व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार से प्रारम्भ करके ५४ या १० व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके [illegible] बीज-मन्त्र की ११ माला या ३ माला जप करें। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करें। [illegible] के समय नमक के बिना दही—चावल, घी-खाण्ड का [illegible] करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो उस दिन हवन पूर्णाहुति करके [illegible] में ब्राह्मण व बटुकों को भोजन करावे। इस व्रत के करने से [illegible] से [illegible], मानसिक कष्टों की शान्ति होती है, विशेष कार्य सिद्धार्थ की पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्र शान्ति का सरल उपचार :—सफेद [illegible], रूमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दही का उपयोग, चांदी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ या ४५ व्रत करने चाहिए। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लाल वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १, ३ या ७ माला जप करें। नमक सेवन न करें, यह जरूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे या लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी खावें। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलावें। मंगलवार का व्रत ऋण-हर्ता तथा सन्तति—सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो उस दिन हवन-पूर्णाहुति करके लाल वस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करे। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन करावे।

मंगल शान्ति का सरल उपचार :—लाल रंग की वस्तुओं का उपयोग रात को लाल वस्त्र पहनें, तांबे के बर्तन, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार (जेठे) से प्रारम्भ करें। २१ या ४५ व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १७ या तीन माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमक-रहित खाण्ड, घी से बने पदार्थ जैसे मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करें। फिर तीन तुलसीदल, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खावे। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन पूर्णाहुति करके अङ्गहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या-धन-लाभ, व्यापार से तरक्की तथा स्वास्थ्य लाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रह जन्म नेष्ट फल से मुक्ति मिलती है।

बुध शान्ति का सरल उपचार :—हरा रंग, हरे वस्त्र तथा शृंगार की अन्य वस्तुएं हरा रूमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्ष पर्यन्त या १६ गुरुवार व्रत करें। उस दिन पीत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ११ या तीन माला जप करें। पीत पुष्पों से पूजन-अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की बनी घी-खाण्ड से बनी मिठाई लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खावें और यही दान करे। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डू भोजन करावे। स्वर्ण पीत-वस्त्र चने की दाल आदि का दान करे। यह व्रत-विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्या-प्रद है, धन की स्थिरता तथा यश-वृद्धि कर है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पति शान्ति का सरल उपचार :—पीले वस्त्र रूमाल आदि पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ होता है। ३१ या २१ व्रत करे। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की ३ या २१ माला जपें। भोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करे। यही पदार्थ यथा-शक्ति संभव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, हवन पूर्णाहुति के बाद खीर-खण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मण बटुकों को खिलावे। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करे। इस व्रत से स्त्री सुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्र शान्ति का सरल उपचार :-सफेद वस्त्र, सफेद रूमाल आदि सफेद फूल, गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिव पूजन।

शनि के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार से आरम्भ करे : व्रत ५१ या १९ करने चाहिए। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की १९ या तीन माला का जप करे। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग) गङ्गाजल तथा शक्कर थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुह करके पीपल-वृक्ष की जड़ में डाल दे। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पञ्जीरी कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दे तथा तैलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करे। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उड़द तथा देसी जूता, तेल लगाकर दान करे। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक हैरानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह-मशीनरी कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनि शान्ति का सरल उपचार :—घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रूमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहु केतु के व्रत की विधि—शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत शुरू करना चाहिए। यह व्रत १८ करे। काला वस्त्र धारण करके १८ या ३ बीजमन्त्र की माला जपे। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर पीपल की जड़ में डाले। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करे और यही दान में भी दे। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दे। इस व्रत से शत्रुभय दूर तथा राजपक्ष से विजय मिलती है।

राहु, केतु शान्ति का सरल उपचार :-नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पेन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्त्यर्थं स्नान-विधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्।
तथा स्नान-विधानेन ग्रह-दोषः प्रणश्यति ॥

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी-कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारु, मुलेठी, लाल फूल, केसर, गर्म पानी में उबाल कर स्नान करे। सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत, चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबाल कर स्नान करे। ऐसे ही मंगल के दिन अनन्त मूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल ये सब उबाल कर बुध के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा उबाल कर, गुरु के दिन भारंगी, मुलेठी श्वेत सरसों, मालती पुष्प उबाल कर, शुक्र के दिन इलायची, मजीठ तथा शनि के दिन काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमलबेत, सफेद बिनौला उबाल कर स्नान करे। ऐसे ही राहु केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसों तथा लोहबान उबाल कर स्नान करे, तो ग्रह शान्ति होती है।

नोट—स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो तो जो वस्तु मिले, उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधि स्नानम्

लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिला, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि लोध इन औषधियों के जल एवं से सत्तीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शान्ति होती है। गुरु, वचन, देवता ब्राह्मणों की वेदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः) ॥

शनिविचार—अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्—कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः बन्धु-विरोध देशगमनं क्लेशं च चित्ताधिकम्। मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्नि भयं लोहं शस्त्रभयं सदैवासुखं कुर्यादसौ सर्वदा ॥१॥ अथ बृहत्-कल्माणी (साढेसाती) फलम्..राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत् ॥ हानिः स्यान्मरणं विदेश-गमनं सौख्यं च साधारणम्, रामाऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा ॥२॥

सप्तधान्य—उड़द १. मूंगी २. गेहूं ३. चने ४.जौ ५. धान्य (तंदुल) ६. कंगनी ७. **अष्टगंध**—अंगर, कस्तूरी, कुंकुम कपूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन. देवदारु।

अष्टगंध धूप—अगर, छरीला, जटामासी, कपूर-कचरी, गुग्गुल, देवदारु गोघृत सफेद चन्दन।

नक्षत्र-राशिज्ञान चक्र

राशिज्ञाने विशेषः—

नक्षत्र-वा राशि में श और स में, व और ब में कोई भेद नहीं होता । जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहाँ, प्रथमाक्षर ग्रहण करें । (संयोग आद्यरे 'नाम्नि ग्राह्य तदादिमाक्षरम्)

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो		भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गी	से	०	दू	दे
द्वितीय च०	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या		ध	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च०	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च०	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	ही	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

ध्यान दें,—नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण इन अक्षरों से नहीं होता । यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा तो ङ की जगह ध, ञ की जगह दु तथा ण की जगह पु से नाम प्रारम्भ करें । ऐसा करने से नक्षत्र भेद नहीं होता ।

॥१॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन । ततः पश्चाद्भव नाम ग्राह्यं स्वर-[illegible] ॥२॥ प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शब्दितः । तस्य नामाक्षरं वा मात्रा स स्वर एव हि ॥३॥ अथ जन्मराशि-नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते —विवाहे सर्वं मांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे । जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥४॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे [illegible] ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥५॥ काकिण्यां वर्ग [illegible] पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता ॥६॥ कुर्यात्षोडश कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते । सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥७॥ विवाह घटने [illegible] । [illegible] जन्म न ज्ञायते यदा ॥८॥

अभिजित् विवेक—[illegible] श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण [illegible] का पहला १५वाँ भाग जोड़कर उसके चार भाग करो । उसको अभिजित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो । उत्तरा-षाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक-एक चरण मानो । श्रवण का १५वाँ भाग छोड़कर जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण १-१ चरण मानो । इस प्रकार की [illegible] नहीं मानते, [illegible] यहाँ लिखा गया है ।

[illegible]—चू ल मेष, इ वो वृष, क घ ङ छ मिथुनम् ॥
हीडो कर्क, मटे सिंह, टो प ष ठ पो कन्या ॥
रते तुला तो ना य वृश्चिक [illegible] ।
[illegible] ॥

उपरोक्त राशि-ज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर लिया है और जहाँ भी अक्षर बदलता है, वहाँ वह भी [illegible] लिखा गया है । जैसे—मेष में पहला अक्षर 'च' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा चरण) अश्विनी का और चतुर्थ चरण भरणी का ग्रहण हुआ और उसे कृत्तिका के प्रथम चरण इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई । इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें ।

टिप्पणी—(१) जश्रोर्जः यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकर-राशिः । कष-संयोगे क्षः, यथा क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशिः । एवं ज्ञानारानस्य कुम्भराशि । (२) गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोन्नयनं ततः । जातकर्माभिधेयं च निष्क्रम-प्राशनं क्रमात् । चूडोपनयनं वेदव्रतानां च चतुष्टयम् । गोदान-मेखलोन्मोक्षौ विवाहः षोडशी क्रिया ॥

नोट—चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने से फलितज्ञ को काफी सुभीता रहती है । नाम जानने से ही ज्योतिषी (जातक के जन्म के समय चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र जान लेता है तथा फलित-शास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फला-देश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है । इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है । निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भू-स्थित-वनपति एवं प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है । ज्वार भाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है । चन्द्रमा का ज्वार-भाटांक (Tide Factor) सूर्य के ज्वार-भाटांक से दुगुना है । चन्द्रमा के [illegible] का स्त्री के मासिक-धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है । आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर-जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है । अतः जन्म-पत्र आदि के बनाने में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है ।

नवीन-फलितवेत्ता जन्म-पत्र की अंग्रेजी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं । इस पद्धति में प्रायः सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है । चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है । अतः प्राचीन फलित-शास्त्रियों ने जन्म-कालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्म राशि के नाम से कहा है । हमारे ज्योतिष के अनुसार इसी का महत्त्व है ।

शुक्र के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ होता है। ३१ या २१ व्रत करे। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की ३ या २१ माला जपें। भोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करे। यही पदार्थ यथा-शक्ति संभव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, हवन पूर्णाहुति के बाद खीर-खण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मण बटुकों को खिलावे। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करे। इस व्रत से स्त्री सुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्र शान्ति का सरल उपचार :-सफेद वस्त्र, सफेद रूमाल आदि सफेद फूल, गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिव पूजन।

शनि के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार से आरम्भ करे: व्रत ५१ या १९ करने चाहिए। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की १९ या तीन माला का जप करे। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग) गङ्गाजल तथा शक्कर थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुह करके पीपल-वृक्ष की जड़ में डाल दे। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पञ्जीरी कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दे तथा तैलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करे। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उड़द तथा देसी जूता, तेल लगाकर दान करे। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक हैरानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह-मशीनरी कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनि शान्ति का सरल उपचार :—घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रूमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहु केतु के व्रत की विधि—शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत शुरू करना चाहिए। यह व्रत १८ करे। काला वस्त्र धारण करके १८ या ३ बीजमन्त्र की माला जपे। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर पीपल की जड़ में डाले। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करे और यही दान में भी दे। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दे। इस व्रत से शत्रुभय दूर तथा राजपक्ष से विजय मिलती है।

राहु, केतु शान्ति का सरल उपचार :-नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पेन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्यर्थं स्नान-विधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्।
तथा स्नान-विधानेन ग्रह-दोषः प्रणश्यति ॥

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी-कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारू, मुलेठी, लाल फूल, केसर, गर्म पानी में उबाल कर स्नान करे। सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत, चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबाल कर स्नान करे। ऐसे ही मंगल के दिन अनन्त मूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल ये सब उबाल कर बुध के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा उबाल कर, गुरु के दिन भारंगी, मुलेठी श्वेत सरसों, मालती पुष्प उबाल कर, शुक्र के दिन इलायची, मजीठ तथा शनि के दिन काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमलबेत, सफेद बिनौला उबाल कर स्नान करे। ऐसे ही राहु केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारू, सरसों तथा लोहवान उबाल कर स्नान करे, तो ग्रह शान्ति होती है।

नोट—स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो तो जो वस्तु मिले, उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधि स्नानम्

लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि लोध इन औषधियों के जल एवं से सर्त्तोर्पोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शान्ति होती है। गुरु, वचन, देवता ब्राह्मणों की वेदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः)॥

शनिविचार—अथ लघु कल्याणी (ढंया) फलम्—कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः बन्धु-विरोध देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्। मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्नि भयं लोहं शस्त्रभयं सदैवासुखं कुर्यादसौ सर्वदा ॥१॥ अथ बृहत्-कल्याणी (साढ़ेसाती) फलम्. राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्यशून्पीडयेत् ॥ हानिः स्यान्मरणं विदेश-गमनं सौख्यं च साधारणम्, रामाऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽप्यवा ॥२॥

सप्तधान्य—उड़द १. मूंगी २. गेहूं ३. चने ४.जौ ५. धान्य (तंदुल) ६. कंगनी ७. अष्टगंध—अगर, कस्तूरी, कुंकुम कपूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन, देवदारु।

अष्टगंध धूप—अगर, छरीला, जटामासी, कपूर-कचरी, गुग्गुल, देवदारु गोघृत सफेद चन्दन।

नक्षत्र-राशिज्ञान चक्र

राशिज्ञाने विशेषः— नक्षत्र-वर राशि में श और स में, ब और व में कोई भेद नहीं होता । जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, उसका प्रथमाक्षर ग्रहण करें । (संयोग जाक्षरं नाम्नि ग्राह्य तत्रादिमाक्षरम्)

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.
प्रथमचरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे
द्वितीय च०	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०
तृतीय च०	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०
चतुर्थ च०	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	ही	डा	डो	मे	टू	०

राशयः	कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	उ. फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो		भू	भे	०	जु	खी	गा	०	गो	से	०	दु	दे
द्वितीय च०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या		ध	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गु	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

ध्यान दें,—नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण इन अक्षरों से नहीं होता । यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा तो ङ की जगह ग, ञ की जगह द तथा ण की जगह पु से नाम प्रारम्भ करें । ऐसा करने से नक्षत्र भेद नहीं होता ।

॥१॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन । ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदैः ॥२॥ प्रसुप्तो यायते येन यनामच्छति मन्त्रितः । तस्य नामाद्यवर्गे या मात्रा स स्वर एव हि ॥३॥ अथ जन्मराशि-नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते —विवाहे सर्व मांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे । जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥४॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके । नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥५॥ काकिण्यां वर्ग शुद्धौ च [illegible] । [illegible] नामराशेः प्रधानता ॥६॥ कुर्यात्सोक्त कर्माणि [illegible] । [illegible] नामराशौ वतान्विते ॥७॥ विवाह [illegible] । [illegible] जन्म न जायते यदा ॥८॥

अभिजित् निर्णय —[illegible] श्रुति-तिथि-नाडिकोऽभिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करो । उसको अभिजित का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो । उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक-एक चरण मानो । श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण १-१ चरण मानो । इस प्रकार की [illegible] नहीं जानते, [illegible] यहां लिखा गया है ।

राशि ज्ञानम्—चूचे चो ला मेषः, इ [illegible] वृषः, क [illegible] मिथुनम् ॥
[illegible] कर्कः, [illegible] सिंहः, [illegible] कन्या ॥
[illegible] तुला [illegible] वृश्चिकः [illegible] धनुः ।
[illegible] मकरः [illegible] कुम्भः [illegible] मीनः ॥

उपरोक्त राशि-ज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर लिखा है और जहां जो अक्षर अपेक्षित है, वहां वह भी दे दिया गया है । जैसे—मेष में पहला अक्षर 'च' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ला' से [illegible] ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा चरण) अश्विनी का और चतुर्थ चरण भरणी का ग्रहण हुआ और उसे कृत्तिका के प्रथम चरण इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई । इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें ।

टिप्पणी—(१) अन्त्यांशः यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकर-राशिः । कष-संयोगे क्षः, यथा क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशिः । एवं ज्ञानाराजस्य कुम्भराशि । (२) गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोन्नयनं ततः । जातकर्माभिधेयं च निष्क्रम-प्राशने क्रमात् । चूडोपनयनं वेदव्रताना च चतुष्टयम् । गोदान-मेखलोन्मोकौ विवाहः षोडशी क्रिया ॥

नोट—चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने से फलितज्ञ को काफी सुभीता रहती है । नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्म के समय चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र जान लेता है तथा फलित-शास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है । इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है । निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भू-स्थित-वनस्पति एवं प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है । ज्वार भाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है । चन्द्रमा का ज्वार-भाटांक (Tide Factor) सूर्य के ज्वार-भाटांक से दुगुना है । चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक-धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है । आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर-जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है । अतः जन्म-पत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है ।

नवीन-फलितवेत्ता जन्म-पत्र की अंग्रेजी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं । इस पद्धति में मुख्यतः सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है । चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है । अतः प्राचीन फलित-शास्त्रियों ने जन्म-कालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्म राशि के नाम से कहा है । हमारे ज्योतिष के अनुसार इसी का महत्त्व है ।

शनि की साढ़ेसाती, ढैय्या आदि का विचार

जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अन्तर शुभ चल रहा हो, तो ढैया और साढ़ेसाती का अशुभफल कम होता है। यदि चन्द्रशनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हो तो साढ़ेसाती व ढैया महान् अशुभ, चिन्ता, अवनति, धन-हानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह, रोग, पशुपीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्म-कुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश भी हो तो ढैया साढ़ेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। यदि जन्म में लग्नेश पंचमेश, नवमेश होकर ३, ६, ११ वें स्थित हो तो सुख-सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है। शनि-अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ, कम-रेखाएं हों तो अशुभफल निश्चित देता है। शान्त्यर्थ—मतनाजा को तेल का हाथ लगाकर पक्षियों को डालना चाहिए या शनिवार को तेल में मुख देखकर उसमें मिष्ठान्न, गुलगुले आदि बनाकर गरीबों को, भैंसे या कुत्ते को दें, या बन्दरों को गुड़-चने डालते रहें। अष्टगन्ध से शुभ मुहूर्त में बना हुआ शनियन्त्र धारण करना विशेष शान्तिप्रद है।

साढ़ेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का अशुभ फल इस प्रकार है :

मेष राशि वालों को बीच के अढ़ाई वर्ष खराब हैं। वृष को पहले अढ़ाई वर्ष खराब हैं। मिथुन को अन्त के अढ़ाई वर्ष खराब हैं। कर्क को बीच के अढ़ाई वर्ष खराब हैं। सिंह को पहिले ५ वर्ष, उसमें भी मध्य के अढ़ाई वर्ष खराब हैं। कन्या को पहिले ५ वर्ष, उसमें भी मध्य के अढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। तुला का आखिर के अढ़ाई वर्ष खराब हैं। वृश्चिक को अन्तिम ५ वर्ष नेष्ट हैं, उसमें भी बीच के अढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। धनु को प्रारम्भ के अढ़ाई वर्ष खराब हैं। मकर को पहले ५ वर्ष, उसमें भी पहले अढ़ाई वर्ष विशेष खराब हैं। कुम्भ को आदि अन्त के अढ़ाई-अढ़ाई वर्ष, विशेषता अन्त के अढ़ाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। मीन को पूरे साढ़े सात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अन्त के अढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ फल वाले होते हैं।

सन् १९८२ ई० में ५ अक्तूबर को मेष के चन्द्रमा में शनि तुला में प्रविष्ट हो रहा रहा है। वर्षान्त तक शनि तुला में ही रहेगा। तुला के शनि का मेषादि राशियों के लिए साढ़ेसाती, ढैय्या निम्नलिखित है :—

तुलास्थ शनि का मेषादि राशियों के लिए शुभाशुभ फल

कर्क—(ढैय्या), तांबे के पाए, शुभ हैं।
कन्या—(साढ़ेसाती), लोहे के पाए, कष्टप्रद हैं।
तुला—(साढ़ेसाती), तांबे के पाए, शुभ हैं।
वृश्चिक—(साढ़ेसाती), सोने के पाए, हानिप्रद हैं।
मीन—(ढैय्या), चांदी के पाए, शुभ हैं।

गुरु का शुभाशुभ फल

वर्षारम्भ से—२० दिसम्बर १९८३ ई० तक गुरु वृश्चिक में ही रहेगा। तत्पश्चात् २१ दिसम्बर को गुरु धनु में आकर वर्षान्त तक धनु में ही रहेगा। वृश्चिक एवं धनुस्थ गुरु का गोचर इस प्रकार है :—

वृश्चिक के गुरु का शुभाशुभ फल

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अशुभ	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ

धनु राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	मध्यम

गुरु का विशेष फल—गुरु जब तक जिस राशि को शुभ फलप्रद होता है तब तक उस राशि वालों को विद्या व सन्तति की ओर से सुख, मित्र-बन्धु मिलाप, मान-वृद्धि खुशी, धन लाभ व शुभ यात्रादि अच्छे फल प्रदान करता है और जिन राशि वालों को अशुभ फलप्रद होता है, उन्हें धन-मान हानि व सन्तति की ओर से चिन्ता वृथा यात्रा, शारीरिक कष्ट, बड़ों से वैमनस्य आदि अशुभ फलप्रद होता है।

शान्त्यर्थ—गुरुवार का व्रत करें, जप-दान करें, चिड़िया आदि पक्षियों को हल्दी से पीले किए हुए चावल डालें। गुरुशान्तियन्त्र धारण करें।

राहु का शुभाशुभ फल

२४ दिसम्बर, १९८१ ई० से १२ जुलाई १९८३ ई० तक राहु मिथुन में ही रहेगा। उसके बाद १३ जुलाई १९८३ ई० को राहु वृष में आकर वर्षान्त तक वृष मे ही रहेगा।

मिथुन राहु का शुभाशुभ फल

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
शुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	मध्यम	अशुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम	अशुभ

वृष राशि के राहु का शुभाशुभ फल

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अशुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	मध्यम	अशुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ

राहु का विशेष फल—राहु जब जिस राशि को शुभ-फलप्रद होता है तब तक उस राशि वाले व्यक्ति को प्रियमिलन, द्रव्यलाभ, स्वास्थ्यसुख, घर में संतोष, कुटुम्ब में वृद्धि आदि शुभ फल देता है। जिस राशि वालों को मध्यम होता है, उन्हें यदाकदा किंचित् शत्रुभय, कुछ हानि, लाभ कम वृथा कलह, द्रव्यचिन्ता आदि फल देता है और जिन राशि वालों का अशुभ होता है, उन्हें अकस्मात् हानि, चोर-रोगभय, खर्च अधिक मित्र-बन्धु वियोग, गृह-कलह, अशुभ विचारों की ओर मन की दौड़ इत्यादि फल देता है।

शान्त्यर्थ प्रत्येक मास के पहिले बुधवार की रात को तैलपक्व भोज्य गरीबों को दें या कुत्तों को डालें। दुर्गापाठ करें। राहु-शान्ति यन्त्र धारण करें।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सं. २०४०)

राशि	वैशाख (१४ अप्रै. से १४ मई तक)	ज्येष्ठ (१५ मई से १४ जून तक)	आषाढ़ (१५ जून से १५ जुलाई तक)
मेष	लाभ होता रहे, स्वास्थ्य मध्यम, बन्धु कष्ट, वायु विकार, धर्म में व्यय। अप्रै., २०, २१, २८, ३०, मई ८, ९, १० अशुभ।	कुटुम्ब में शोक, लाभ होकर पुनः हानि से खेद, उदर विकार, मासान्त में यात्रा मई १७, १८, २६, २७, जून ५, ६ १४, अशुभ।	लाभ कम, नेत्र व हृदय रोग, स्त्री पुरुष द्वारा व्यय, सगे सम्बन्धियों से वैमनस्य। जून १५, २२, २३, २४, जुलाई २, ३, ४, ११, १२ अशुभ है।
वृष	कारोबार ठीक, शुभयात्रा, सन्तति चिन्ता, स्वास्थ्य अच्छा, शत्रु हानि। अप्रै., १४, १५, २२, २३, मई १, २, ११, १२ अशुभ।	धर्म में वृत्ति, व्यापार में कुछ हानि, स्वास्थ्य कमजोर, सहयोग से लाभ। मई, १९., २०, २८, २९, ३०, जून, ७, ८ अशुभ।	आशा निराशा में बदले, स्थानान्तर का विचार, मास के उत्तरार्द्ध में लाभ, जीव-जन्तु से भय। जून १६, १७, २५, २६, जुलाई ५, ६, १३, १४ अशुभ।
मिथुन	उदर विकार, अनेक प्रकार से लाभ स्त्री व पुत्र पक्ष से चिन्ता, वृथा व्यय। अप्रै. १६, १७, २४, २५, मई ३, ४, ५, १३, १४ अशुभ।	कारोबार मध्यम, स्त्री-पुत्र द्वारा खर्च, लेन-देन का विवाद, चित्त अशान्त। मई २१, २२, २३, ३१, जून १, ९, १० अशुभ है।	घरेलू झंझटों से हैरानी, रोग भय, मित्रों से विवाद, विशेष परिश्रम से लाभ, स्त्री चिन्ता। जून १८, १९, २७, २८, २९, जुलाई ७, ८, १५ अशुभ।
कर्क	घरेलू, चिन्ता विशेष, लाभ माध्यम, यात्रा प्रसंग, शत्रु भय, सन्तति द्वारा व्यय। अप्रै., १८, १९, २६, २७, मई ६, ७ अशुभ।	निजि जनों से विरोध, लाभ से व्यय अधिक कारोबार कमजोर, शत्रु से सावधान। मई १५, १६, २४, २५, जून २, ३, ४, ११, १२, १३ अशुभ।	नये कार्य का विचार, पशु पीड़ा, हिम्मत कमजोर, मिलता लाभ हाथ से जाता रहे। जून २०, २१, ३०, जुलाई १, ९, १० अशुभ।
सिंह	कुछ लेन-देन का विवाद, वृथा व्यय, कारोबार ठीक, बन्धु चिन्ता। अप्रै. २०, २१, २८, ३०, मई ८, ९, १० अशुभ।	रोग भय, लाभ अच्छा, शोक समाचार से चिन्ता मित्र-मिलाप। मई, १७, १८, २६, २७, जून ५, ६, १४ अशुभ।	लाभ होता रहे, मान वृद्धि, शत्रु परास्त, पशु लाभ, बन्धु सुख। जून १५, २२, २३, २४, जुलाई २, ३, ४, ११, १२ अशुभ।
कन्या	चित्त अशान्त, पशु पीड़ा, कारोबार में गड़बड़, मित्र-बन्धु सुख। अप्रै. १४, १५, २२, २३, मई १, २, ११, १२ अशुभ।	सोचे कार्यों में विघ्न, लाभ में रुकावट, यात्रा में भय, श्रेष्ठ पुरुषों से मिलाप। मई १९, २०, २८, २९, ३०, जून ७, ८ अशुभ।	रोग भय, लाभ मध्यम, अनेक झंझटों से हैरानी मित्र-बन्धु मिलाप, वृथा खर्च। जून १६, १७, २५, २६, जुलाई ५, ६, १३, १४ अशुभ।
तुला	स्वास्थ्य खराब, स्त्री-पुत्र विषयक चिन्ता, लाभ मध्यम, [illegible]। अप्रै. १६, १७, २४, २५, मई ३, ४, ५, १३, १४ अशुभ।	राजपक्ष व शत्रु से भय, नई परेशानी, लाभ अच्छा, हौसला कम, यात्रा में कष्ट। मई २१, २२, २३, ३१, जून १, ९, १० अशुभ।	स्थाई काम की चिन्ता, बन्धु सुख, लाभ मध्यम, बुद्धि भ्रम, शत्रु भय, स्वास्थ्य कमजोर। जून १८, १९, २७, २८, २९, जुला. ७, ८, १५ अशुभ।
वृश्चिक	व्यापार में हानि, निजिजन की चिन्ता, सन्तान में अकस्मात् लाभ, वृथा व्यय। अप्रै. १८, १९, २६, २७, मई ६, ७ अशुभ।	स्वास्थ्य में गड़बड़, अधिक परिश्रम करना पड़े, कारोबार की चिन्ता, पारिवारिक समस्या बढ़े। मई १५, १६, २४, २५, जून २, ३, ४, ११, १२, १३ अशुभ है।	बड़े काम में हानि, राज भय, स्वास्थ्य मध्यम, सत्संग लाभ, लेन-देन की चिन्ता, कष्ट से लाभ। जून २०, २१, ३०, जुलाई १, ९, १० अशुभ।
धनु	[illegible], अकस्मात् [illegible] कारोबार ठीक, खर्च अधिक। अप्रै. २०, २१, २८, ३०, मई ८, ९, १० अशुभ।	प्राचीन माल या बकाया रकम लाभ, स्त्री चिन्ता, सफलता के मार्ग में बाधा, देह कष्ट। मई १७, १८, २६, २७, जून ५, ६, १४ अशुभ।	देर का उलझा हुआ काम बने, धर्म में रुचि शत्रु परास्त, कारोबार यथावत् ठीक। जून १५, २२, २३, २४, जुलाई २, ३, ४, ११, १२, अशुभ।
मकर	[illegible] अच्छा, अकस्मात् लाभ, चोर भय, शत्रु [illegible]। अप्रै. १४, १५, २२, २३, मई १, २, ११, १२ अशुभ।	सज्जनों से लाभ, नया उत्साह, लाभ मध्यम, मित्र-मिलाप, यात्रा का प्रबन्ध बने। मई १९, २० २८, २९, ३०, जून ७, ८ अशुभ।	बड़े पुरुषों से मिलाप, लाभ अच्छा, बन्धु वर्ग से हैरानी, स्वास्थ्य मध्यम। जून १६, १७, २५, २६, जुला. ५, ६, १३, १४ अशुभ।
कुम्भ	[illegible], पैर व उदर में पीड़ा, कारोबार में लाभ, अशुभ समाचार से चिन्ता। अप्रै. १६, १७, २४, २५, मई ३, ४, ५, १३, १४ अशुभ।	निश्चित कार्यों में आंशिक सफलता, स्त्री की ओर चित्त चिन्तित, लाभ ठीक। मई २१, २२, २३, ३१, जून, १, ९, १० अशुभ।	अशुभ वृत्ति, उदर व मस्तक में पीड़ा, शत्रु भय, निजि जनों से अशान्ति, लाभ मध्यम। जून १८, १९, २७, २८, २९, जुला. ७, ८, १५ अशुभ।
मीन	[illegible] की चिन्ता, कारोबार में नई समस्या, राज भय, मित्र से सन्तोष। अप्रै. १८, १९, २६, २७, मई ६, ७, अशुभ।	कारोबार कुछ ठीक, परिस्थितियों के सुधार में प्रयत्न हों, [illegible] अच्छा, नजदीक की यात्रा। मई १५, १६, २५, जून २, ३, ४, ११, १२, १३ अशुभ।	विवाद में जय, प्रिय वियोग, वंश वृद्धि, लाभ में रुकावट। जून २०, २१, ३०, जुलाई १, ९, १० अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सं. २०४० वि.)

राशि	श्रावण (१६ जुलाई से १६ अगस्त तक)	भाद्रपद (१७ अग. से १५ सित. तक)	आश्विन (१६ सितं. से १६ अक्तू. तक)
मेष	धर्म में प्रवृत्ति, वायु विकार, मित्र से विवाद, गतमास की अपेक्षा लाभ ठीक। जुला. १९, २०, २१, २९, ३०, ३१, अग. ७, ८, १६ अशुभ।	किसी की मदद से लाभ, अकस्मात् दुख-चिन्ता बने, नवीन शत्रु से भय, जीवन अव्यवस्थित सा रहे। अग. १७, २६, २७, सित. ४, ५, १२, १३ अशुभ।	इच्छाएं बढ़ें, धर्म में अरुचि, काम में कोई महत्त्वपूर्ण सुधार हो। सितं. २२, २३, अक्त. १, २, ९, १०, ११ अशुभ।
वृष	लाभ अच्छा, पैर व उदर में कष्ट, उलझनें हटेंगी, पुत्रादि द्वारा विशेष खर्च। जुलाई २२, २३, अग. १, २, ९, १० अशुभ।	किसी षड्यन्त्र का भय, लाभ यथावत्, स्वास्थ्य कमजोर, यात्रा में कष्ट, मित्र से सुख लाभ। अग. १८, १९, २०, २८, २९, सित. ६, ७, १४, १५ अशुभ।	व्यवसाय मंद गति से चलेगा, समाज में यश, उत्सवों में सम्मिलन। सित. १६, २४, २५, २६, अक्तू. ३, ४, १२, १३ अशुभ।
मिथुन	राज पक्ष में सावधान, कार्य में मन न लगे, प्रतिष्ठा बनी रहे, लाभ होता रहे, स्वास्थ्य कमजोर। जुला. १६, २४, २५, २६, अग. ३, ४, ११, १२ अशुभ।	निजि जनों से मनमुटाव, लाभ होकर फिर हानि, जमीन मकान की नई चिन्ता। अग. २१, २२, ३०, ३१, सित. १, ८, ९ अशुभ।	छोटे-छोटे आकस्मिक लाभ, वाद में उदारता, प्रियजनों का समागम। सित. १७, १८, २७, २८, अक्त. ५, ६, १४, १५, १६ अशुभ।
कर्क	चिन्तित कार्य में बिलम्ब, कारोबार की चिन्ता, व्यय अधिक, उत्सवादि में सम्मिलन। जुला. १७, १८, २७, २८, अग. ५, ६, १३, १४, १५ अशुभ।	घरेलू परिस्थिति बिगड़े, कारोबार मध्यम, किसी के सहयोग से उत्साह, प्रिय मिलाप। अग. २३, २४, २५, सित. २, ३, १०, ११ अशुभ।	चिन्ता के कारण बनते रहें, परिश्रमानुसार भी न मिले, मित्रों से सहयोग न मिले। सित. १९, २०, २१, २२, ३०, अक्तूबर ७, ८, ११, अशुभ।
सिंह	काम-काज में सफलता, पत्नि से सेवा सहयोग, मानवृद्धि, समस्याओं का समाधान हो। जुला. १९, २०, २१, २९, ३०, ३१, अग. ७, ८, १६ अशुभ।	उत्साह बढ़े, व्यवसाय ठीक, मास के उत्तरार्द्ध में रोग शोक, वृथा खर्च, कुछ शुभ समाचार से संतोष। अग. १७, २६, २७, सित. ४, ५, १२, १३ अशुभ।	उद्योग में सफलता के कारण बनें, राज्य से भय, बन्धुओं द्वारा व्यय, नये कार्य का विचार। सित. २२, २३, अक्तूबर १, २, ९, १०, ११ अशुभ।
कन्या	उन्नति में बाधा, गुप्त शत्रु बाधा, दौड़-धूप हैरानी, मास का उत्तरार्द्ध कुछ ठीक। जुला. २२, २३, अग. १, २, ९, १० अशुभ।	धन लाभ की चिन्ता, सिर व नेत्र रोग, घर-बाहर कलह, विवाद के कारण बने। अग. १८, १९, २०, २८, २९, सित. ६, ७, १४, १५ अशुभ।	किसी कार्य में विघ्न से उत्साहहीनता, धन की कमी, गुप्त शत्रु का भय, वृथा यात्रा। सित. १६, २४, २५, २६, अक्तू. ३, ४, १२, १३, अशुभ।
तुला	विशेष परिश्रम से अल्प लाभ, मान हानि भय, आशा-निराशा में बदले, शिवार्चन करें। जुला. १६, २४, २५, २६, अग. ३, ४, ११, १२ अशुभ।	कारोबार में गड़बड़, वृथा शत्रु उत्पन्न हों, घर में किसी के रोग से चिंता व खर्च। अग. २१, २२, ३०, ३१, सित. १, ८, ९ अशुभ।	गत मास की अपेक्षा लाभ अच्छा, खर्च अधिक अधिक होने, तंगी उदासी, कोई झंझट बना रहे। सित. १७, १८, २७, २८, अक्त. ५, ६, १४, १५, १६ अशुभ।
वृश्चिक	रोग भय, अशुभ विचार, घर-बाहर सर्वत्र कलह विवाद उत्पन्न हों, लाभ में रुकावट। जुला. १७, १८, २७, २८, अग. ५, ६, १३, १४, १५ अशुभ।	गतमास से लाभ अच्छा, गुप्तशत्रु से सावधान, नित्य नियम से शिथिलता, मन अशान्त। अग. २३, २४, २५, सित. २, ३, १०, ११ अशुभ।	वायु पीड़ा, बाल बच्चों द्वारा विशेष खर्च, कारोबार शिथिल, गृह-कलह। सित. १९, २०, २१, २९, ३०, अक्त. ७, ८, ११ अशुभ।
धनु	यह मास संघर्षपूर्ण है, व्यय विशेष, कारोबार मध्यम, देह पीड़ा। जुला. १९, २०, २१, २९, ३०, ३१, अग. ७, ८, १६ अशुभ।	राज पक्ष से शान्ति, स्वास्थ्य मध्यम, कारोबार ठीक, मित्र-बन्धुओं से सहयोग, सन्तति चिन्ता। अग. १७, २६, २७, सित. ४, ५, १२, १३ अशुभ।	स्वास्थ्य में गड़बड़, लाभ होता रहे, किसी मित्र-बन्धु द्वारा परेशानी, शुभ समाचार से खुशी। सित. २२, २३, अक्त. १, २, ९, १०, ११ अशुभ।
मकर	व्यवसाय में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन, अचानक कष्ट, शत्रु पीड़ा, वृथा यात्रा। जुला. २२, २३, अग. १, २, ९, १० अशुभ।	व्यवसाय से लाभ, मासान्त में चोट भय, विवाद में विजय, बड़े पुरुष से मिलाप। अग. १८, १९, २०, २८, २९, सित. ६, ७, १४, १५ अशुभ।	गुप्त चिन्ता उत्पन्न हो, इधर-उधर की दौड़-धूप, कारोबार से लाभ। सित. १६, २४, २५, २६, अक्त. ३, ४, १२, १३ अशुभ।
कुम्भ	यश हानि भय, लाभ में कमी, वृथा व्यय, श्रम-उद्योग में मन न लगे। जुला. १६, २४, २५, २६ अग. ३, ४, ११, १२ अशुभ।	देह पीड़ा, अकस्मात् लाभ का संयोग बने, अशुभ विचार, नीच से विवाद, यात्रा प्रसंग बने। अग. २१, २२, ३०, ३१, सितं. १, ८, ९ अशुभ।	यह मास मिश्रित फल वाला है, लाभ होकर खर्च होता रहे, कुछ जटिल समस्याओं से मन अशान्त। सितं. १७, १८, २७, २८, अक्त. ५, ६, १४, १५, १६ अशुभ।
मीन	कारोबार पूर्ववत् चलता रहे, परिवार में झंझट, काम में उलझनें बढ़ें, खान-पान में खर्च विशेष। जुला. १७, १८, २७, २८, अग. ५, ६, १३, १४, १५ अशुभ।	कारोबार कमजोर, अचानक अशान्ति के कारण बने, रोग भय, मित्र से सन्तोष। अग. २३, २४, २५, सित. २, ३, १०, ११ अशुभ।	गुप्त शत्रुओं से सावधान, लाभ में कमी आती जायेगी कुछ अकस्मात् लाभ, वृद्धों को कष्ट। सित. १९, २०, २१, २९, ३०, अक्तू. ७, ८, ११, अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सं. २०४० वि.)

राशि	कार्तिक (१७ अक्तूबर से १५ नवं. तक)	मार्गशीर्ष (१६ नवं. से दिसं. १५ तक)	पौष (१६ दिसं. १९८३ से १३ जन. ८४ तक)
मेष	वंशवृद्धि, व्यवसाय से लाभ, स्वास्थ्य में कुछ बिगाड़, दुःस्वप्न। अक्तू. १९, २०, २१, २८, २९, नव. ६, ७, १५ अशुभ।	लाभ यथावत्, रोग भय, वृथा यात्रा, शोक चिन्ता। नव. १६, १७, २५, २६, दिसं. ३, ४, १३, १४ अशुभ।	पत्नी की ओर से चिंता, कुछ रोग भय, धन लाभ होता रहे। दिसं. २२, २३, ३०, ३१; (जन. १९८४) १, ९, १०, ११ अशुभ।
वृष	चित्त में शान्ति, नए कारोबार में पैसा लगाने का विचार, लाभ हो, कामनाएं पूर्ण हों। अक्तूबर २२, २३, ३०, ३१, नव. ८, ९, अशुभ है।	लाभ के चांस मिलते रहें, संतति सुख, मान वृद्धि, मेहमानों की सेवा में व्यय। नव. १८, १९, २७, २८, दिसं. ५, ६, ७, १५ अशुभ।	सुख बढ़े, व्यवसाय में वृद्धि, सहयोग देने वाले मिलेंगे, व्यय विशेष। दिसं. १६, १७, २४, २५, जन. २, ३, १२, १३ अशुभ।
मिथुन	संतति द्वारा अधिक खर्च, लाभ के कारण बनते रहें, मास के उत्तरार्द्ध में शान्ति, भ्रमण मनोरंजन। अक्तूबर २४, २५, नव. १, २, ३, १० ११, १२ अशुभ।	संतति चिंता, समाज में मान, कारोबार में धीरे-धीरे, प्रगति, सहयोगी मिलें, शत्रु भय। नव. २०, २१, २९, ३०, दिस. ८, ९, अशुभ।	व्यवसाय में आंशिक सफलता, जीवन में कोई नया मोड़ आवे, नये काम में पैसा मत लगावें, पीड़ा भय का डर। दिसं. १८, १९, २६, २७, जन. ४, ५, ६ अशुभ।
कर्क	किसी अप्रिय घटना के आसार, कारोबार में अवरोध, प्रिय बंधु के सहयोग से लाभ, स्वास्थ्य कमजोर। अक्तूबर १७, १८, २६, २७, नव. ४, ५, १३, १४ अशुभ।	नवीन चिंताएं व घरेलू समस्याएं उठेंगी, अपमान भय, लाभ के दो अवसर भी मिलेंगे, शिवार्चन करें। नव. २२, २३, २४, दिस. १, २, १०, ११, १२ अशुभ।	लाभ के प्रयासों में सफलता कम, ज्वर शिर पीड़ादि से कष्ट, गृहस्थ सुख में बाधा, मास का उत्तरार्द्ध ठीक। दिसं. २०, २१, २८, २९, जन. ७, ८ अशुभ।
सिंह	उदर विकार, बन्धु मित्रों के सहयोग से लाभ, शत्रुओं पर विजय, संतति सुख, नजदीकी यात्रा। अक्तू. १९, २०, २१, २८, २९, नव. ६, ७, १५ अशुभ।	स्थाई साधन तथा अन्य मार्गों से भी लाभ हो, सहयोग देने वाले मिलेंगे, मासान्त में अशांति का कारण बनें। नवं. १६, १७, २५, २६, दिसं. ३, ४, १३, १४ अशुभ।	मास फल शुभ हो, नयी योजना के साथ व्यवसाय बढ़ेगा, कष्टप्रद व्यय भी रहे, मान-मर्यादा बनी रहे। दिस. २२, २३, ३०, ३१, जन. १, ९, १०, ११ अशुभ।
कन्या	कारोबार में लाभ कम, व्यय अधिक, बन्धुओं से विवाद, दौड़-धूप अधिक, चित्त अशांत। अक्तू. २२, २३, ३०, ३१ नव. ८, ९ अशुभ।	शरीर पीड़ा, गुप्त शत्रु भय, पैसे का अपव्यय, उधार लेना पड़े, मान हानि। नवं. १८, १९, २७, २८, दिसं. ५, ६, ७, १५ अशुभ।	गतमास की अपेक्षा धनागम ठीक, मान अपमान दोनों प्रकार के अवसर मिलेंगे, मासान्त में परिस्थितियों में परिवर्तन। दिसं. १६, १७, २४, २५, जन. २, ३, १२, १३ अशुभ।
तुला	[illegible] लेना पड़े, सफलता के मार्ग में बाधा, मास के उत्तरार्द्ध में परिस्थिति अनुकूल। अक्तू. २४, २५, नव. १, २, ३, १०, ११, १२ अशुभ।	यह मास आपके लिए मिश्रित फल वाला है। निजी जनों से वैमनस्य, लाभ होकर फिर हानि संभव, तेल-पकवान का दान सुखप्रद। नवं. २०, २१, २९, ३०, दिसं. ८, ९ अशुभ।	मास फल शुभ नहीं, जटिल समस्याएं व्यथित करेंगी, अशांति बढ़ेगी, छोटी यात्रा दौड़-धूप, अनिद्रा दुःस्वप्न। दिसं. १८, १९, २६, २७, जन. ४, ५, ६ अशुभ।
वृश्चिक	[illegible] में विवाद, [illegible] में हानि, शरीर पीड़ा, धर्म-कार्य में [illegible] की तंगी। अक्तूबर १७, १८, २६, २७, नव. ४, ५, १३, १४ अशुभ।	झगड़े आदि से चित्त अशांत, मास के उत्तरार्द्ध में अकस्मात लाभ का योग, शत्रु भय, शरीर पीड़ा। नव. २२, २३, २४, दिस. १, २, १०, ११, १२ अशुभ।	शरीर में कृशता, अशांति की वृद्धि, धन की न्यूनता, योजनाएं जैसी की तैसी रहें। वंश में जीव वृद्धि। दिसं. २०, २१, २८, २९, जन. ७, ८ अशुभ।
धनु	[illegible] कार्यों में व्यय, [illegible] प्राप्त हो, निजि [illegible] कार्यों से भी लाभ [illegible]। अक्तूबर १९, [illegible] नवं. ६, ७, १५ अशुभ।	स्वास्थ्य में बिगाड़, कारोबार मध्यम, धर्म में रुचि, अकस्मात सुख में बाधा, पशु पीड़ा। नव. १६, १७, २५, २६, दिस. ३, ४, १३, १४ अशुभ।	वायु पीड़ा, किसी की सहायता से लाभ ठीक, व्यर्थ खर्च से परेशानी, कोढ़ियों को अन्न दान दें। दिसं. २२, २३, ३०, ३१, जन. १, ९, १०, ११ अशुभ।
मकर	[illegible] रहे, नये कार्य में रुचि [illegible]। अक्तू. [illegible] ३०, ३१, नव. ८, ९, अशुभ।	कारोबार में कुछ प्रगति, दिनचर्या अस्त व्यस्त, मित्रों का मनमुटाव बना रहे, मंगल कार्यों में सहयोग। नव. १८, १९, २७, २८, दिस. ५, ६, ७, १५, अशुभ।	व्यवसाय से लाभ, नये मित्रों से मिलाप, अचिन्तित शुभ समाचार से खुशी, दुष्ट पक्ष से भय। दिस. १६, १७, २४, २५, जन. २, ३, १२, १३ अशुभ।
कुंभ	[illegible] मिले। अक्तूबर २४, २५ नवं. १, २, ३, १०, ११, १२ अशुभ।	कष्टप्रद यात्रा, धनक्षय, अंतिम सप्ताह में अकस्मात लाभ हो, मान प्रतिष्ठा की चिंता रहे, दुःस्वप्न दीखे। नवं. २०, २१, २९, ३०, दिसं. ८, ९ अशुभ।	अकस्मात यात्रा, लाभ मध्यम, वस्त्रादि पर व्यय, मान वृद्धि, पर स्त्री चिंता। दिस. १८, १९, २६, २७, जन. ४, ५, ६ अशुभ।
मीन	[illegible] में कमी। अक्तू. १७, १८, २६, २७, नवं. ४, ५, १३, १४ अशुभ।	[illegible] ठीक नहीं, काम में मन न लगेगा, सफलता के मार्ग में बाधाएं, दुर्बलता का अनुभव होगा, मासांत में कुछ [illegible]। नवं. २२, २३, २४, दिसं. १, २, १०, ११, १२ अशुभ।	मास का उत्तरार्द्ध अशुभ, रोग विघ्न पैदा हों, योजनाएं असफल, कमरतोड़ खर्च, लाभ [illegible] से आता रहे। दिसं. २०, २१, २८, २९, जन. ७, ८ अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सं. २०४० वि.)

राशि	माघ (१४ जन. से १२ फर. तक)	फाल्गुन (फर. १३ से १२ मार्च तक)	चैत्र (१३ मार्च से १२ अप्रैल तक)
मेष	व्यवसायों में लाभ कम, व्ययाधिक होने से तंगी, अचानक चिंता, वायु पीडा। जन. १८, १९, २७, २८, फर. ४, ६, ७ अशुभ।	कारोबार में नयी योजना, उज्ज्वल भविष्य की संभावना बनेगी, हर्षप्रद समाचार, लाभ अच्छा, शरीर में कष्ट। फर. १५, १६, २३, २४, मार्च ४, ५ अशुभ।	वायु विकार, कारोबार यथावत् ठीक, सुख वृद्धि, नव मित्र का मिलाप, अशुभ विचार आयें। मार्च १३, १४, २१, २२ ३१, अप्रैल १, ९, १०, ११ अशुभ।
वृष	स्वास्थ्य मध्यम, धनलाभ ठीक, सुख शांति, उत्तरार्द्ध में रोग भय पीडा, राजपक्ष शुभ, अशुभ वृत्ति। जन. २०, २१, २९, ३०, फर. ८, ९ अशुभ।	लाभ माध्यम, समस्याओं का समाधान होगा, कुछ व्यक्ति अकस्मात शत्रुता करें, राजपक्ष से सावधान। फर. १७, १८, २५, २६, २७, मार्च ६, ७, ८ अशुभ।	धर्म लाभ, शुभ मति, स्वास्थ्य कमजोर, धन लाभ ठीक शत्रु कमजोर हों। मार्च १५, १६, २३, २४, २५, अप्रैल २, ३, ४, १२ अशुभ।
मिथुन	धन हानि, पुत्रादि की चिंता, गुप्त शत्रु भय, अकस्मात् स्वास्थ्य खराब। जन. १४, १५, २२, २३, ३१, फर. १, २, १०, ११, १२ अशुभ।	जीवन में कुछ मौलिक परिवर्तन हों, आवश्यकताओं की पूर्ति का लाभ, क्रोध से बचते रहें, प्रेमियों से मिलाप। फर. १९, २०, २८, २९, मार्च ९, १० अशुभ।	रोग भय, मानवृद्धि, लाभ ठीक, यात्रा प्रसंग बने, खान पान अच्छा मिले। मार्च १७, १८, २६, २७, अप्रैल ५, ६ अशुभ।
कर्क	व्यसन विलासों में रुचि, शरीर पीड़ा भय; राज्य पक्ष से चिन्ता बड़ा लाभ हाथ न लगे, व्यवसाय से आंशिक प्राप्ति। जन. १६, १७, २४, २५, २६, फर. ३, ४ अशुभ।	दिमागी थकावट, किसी से वृथा विवाद, शत्रु वृद्धि, आय से व्यय अधिक। फर. १३, १४, २१, २२, मार्च १, २, ३, ११, १२ अशुभ।	गुप्त शत्रु से सावधान, लाभ की चिंता, बड़े पुरुषों से भय, दुर्गा-पाठ पूजा करें। मार्च १९, २०, २८, २९, ३०, अप्रैल ७, ८ अशुभ।
सिंह	बड़े पुरुष का समागम, लाभ का स्रोत चलता रहे, मित्र मिलाप, बन्धु सुख, शत्रु नाश। जन. १८, १९, २७, २८ फर. ५, ६, ७ अशुभ।	लाभ मध्यम, संतति सुख, वृथा यात्रा, प्रिय मिलाप, पराक्रम में वृद्धि। फर. १५, १६, २३, २४, मार्च ४, ५ अशुभ।	रोग भय, गत मास की अपेक्षा लाभ ठीक, चिंता का समाचार, वृथा यात्रा। मार्च १३, १४, २१ २२, ३१, अप्रैल १, ९, १०, ११ अशुभ।
कन्या	नेत्र व मस्तक में पीडा, श्रम से भी लाभ कम, घरेलू झंझटों से हैरानी, प्रिय वियोग। जन. २०, २१, २९, ३०, फर. ८, ९ अशुभ।	लाभ से व्यय अधिक, रोगभय, बन्धु प्रियजनों की चिन्ता, वृथा विवाद। फर. १७, १८, २५, २६, २७, मार्च ६, ७, ८; अशुभ।	कष्टों की आंशिक निवृत्ति, शत्रु भय बना रहे, कमर तोड़ खर्च, मित्र बन्धु से निराशा, शनि पूजा से कल्याण। मार्च १५, १६, २३, २४, २५, अप्रैल २, ३, ४ १२ अशुभ।
तुला	वृथा विवाद, शत्रु भय, शरीर कष्ट, उत्तरार्द्ध में कुछ लाभ। जन. १४, १५, २२, २३, ३१, फर. १, २, १०, ११, १२ अशुभ।	आर्थिक चिंता, मित्र विमुख, व्यसनों में रुचि, दौड़-धूप। फर. १९, २०, २८, २९, मार्च ९, १०, अशुभ।	हिम्मत में कमी, विरोधियों की प्रबलता, कुटुम्बियों से असन्तोष, काम में मन नहीं लगेगा। मार्च १७, १८, २६, २७, अप्रैल ५, ६ अशुभ।
वृश्चिक	लाभ के लिए नयी योजना, मित्र बन्धु के सहयोग से लाभ, पुत्र-स्त्री चिंता, व्यय विशेष। जन. १६, १७, २४, २५, २६, फर. ३, ४ अशुभ।	गतमास की अपेक्षा लाभ ठीक, अचानक शत्रु भय, प्रतिष्ठा की चिंता, राज्यपक्ष से सावधान। फर. १३, १४, २१, २२, मार्च १, २, ३ ११, १२ अशुभ।	धन्धे की वृद्धि हेतु असफल प्रयास, सिर व नेत्र में पीड़ा, स्वभाव में कटुता, उत्तरार्द्ध में अचानक लाभ। मार्च १९, २०, २८, २९, ३०, अप्रैल ७, ८ अशुभ।
धनु	अचानक रोग, शत्रु व राजपक्ष से चिंता, लाभ का अवसर मिले, नया शत्रु पैदा हो। जन. १८, १९, २७, २८, फर. ५, ६, ७ अशुभ।	अरिष्टभय, गतमास जैसी समस्याएं बनी रहें, अचानक लाभ अच्छा, शांति सुख। फर. १५, १६, २३, २४, मार्च ४, ५ अशुभ।	कफ वायु विकार, धर्मकृत्य का शुभ विचार, कारोबार ठीक, कुटुम्ब में सुख शांति। मार्च १३, १४, २१, २२, ३१ अप्रैल १, ९, १०, ११ अशुभ।
मकर	देह पीडा, कारोबार यथावत्, वातावरण अनुकूल, समाज में प्रतिष्ठा वृद्धि। जन. २०, २१, २९, ३०, फर. ८, ९ अशुभ।	व्यवसाय ठीक चलते भी बरक्त कम, राज्यभय, अधूरे पड़े काम की चिंता, शत्रुओं से सावधान। फर. १७, १८, २५, २६, २७, मार्च ६, ७, ८ अशुभ।	मनोत्साह बढ़ेगा, सुख तथा लाभ वृद्धि, वृद्ध जनों की चिंता, भोजन में अरुचि, शोक समाचार में अशांति। मार्च १५, १६, २३, २४, २५, अप्रैल २, ३, ४, १२ अशुभ।
कुम्भ	वृद्धि क्रम, गत मास की अपेक्षा लाभ अच्छा, शुभ कार्य में व्यय, व्यसनों में रुचि। जन. १४, १५, २२, २३, ३१, फर. १, २, १०, ११, १२ अशुभ।	शोक समाचार से अशांति, धनागम पूर्ववत्, अप्रिय स्थितियों का नियंत्रण हो। कारोबार की नयी योजना। फर. १९, २०, २८, २९, मार्च ९, १० अशुभ।	शत्रुनाश, व्यवसाय से लाभ, कुटुम्बियों से असन्तोष, शुभ यात्रा का प्रसंग, दुःस्वपन। मार्च १७, १८, २६, २७, अप्रैल ५, ६ अशुभ।
मीन	अनायास खर्च, बड़े [illegible] चिंता उत्पन्न हो, स्वास्थ्य मध्यम, स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार असफल, आंशिक लाभ। जन. १६, १७, २४, २५, २६, फर. ३, ४ अशुभ।	पाप विचार, लाभ होकर भी हाथ न लगे, बाल बच्चों की चिन्ता, ठग व चोर का भय। फर. १३, १४, २१, २२, मार्च १, २, ३, ११, १२ अशुभ।	गुप्त शत्रु से सावधान, स्त्री-पुत्र द्वारा व्यय विशेष, विशेष परिश्रम से लाभ, दिनचर्या अस्त व्यस्त। मार्च १९, २०, २८, २९, ३०, अप्रैल ७, ८ अशुभ।

॥ चैत्र शुक्ल १ को वर्षफल श्रवण ॥

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणायगुणात्मने । समस्त-जगदाधार-मूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥
विद्युतक प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम् । संवत्सर-फलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया ॥२॥
सम्यक् विचार्य गणितं दैवज्ञजन तुष्टिदम् । मुकुन्दवल्लभेनेदं तिथिपत्रं प्रवर्तितम् ॥३॥
अनेन धार्मिकजनः कालज्ञानसहायिना । तिथिपत्रेण सन्तुष्टो भवत्वित्येव याच्यते ॥४॥
तिथिर्वारश्च नक्षत्रंयोगः करणमेव च । पञ्चांगस्य फलं श्रुत्वा गंगास्नान फलं लभेत ॥५॥

चैत्र शुक्ल १ को नूतन संवत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वजा लगावे तोरण आदि से गृह सुशोभित कर, मंगल स्नान कर, देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा करें; स्त्रियां सिर आदि वस्त्र आभूषण परिधान कर उत्सव मनावे । ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे नूतन संवत्सर फल श्रवण करें । कटुनिम्ब के कोमल पत्र और पुष्प लावें, उसमें काली मिर्च, भुनी हुई हींग, (सेंधा) नमक, अजवायन, सफेद जीरा और खाण्ड बराबर मात्रा में मिला कर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह ३ से ६ माशे तक की मात्रा में चै. शु. १ से १५ तक लगातार स्नानादि से निवृत्त होकर निराहार-मुख खावें । इस प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है । (वर्षपर्यन्त रक्त-विकार ज्वरादि नहीं होते) । यदि १५ दिन सेवन न कर सकें तो चैत्र शुक्ल १ को तो अवश्य करें ।

पञ्चांगस्थ गणेश और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा (वाचकों को यथाशक्ति दानादि से प्रसन्न) करें । मिष्टान्न आदि भोजन करावें । गीत गायन, वाद्य, कथा-श्रवण आदि कर सम्पूर्ण दिन आनन्द से व्यतीत करें । गृहस्थियों को विलास-युक्त आनन्दपूर्वक वर्षारम्भ-दिन व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष आनन्दमय जाता है ।

वर्षफल श्रवण का माहात्म्य :—ये चैत्रशुक्लप्रतिपत्तिथौ फलं शृण्वन्ति भक्त्या प्रति-[illegible] नराः । [illegible] वर्जिता मन्दन्ति लोके धनधान्य-संकुला ॥१॥ नाकस्य [illegible], राजा राजकुले जयो विजयते मन्त्रिफल वृद्धिदम् । [illegible] बृद्धिलाभा, [illegible] सम्पूर्णता [illegible] ॥ इति संवत्सरादि-फलश्रुतिः ।

[illegible] समस्त जगत् [illegible] सृष्टि के संक्षिप्त इतिहास की अवतरणिका—समस्त जगत् [illegible] दिनों के मान से [illegible] ब्रह्मा की आयु [illegible] ५१ वें वर्ष के प्रथम [illegible] ब्रह्मा की आयु के ५० वर्ष व्यतीत होकर, ५१ वें वर्ष के प्रथम [illegible] ४२ पल, ६ विपल, ४६ प्रतिविपल, व्यतीत [illegible] एक चतुर्युगी का [illegible] ब्रह्मा की आयु का विस्तार इस प्रकार है—एक चतुर्युगी का [illegible] ४३,२०,००० है । इस प्रकार के [illegible] ब्रह्मा के हजार युगों की विष्णु की [illegible] ब्रह्मा का एक दिन होता है । [illegible] मन्वन्तर [illegible] १४ मन्वन्तर [illegible] वर्तमान [illegible] २७ चतुर्युगी [illegible] व्यतीत हो गये हैं [illegible] अब [illegible] है ।

[illegible] के ३ युग व्यतीत हो गये हैं और यह [illegible] प्रथम प्रहर [illegible]

अब युगकाल-व्यवस्था-वर्णन—[illegible] वर्ष की [illegible] ४ अवतार हुए । [illegible] थी । इसमें श्रीनारायण, मत्स्य, कच्छप, वराह और नृसिंह [illegible] भगवान् मत्स्य ने पृथ्वी से वेदों के चोर, शंखासुर को मारकर ब्रह्मा को वेद लाकर दिये । भगवान् कच्छप ने पृथ्वी की रक्षार्थ मन्दराचल को पीठ पर धारण कर शेषनाग की डोर से देवदैत्यों द्वारा समुद्र-मन्थन कराकर चौदह रत्न प्रकट किए । श्री बराहजी ने हिरण्याक्ष का वध करके पृथ्वी का उद्धार किया, श्री नृसिंहावतार ने हिरण्यकश्यप का वध करके भक्त प्रह्लाद की रक्षा की । इस युग में पाप० पुण्य २० विश्वे था और धर्म अपने चारों पद पर कायम था, गौएं कामधेनु के समान होती थीं । प्रायः स्वर्ण के पात्र और सिक्के के स्थान में रत्न का परस्पर व्यवहार था । इच्छित वर्षा होती थी एकबार बीज बोकर २१ बार काटते थे । ब्राह्मण चारों वेदों के जानकार तथा सत्यभाषी पर-द्रव्य परस्त्री-पराङ्मुख और त्यागी होते थे । शाप देने और वरदान प्रदान करने में भी समर्थ थे । स्त्रियां पद्मनी और पतिव्रता होती थीं । शासक (राजवंश) वर्ग न्यायपरायणान्तःकरण से प्रजा को स्वपुत्रवत् समझते हुए राज्य करते थे । इनकी तीन लोक तक जाने की गति थी । वैश्य लोग सत्यवक्ता, धर्मात्मा व्यापारी और शूद्र लोग सेवाधर्म में रहते हुए जीवन व्यतीत करते थे । इस युग में तीर्थ पुष्कर प्रधान था ।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया चन्द्रवार के द्वितीय प्रहर रोहिणी नक्षत्र शोभन-योग में त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई । इसकी आयु १२,९६,००० वर्ष की थी । इसमें भगवान के श्री वामन, श्री परशुराम और श्री रामचन्द्र ये तीन अवतार हुए । श्री वामन जी ने राजा बलि से ३ पैर पृथ्वी दान लेकर समग्र पृथ्वी को ३ पैर में नाप बलि को पाताल का राज्य दिया । श्री परशुराम जी ने अभिमानी क्षत्रियों का २१ बार नाश करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था । श्री रामचन्द्र जी ने महाभिमानी राक्षसराज रावण का वध करके देवता और ऋषियों को निर्भय किया था । इस युग में पाप ५, पुण्य १५ विश्वे था और धर्म तीन पैर का रह गया था । गौएं त्रिकाल दूध देने वाली होती थी, प्रायः चांदी के पात्र और स्वर्ण के सिक्के का व्यवहार था । वर्षा मौके पर होती थी, एक बार बोकर सात बार काटते थे । ब्राह्मण तीन वेदों के वक्ता और किञ्चिन्यून तपोनिष्ठ, परस्त्री-पर द्रव्य से पराङमुख होते थे, वह शाप देने में समर्थ थे । स्त्रियां चित्रिणी, पतिव्रता होती थीं । इस युग में सूर्यवंशी धर्मात्मा क्षत्रिय का राज्य था । विचित्र विमान द्वारा वह इन्द्र लोक पर्यन्त भी जाते थे । वैश्य लोग सत्यवादी और सत्य की तुला पर तोलते थे । शूद्र सेवा में तत्पर रहते थे । इस युग में तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था ।

द्वापर—माघ कृष्ण ३० शुक्रवार तृतीय प्रहर धनिष्ठा-नक्षत्र वरीयान् योग में द्वापर युग की उत्पत्ति हुई । इसकी आयु ८६,४०,०० वर्ष की थी । इसमें पूर्ण ब्रह्म के श्रीकृष्ण श्री बलदेव ये दो अवतार हुए । भगवान् श्रीकृष्ण ने दैत्यराज कंसादि दुष्टों का वध किया । तथा अर्जुन को लक्ष्य करके गीता ज्ञान का उपदेश दिया । श्री बलदेव जी ने दुष्टों का नाश करके धर्म का उद्धार किया । इस युग में पाप १०, पुण्य १० विश्वे था और धर्म दो पैर वाला रह गया था । गौएं दो वक्त घटपूर्ण दुग्ध देने वाली होती थीं । प्रायः ताम्र पीतल के पात्र और स्वर्ण तथा रौप्यमयी मुद्राओं का व्यवहार होने लगा था । वर्षा समय पर हो जाती थी । एक बार अन्न का बीज बोकर ३ बार काटते थे । ब्राह्मण लोग दो वेदों के पारंगत होते थे और कुछ असत्य, विशेषतया सत्यवक्ता तथा तप-यज्ञ देव-पूजनादि करने वाले, वाक्यसिद्धि वाले अर्थात् वर और शाप देने में समर्थ थे । स्त्रियां किञ्चिद् लोभयुक्त, [illegible] जाति की शुलीता धर्मयुक्ता होती थी । इस युग में धर्मप्राण चंद्रवंशी राजा हुए । [illegible] चारों वर्ण अपने-अपने धर्म पर कायम थे । परस्त्री [illegible] इनकी [illegible] पर्यन्त गति थी और प्रायः [illegible] से लोग डरते थे । इस युग में तीर्थ कुरुक्षेत्र प्रधान था ।

कलियुग—भाद्रपद कृष्ण १३ अर्धरात्रि के समय आश्लेषा नक्षत्र व्यतिपात योग में कलियुग की उत्पत्ति हुई थी, इसकी

आयु ४३२००० वर्ष की है। इसमें भगवान् के अवतार श्री बुद्ध और श्री कल्कि (निष्कलंक) है, जिनमें अहिंसा धर्म का उद्धारक श्री बुद्धावतार तो हो चुका है और कल्कि अवतार जब कलियुग के ८२१ वर्ष रहेंगे तब शंभल ग्राम में विष्णुयश ब्राह्मण के घर होगा। इस अवतार द्वारा दुष्टों का नाश होकर पृथ्वी पर लुप्त धर्म की स्थापना के साथ-साथ न्यायपरायण क्षत्रिय राज्य भी कायम होगा। इस युग में एक पैर वाला धर्म रह जायेगा। गौएं दूध कम देंगी। मृण्मय पात्र ताम्रपात्र तथा कगंल मुद्रा प्रायः चलेगी। अतिवृष्टि और अनावृष्टि से देशों में भय का संचार होगा। ब्राह्मण लोग वेदज्ञान से शून्य तथा स्नान, संध्या तपश्चर्या से भी हीन होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को तिलांजलि दे देंगे। वैश्यलोग व्यापार में असत्य व्यवहार विशेष रूप से उपयोग में लाने लगेंगे एवं शास्त्रनिन्दित मृतचर्म (जूता आदि) के व्यापार से लाभ उठायेंगे। शूद्रलोग पाखण्डी होकर बहुधा उच्चवर्ण वालों के उपदेष्टा होंगे। प्रजा में वर्णसंकरत्व बढ़ जायेगा। धूर्तों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। स्त्रियां ज्यादा हस्तिनी पैदा होंगी। व्यभिचारिणी स्त्री अपने को सती कहेगी। पतिव्रता कहीं-कहीं देखने में आयेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में होकर चलेंगे। स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेगा। पिता कन्या-विक्रय करेगा। गो-ब्राह्मण की हत्या से भय न करेंगे। पुत्रों का माता-पिता के साथ सकारण प्रेम रहेगा। राज-व्यवस्था में धर्म का स्थान शून्य के बराबर होगा। धर्म-कर्म और तीर्थ पर लोगों की श्रद्धा कम होगी। प्रधान तीर्थ गंगा हरिद्वार होगा।

अथ कलिरूपंचोक्तं चिरन्तनै –पिशाच-वदनः क्रूरः कलिश्च कलहप्रियः। धृत्वा वामे करे शिश्नं दक्षे जिह्वाञ्च नृत्यति।। **कलि-माहात्म्यम्**-धर्मः प्रव्रजितस्तपः प्रचलितं सत्यं च दूरे गतं पृथ्वी-मन्दफला नराः कपटिनश्चित्तञ्च शाठ्योजितम्। राजानोर्थ्यपरा अरक्षणपराः पुत्राः पितृद्वेषिणः। साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ दुर्युगे।। निर्बीजा पृथ्वी निरौषधिरसा नीचा महत्वं गताः, भूपाला निजधर्म-कर्म-रहिता विप्राः कुमार्गं गताः। भार्या भर्तृविरोधिनी पररता पुत्राः पितृद्वेषिणः। हा! कष्टं खलु वर्तते कलियुगे धन्यामृता ये नराः।। देवेदेयत्वं कपटपटवस्तापस जनाः, जनो मिथ्यावादी विरलतर वृष्टिर्जलधरः। प्रसन्ना नीचाश्च अवनि–पतयो दुष्टमतयो जनाः शिष्टा नष्टा अहह! कलिकालो विलसति।। **कलौ गंगायाः स्थितिः**- पृथिवी गंगया हीना भविष्यत्यन्तिमे कलौ। तदैव विष्णुस्त्यजति मेदिनीं नरपुंगव। **भगीरथं प्रति गंगावाक्यञ्च**– यावद्धरण्यां तुलसी प्रपूज्यते गुरुर्नभस्थो दिवि कल्पपादपः। यावत्समुद्रे बडवानलश्च वसामि तावत्तव चक्रखाते।। इति।। कलौ दशहस्त्राणीति वाक्यमन्तिमेकलौ ज्ञेयम्। नान्येषु कलिष्विति।।

अथ वर्षराजादि फलविचार (सं. २०४० वि.)

कल्पादि से गतवर्ष **१९७२९४९०८४, सृष्टि संवत् १९५५८८५०८४, श्री विक्रम संवत्** २०४०, शक सं. १९०५, श्री कृष्ण जन्म संवत् ५२१९, कलि संवत् ५०८४, श्री महावीर (जैन) निर्वाण संवत् २५०८-२५०९, श्री बुद्ध संवत् २६०६-२६०७, हिजरी सन् १४०३-१४०४, फसली सन् १३९०-१३९१, **ईस्वीसन् १९८३-८४।**

वर्षारम्भ में गुरुमान से प्रभावादि संवत्सरों में धाता नामक संवत्सर है; इसका फल इस प्रकार है :–

"धातुवर्षेऽखिलाः क्ष्मेशाः संग्रामे सक्त मानसाः।
सम्पूर्णा धरणी भाति बहुसस्यार्घ-वृष्टिभिः।।"

अर्थात्–राष्ट्राध्यक्षों की कुनीति के कारण विश्व के देशों में युद्ध का वातावरण बने। वर्षा अधिक, खेती अच्छी; लेकिन महंगाई बढ़े।

इस वर्ष का **राजा** (ग्रह परिषद् के प्रधान) **गुरु, मन्त्री गुरु,**
सस्येश (चैमसी फसलों के स्वामी) **शनि, धान्येश** (शीतकालीन फसलों के स्वामी) **शुक्र,**
मेघेश (वर्षा पानी के स्वामी) **बुध, रसेश** (गुड़ खाण्ड रसकस आदि के स्वामी) **चन्द्र,**
नीरसेश (सर्वविध धातु तथा व्यापार आदि के स्वामी) **शनि, फलेश** (फल फूल आदि के स्वामी)
मंगल, धनेश (कोष के स्वामी) **शनि, दुर्गेश** (सुरक्षा, प्रतिरक्षा आदि के स्वामी) बुध है।

वर्ष में शान्ति, विग्रह आर्थिक-सामाजिक आदि प्रगति ज्ञान के लिए सभी पदाधिकारीयों के गुणकर्म स्वभाव पर विचार करना होता है। यहां केवल इनका व्यक्तिगत प्रभाव ही अंकित किया है। अतः-दशाधिकारियों का अलग-अलग फल इस प्रकार है:–

(१) **राजा गुरु का फल**–वर्षा पर्याप्त हो, दूध आदि पौष्टिक तत्त्व प्रचुर मात्रा में मिलें, धार्मिक अनुष्ठान होंगे, सभी प्राणियों में आनन्दमंगल रहेगा।

(२) **मन्त्री गुरु का फल**–धन-धान्य समृद्धि रहे, वर्षा प्रचुरमात्रा में हो, शासक वर्ग प्रजापालन एवं समृद्धिप्रद योजनाएं कार्यान्वित करने में व्यस्त रहेंगे।

(३) **सस्येश-शनि का फल**–शनि नेष्टफल प्रद है। राजशाही देशों में जनता पर अत्याचार होगा। खड़ी फसल को हानि पहुंचेगी, महंगाई बढ़ेगी, जनता व्यर्थ के वाद विवाद में उलझे।

(४) **धान्येश शुक्र का फल**–जौं, गेहूं, चावल आदि अनाज तेज होंगे, दूध आदि में भी कमी हो।

(५) **मेघेश बुध का फल**–वर्षा अधिक हो, अनाज एवं रसादि पदार्थ भी पर्याप्त हो, धार्मिक अनुष्ठान अधिक हों, पृथ्वी पर परस्पर मैत्रीभाव बढ़े।

(६) **रसेश चन्द्र का फल**–ऐश्वर्य एवं वैभव में जनमानस लिप्त रहे, अनैतिक कार्यों को बढ़ावा मिले। वर्षा अधिक हो, धन-धान्य एवं रसादि पर्याप्त हों।

(७) **नीरसेश शनि का फल**–लौहनिर्मित-मशीनरी एवं कृष्णवर्ण वस्तुओं में महंगाई होगी।

(८) **फलेश मंगल का फल**–फलफूल अपेक्षाकृत कम हों, देश में रोग फैले, कुछ देशों में परस्पर युद्धमय वातावरण बने।

(९) **धनेश शनि का फल**–वर्षा कम, शासकवर्ग चिन्तित एवं अस्वस्थ हो, व्यापारी वर्ग एवं कृषक लोगों में आर्थिक-विपन्नता का वातावरण रहे।

(१०) **दुर्गेश बुध का फल**–जनता में सुख-दुःख बना रहे, रास्ते में लूटपाट भी कम हो।

सूचना–यद्यपि वर्ष के इन दस अधिकारियों का साधारण फल तो सर्वत्र होता ही है, किन्तु विशेषकर राजा का फल काश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड देश में, मन्त्री का फल आन्ध्र, बाल्हीक उज्जैन एवं मालवा में, सस्येश का पौण्ड्र-विदर्भ में, धान्येश का गुजरात, नर्मदा के निकटवर्ती प्रदेशों एवं मध्य-प्रदेश में, मेघेश का मगध एवं बंगाल में, रसेश का कोंकण व गोआ में, नीरसेश का मालवा व बिहार में, धनेश का राजस्थान एवं मारवाड़ में, फलेश-दुर्गेश एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है।

नवमेघों में द्रोण नामक मेघ का फल–"**द्रोणे वृष्टिः समा भवेत्,**" वर्षा प्रायः ठीक हो।

द्वादशनागों में वज्रदंष्ट्र नामक नाग का फल वज्रदंष्ट्रे महावृष्टिः, –कहीं अतिशय वर्षा से हानि होगी,। कहीं आकालिक वर्षा से भी खड़ी फसल को हानि होगी।

रोहणी का वास सन्धि में है, फल–खण्डवृष्टि हो।

संवत्सर का वास वैश्य के घर है; फल-जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में महंगाई रहेगी।

संवत्सर का वाहन 'चातक' है;फल-कुछ भागों में वर्षा का प्रतिरोध रहेगा।

शनि की दृष्टि-वर्षारम्भ से वर्षान्त तक शनि तुला राशि में ही रहेगा, अतः इस वर्ष शनि की दृष्टि पश्चिम की ओर रहेगी। फलः-पश्चिमी देशों व प्रान्तों में भयरोग उपद्रव अधिक हो, कहीं अकाल से स्थिति विषम हो, पश्चिम देशों में कहीं युद्धाग्नि प्रज्वलित हो तथा पश्चिमी प्रान्तों में राजनैतिक अस्थिरता का वातावरण रहेगा। कहीं तूफान, भूकम्प आदि प्राकृतिक-प्रकोप से जनधन हानि होगी तथा पश्चिमी देश के किसी शासक के विरुद्ध बगावत हो अशान्ति बढ़े, हत्याकाण्ड हों।

इस वर्ष श्रावण में (केवल एक ही) **'सोमवती अमावस'** है। 'भौमवती अमावस' केवल एक पौष में है। इसी प्रकार **'शनिश्चरी अमावस'** भी केवल एक ही है, जोकि ज्येष्ठ में आती है। **'बुधाष्टमियां'** चैत्र शुक्ल, भाद्रपद कृष्ण, भाद्रपद शुक्ल, पौष शुक्ल एवं माघ कृष्ण में आती हैं।

वर्षा आदि के विश्वासन–वर्षा विश्वा ११, धान्य ५, तृण १३, शीत १७, तेज ५, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ११, तृषा १२, निद्रा १५, आलस्य ७, उद्यम ९, शान्ति १३, क्रोध ५, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रसनिष्पत्ति ९, फल निष्पत्ति १३, उत्साह ११, उग्रता ७, पाप १३, पुण्य १७, व्याधि ११, व्याधिनाश ३, आचार १५, अनाचार १७, मृत्यु ११, जन्म १७, [illegible] ३, [illegible] ५, चौरभय ९, वैरनाश ३, अग्निभय ३, अग्निशान्ति ११, उद्विग्न १३, [illegible] ३, [illegible] ७, श्वेदज ९, टिड्डी १५, तोता १९, मूषक ७, गोला ५, [illegible] ९, स्वचक्र १७, परचक्र १५, [illegible] ७, [illegible] १९, मकर विश्वा ५।

वर्षा के चार स्तम्भ :–

(१) [illegible] (वैशाख शु. १ को रेवती नक्षत्र) ७ प्रतिशत है।
(२) [illegible] (ज्येष्ठ शु. १ को मृगशिर नक्षत्र) ८३ प्रतिशत है।
(३) [illegible] (आषाढ़ शु. १ को भरणी नक्षत्र) का अभाव है।
(४) [illegible] (श्रावण शु. १ को पुनर्वसुनक्षत्र) ७२ प्रतिशत है।

फल–[illegible] विचार से वर्षा की कमी से फसलों को हानि पहुंचेगी, तूफान आदि प्राकृतिक [illegible] की कमी एवं कहीं अनाज पर्याप्त मात्रा में हो।

[illegible] (चार वर्षा के लिए चार वर्ष)–

[illegible] विचार [illegible] रोहिणी नक्षत्र) का अभाव है। (२) **द्वितीय आर्य** (सं. २०३९ [illegible] श्रावण शुक्ल १५ को श्रवण नक्षत्र) १ [illegible] (३) तृतीय आर्य (भाद्रपद शुक्ल [illegible] पूर्णिमा को [illegible] नक्षत्र) ७५ प्रतिशत है। [illegible] आर्य [illegible]

[illegible]

[illegible]

वर्षेश (जगत्) लग्न–सं. २०४० वि. में चैत्र शु. १ [illegible] (१४ अप्रैल १९८३ ई.) को [illegible] घड़ी ५२ पल (८ घण्टा ४६ मिनट) पर [illegible] में प्रविष्ट होंगे। फल–[illegible]

फसल को हानि होगी, चैत्र में प्राकृतिक प्रकोप व राजनैतिक दृष्टि से स्थिति विषम हो यवन राष्ट्रों में स्थिति नाजुक हो।

आर्द्रा प्रवेश लग्न–ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी बुधवार (२२ जून १९८३ ई.) को १६ घड़ी १२ पल (११ घण्टा ५३ मिनट (I.S.T.) पर विशाखा नक्षत्र, सिद्धियोग के समय कन्या लग्न में सूर्य आर्द्रा में प्रविष्ट होगा।

फल–आर्थिक स्थिति चिन्तनीय रहे। शासक वर्ग को विषम परिस्थिति का सामना करना पड़े, वर्षा की कमी से स्थिति चिन्तनीय होगी।

नव वर्ष लग्न कुंडली वर्षेश (जगत्) लग्न कु. आर्द्रा प्रवेश कु.

जगल्लग्न से व्यक्तिगत फल विचार–जन्म कुण्डली में लग्न बलवान् हो तो जन्म-लग्न से, चन्द्र बलवान् हो तो जन्मराशि से, जगल्लग्न जिस स्थान में आए, वह भाव शुभ या स्वामी ग्रहों से युक्त दृष्ट और बलवान हो तो वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापी ग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहें। जन्मलग्न, जन्मराशि और अपने वर्ष प्रवेश लग्न से वर्षेश लग्न (जगल्लग्न) आठवें-बारहवें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होता। इसी प्रकार देश और ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए देश ग्राम या नगर की जो राशि हो, उससे जगल्लग्न आठवें या बारहवें हो तो उस देश, ग्राम व नगर के लिए वह वर्ष हानिप्रद समझना चाहिए।

जन्म लग्न से जगल्लग्न का फल–१ देह सुख, २ धन लाभ, ३ कुटुम्बवृद्धि, ४ मित्रसौख्य, ५ पुत्र सौख्य, ६ शत्रुजय, ७ स्त्री सुख, ८ रोग भय, ९ धर्म लाभ, १० धन लाभ, ११ लाभ सुख, १२ व्यय दुःख।

ग्रीष्म सस्य जातक कुण्डली–के अनुसार गेहूं जौ चना आदि की उत्तम होगी लेकिन फसल को भारी हानि पहुंचेगी, कुछ स्थानों पर बुवाई पुनः करनी पड़ेगी। इनके भाव ऊँचे रहने से जनता में असन्तोष व्याप्त होगा। कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी।

शरत्सस्य जातक कुण्डली–के अनुसार रबी की फसल अच्छी होगी, लेकिन शारदीय अनाजों में तेजी बरकरार रहेगी, कुछ स्थानों पर प्राकृतिक प्रकोप से रबी की फसल को भारी हानि पहुंचने का योग भी है।

गुर्राफल–गत संवत् २०३९ वि. में कार्तिक शुक्ल ३ तदनुसार १९ अक्तूबर १९८२ ई. में मंगलवार को हिजरी सन् १४०३ प्रारम्भ हुआ।

फल–दुर्भिक्ष की स्थिति बने तथा प्रजा में रोग और महंगाई से परेशानी बढ़े।

सं. २०४० वि. में आश्विन शुक्ल द्वितीया शनिवार (८ अक्तूबर १९८३ ई.) को हिजरी सन्

सं. २०४० वि. में आश्विन शुक्ल द्वितीया शनिवार (८ अक्तूबर १९८३ ई.) को हिजरी सन् १४०४ प्रारम्भ होगा। फल–युद्ध से कहीं जनधन हानि होगी।

लाभ-व्यय चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	१४	५	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११
व्यय	२	११	८	५	२	८	११	२	८	११	११	८

लाभ व्यय देखने की रीति–अपनी राशि के लाभ-व्यय अंकों को जोड़ कर उसमें से ९ घटाकर शेष को ८ से भाग देने पर यदि १, २, ६, ७, बचें तो वर्ष में उत्तम लाभ, ३, ४, ५, ० बचें तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

इतीदं वत्सर फलं वत्सरादि तिथौ शुभम्। यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्।

संदिग्ध व्रतपर्व–निर्णय (सं. २०४० वि.)

दूर्वाष्टमी :—भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को स्त्रियों का दूर्वाव्रत होता है। यह व्रत सिंह राशि में सूर्य तथा अगस्त्य तारा के अस्तकाल में ही किया जाता है। अगस्त्य के उदय होने पर यह व्रत नहीं किया जाता ("सिंहार्क एव कर्त्तव्या न कन्यार्के कदाचन। नागस्त्ये उदिते जातु पूजयेदमृतोद्भवाम् ॥") यदि भाद्रपद शुक्ल अष्टमी के दिन सूर्य कन्या-राशि में हो, अथवा अगस्त्य उदय हो चुका हो, ऐसी स्थिति में शास्त्रकारों का कथन है, कि—यह व्रत भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को करना चाहिए। यदि भाद्रपद कृष्ण अष्टमी के दिन भी अगस्त्य उदित हो तब यह व्रत और भी पहिले, अर्थात् श्रावण शुक्ल अष्टमी को करना चाहिए। इसवर्ष भाद्रपद शुक्ल अष्टमी के दिन सूर्य तो सिंह राशि में है, लेकिन अगस्त्य तारा इससे पहले ही उदय हो चुका है; अतः शास्त्र वचनानुसार इसवर्ष स्त्रियों को दूर्वाव्रत भाद्रपद कृष्ण अष्टमी (३१ अगस्त १९८३ ई०) को श्री कृष्णजन्माष्टमी व्रत के साथ ही करना होगा, क्योंकि इसदिन अगस्त्य अस्त है एवं सूर्य भी सिंह राशि में ही है।

कार्तिक शुक्ल में 'प्रदोष व्रत'—१७ एवं १८ नवम्बर १९८३ ई० को दोनों दिन त्रयोदशी प्रदोष-व्यापिनी है। लेकिन १७ नवं. को त्रयोदशी की प्रदोष (सूर्यास्तोत्तर-त्रिमुहूर्तात्मक) काल में व्याप्ति १८ नवं. की अपेक्षा अधिक है। अतः शास्त्रानुसार यहां प्रदोषव्रत १७ नवं. को ही माना जाएगा। धर्मसिन्धुकार का वचन है—"दिनद्वये प्रदोषव्याप्तौ साम्येन तदेक स्पर्शे वा उत्तरा, वैषम्येणैकदेश स्पर्शे तदाधिक्यवती पूर्वापि ग्राह्या।"

इसवर्ष फाल्गुनकृष्ण के प्रदोषव्रत में भी यही विवेचन लागू होता है, जहां त्रयोदशी २८ फरवरी १९८४ के दिन २९ फरवरी से अधिक प्रदोष को व्याप्त करती है।

होलिका दहन—इसवर्ष फाल्गुन पूर्णिमा १६ मार्च १९८४ को ही प्रदोष-व्यापिनी है। १७ मार्च को तो वह प्रदोष का स्पर्श भी नहीं करती, लेकिन १६ मार्च को पूर्णिमा प्रदोष के समय भद्रा से दूषित है। यह भद्रा भी निशीथकाल के बाद १७ मार्च के सूर्योदय से कुछ देर पूर्व ही समाप्त होती है। ऐसी स्थिति में शास्त्रों के वचनानुसार 'होलिका दहन' भद्रा के मुख को छोड़कर १६ मार्च को ही करना होगा। भद्रा के चतुर्थपाद की पहली ५ घड़ियां 'भद्रामुख' कहलाती हैं। इस वर्ष १६ मार्च को 'भद्रामुख' आधी रात के कहीं बाद पड़ेगा। अतः १६ मार्च को ही सायं ७ बजकर ३३ मिनट से ८ बजकर ५३ मिटन के मध्य प्रदोषकाल में ही होलिकादहन कर लेना चाहिए। धर्मसिन्धु का वचन है—'सा प्रदोष व्यापिनी भद्रा रहिता ग्राह्या...परदिने प्रदोष स्पर्शाभावे पूर्वदिने प्रदोषे भद्रासत्वे ..पूर्वदिने भद्रापुच्छे वा भद्रामुखमात्रं त्यक्त्वा भद्रायामेव वा होलिका दीपनम्। परदिने प्रदोषस्पर्शाभावे...पूर्वदिने निशीथोत्तरं भद्रासमाप्तौ भद्रामुखं त्यक्त्वा भद्रायामेव।"

मुहर्रम—इसवर्ष दक्षिण-भारत के मद्रास, केरल, कर्णाटक, आन्ध्रप्रदेश एवं महाराष्ट्र, गुजरात में चन्द्रदर्शन निस्सन्देह ७ अक्तूबर, १९८३ ई० को ही होगा; अतः देश के इस भाग में हिजरी सन् १४०४ का पहला मास मुहर्रम ८ अक्तूबर १९८३ ई० को ही प्रारम्भ हो जाएगा। तदनुसार मुहर्रम (ताजिया) का उत्सव इन प्रदेशों में १७ अक्तूबर १९८३ ई० को मनाया जाएगा। लेकिन जम्मू-काश्मीर, पंजाब, हि. प्र. में ७ अक्तूबर को चन्द्र दर्शन नहीं होगा; अतः इन प्रदेशों में मुहर्रम का उत्सव १८ अक्तूबर को होगा। राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, दिल्ली आदि उत्तरी भारतीय प्रदेशों में भी ७ अक्तूबर को चन्द्र दर्शन की कम ही संभावना है। इन प्रदेशों में चन्द्र दर्शन की तारीख के अनुसार १७ या १८ अक्तूबर को मुहर्रम मनाया जाएगा।

"अर्धकुम्भ प्रयागयोग" सं २०३८ में या सं २०३९ में ?

गतवर्ष सं २०३९ वि. के पंचांग में हमने माघीअमा (१४ जनवरी १९८३ ई०) को वृश्चिकस्थ गुरु एवं मकरस्थ सूर्य की स्थिति के आधार पर प्रयाग में 'अर्धकुम्भी पर्व' लिखा था। लेकिन महात्माओं-साधुओं ने अर्धकुम्भ का यह पर्व २५ जनवरी १९८२ ई० को ही मना लिया, जबकि गुरु तुला में ही था। इस बारे में हमें कुछ विद्वानों ने पत्र भी लिखे हैं, उन्होंने इस वैमत्य का स्पष्टीकरण मांगा है, जोकि इस प्रकार है।

वस्तुतस्तु प्रयाग में अर्धकुम्भ पर्व का योग १४ जनवरी सन् १९८३ ई० को ही बनता है, क्योंकि पौराणिक वचनानुसार इस पर्व के समय गुरु की स्थिति वृश्चिक राशि में ही होनी चाहिए, लेकिन सं० २०३८ में तुला के गुरु में ही यह पर्व जिन महात्माओं ने माना, वे काशी के प्रभाव में आकर, सं० २०३९ के क्षयपूर्ववर्ती संक्रान्तिहीन मास आश्विन को ६० तिथिवाला मानते थे, जिससे उनके मतानुसार सं० २०३९ वि. में माघस्नान मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा से आरम्भ होकर क्षयमास (माघशुक्ल) की पूर्णिमा को समाप्त हो रहा था। इस मत के अनुसार सं० २०३९ वि. में अर्धकुम्भ का प्रधान (मुख्य) स्नान दिवस माघीअमा (मौनी अमावस), माघ-स्नान की समाप्ति से १५ दिन बाद आ रही थी। इस अव्यवस्था से बचने के लिए उन्होंने प्रयाग के अर्धकुम्भ को सं० २०३८ में ही मना लिया। क्षयमास को दो मासों का मिश्रण मानने से यह पर्व उन्हें तुला के गुरु में ही मनाने के लिए बाधित होना पड़ा है,—यह स्पष्ट है। वैसे वृश्चिकस्थ गुरु के समय ही इसे मनाना चाहिए। ("बिच्छू राशि में देवगुरु मकर राशि में भान। पापकटे तनुसुख करे तिरवेणी के स्नान।") तदनुसार १४ जनवरी १९८३ को ही इसपर्व का पूरा योग बनता है। इसी दिन त्रिवेणीस्नान अपदान आदि से इस पर्व का पुण्यफल प्राप्त किया जाएगा। क्षयमासमें दो (शुक्लादि पौष और माघ)मासों का समावेश करने से सं. २०३९ में माघकृष्णपक्ष माघस्नान की समाप्ति के बाद प्रारम्भ होता है और माघी अमा (मौनी अमा) (अर्धकुम्भ का मुख्य स्नानदिन) उनके मतानुसार माघस्नान से १५ दिन बाद आती है। यह तो सभी जानते हैं, कि प्रयाग का अर्धकुम्भ पर्व माघस्नान का ही अंग माना जाता है। इसी प्रकार की अव्यवस्थाओं को देखकर शास्त्र-वचनों के अनुसार हमने क्षयमास को दो मासों का मिश्रण नहीं माना।

ध्यान रहे—प्रयाग के विगत सभी अर्धकुम्भ वृश्चिक के बृहस्पति में ही मनाए जाते रहे हैं।

संदिग्ध व्रतपर्व–निर्णय (सं. २०४० वि.)

दूर्वाष्टमी :—भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को स्त्रियों का दूर्वाव्रत होता है। यह व्रत सिंह राशि में सूर्य तथा अगस्त्य तारा के अस्तकाल में ही किया जाता है। अगस्त्य के उदय होने पर यह व्रत नहीं किया जाता ("सिंहार्के एव कर्त्तव्या न कन्यार्के कदाचन। नागस्त्ये उदिते जातु पूजयेदमृतोद्भवाम् ॥") यदि भाद्रपद शुक्ल अष्टमी के दिन सूर्य कन्या-राशि में हो, अथवा अगस्त्य उदय हो चुका हो, ऐसी स्थिति में शास्त्रकारों का कथन है, कि—यह व्रत भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को करना चाहिए। यदि भाद्रपद कृष्ण अष्टमी के दिन भी अगस्त्य उदित हो तब यह व्रत और भी पहिले, अर्थात् श्रावण शुक्ल अष्टमी को करना चाहिए। इसवर्ष भाद्रपद शुक्ल अष्टमी के दिन सूर्य तो सिंह राशि में है, लेकिन अगस्त्य तारा इससे पहले ही उदय हो चुका है; अतः शास्त्र वचनानुसार इसवर्ष स्त्रियों को दूर्वाव्रत भाद्रपद कृष्ण अष्टमी (३१ अगस्त १९८३ ई०) को श्री कृष्णजन्माष्टमी व्रत के साथ ही करना होगा, क्योंकि इसदिन अगस्त्य अस्त है एवं सूर्य भी सिंह राशि में ही है।

कार्तिक शुक्ल में 'प्रदोष व्रत'—१७ एवं १८ नवम्बर १९८३ ई० को दोनों दिन त्रयोदशी प्रदोष-व्यापिनी है। लेकिन १७ नव. को त्रयोदशी की प्रदोष (सूर्यास्तोत्तर-त्रिमुहूर्तात्मक) काल में व्याप्ति १८ नव. की अपेक्षा अधिक है। अतः शास्त्रानुसार यहां प्रदोषव्रत १७ नवं. को ही माना जाएगा। धर्मसिन्धुकार का वचन है—"**दिनद्वये प्रदोषव्याप्तौ साम्येन तदेक स्पर्शे वा उत्तरा, वैषम्येणैकदेश स्पर्शे तदाधिक्यवती पूर्वापि ग्राह्या।**"

इसवर्ष फाल्गुनकृष्ण के प्रदोषव्रत में भी यही विवेचन लागू होता है, जहां त्रयोदशी २८ फरवरी १९८४ के दिन २९ फरवरी से अधिक प्रदोष को व्याप्त करती है।

होलिका दहन—इसवर्ष फाल्गुन पूर्णिमा १६ मार्च १९८४ को ही प्रदोष-व्यापिनी है। १७ मार्च को तो वह प्रदोष का स्पर्श भी नहीं करती, लेकिन १६ मार्च को पूर्णिमा प्रदोष के समय भद्रा से दूषित है। यह भद्रा भी निशीथकाल के बाद १७ मार्च के सूर्योदय से कुछ देर पूर्व ही समाप्त होती है। ऐसी स्थिति में शास्त्रों के वचनानुसार 'होलिका दहन' भद्रा के मुख को छोड़कर १६ मार्च को ही करना होगा। भद्रा के चतुर्थपाद की पहली ५ घड़ियाँ 'भद्रामुख' कहलाती हैं। इस वर्ष १६ मार्च को 'भद्रामुख' आधी रात के कहीं बाद पड़ेगा। अतः १६ मार्च को ही सायं ७ बजकर ३३ मिनट से ८ बजकर ५३ मिनट के मध्य प्रदोषकाल में ही होलिकादहन कर लेना चाहिए। धर्मसिन्धु का वचन है—"**सा प्रदोष व्यापिनी भद्रा रहिता ग्राह्या...परदिने प्रदोष स्पर्शाभावे पूर्वदिने प्रदोषे भद्रासत्वे...पूर्वदिने भद्रापुच्छे वा भद्रामुखमात्रं त्यक्त्वा भद्रायामेव वा होलिका दीपनम्। परदिने प्रदोषस्पर्शाभावे...पूर्वदिने निशीथोत्तरं भद्रासमाप्तौ भद्रामुखं त्यक्त्वा भद्रायामेव।**"

मुहर्रम—इसवर्ष दक्षिण-भारत के मद्रास, केरल, कर्णाटक, आन्ध्रप्रदेश एवं महाराष्ट्र, गुजरात में चन्द्रदर्शन निस्सन्देह ७ अक्तूबर, १९८३ ई० को ही होगा; अतः देश के इस भाग में हिजरी सन् १४०४ का पहला मास मुहर्रम ८ अक्तूबर १९८३ ई० को ही प्रारम्भ हो जाएगा। तदनुसार मुहर्रम (ताजिया) का उत्सव इन प्रदेशों में १७ अक्तूबर १९८३ ई० को मनाया जाएगा। लेकिन जम्मू-काश्मीर, पंजाब, हि. प्र. में ७ अक्तूबर को चन्द्र दर्शन नहीं होगा; अतः इन प्रदेशों में मुहर्रम का उत्सव १८ अक्तूबर को होगा। राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, दिल्ली आदि उत्तरी भारतीय प्रदेशों में भी ७ अक्तूबर को चन्द्र दर्शन की कम ही संभावना है। इन प्रदेशों में चन्द्र दर्शन की तारीख के अनुसार १७ या १८ अक्तूबर को मुहर्रम मनाया जाएगा।

"अर्धकुम्भ प्रयागयोग" सं २०३८ में या सं २०३९ में ?

गतवर्ष सं २०३९ वि. के पंचांग में हमने माघीअमा (१४ जनवरी १९८३ ई०) को वृश्चिकस्थ गुरु एवं मकरस्थ सूर्य की स्थिति के आधार पर प्रयाग में 'अर्धकुम्भी पर्व' लिखा था। लेकिन महात्माओं-साधुओं ने अर्धकुम्भ का यह पर्व २५ जनवरी १९८२ ई० को ही मना लिया, जबकि गुरु तुला में ही था। इस बारे में हमें कुछ विद्वानों ने पत्र भी लिखे हैं, उन्होंने इस वैमत्य का स्पष्टीकरण मांगा है, जोकि इस प्रकार है।

वस्तुतस्तु प्रयाग में अर्धकुम्भ पर्व का योग १४ जनवरी सन् १९८३ ई० को ही बनता है, क्योंकि पौराणिक वचनानुसार इस पर्व के समय गुरु की स्थिति वृश्चिक राशि में ही होनी चाहिए, लेकिन सं० २०३८ में तुला के गुरु में ही यह पर्व जिन महात्माओं ने माना, वे काशी के प्रभाव में आकर, सं० २०३९ के क्षयपूर्ववर्ती संक्रान्तिहीन मास आश्विन को ६० तिथिवाला मानते थे, जिससे उनके मतानुसार सं० २०३९ वि. में माघस्नान मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा से आरम्भ होकर क्षयमास (माघशुक्ल) की पूर्णिमा को समाप्त हो रहा था। इस मत के अनुसार सं० २०३९ वि. में अर्धकुम्भ का प्रधान (मुख्य) स्नान दिवस माघीअमा (मौनी अमावस); माघ-स्नान की समाप्ति से १५ दिन बाद आ रही थी। इस अव्यवस्था से बचने के लिए उन्होंने प्रयाग के अर्धकुम्भ को सं० २०३८ में ही मना लिया। क्षयमास को दो मासों का मिश्रण मान से यह पर्व उन्हें तुला के गुरु में ही मनाने के लिए बाधित होना पड़ा है,—यह स्पष्ट है। वैसे वृश्चिकस्थ गुरु के समय ही इसे मनाना चाहिए। ("बिच्छू राशि में देवगुरु मकर राशि में भान। पापकटे तनुसुख करे तिरवेणी के स्नान।")। तदनुसार १४ जनवरी १९८३ को ही इसपर्व का पूरा योग बनता है। इसी दिन त्रिवेणीस्नान जपदान आदि से इस पर्व का पुण्यफल प्राप्त किया जाएगा। क्षयमासमें दो (शुक्लादि पौष और माघ)मासों का समावेश करने से सं. २०३९ में माघकृष्णपक्ष माघस्नान की समाप्ति के बाद प्रारम्भ होता है और माघी अमा (मौनी अमा) (अर्धकुम्भ का मुख्य स्नानदिन) उनके मतानुसार माघस्नान से १५ दिन बाद आती है। यह तो सभी जानते हैं, कि प्रयाग का अर्धकुम्भ पर्व माघस्नान का ही अंग माना जाता है। इसी प्रकार की अव्यवस्थाओं को देखकर शास्त्र-वचनों के अनुसार हमने क्षयमास को दो मासों का मिश्रण नहीं माना।

ध्यान रहे—प्रयाग के विगत सभी अर्धकुम्भ वृश्चिक के बृहस्पति में ही मनाए जाते रहे हैं।

श्री वि. सं. २०४०, शाक १९०५, वैशाख कृष्ण पक्ष २ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टै. टा. | उदय-कालिक | (२८ अप्रैल से १२ मई तक, सन् १९८३ ई.), अ., उ. गो., ग्रीष्म ऋतु

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह-दर्शन
३२	४९	१	गु.	१४	२	वि.	४८	४९	व्य.	४४	३०	कौ.	१४	२	१५	२८	८	१४	वृ.३३।३४	५	४६	६	५४	०	१३	३२	३०	
३२	५५	२	शु.	१४	२	अनु.	५१	२६	व.	४२	३४	ग.	१४	२	१६	२९	९	१५	वृश्चिक	५	४५	६	५५	०	१४	३०	४५	भ. ४४।५२ उ.
३२	४९	३	श.	१५	४३	ज्ये.	५५	४१	प.	४१	५६	वि.	१५	४३	१७	३०	१०	१६	ध.५५।४१	५	४४	६	५६	०	१५	२९	१	भ. १५।४३ या., श्री गणेश ४ व.,
३३	३	४	र.	१९	९	मू.	६०	०	शि.	४२	२९	बा.	१९	१	१८	म.१	११	१७	धनु	५	४३	६	५६	०	१६	२७	१४	मई प्रा.,
३३	८	५	चं.	२३	४३	मू.	१	२४	सि.	४४	३	तै.	२३	४३	१९	२	१२	१८	धनु	५	४२	६	५७	०	१७	२५	२४	बुध वक्री २२।२२, नेपच्यून वक्री
३३	१२	६	मं.	२९	३०	पू.षा.	८	१६	सा.	४६	१८	व.	२९	३०	२०	३	१३	१९	म. २५।९	५	४१	६	५८	०	१८	२३	३५	भ. २९।३० उ., मगल कृति में १८।२, बुध पश्चिम में अस्त ३४।५८, शुक्र •
३३	१६	७	बु.	३५	४४	उ.षा.	१५	४६	शु.	४८	४७	वि.	२	३७	२१	४	१४	२०	मकर	५	४१	६	५८	०	१९	२१	४४	भ. २।३७ या.
३३	१९	८	गु.	४१	५२	श्र.	२३	२०	शु.	५१	७	बा.	८	४८	२२	५	१५	२१	कु.५६।५१	५	४०	६	५९	०	२०	१९	५०	पंचक प्रा. ५६।५१. □मां जन्मोत्सव प्रा.,
३३	२२	९	शु.	४७	१८	ध.	३०	२३	ब्र.	५२	५२	तै.	१४	३५	२३	६	१६	२२	कुम्भ	५	३९	७	०	०	२१	१७	५६	•मिथुन में ४८।१८ ब. शनि चित्रा ४ में ०।२, श्री १००८ आनन्दमयी□
३३	२६	१०	श.	५१	२८	श.	३६	२१	ऐं.	५३	३७	व.	१९	२३	२४	७	१७	२३	कुम्भ	५	३८	७	०	०	२२	१६	०	भ. १९।२३ उ., ५१।२८ या., मगल वृष में ५६।४०, जन्मदिन श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर,
३३	३०	११	र.	५४	७	पू.भा.	४०	५४	वै.	५३	११	ब.	२२	४७	२५	८	१८	२४	मी.२४।४६	५	३७	७	१	०	२३	१४	२	व. बुध मेष में ४२।५५, वरूथिनी ११ व्र.म. श्री वल्लभाचार्य जयन्ती,
३३	३४	१२	चं.	५५	४	उ.भा.	४३	४९	वि.	५१	२५	कौ.	२४	३५	२६	९	१९	२५	मीन	५	३७	७	२	०	२४	१२	३	शुक्र आर्द्रा में ४१।४०,
३३	३८	१३	मं.	५४	१६	रे.	४५	३	प्री.	४८	१८	ग.	२४	४०	२७	१०	२०	२६	मे.४५।३	५	३६	७	३	०	२५	१०	४	भ. ५४।१६ उ., पंचक म. ४५।३, भौम प्रदोष व.,
३३	४२	१४	बु.	५१	५९	अ.	४४	४५	आ.	४३	५८	वि.	२३	७	२८	११	२१	२७	मेष	५	३५	७	३	०	२६	८	१	भ. २३।७ या., सूर्य कृत्तिका में ३३।५, राहु मृग. ३ में केतु मूल १ में २७।३८.
३३	४५	३०	गु.	४८	२३	भ.	४३	८	सौ.	३८	३४	च.	२०	११	२९	१२	२२	२८	वृ.५७।२८	५	३४	७	४	०	२७	५	५९	मेला पिंजौर (हरियाणा)

ग्रह-दर्शन:—मंगल अस्त है। बुध ३ मई को पश्चिम में अस्त होगा। प्रातः गुरु को पश्चिम की ओर झुका हुआ देख सकेंगे। सायं शुक्र को पश्चिम में तथा शनि को पूर्व में देखा जा सकता है।

क. सूर्योदये

वैशा. कृ. ८ गुरु, इष्ट ५९।३५,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	१	७	२	६	२	८
२१	२८	१	१५	२	६	३	३
१७	३६	९	४	२९	२६	३७	३७
३४	७	४८	१८	१४	५२	२२	२२
५८	४३	२२	६	६८	४	३	३
७	२	३२	२५	०	२०	११	११
	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. ३	कृत्ति. १	कृत्ति. २	अनु. ४	मृग. ३	चित्रा ४	मृग. ३	मू. २

लोक भविष्य— इस पक्ष में अमावस गुरुवारी है तथा पीछे मेष-संक्रम भी वीरवार को ही था। इस प्रकार बना हुआ 'खप्पर योग' किसी मुस्लिम देश में अशान्ति का प्रतीक है। यहां मेष का सूर्य एवं वृष का मंगल भी कहीं सैनिक हलचल एवं प्रजा में नानाविध रोगों की सूचना देते हैं—

"मेषे समाश्रितो भानुः वृषे च धरणी सुतः।
भय व्याधियुताः लोकाः नृपाणां विग्रहो महान्।।" कृषक वर्ग एवं साधारण जनता के लिए समय अनुकूल नहीं। महंगाई बढ़ने से प्रजा में अशान्ति रहे।

ग्रहचाल और बाजार का रुख— २ मई को बाजार का रुख देख कर काम करें। हमारा विचार कुछ मन्दे का ही है। रुई और चान्दी में विशेष तेजी एवं खास मन्दी के झटके आएंगे। ३ मई को गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं अनाजों में तेजी आएगी लेकिन रुई चान्दी में मन्दा ही रहेगा। ७ मई को गुड़, लाल खाण्ड, शक्कर, मिर्च, तेल, रुई, कपास एवं अनाजों में भी तेजी का उछाला आ सकता है। यह तेजी पक्षान्त तक चलेगी, तेजी में रहने वाले लाभ में रहें।

क. सूर्योदये

२ मं. | १२ | रा. ३ शु. | चं. १ बु. सू. | ११ | ४ | १० | ५ | ७ श. | ९ के. | ६ | ८ गु.

वैशा. कृ. ३० गुरु इष्ट ५९।५०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१	०	७	२	६	२	८
२८	३	२७	१४	१०	५	३	३
३	३६	३५	१७	२२	५७	१५	१५
४६	२२	०	१४	०	२४	७	७
५७	४२	३६	७	६६	४	३	३
५४	४९	३	४	५२	२	११	११
	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. १	कृत्ति. ३	कृत्ति. १	अनु. ४	आर्द्रा २	चित्रा ४	मृग. ३	मूल १

आकाश लक्षण— मई २, ३, ७, ८, ९, को पंजाब, हि. प्र., हरियाणा, उ. प्र. आदि में वायुवेग के साथ कहीं कुछ बूंदाबांदी होगी, कुछ स्थानों पर वायुवेग से आकाश से बादल हटेंगे। तापमान ऊंचा रहे। सूर्य मंगल से पीछे होने से एक मास तक आगे वर्षा का प्रायः अभाव रहेगा।

शकुन विचार— "वैशाख वदी आठ दिना बिजली गर्जन होय, संवत् अच्छा जानिए संशय करो न कोय।।"

श्री वि. सं. २०४०, शाक १९०५, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६ (२६ जून से १० जुलाई तक, सन् १९८३ ई.), द. अयन, उ. गोल, वर्षा ऋतु,

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. आषा.	अं. जून	श. आषा.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	भा. स्टैं. टा. चण्डीगढ़ सू.उ. घं.	मि.	सू.उ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह-दर्शन
																												ग्रह-दर्शन:—मंगल अस्त है। बुध २८ जून को पूर्व में अस्त होगा। प्रातः गुरु को पश्चिम कपाल में तथा साय शुक्र को पश्चिम में देखें। सूर्यास्त बाद शनि को पूर्वकपाल में देखा जा सकेगा।
३५	०	१	र.	२६	२७	पू.षा.	४६	३६	ब.	२६	४०	कौ.	२६	२७	१२	२६	५	१४	धनु	५	२५	७	२४	२	१०	१३	२७	
३५	०	२	चं.	३२	०	उ.षा.	५३	४७	ऐं.	२८	४२	ग.	३२	०	१३	२७	६	१५	म.३।२४	५	२६	७	२४	२	११	१०	३९	
३५	०	३	मं.	३८	०	श्र.	६०	०	वै.	३१	७	व.	५	०	१४	२८	७	१६	मकर	५	२६	७	२४	२	१२	७	५१	
३४	५९	४	बु.	४४	६	श्र.	१	१८	वि.	३३	३७	ब.	११	३	१५	२९	८	१७	कुं.३५।२	५	२६	७	२५	२	१३	५	४	भ. ५।० उ. ३८।० या., बुध मिथुन में ३९।४२, बुध पूर्व में अस्त २५।४७,
३४	५८	५	गु.	४९	५७	ध.	८	४६	प्री.	३५	५९	कौ.	१७	२	१६	३०	९	१८	कुम्भ	५	२७	७	२५	२	१४	२	१६	पंचक प्रा. ३५।२, मंगल आर्द्रा में ४३।१०, श्री गणेश ४ व्र.,
३४	५७	६	शु.	५५	८	श.	१५	५३	आ.	३७	५४	व.	२२	३२	१७	जु.१	१०	१९	कुम्भ	५	२७	७	२५	२	१४	५९	२८	भ. ५५।८ उ., जुलाई प्रा., बुध आर्द्रा में ५६।०, शुक्र मघा सिंह में ४१।८,
३४	५६	७	श.	५९	९	पू.भा.	२२	९	सौ.	३९	२	वि.	२७	८	१८	२	११	२०	मी ५।३५	५	२७	७	२५	२	१५	५६	४१	भ. २७।८ या., शनि मार्गी ०।१०,
३४	५५	८	र.	६०	०	उ.भा.	२७	१०	शो.	३९	६	बा.	३०	२५	१९	३	१२	२१	मीन	५	२८	७	२५	२	१६	५३	५४	
३४	५४	८	चं.	१	४२	रे.	३०	३८	अ.	३७	५३	कौ.	१	४२	२०	४	१३	२२	मे.३०।३८	५	२८	७	२५	२	१७	५१	६	पंचक स. ३०।३८,
३४	५३	९	मं.	२	३१	अ.	३२	१६	सु.	३५	९	ग.	२	३१	२१	५	१४	२३	मेष	५	२९	७	२५	२	१८	४८	१९	भ. ३१।५६ उ.,
३४	५२	१०	बु.	१	२२	भ.	३१	५९	धृ.	३०	५३	वि.	१	२२	२२	६	१५	२४	वृ.४६।२७	५	२९	७	२५	२	१९	४५	३३	भ. १।२२ या., सूर्य पुन. में १५।१०, योगिनी ११ व्र. स्मा.,
अवम		११	बु.	५८	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय,
३४	५०	१२	गु.	५३	३१	कृ.	२९	५२	शू.	२५	६	कौ.	२५	५३	२३	७	१६	२५	वृष	५	३०	७	२५	२	२०	४२	४६	योगिनी ११ व्र. वै.,
३४	४८	१३	शु.	४७	४	रो.	२६	२	गं.	१७	५५	ग.	२०	१८	२४	८	१७	२६	मि.५३।२५	५	३०	७	२५	२	२१	४०	०	भ. ४७।४ उ., बुध पुन. में ८।५२, प्रदोष व्र., वेंकटेश (प्लूटो) मार्गी
३४	४६	१४	श.	३९	२२	मृ.	२०	४८	वृ.	९	३०	वि.	१३	१३	२५	९	१८	२७	मिथुन	५	३०	७	२५	२	२२	३७	१५	भ. १३।१३ या.,
३४	४४	३०	र.	३०	४७	आ.	१४	३२	ध्रु.	० ५०	१२ १५	च.	५	५	२६	१०	१९	२८	क.५४।२२	५	३१	७	२५	२	२३	३४	२८	

आषाढ़ कृ. ८ चन्द्र, इष्ट०।१५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	२	७	४	६	२	८
१७	९	११	८	१	४	०	०
५१	३३	२	२४	५०	७	२९	२९
१०	३	२५	७	१०	१	४७	४७
५७	४०	१२८	४	४६	०	३	३
१३	१८	४२	२२	१२	१८	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा ४	आर्द्रा १	आर्द्रा २	अनु. २	मघा १	चित्रा ४	मृग. ३	मूल १

कृ. सूर्योदये

४ — बु. — २ — ५ शु. — रा. ३ मं. सू. — १ — ६ — १२ चं. — ७ श. — ९ के. — ११ — ८ गु. — १०

लोक भविष्य—इस पक्ष में चतुर्ग्रही एवं पंचग्रही योग बनता है "एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंच खेचराः प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा।।"—कहीं राजनैतिक गतिविधि से क्षोभ पैदा होगा, शात्यर्थ सेना के प्रयोग से कहीं स्थिति विषम होगी। कहीं अतिवर्षण आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनधन हानि होगी। यहां सूर्य मंगल दोनों आर्द्रानक्षत्र में होने से कुछ प्रान्तों में जलप्लाव की स्थिति बनेगी तथा कुछ प्रान्तों में सूखाग्रस्त स्थिति रहेगी। जनजीवनोपयोगी अनाज आदि में अधिक महंगाई से क्षोभ पैदा हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—२८ जून को बाजार का रुख देख कर काम करें। ग्रह-स्थिति के अनुसार छोटे एवं मोटे अनाजों में, घी एवं रुई में घटाबढ़ी चले। १ जुलाई को अनाजों में मन्दा बनेगा। सोना, चान्दी, लाल मिर्च, गुड़, खाण्ड, शक्कर, एवं घी में तेजी बनेगी। ६ जुलाई तक यह तेजी चल सकती है। तत्पश्चात कुछ मन्दा हो।

कृ. सूर्योदये

४ — मं. चं. — २ — ५ शु. — रा. ३ बु सू. — १ — ६ — १२ — ७ श. — ९ के — ११ — ८ गु. — १०

आषाढ़ कृ.३० रवि, इष्ट५९।५८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	२	७	४	६	२	८
२४	१४	२६	७	६	४	०	०
३१	१४	९	५७	५४	११	७	७
४०	१८	३८	५	३०	१२	३१	३१
५७	४०	१२८	३	३९	०	३	३
१४	२	२०	०२	३०	४९	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. २	आर्द्रा ३	पुन. २	अनु. २	मघा ३	चित्रा ४	मृग. ३	मूल १

आवश्य लक्षण—इस मास में प्रत्येक प्रान्तों में व्यापक वर्षा होगी। विशेषतः २८, २९ जून तथा जुला. १, ३, ६, ८ को व्यापक वर्षा के योग हैं। लेकिन वर्षा ऋतु में सिंहस्थ शुक्र कुछ प्रान्तों में वर्षा की कमी करेगा।
शकुन विचार—यदि आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को बिजली चमके, मेघ व वर्षा हो तो दो मास तक वर्षा का अवरोध हो, अनाज तेज हो।

श्री वि. सं. २०४०, शाक १९०५, श्रावण कृष्ण पक्ष ८ | तारीखें | चन्द्र | ना. स्टैं. टा. | उदय-कालिक | (२५ जुलाई से ८ अग. तक, सन् १९८३ ई। द. अयन, उ. गोल, **वर्षा ऋतु**,

ग्रह-दर्शन—२ अग. को मंगल उदित होगा। प्रातः गुरु को पश्चिम कपाल में तथा सायं बुध को पश्चिम की ओर झुका हुआ देखें। बुध के पास ही शुक्र एवं शनि खमध्य से पश्चिम की ओर नत दिखाई देंगे।

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	८	१	चं.	६०	०	उ.षा.	९	८	प्री.	४९	३२	बा.	३१	२१	१०	२५	३	१४	मकर	५	३९	७	१८	३	७	५३	३३	
३४	६	१	मं.	४	२१	श्र.	१६	३६	आ.	५२	०	कौ.	४	२१	११	२६	४	१५	कुं.५०।२०	५	४०	७	१८	३	८	५०	५१	पञ्चक प्रा ५०।२०, ब. नेपच्यून मूल १ में, अशून्य शयन व्र.,
३४	३	२	बु.	१०	२५	ध.	२४	३	सौ.	५४	२०	ग.	१०	२५	१२	२७	५	१६	कुम्भ	५	४१	७	१७	३	९	४८	१०	भ. ४३।१४ उ., श्री १००८ जगद्गुरु शंकराचार्य (कांची मठ श्री जयेन्द्र सरस्वती) जयन्ती
३४	०	३	गु.	१६	१३	श.	३१	१२	शो.	५६	१९	वि.	१६	१३	१३	२८	६	१७	कुम्भ	५	४१	७	१७	३	१०	४५	३०	भ. १६।१३ या., **बुध मघा सिंह में २९।५८**, श्री गणेश ४ व्र.,
३३	५७	४	शु.	२१	२९	पू.भा.	३७	४८	अ.	५७	४८	बा.	२१	२९	१४	२९	७	१८	मी.२१।९	५	४२	७	१६	३	११	४२	५१	गुरु मार्गी २९।३०,
३३	५४	५	श.	२५	५९	उ.भा.	४३	३४	सु.	५८	३२	तै.	२५	५९	१५	३०	८	१९	मीन	५	४२	७	१६	३	१२	४०	१२	नाग पंचमी (बंगाल)
३३	५०	६	र.	२९	२१	रे.	४८	७	धृ.	५८	१४	व.	२९	२१	१६	३१	९	२०	मे.४८।७	५	४३	७	१५	३	१३	३७	३५	भ. २९।२१ उ., पंचक स. ४८।७,
३३	४७	७	चं.	३१	१७	अ.	५१	१५	शू.	५६	४५	वि.	०	१९	१७	अ१	१०	२१	मेष	५	४४	७	१५	३	१४	३४	५८	भ. ०।१९ या., अगस्त प्रा., जन्म दिन लो. मा. बालगंगाधर तिलक.
३३	४४	८	मं.	३१	३४	भ.	५२	४१	ग.	५३	५३	बा.	१	२५	१८	२	११	२२	मेष	५	४४	७	१४	३	१५	३२	२३	मंगल उदित ४१।२५,
३३	४१	९	बु.	३०	०	कृ.	५२	१४	वृ.	४९	३०	तै.	०	४७	१९	३	१२	२३	वृ.७।३४	५	४५	७	१३	३	१६	२९	५०	भ. ५८।१६ उ., सूर्य आश्ले. में १०।३७, मंगल कर्क में ५३।८*
३३	३७	१०	गु.	२६	३३	रो.	४९	५८	ध्रु.	४३	३७	वि.	२६	३३	२०	४	१३	२४	वृष	५	४६	७	१२	३	१७	२७	१६	भ. २६।३३ या., * शुक्र वक्री ३९।१०,
३३	३३	११	शु.	२१	१९	मृ.	४५	५८	व्या.	३६	१९	बा.	२१	१९	२१	५	१४	२५	मि.१७।५८	५	४६	७	११	३	१८	२४	४५	कामदा ११ व्र. स., येंकटेश (प्लूटो) चित्रा ४ में,
३३	३०	१२	श.	१४	२८	आ.	४०	२७	ह.	२७	४२	तै.	१४	२८	२२	६	१५	२६	मिथुन	५	४७	७	१०	३	१९	२२	१५	बुध पू.फा. में २।०, शनि प्रदोष व्र.,
३३	२६	१३	र.	६	१६	पुन.	२३	४७	व.	१८	४	व.	६	१६	२३	७	१६	२७	क.२०।२७	५	४७	७	९	३	२०	१९	४४	भ. ६।१६ उ., ३१।४३ या.,
अव	म	१४	र.	५७	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३३	२३	३०	चं.	४७	३२	पु.	२६	२४	सि.	५७	०	च.	२२	२१	२४	८	१७	२८	कर्क	५	४८	७	८	३	२१	१७	१७	**सोमवती अमावस्या**, हरियाली अमावस

श्राव. कृ. ८ मंगल, इष्ट ५९।२५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	२	४	७	४	६	१	७
१६	२९	८	७	१५	४	२८	२८
२९	२४	४१	२८	५१	५८	५४	५४
१४	५७	१६	५२	५६	५	२४	२४
५७	३९	१०	०	०	३	३	३
२४	८	४१	५८	४४	८	११	११
	मा	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य ४	पुन. ३	मघा ३	अनु. २	पू.फा. १	चित्रा ४	मृग. २	ज्ये. ४

क. सूर्योदये

लोक भविष्य—इस मास में पांच मंगलवार एवं पांच चन्द्रवार हैं। शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि है। किसी यान दुर्घटना में जनधन हानि होगी। सीमा प्रान्तों पर कहीं सैनिक जमाव से शान्ति को खतरा पैदा हो, लेकिन बृहस्पति की दृष्टि शान्तिप्रद है अतः स्थिति बिगड़ेगी नहीं। प्रधान शासक को देश की आन्तरिक समस्याओं के कारण चिन्तित रहना पड़ेगा। प्रगतिदायक नई योजनाओं को किसी विशेष कारण से अभी कार्यान्वित करना अभी संभव न होगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में गुड़ खाण्ड शक्कर आदि रस पदार्थों में मन्दी आएगी। चान्दी, सोना, सूत, रुई चावल में तेजी आएगी। २ अग. को रुई, उड़द, तेल, अलसी में तेजी की संभावना है, ३ अग. से ज्वार, जौ, गेहूं, चावल, सोना, चान्दी में तथा घी तेल, गुड़ खाण्ड शक्कर में अच्छी तेजी आएगी। पक्षान्त में प्रत्येक व्यापारिक वस्तु में मन्दे का योग है, व्यापारी सावधान।

क. सूर्योदये

शु. बु. ५ | म. ४ चं. सू. | ३ | २ रा. | ६ | ७ श. | १ | के. ८ गु. | ९ | १० | ११ | १२

श्राव. कृ. ३० चन्द्र, इष्ट ५९।१५

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	४	७	४	६	१	७
२२	३	१७	७	१५	५	२८	२८
१४	१९	२६	३७	२१	१८	३५	३५
६	२३	५९	२०	२२	११	१९	१९
५७	३८	७९	२	१३	३	३	३
३१	५७	५३	३	२२	३९	११	११
	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. २	पुन. ४	पू.फा. २	अनु. २	पू.फा. १	चित्रा ४	मृग. २	ज्ये. ४

आकाश लक्षण—जुला. २८ एवं अगस्त २, ३, ४ को बादल वर्षा के योग हैं। इस पक्ष में प्रायः वर्षा होती रहेगी। लेकिन सिंहस्थ शुक्र के कारण कुछ भागों में वर्षा का अवरोध रहेगा।

शकुन विचार—यदि श्रावण कृष्ण ४, ५ को बादल गरजें, बिजली चमके, वर्षा हो तो सुभिक्ष रहे।

श्री वि. सं. २०४०, शाक १९०५, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १०															तारीखें				चन्द्र	भा. स्टैं. टा. चण्डीगढ़				उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य			
दि. मा घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. भाद्र	अं. अग.	भा. भाद्र	मु. जिल्कदा	संचार घ. प.	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.
३२	१४	१	बु.	४१	५६	श.	४५	१३	अ.	१०	५५	बा.	९	१०	८	२४	२	१४	कुम्भ	५	५८	६	५१	४	६	४०	१५
३२	१०	२	गु.	४६	५५	पू.भा.	५१	३६	सु.	१२	३८	तै.	१४	२५	९	२५	३	१५	मी. ३५।१०	५	५९	६	५०	४	७	३८	०
३२	७	३	शु.	५१	१४	उ.भा.	५७	२०	धृ.	१३	५४	व.	१९	५	१०	२६	४	१६	मीन	५	५९	६	४९	४	८	३५	५८
३२	३	४	श.	५४	३९	रे.	६०	०	शू.	१४	३५	ब.	२२	५६	११	२७	५	१७	मीन	६	०	६	४८	४	९	३३	५२
३१	५९	५	र.	५७	३	रे.	२	९	गं.	१४	३३	कौ.	२५	५१	१२	२८	६	१८	मे. २।९	६	०	६	४७	४	१०	३१	४८
३१	५५	६	चं.	५८	१०	अ.	५	५९	वृ.	१३	३९	ग.	२७	३६	१३	२९	७	१९	मेष	६	१	६	४६	४	११	२९	४४
३१	५०	७	मं.	५७	५३	भ.	८	३३	ध्रु.	११	४३	वि.	२८	१	१४	३०	८	२०	वृ. २३।५०	६	२	६	४५	४	१२	२७	४३
३१	४६	८	बु.	५६	०	कृ.	९	४२	व्या.	८	३८	बा.	२६	५६	१५	३१	९	२१	वृष	६	२	६	४४	४	१३	२५	४५
३१	४२	९	गु.	५२	२४	रो.	९	१४	ह.	५८ (४)	२८ (१५)	तै.	२४	१२	१६	सि. १	१०	२२	मि. ३८।१०	६	३	६	४३	४	१४	२३	४७
३१	३८	१०	शु.	४७	१२	मृ.	७	६	सि.	५१	२७	व.	१९	४८	१७	२	११	२३	मिथुन	६	३	६	४२	४	१५	२१	५१
३१	३४	११	श.	४०	३२	आ.	५८ (१)	१२ (२१)	व्य.	४३	११	ब.	१३	५२	१८	३	१२	२४	क. ४४।३०	६	४	६	४१	४	१६	१९	५९
३१	३०	१२	र.	३२	३४	पु.	५१	५८	व.	३३	५२	कौ.	६	३३	१९	४	१३	२५	कर्क	६	४	६	४०	४	१७	१८	७
३१	२५	१३	चं.	२३	४३	आश्ले.	४४	५४	प.	२३	४९	ग.	२३	४३	२०	५	१४	२६	सि. ४४।५४	६	५	६	३८	४	१८	१६	१७
३१	२०	१४	मं.	१४	२३	म.	३७	३१	शि.	१३	२०	श.	१४	२३	२१	६	१५	२७	सिंह	६	६	६	३७	४	१९	१४	३०
३१	१६	३०	बु.	४	५८	पू.फा.	३०	१५	सि.	५२ (२)	३५ (४८)	ना.	४	५८	२२	७	१६	२८	क. ४३।३५	६	६	६	३६	४	२०	१२	४५

(२४ अग. से ७ सितं. तक, सन् १९८३ ई.), द. अ., उ. गो., शरद् ऋतु,

ग्रह-दर्शन:—शुक्र ३१ अगस्त को पूर्व में उदित होगा। प्रातः शुक्र एवं रक्तवर्ण-मंगल पूर्व में दीखेगा। सूर्यास्तानन्तर बुध पश्चिम क्षितिज की ओर जाता, गुरु समध्य से पश्चिम की ओर नत एवं शनि को पश्चिम कपाल में देखा जा सकेगा।

शुक्र उदित (३१ अग.)

भ. १९।५ उ., ५१।१४ या.,
शनि स्वाती १ में ५०।४७, श्री गणेश ४ व्र., बहुला ४,
पंचक स. २।९
भ. ५८।१० उ., मंगल आश्ले. में ४२।३५, श्री चन्द्र षष्ठी व्र.,
भ. २८।१ या., सूर्य पू. फा. में ५४।५,
शुक्र पूर्व में उदित ४८।०, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्र. (जयन्तीयोग) (चन्द्रोदय रात्रि* ११ घ. ३१ मि.)
सितंबर प्र., गुग्गा नवमी, गोकुलाष्टमी,
भ. १९।४८ उ., ४७।१२ या., दूर्वाष्टमी (देखें पृ. ६०)
बुध वक्री २८।४७, शुक्र बाल्य स. ४८।०, अगस्त्य उदित, अजा ११ व्र. स.,
प्रदोष व्र.,
भ. २३।४३ उ., ४९।३ या.,
कुशोत्पाटिनी ३०, पिठोरी ३०.

भाद्र. कृ. ८ बुध, इष्ट ५८। ४०

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	३	५	७	४	६	१	७
१४	१८	७	९	३	७	२७	२७
२२	६	३	७	४५	१	२२	२२
२८	४६	०	३७	४३	१८	११	११
५८	३८	४	५	३१	५	३	३
३	१२	२८	५२	२६	१९	११	११
	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पू. फा. १	आश्ले. १	उ. फा. ४	अनु. २	मघा २	स्वा. १	मृग. २	ज्ये. ४

कृ. सूर्योदये

६ बु., ४ मं., ७ श., शु. ५ सू., ३, के. ८ गु., चं. २ रा., ९, ११, १, १०, १२

लोक भविष्य—मघा नक्षत्र में शुक्र उदित हुआ है, दक्षिण में प्राकृतिक प्रकोप से फसल को नुक्सान पहुंचे। बंगला देश में उत्पात, पंजाब आसाम विहार आदि में राजनैतिक अस्थिरता का भय है परिणामस्वरूप अजीब घटनाक्रम जारी होगा। शनि मंगल का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध यावन देश में शासक के विरुद्ध बगावत होगी। यान दुर्घटना किंवा कहीं अतिवर्षण एवं कुछ प्रान्तों में वर्षा के अभाव के कारण कृषकवर्ग में असन्तोष रहेगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—२९ अगस्त के लगभग चान्दी में झटके साथ खासी मन्दी आती है। ३१ अग. के बाद बाजार का रुख देखकर काम करें। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी एवं रुई में तेजी आकर मन्दी आएगी। गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में मन्दा आने का योग है। घी तेल में साधारणतया तेज़ी चलेगी। ३ सित. को बुध के वक्री होने पर अच्छी मन्दी या तेजी की संभावना है।

कृ. सूर्योदये

६ बु., ४ मं., ७ श., शु ५ सू. चं., ३, के. ८ गु., २ रा., ९, ११, १, १०, १२

भाद्र. कृ. ३० बुध, इष्ट ५८ ।३०

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
४	३	५	७	४	६	१	७
२१	२२	५	९	०	७	२६	२६
९	३३	२६	५१	४५	३९	५९	५९
३१	३२	५	५०	३०	४८	५६	५६
५८	३७	३८	६	१७	५	३	३
१८	५९	५१	५४	१०	४४	११	११
	मा.	व.	मा.	व.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू. फा. ३	आश्ले. २	उ. फा. ३	अनु. २	मघा. १	स्वा. १	मृग. २	ज्ये. ४

आकाश लक्षण—अग. २७, २९, ३१, सितं. ३ सितं. को हि. प्र., पंजाब, हरियाणा आदि में बादलचाल एवं वायु का ज़ोर रहे।
शाकुन विचार—भाद्र कृ. तृतीया को यदि बादलचाल हो तो अनाजों के स्टाक से आगे छठे मास में अच्छा लाभ मिलता है।

श्री वि. सं. २०४०, शाक १९०५, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११ (८ से २२ सितं. तक, सन् १९८३ ई.), द. अ., उ. गो., शरद् ऋतु,

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.
अवम		१	बु.	५६	३	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३१	११	२	गु.	४७	४९	उ.फा.	२३	३७	शु.	४३	३	बा.	२१	५६
३१	६	३	शु.	४१	०	ह.	१८	८	शु.	३४	३४	तै.	१४	२५
३१	१	४	श.	३५	५१	चि.	१४	११	ब्र.	२७	२७	व.	८	२५
३०	५६	५	र.	३२	४४	स्वा.	१२	६	ऐ.	२१	५५	व.	४	१८
३०	५२	६	चं.	३१	४९	वि.	१२	११	वै.	१८	९	कौ.	२	१६
३०	४८	७	मं.	३३	१	अनु.	१४	२२	वि.	१६	४	ग.	२	२५
३०	४४	८	बु.	३६	९	ज्ये.	१८	३०	प्री.	१५	३२	वि.	४	३५
३०	४०	९	गु.	४०	५३	मू.	२४	१६	आ.	१६	२०	बा.	८	३१
३०	३५	१०	शु.	४६	३६	पू.षा.	३१	९	सौ.	१८	४	तै.	१३	४५
३०	३०	११	श.	५२	५१	उ.षा.	३८	३७	शो.	२०	१९	व.	१९	४४
३०	२५	१२	र.	[illegible]	[illegible]	श्र.	४६	१३	अ.	२२	४७	व.	२५	५९
३०	२०	१३	[illegible]	६०	०	ध.	५३	२८	सु.	२५	४	वी.	३२	२
३०	१५	१३	[illegible]	४	५६	श.	६०	०	धृ.	२६	५९	तै.	४	५६
३०	[illegible]	१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	[illegible]	[illegible]	२८	२४	व.	१०	१२
३०	[illegible]	१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पू.भा.	६	०	[illegible]	२९	११	व.	१४	४०

तिथि	तारीखें प्र. (सौर)	अं. (अंग्रेजी)	श. (शक)	मु. (मुस्लिम)	चन्द्र संचार घ.	चण्डीगढ़ सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
१ (अवम)	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२३	८	१७	२९	कन्या	६	७	६	३५	४	२१	११	१
३	२४	९	१८	ज.१	तु.४६।१०	६	७	६	३३	४	२२	९	१९
४	२५	१०	१९	२	तुला	६	८	६	३२	४	२३	७	३९
५	२६	११	२०	३	वृ.५७।१०	६	८	६	३१	४	२४	६	०
६	२७	१२	२१	४	वृश्चिक	६	९	६	३०	४	२५	४	२४
७	२८	१३	२२	५	वृश्चिक	६	१०	६	२८	४	२६	२	४९
८	२९	१४	२३	६	ध.१८।३०	६	१०	६	२७	४	२७	१	१५
९	३०	१५	२४	७	धनु	६	११	६	२६	४	२७	५९	४४
१०	३१	१६	२५	८	म.४८।१	६	११	६	२५	४	२८	५८	१३
११	आ.१	१७	२६	९	मकर	६	१२	६	२३	४	२९	५६	४४
१२	२	१८	२७	१०	मकर	६	१२	६	२३	५	०	५५	१७
१३	३	१९	२८	११	कुं.१९।५०	६	१३	६	२०	५	१	५३	५१
१३	४	२०	२९	१२	कुम्भ	६	१४	६	१९	५	२	५२	२७
१४	५	२१	३०	१३	मी.४९।३८	६	१४	६	१७	५	३	५१	५
१५	६	२२	३१	१४	मीन	६	१५	६	१६	५	४	४९	४४

ग्रह दर्शन—पक्षारम्भ में ही बुध पश्चिम में अस्त हो जाएगा। मंगल-शुक्र को प्रातः पूर्व में देखें। सायं गुरु एवं शनि पश्चिम कपाल में दीखेंगे।

- प्रतिपदा तिथिक्षय. • मेला बाबा गुसांईआणां (कुराली)
- चन्द्र दर्शन मु. ३०, **बुध पश्चिम में अस्त ४५।५८**, नक्षत्र समाप्त. •
- जिल्हिज्ज मु. प्रा., गुरु अनु. ३ में ९।२०, नाम उपाकर्म श्री वराह □
- भ. ८।२५ उ., ३५।५१ या., हरितालिका ४ व्र., कलंक चौथ (चन्द्रास्त रात्रि में#
- व. शुक्र आश्ले. कर्क में ४।५५, ऋषि पंचमी व्र.,
- सूर्यषष्ठी व्र., □जयन्ती, नेपच्यून मार्गी, #८ घं. ५९ मि.).
- भ. ३३।१ उ., सूर्य उ. फा. में ३८।१०,
- भ. ४।३५ या., व. बुध सिंह में १७।१५, राहु मृग. १ में केतु ज्येष्ठा ३ में=
- शुक्र मार्गी २४।२२, श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव)
- =१४।२२, श्री राधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रा.
- भ. १९।४४ उ., ५२।५१ या., सं. सूर्य कन्या में ३।२० मु. ४५, पुण्यकाल□□
- श्री वामन जयन्ती (वामन द्वादशी), श्रवण १२ व्र., □□१९।२० या., व. बुध पू. फा.##
- पंचक प्रा. १९।५०, मंगल मघा सिंह में ४६।४०, सोम प्रदोष व्र.,
- शुक्र मघा सिंह में २१।० ##में ३५।१५, पद्मा ११ व्र. स.
- भ. १०।१२ उ., ४२।२६ या., सत्य व्र. अनन्त चतुर्दशी व्र. प्रोष्ठपदी १५, मेला00
- मेला गोइन्दवाल, (पं.) 00छपार (पं.)

लोक भविष्य—इस पक्ष में मंगल-शुक्र दोनों सिंह राशि में प्रविष्ट होते हैं। १८ सिं. तक शनि मंगल परस्पर दृष्ट हैं। जनता में लूट पाट एवं अपहरण आदि अनैतिक कार्य अधिक होंगे। कहीं युद्ध, परस्पर संघर्ष हो। राजनीति में आवश्यक विशेष संशोधन होंगे। आजीविका साधनों में कमी होगी, साधारण जनता कष्ट में रहे। काश्मीर, तिब्बत एवं अन्य सीमा प्रान्तों पर सेना को सतर्क रहना होगा। जब शुक्र कर्क में वक्री होकर कर्क में ही मार्गी होता है तो सुभिक्ष एवं संतुष्टि होती है—यह योग यहां घटित होता है।

[illegible] और बाजार के रुख—रुई में ८ सितं. के [illegible] मन्दी आएगी तथा अनाजों में तेजी आएगी। १० सित. से रुई, अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड शक्कर में तेजी आएगी। १४ सितम्बर के बाद वायदा व्यापार की लाइन बदलेगी। हमारे विचार से व्यापारिक [illegible] में मन्दे का संचार होगा। १९ सित. से चान्दी, [illegible] गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, अलसी, रुई, लाल मिर्च तेज होंगे।

भा. शु. [illegible] इष्ट [illegible]
[illegible]

कु. सूर्योदये

७ शु.	६ सू.	मं. बु. ५ शु.
गु. के. ८		४
९		३
१०	१२ चं.	२ रा.
११		१

भाद्र शु. १५ गु., इष्ट ५८। ८

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	५	४	४	७	४	६	१	७
अं.	५	१	२३	११	०	९	२६	२६
क.	४६	५९	२	४९	३४	११	१२	१२
वि.	३५	५५	५४	१९	२९	९	१४	१४
गति	५८	३७	१३	८	१६	६	३	३
	४२	३१	३१	५०	५८	२७	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण—सितं. ८, ९, १४, १५, १६, १९, २० को हवा का जोर रहे, एवं बादल चाल रहें। [illegible]

शकुन विचार—भाद्र शु. १५ को यदि आकाश निर्मल हो तो गेहूं [illegible] का स्टाक करें, आगे [illegible] लाभ मिलेगा। अगर इस दिन बादल हों तो स्टाक शीघ्र ही निकाल दें, आगे निश्चय ही मन्दा आएगा।

श्री वि. सं. २०४०, शाक १९०५, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १० (२४ अग. से ७ सित. तक, सन् १९८३ ई.), द. अ., उ. गो., शरद् ऋतु,

ग्रह-दर्शन–शुक्र ३१ अगस्त को पूर्व में उदित होगा। प्रातः शुक्र एवं रक्तवर्ण-मंगल पूर्व में दीखेगा। सूर्यास्तानन्तर बुध पश्चिम क्षितिज की ओर जाता, गुरु समध्य से पश्चिम की ओर नत एवं शनि को पश्चिम कपाल में देखा जा सकेगा।

दि. मा घ.	दि. मा प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. भाद्र.	अं. अग.	श. भाद्र.	मु. जिल्काद	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३२	१९	१	बु.	४१	५६	श.	४५	१३	अ.	१०	५५	बा.	९	१०	८	२४	२	१४	कुम्भ	५	५८	६	५१	४	६	४०	१५
३२	१०	२	गु.	४६	५५	पू.भा.	५१	३६	सु.	१२	३८	तै.	१४	२५	९	२५	३	१५	मी.३५।१०	५	५९	६	५०	४	७	३८	०
३२	७	३	शु.	५१	१४	उ.भा.	५७	२०	धृ.	१३	५४	व.	१९	५	१०	२६	४	१६	मीन	५	५९	६	४९	४	८	३५	५८
३२	२	४	श.	५४	३९	रे.	६०	०	शू.	१४	३५	ब.	२२	५६	११	२७	५	१७	मीन	६	०	६	४८	४	९	३३	५२
३१	५९	५	र.	५७	३	रे.	२	९	गं.	१४	३३	कौ.	२५	४१	१२	२८	६	१८	मे.२।९	६	०	६	४७	४	१०	३१	४८
३१	५५	६	चं.	५८	१०	अ.	५	५९	वृ.	१३	३९	ग.	२७	३६	१३	२९	७	१९	मेष	६	१	६	४६	४	११	२९	४४
३१	५०	७	मं.	५७	५३	भ.	८	३३	ध्रु.	११	४३	वि.	२८	१	१४	३०	८	२०	वृ.२३।५०	६	२	६	४५	४	१२	२७	४३
३१	४६	८	बु.	५६	०	कृ.	९	४२	व्या.	८	३८	बा.	२६	५६	१५	३१	९	२१	वृष	६	२	६	४४	४	१३	२५	४५
३१	४२	९	गु.	५२	२४	रो.	९	१४	ह.	५८	२८	तै.	२४	१२	१६	सि.१	१०	२२	मि.३८।१०	६	३	६	४३	४	१४	२३	४७
३१	३८	१०	शु.	४७	१२	मृ.	७	६	सि.	५१	२७	व.	१९	४८	१७	२	११	२३	मिथुन	६	३	६	४२	४	१५	२१	५१
३१	३४	११	श.	४०	३२	आ.	५८	१२	व्य.	४३	११	ब.	१३	५२	१८	३	१२	२४	क.४४।३०	६	४	६	४१	४	१६	१९	५९
३१	३०	१२	र.	३२	३४	पु.	५१	५८	व.	३३	५२	कौ.	६	३३	१९	४	१३	२५	कर्क	६	४	६	४०	४	१७	१८	७
३१	२५	१३	च.	२३	४३	आश्ले.	४४	५४	प.	२३	४९	व.	२३	४३	२०	५	१४	२६	सि.४४।५४	६	५	६	३८	४	१८	१६	१७
३१	२०	१४	मं.	१४	२३	म.	३७	३१	शि.	१३	२०	श.	१४	२३	२१	६	१५	२७	सिंह	६	६	६	३७	४	१९	१४	३०
३१	१६	३०	बु.	४	५८	पू.फा.	३०	१५	सि.	५२	३५	ना.	४	५८	२२	७	१६	२८	क.४३।३५	६	६	६	३६	४	२०	१२	४५

भ. १९।१५ उ., ५१।१४ या.,
शनि स्वाती १ में ५०।४७, श्री गणेश ४ व्र., बहुला ४,
पंचक स. २।९
भ. ५८।१० उ., मंगल आश्ले. में ४२।३५, श्री चन्द्र षष्ठी व्र.,
भ. २८।१ या., सूर्य पू. फा. में ५४।५,
शुक्र पूर्व में उदित ४८।०, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्र. (जयन्तीयोग) (चन्द्रोदय रात्रि*
सितंबर प्र., गुग्गा नवमी, गोकुलाष्टमी,
भ. १९।४८ उ., ४७।१२ या., *११ घं. ३१ मि.) दूर्वाष्टमी (देखें पृ. ६०)
बुध वक्री २८।४७, शुक्र बाल्य स. ४८।०, अगस्त्य उदित, अजा ११ व्र. स.,
प्रदोष व्र.,
भ. २३।४३ उ., ४९।३ या.,
कुशोत्पाटिनी ३० पिठोरी ३०,

शुक्र उदित (३१ अग.)

भाद्र. कृ. ८ बुध, इष्ट ५८। ४०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	३	५	७	४	६	१	७
१४	१८	७	९	३	७	२७	२७
२२	६	३	७	४५	१	२२	२२
२८	४६	०	३७	४३	१८	११	११
५८ ३	३८ १२	४ २८	५ ५२	३१ २६	५ १९	३ ११	३ ११
	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पू. फा. १	आश्ले. १	उ. फा. ४	अनु. २	मघा २	स्वा. १	मृ. २	ज्ये. ४

कृ. सूर्योदये

६ बु. | ४ मं. | ७ श. | शु. ५ सू. | ३ | के. ८ गु. | चं. २ रा. | ९ | ११ | १० | १२ | १

लोक भविष्य–मघा नक्षत्र में शुक्र उदित हुआ है, दक्षिण में प्राकृतिक प्रकोप से फसल को नुकसान पहुंचे। बंगला देश में उत्पात, पंजाब आसाम बिहार आदि में राजनैतिक अस्थिरता का भय है परिणामस्वरूप अजीब घटनाक्रम जारी होगा। शनि मंगल का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध यावन देश में शासक के विरुद्ध बगावत होगी। यान दुर्घटना किंवा कहीं अतिवर्षण एवं कुछ प्रान्तों में वर्षा के अभाव के कारण कृषकवर्ग में असन्तोष रहेगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–२९ अगस्त के लगभग चान्दी में झटके साथ खासी मन्दी आती है। ३१ अग. के बाद बाजार का रुख देखकर काम करें। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी एवं रुई में तेजी आकर मन्दी आएगी। गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में मन्दा आने का योग है। घी तेल में साधारणतया तेजी चलेगी। ३ सित. को बुध के वक्री होने पर अच्छी मन्दी या तेजी की संभावना है।

क. सूर्योदये

६ बु. | ४ मं. | ७ श. | शु. ५ सू. चं. | ३ | के. ८ गु. | २ रा. | ९ | ११ | १० | १२ | १

भाद्र. कृ. ३० बुध, इष्ट ५८ । ३०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के
४	३	५	७	४	६	१	७
२१	२२	५	९	०	७	२६	२६
९	३३	२६	५१	४५	३९	५९	५९
३१	३२	५	५०	३०	४८	५६	५६
५८ १८	३७ ५९	३८ ५१	६ ५४	१७ १०	५ ४४	३ ११	३ ११
	मा.	व.	मा.	व.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू. फा. ३	आश्ले. २	उ. फा. ३	अनु. २	मघा १	स्वा. १	मृग. २	ज्ये. ४

आकाश लक्षण–अग. २७, २९, ३१, सित. ३ सित. को हि. प्र., पंजाब, हरियाणा आदि में बादलचाल एवं वायु का ज़ोर रहे।
शकुन विचार–भाद्र कृ. तृतीया को यदि बादलचाल हो तो अनाजों के स्टाक से आगे छठे मास में अच्छा लाभ मिलता है।

श्री वि. सं. २०४०, शाक १९०५, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११ (८ से २२ सितं. तक, सन् १९८३ ई.), द. अ., उ. गो., शरद् ऋतु,

वि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. (भाद्र)	अं. (सित.)	श. (भाद्र)	मु. (जिल्हिज्ज)	चन्द्र संचार घ.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
अवम		१	बु.	५६	३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३१	११	२	गु.	४७	४९	उ.फा.	२३	३७	शु.	४३	३	बा.	२१	५६	२३	८	१७	२९	कन्या	६	७	६	३५	४	२१	११	१
३१	६	३	शु.	४१	०	ह.	१८	८	शु.	३४	३४	तै.	१४	२५	२४	९	१८	ज.	तु.४६।१०	६	७	६	३३	४	२२	९	१९
३१	१	४	श.	३५	५१	चि.	१४	११	ब्र.	२७	२७	व.	८	२५	२५	१०	१९	२	तुला	६	८	६	३२	४	२३	७	३९
३०	५६	५	र.	३२	४४	स्वा.	१२	६	ऐ.	२१	५५	व.	४	१८	२६	११	२०	३	वृ.५७।१०	६	८	६	३१	४	२४	६	०
३०	५२	६	च.	३१	४९	वि.	१२	११	वै.	१८	९	कौ.	२	१६	२७	१२	२१	४	वृश्चिक	६	९	६	३०	४	२५	४	२४
३०	४८	७	मं.	३३	१	अनु.	१४	२२	वि.	१६	४	ग.	२	२५	२८	१३	२२	५	वृश्चिक	६	१०	६	२८	४	२६	२	४९
३०	४४	८	बु.	३६	९	ज्ये.	१८	३०	प्री.	१५	३२	वि.	४	३५	२९	१४	२३	६	ध.१८।३०	६	१०	६	२७	४	२७	१	१५
३०	४०	९	गु.	४०	५३	मू.	२४	१६	आ.	१६	२०	बा.	८	३१	३०	१५	२४	७	धनु	६	११	६	२६	४	२७	५९	४४
३०	३५	१०	शु.	४६	३६	पू.षा.	३१	९	सौ.	१८	४	तै.	१३	४५	३१	१६	२५	८	म.४८।१	६	११	६	२५	४	२८	५८	१३
३०	३०	११	श.	५२	५१	उ.षा.	३८	३७	शो.	२०	१९	व.	१९	४४	आ.	१७	२६	९	मकर	६	१२	६	२३	४	२९	५६	४४
३०	२५	१२	र.	५९	३	श्र.	४६	१३	अ.	२२	४७	व.	२५	५९	२	१८	२७	१०	मकर	६	१२	६	२३	५	०	५५	१७
३०	२०	१३	च.	६०	०	श्र.	५३	२८	सु.	२५	४	कौ.	३२	२	३	१९	२८	११	कुं.१९।५०	६	१३	६	२०	५	१	५३	५१
३०	१५	१३	मं.	४	५६	ध.	६०	०	धृ.	२६	५९	तै.	४	५६	४	२०	२९	१२	कुम्भ	६	१४	६	१९	५	२	५२	२७
३०	१०	१४	बु.	१०	२२	श.	०	१०	शू.	२८	२४	व.	१०	१२	५	२१	३०	१३	मी.४९।३८	६	१४	६	१७	५	३	५१	५
३०	[illegible]	१५	गु.	१६	४०	पू.भा.	६	८	गं.	२९	११	व.	१४	४०	६	२२	३१	१४	मीन	६	१५	६	१६	५	४	४९	४४

ग्रह दर्शन—पक्षारम्भ में ही बुध पश्चिम में अस्त हो जाएगा। मंगल-शुक्र को प्रातः पूर्व में देखें। सायं गुरु एवं शनि पश्चिम कपाल में दीखेंगे।

प्रतिपदा तिथिक्षय, • मेला बाबा गुसांईआषां (कुराली)
चन्द्र दर्शन मु. ३०, **बुध पश्चिम में अस्त ४५।५८,** नन्दा व्रत समाप्त, •
जिल्हिज्ज मु. प्रा., गुरु अनु. ३ में ९।२०, साम उपाकर्म श्री वराह □
भ. ८।२५ उ., ३५।५१ या., हरितालिका ४ व्र., **कलंक चौथ** (चन्द्रास्त रात्रि में #
व. **शुक्र आश्ले. कर्क में ४।५५, ऋषि पंचमी** व्र.,
सूर्यषष्ठी व्र., □जयन्ती, **नेपच्यून मार्गी,** #८ घं. ५९ मि),
भ. ३३।१ उ., सूर्य उ. फा. में ३८।१०,
भ. ४।३५ या., व. **बुध सिंह में** १७।१५, राहु मृग. १ में केतु ज्येष्ठा ३ में=
शुक्र मार्गी २४।२२, श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव)
=१४।२२, श्री राधाष्टमी, **श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्र.**
भ. १९।४४ उ., ५२।५१ या., सं. **सूर्य कन्या में** ३।२० मु. ४५, पुण्यकाल□□
श्री वामन जयन्ती (वामन द्वादशी), श्रवण १२ व्र., □□१९।२०या., व. बुध पू. फा.##
पंचक प्रा. १९।५०, **मंगल मघा सिंह में ४६।४० सोम प्रदोष व्र.,**
शुक्र मघा सिंह में २१।० ##में ३५।५, पद्मा ११ व्र. स.
भ. १०।१२ उ., ४२।२६ या., सत्य व्र. **अनन्त चतुर्दशी** व्र. **प्रोष्ठपदी १५,** मेला○○
मेला गोइन्दवाल, (प.) ○○छपार (प.)

कु. सूर्योदये

४ मं. | शु. | ५ बु. सू. | ३ | ६ | के. गु. | चं. ८ | २ रा. | ७ श. | ९ | ११ | १२ | १ | १०

लोक भविष्य—इस पक्ष में मंगल-शुक्र दोनों सिंह राशि में प्रविष्ट होते हैं। १८ सि. तक शनि मंगल परस्पर दृष्ट है। जनता में लूट पाट एवं अपहरण आदि अनैतिक कार्य अधिक होंगे। कहीं युद्ध, परस्पर संघर्ष हो। राजनीति में आवश्यक विशेष संशोधन होंगे। आजीविका साधनों में कमी होगी, साधारण जनता कष्ट में रहे। काश्मीर, सिक्किम एवं अन्य सीमा प्रान्तों पर सेना को सतर्क रहना होगा। जब शुक्र कर्क में वक्री होकर कर्क में ही मार्गी होता है तो सुभिक्ष एवं सुवृष्टि होती है—यह योग यहां घटित होता है। **फ़सल और बाजार का रुख**—रुई में ८ सित. के लगभग शीघ्र मन्दी आएगी तथा अनाजों में तेजी आएगी। १० सित. से रुई, अलसी, मूंगफली, तेल, घी, गुड़, खाण्ड शक्कर में तेजी आएगी। १४ सितम्बर के बाद वायदा व्यापार की लाईन बदलेगी। हमारे विचार से व्यापारिक वस्तुओं में मन्दे का संचार होगा। १९ सित. से चान्दी, सोना, लोहा, तांबा आदि धातु, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, अलसी, रुई, लाल मिर्च तेज होंगे।

कु. सूर्योदये

७ श. | गु. के. ८ | मं. बु. ५ शु. | ६ सू. | ४ | ९ | ३ | १२ चं. | २ रा. | १० | ११ | १

भाद्र शु. १५ गु., इष्ट ५८।८							
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	४	४	७	४	६	१	७
५	१	२३	११	०	९	२६	२६
४६	५९	२	४९	३४	११	१२	१२
३५	५५	५४	१९	२९	९	१४	१४
५८	३७	१३	८	१६	६	३	३
४२	३१	३१	५०	५८	२७	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. ३	मघा १	पू.फा. ३	[illegible]	मघा १	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भाद्र शु. [illegible] इष्ट [illegible]							
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण—सितं. ८, ९, १४, १५, १०, १९, २० को हवा का जोर रहे एवं बादल छाए रहें।
पक्ष विचार—भाद्र शु. १५ को यदि आकाश निर्मल हो तो गेहूं की [illegible] स्टाक करें, आगे निश्चय ही लाभ मिलेगा। अगर इस दिन बादल हों तो स्टाक शीघ्र ही निकाल दें, आगे निश्चय ही मन्दा आएगा।

श्री वि. स. २०४०, शाक १९०५, आश्विन कृष्ण पक्ष १२															तारीखें				चन्द्र	भा. स्टैं. टा.				उदय-कालिक			
दि. मा.															प्र.	अं.	श.	मु.	संचार	चण्डीगढ				स्पष्ट सूर्य			
																				सू. उ.		सू. अ.					
घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	आश्वि.	सितं.	आश्वि.	विलि.	घ. प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.
३०	०	१	शु.	१८	१६	उ.भा.	११	१७	वृ.	२९	१८	कौ	१८	१६	७	२३	१	१५	मीन	६	१५	६	१४	५	५	४८	२५
२९	५६	२	श.	२१	३	रे.	१५	३८	ध्रु.	२८	४७	ग.	२१	३	८	२४	२	१६	मे.१५।३८	६	१६	६	१३	५	६	४७	९
२९	५१	३	र.	२२	५४	अ.	१९	६	व्या.	२७	३१	वि.	२२	५४	९	२५	३	१७	मेष	६	१६	६	१२	५	७	४५	५४
२९	४६	४	चं.	२३	४८	भ.	२१	३७	ह.	२५	११	बा	२३	४८	१०	२६	४	१८	वृ.३७।०	६	१७	६	१०	५	८	४४	४२
२९	४२	५	मं.	२३	४२	कृ.	२३	११	वै.	२२	४४	तै.	२३	४२	११	२७	५	१९	वृष	६	१८	६	९	५	९	४३	३२
२९	३८	६	बु.	२२	२६	रो.	२३	३६	सि.	१९	२	व.	२२	२६	१२	२८	६	२०	मि.५३।१२	६	१८	६	८	५	१०	४२	२३
२९	३३	७	गु.	१९	५६	मृ.	२२	४८	व्य.	१४	२०	ब.	१९	५६	१३	२९	७	२१	मिथुन	६	१९	६	७	५	११	४१	१७
२९	२९	८	शु.	१६	१२	आ.	२०	४७	व.	८	३९	कौ.	१६	१२	१४	३०	८	२२	मिथुन	६	१९	६	६	५	१२	४०	१४
२९	२४	९	श.	११	१०	पुन.	१७	२९	प.	५४ [१]	१० [५२]	ग.	११	१०	१५	अ.१	९	२३	क.३।१९	६	२०	६	४	५	१३	३९	१३
२९	१९	१०	र.	४	५८	पु.	१३	२	सि.	४५	४३	वि.	४	५८	१६	२	१०	२४	कर्क	६	२१	६	३	५	१४	३८	१५
अब	म	११	र.	५७	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२९	१५	१२	चं	५०	२	आश्ले.	७	४१	सा.	३६	३४	कौ.	२३	५५	१७	३	११	२५	सि.७।४१	६	२१	६	२	५	१५	३७	१८
२९	११	१३	मं.	४१	५०	म.	५५ [१]	२२ [४१]	शु.	२७	१	ग.	१५	५६	१८	४	१२	२६	सिंह	६	२२	६	१	५	१६	३६	२४
२९	७	१४	बु.	३३	४०	उ.फा.	४९	१८	शु.	१७	२४	वि.	७	४५	१९	५	१३	२७	क.८।५१	६	२२	६	०	५	१७	३५	२३
२९	२	३०	गु.	२६	०	ह.	४३	४७	ब्र.	५९ [८]	२० [४]	ना.	२६	०	२०	६	१४	२८	कन्या	६	२३	५	५९	५	१८	३४	४३

(२३ सितं. से ६ अक्तूबर तक, सन् १९८३ ई.), द. अ., गो., शरद् ऋतु,

ग्रह-दर्शन:—पक्षारम्भ में ही बुध पूर्व में दिखाई देना। प्रात: मंगल शुक्र को पूर्व में परस्पर आसन्न, सायं गुरु-शनि को पश्चिम कपाल में देखें।

शाक आश्विन प्रा., सूर्य सा. तुला में ३४।४७, दक्षिण गोल प्रा., विषुवदिन, बुध पूर्व में*
भ. ५१।५८ उ., पंचक स. १५।३८, द्वितीया का श्राद्ध, *उदित ४६।३४,**
भ. २२।५४ या., बुध मार्गी ४१।१५, श्री गणेश ४ व्र. तृतीया का श्राद्ध
चतुर्थी का श्राद्ध, **महालय (श्राद्ध) प्रा., प्रतिपदा का श्राद्ध,
सूर्य हस्त में १६।४८, पंचमी का श्राद्ध,
भ. २२।२६ उ., ५१।११ या., षष्ठी का श्राद्ध,
सप्तमी और अष्टमी का श्राद्ध, श्रीमहालक्ष्मी व्र. समाप्त,
शनि स्वाती २ में २३।२५, नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,
भ. ३८।४ उ., अगस्त्य प्रा., बुध उ. फा. में ५०।३२ दशमी का श्राद्ध.
भ. ४।५८ या., गुरु अनु. ४ में ४०।४०, इन्दिरा ११ व्र. स्मा. एकादशी का श्राद्ध,□
एकादशी तिथिक्षय, □जन्म दिन म. गांधी
इन्दिरा ११ व्र. वै., द्वादशी का श्राद्ध, मघा श्राद्ध,
भ. ४१।५० उ., बुध कन्या में ३७।१८ भौम प्रदोष व्र., सन्यासियों का श्राद्ध#
भ. ७।४५ या., शस्त्र-विष आदि से मरे हुओं का श्राद्ध. #त्रयोदशी का श्राद्ध
सर्वपितृ श्राद्ध, चतुर्दशी श्राद्ध, अमावस श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, गजच्छाया पर्व

अश्विन कृ. ८ शुक्र., इष्ट ५७। ५८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	४	४	७	४	६	१	७
१३	६	२५	१३	३	१०	२५	२५
३७	५९	४७	३	४१	३	४६	४६
१०	४	७	१४	२	५२	४८	४८
५९	३७	६०	९	३०	६	३	३
१	१५	१८	४५	५१	४५	११	११
	मा	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
हस्त. ३	मघा. ३	पू.फा. ४	अनु. ३	मघा. ३	स्वा. २	मृ. १	कृ. ३

क. सूर्योदये

लोक भविष्य—इस मास में पांच शुक्रवार हैं, विलासिता बढ़े, जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में महगाई होने से प्रजा को कष्ट, कहीं अग्निकाण्ड से हानि हो। २५ सित. को गुरु एवं यूरेनस की युति होगी, मध्य एशिया, आयरलैण्ड, ईरान आदि में अशान्ति व्याप्त होगी। कहीं भूस्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी। फ्रांस, इटली, रोम में भी राजनैतिक घटनाएं घटित होंगी।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में रुई में मन्दी के बाद तेजी आएगी। कपास की फसल अच्छी होगी, अनाजों में तेजी रहेगी। २५ सित. को बाजार का रुख देखें अगर मन्दा बने, तो मन्दे में रहें। तेजी आने पर तेजी का काम करें। हमारे विचार से अनाज कपास रुई तिलहन में तेजी रहेगी। २ अक्तूबर से रुई सोना चान्दी कपास चावल में मन्दे का वातावरण रहेगा।

क. सूर्योदये

गु. ७श. च. ६ बु. सू. मं. शु. ५ ४
के. ८ ९ ३
१० १२ २रा.
११ १

आश्वि. कृ. ३० गुरु., इष्ट ५७।४८,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	४	५	७	४	६	१	७
१९	१०	३	१४	७	१०	२५	२५
३१	४२	१८	३	७	४४	२७	२७
४४	८	४१	१३	१४	५०	४३	४३
५९	३७	९१	१०	३८	६	३	३
१४	४	२६	२१	५८	५६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
हस्त. ३	मघा. ४	उ.फा. २	अनु. ४	मघा. ३	स्वा. २	मृ. १	कृ. ३

आकाश लक्षण—सित. २४, २५, ३० एवं ४ अक्तूबर को वायु के जोर के साथ बादल चाल रहेगी।

शकुन विचार—आश्विन कृष्ण एकादशी द्वादशी को यदि मेघ गरजें एवं बिजली चमके तो आगे अनाजों में तेजी आएगी।

श्री वि. सं. २०४०, शाक १९०५, कार्तिक कृष्ण पक्ष १४ (२२ अक्तूबर से ४ नवंबर तक, सन् १९८३ ई.), द. अ., द. गो., शरद्-हेमन्त ऋतु,

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. कार्ति.	अं. अक्टू.	श. आश्विन	म. मु.	चन्द्र संचार घ. प.	मा. स्टैं. टा. चण्डीगढ़ सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह-दर्शन :–बुध शनि अस्त है, प्रातः मं. शु. पूर्व में परस्पर आसन्न दीखेंगे। सायं गुरु को पश्चिम कपाल में देखें।
२७	५०	१	श.	५२	५१	अ.	३४	२३	व.	४१	३४	बा.	२२	२८	६	२२	३०	१५	मेष	६	३३	५	४१	६	४	२५	५६	बुध तुला में ४९।४५,
२७	४५	२	र.	५२	३६	भ.	३५	५९	सि	३८	४३	तै.	२२	४४	७	२३	आ१	१६	वृ. ५१।९	६	३४	५	४०	६	५	२५	३८	शक कार्तिक प्रा., सूर्य सा. वृश्चिक में ५७।७, हेमन्त प्रा.,
२७	४०	३	चं	५१	२४	कृ.	३६	३८	व्य.	३५	६	व.	२२	०	८	२४	२	१७	वृष	६	३५	५	३८	६	६	२५	२३	भ. २२।० उ., ५१।२४ या., सूर्य स्वाती में १४।४०
२७	३५	४	मं.	४९	२४	रो.	३६	२७	व.	३०	४९	ब.	२०	२४	९	२५	३	१८	वृष	६	३६	५	३७	६	७	२५	९	**पूरेनस अनुराधा ४ में, श्री गणेश ४ व्र., करक चतुर्थी (करवा चौथ) व्र.,** (चन्द्रोदय•
२७	३०	५	बु.	४६	३६	मृ.	३५	३१	प.	२५	५४	कौ.	१८	०	१०	२६	४	१९	मि. ५१।५९	६	३६	५	३६	६	८	२४	५८	बुध स्वाती में ४६।४५, नेपच्यून मूल २ में •रात्रि ८ घ. १२ मि.)
२७	२६	६	गु.	४३	०	आ.	३३	४६	शि.	२०	२१	ग.	१४	४८	११	२७	५	२०	मिथुन	६	३७	५	३५	६	९	२४	४९	भ. ४३।० उ.,
२७	२२	७	शु.	३८	४०	पुन.	३१	१७	सि.	१४	१०	वि.	१०	५०	१२	२८	६	२१	क. १६।५४	६	३८	५	३४	६	१०	२४	४२	भ. १०।५० या., शनि स्वाती ३ में ४५।३२
२७	१८	८	श.	३३	४०	पु.	२८	८	सा.	७	२७	बा.	६	१०	१३	२९	७	२२	कर्क	६	३८	५	३३	६	११	२४	३८	**अहोई अष्टमी (पंजाब)**
२७	१४	९	र.	२८	१	आश्ले.	२४	२०	शु.	५२	२२	तै.	०	५०	१४	३०	८	२३	सिं २४।२०	६	३९	५	३२	६	१२	२४	३६	भ. ५४।५७ उ., शुक्र उ. फा. में ४१।५८,
२७	१०	१०	चं.	२१	५४	म.	२०	३	ब.	४४	२६	वि.	२१	५४	१५	३१	९	२४	सिंह	६	४०	५	३२	६	१३	२४	३६	भ. २१।५४ या.,
२७	६	११	मं.	१५	३२	पू.फा.	१५	३१	ऐं.	३६	१५	बा.	१५	३२	१६	न१	१०	२५	क. २९।२०	६	४१	५	३१	६	१४	२४	३८	**नवम्बर प्रा.,** रमा ११ व्र. म. गोवत्स द्वादशी,
२७	२	१२	बु.	९	८	उ.फा.	१०	५७	वै.	२८	७	तै.	९	८	१७	२	११	२६	कन्या	६	४१	५	३०	६	१५	२४	४४	मंगल उ. फा. में ६।३०, प्रदोष व्र., **धनत्रयोदशी,** यम को दीपदान
२६	५८	१३	गु.	२	५९	ह.	६	३८	वि.	२०	१८	व.	२	५९	१८	३	१२	२७	तु. ३४।४८	६	४२	५	२९	६	१६	२४	५०	भ. २।५९ उ., ३०।१४ या., बुध विशाखा में ५४।३०, शुक्र कन्या में ६।३२,#
अव	म	१४	गु.	५७	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय. #नरक १४, रूप १४, श्री हनुमान जयन्ती
२६	५४	३०	शु.	५२	५०	चि.	२	५८	प्री.	१३	३	च	२५	९	१९	४	१३	२८	तुला	६	४३	५	२८	६	१७	२४	५९	दीपावली, श्री महालक्ष्मी पूजन, श्री महावीर निर्वाण दिवस (जैन)

कर्ति. कृ. ८ शनि, इष्ट ५७।१०,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	४	६	७	४	६	१	७
१२	२४	११	१८	२५	१३	२४	२४
२१	४५	५६	२२	५६	२८	१४	१४
४३	३१	२२	४७	५९	३८	३५	३५
५९	३६	९८	१२	५७	७	३	३
५८	१३	२८	१०	३७	१४	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	म.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
स्वाती. २	पू. फा. ४	स्वाती १	ज्येष्ठा १	पू. फा. ४	स्वा. ३	मृग. १	ज्येष्ठा ३

कृ. सूर्योदये

लोक भविष्य–इस मास में पांच शनिवार एवं पांच रविवार हैं, –"शनिवारा यदा पंच, आयते रविपंचकम् । महर्घं जायते धान्यं रोगशोकाकुला मही ।।" उपभोग्य पदार्थों में तेजी आने से जनता में रोष व्याप्त हो। रोगभय व्याप्त होगा। एवं किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होगा। सूर्य-बुध-शनि तीनों स्वाती नक्षत्र में चल रहे हैं, बुध की गति प्राकृत है, भारत के पूर्वी प्रदेशों के लिए समय अच्छा है, देश में औद्योगिक प्रगति होगी।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–ग्रहचाल के अनुसार पक्षारम्भ में रुई गुड़ खाण्ड तेज होंगे। रुई में ३ नवम्बर के लगभग झटके के साथ मन्दी आ जाएगी तथा चान्दी गुड़ खाण्ड आदि तेज होंगे, चावलों में विशेष तेजी का झटका आ सकता है। –"**कन्याराशिगते शुक्रे सर्वं सस्यं विनश्यति। समर्घाणि तत्र धान्यानि शालिश्चैव विशेषतः।।**" जूट का भाव बहुत ऊँचा उठेगा।

कृ. सूर्योदये

के. गु. ८ | चं. | ६ शु. | ९ | बु. ७ सू. श. | ५ मं. | १० | ४ | ११ | १ | ३ | १२ | २ रा.

कर्ति. कृ. ३० शुक्र, इष्ट ५६।५८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	क.
६	४	६	७	५	६	१	७
१८	२८	२१	१९	१	१४	२३	२३
२२	२२	४०	३६	५०	१२	५५	५५
५	१५	१६	४६	१४	१३	३१	३१
६०	३५	९५	१२	५९	७	३	३
१०	५९	४४	३२	३०	१३	११	११
मा	मा	मा.	मा	मा	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
स्वाती. ४	उ. फा. १	विशा. १	ज्येष्ठा १	उ. फा. २	स्वाती ३	मृग. १	ज्येष्ठा ३

आकाश लक्षण–अक्तूबर २२, २५, २६, २८ एवं नव. ३ को कहीं वायु के वेग के साथ बादल चाल व बूंदा बांदी हो।

शकुन विचार–आश्विन कृ. ११, १२ को यदि मेघ गरजें किंवा बिजली चमके तो आगे अनाजों में तेजी आएगी।

श्री वि. सं.२०४०, शाक १९०५, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १६ (२१ नवं. से ४ दिसं. तक, सन् १९८३ ई.), द. अ.–गो., हेमन्त ऋतु,

दि मा. घ.	दि मा. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. मार्ग.	अं. नवं.	श. कार्ति.	म.	चन्द्र संचार घ. प.	भा. स्टैं. टा. सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५	५४	१	चं.	२५	१	रो.	५२	५६	शि.	४४	२८	कौ.	२५	१	६	२१	३०	१५	वृष	६	५७	५	१९	७	४	३१	४१	बुध ज्येष्ठा में १।३८,
२५	५२	२	मं.	२१	२३	मृ.	५०	३४	सि.	३८	१८	ग.	२१	२३	७	२२	मा.१	१६	मि. २१।४५	६	५८	५	१९	७	५	३२	१७	भ. ४९।११ उ., शाक मार्गशीर्ष प्रा., सूर्य मा. धनु में ४९।३५ बुध पश्चिम में□
२५	४९	३	बु.	१७	०	आ.	४७	३७	सा.	३१	३७	वि.	१७	०	८	२३	२	१७	मिथुन	६	५९	५	१८	७	६	३२	५५	भ. १७।० या., श्री गणेश ४ व्र., □उदित ४८।२०, गुरु ज्येष्ठा ३ में १३।३०
२५	४६	४	गु.	१२	७	पुन.	४४	१५	शु.	२४	३४	बा.	१२	७	९	२४	३	१८	क. ३०।६	७	०	५	१८	७	७	३३	३४	मंगल हस्त में ३४।२५,
२५	४३	५	शु.	६	५२	पु.	४०	३६	शू.	१७	१४	तै.	६	५२	१०	२५	४	१९	कर्क	७	१	५	१८	७	८	३४	१५	शुक्र चित्रा में ७।२, शनि स्वाती ४ में ३४।२
२५	४०	६	श.	१	२५	आश्ले.	३६	५२	वृ.	९	४७	व.	१	२५	११	२६	५	२०	सि. ३६।५२	७	१	५	१८	७	९	३४	५७	भ. १।२५ उ., २८।४३ या.,
अवम		७	श.	५६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय,
२५	३८	८	र.	५०	३८	म.	३३	१३	ऐं.	५४	५५	बा.	२३	१९	१२	२७	६	२१	सिंह	७	२	५	१७	७	१०	३५	४३	श्री महाकाल भैरवाष्टमी (कालाष्टमी)
२५	३५	९	चं.	४५	२७	पू.फा.	२९	४१	वि.	४७	४६	तै.	१८	२	१३	२८	७	२२	क. ४३।५३	७	३	५	१७	७	११	३६	२८	
२५	३३	१०	मं.	४०	३८	उ.फा.	२६	२९	प्री.	४०	५१	व.	१३	२	१४	२९	८	२३	कन्या	७	४	५	१७	७	१२	३७	१६	भ. १३।२ उ., ४०।३८ या., बुध मूल धनु में ५७।२८, गुरु वार्धक्य प्रा. ६।०,
२५	३०	११	बु.	३६	१७	ह.	२३	४२	आ.	३४	१८	ब.	८	२८	१५	३०	९	२४	तु. ५२।३६	७	५	५	१७	७	१३	३८	६	उत्पन्ना ११ व्र. स.,
२५	२८	१२	गु.	३२	३५	चि.	२१	३१	सौ.	२८	१५	कौ.	४	२६	१६	दि.१	१०	२५	तुला	७	६	५	१७	७	१४	३८	५७	दिसम्बर प्रा., शुक्र तुला में २।१२,
२५	२६	१३	शु.	२९	४३	स्वा.	२०	७	शो.	२२	५१	ग.	१	९	१७	२	११	२६	तुला	७	६	५	१७	७	१५	३९	४९	भ. २९।४३ उ., ५८।४६ या., सूर्य ज्येष्ठा में ५९।२०, गुरु अस्त ६।०, प्रदोष व्र.,
२५	२४	१४	श.	२७	४८	वि.	१९	३७	अ.	१८	११	श.	२७	४८	१८	३	१२	२७	वृ. ४।४५	७	७	५	१७	७	१६	४०	४३	मेला पुरमण्डल, देविका स्नान (जम्मू)
२५	२२	३०	र.	२७	२	अनु.	२०	१२	सु.	१४	२२	ना.	२७	२	१९	४	१३	२८	वृश्चिक	७	८	५	१७	७	१७	४१	३८	

ग्रह-दर्शन :–२२ नव. को बुध पश्चिम में उदित होगा। २ दिसं. को गुरु अस्त हो जाएगा। प्रातः मंगल, शनि एवं शुक्र को पूर्व कपाल में देखा जा सकेगा।

गुरु अस्त २ दिसं.

मार्ग. कृ.८ रवि., इष्ट ५६।१०,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	५	७	७	५	६	१	७
११	११	२७	२४	२६	१६	२२	२२
३२	५७	१	३६	२९	५४	४२	४२
३३	३१	३२	१२	२७	२९	२३	२३
६०	९४	८८	१३	६७	६	३	३
४५	४९	२९	२५	३७	४७	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. ३	हस्त १	ज्ये. ४	ज्ये. ३	चित्रा १	स्वाती ४	रोहि. ४	ज्ये. २

कृ. सूर्योदये

लोक भविष्य–बुध ज्येष्ठ नक्षत्र में उदित होगा, २१ नव. को गुरु केतु की युति भी होगी, पशुओं में रोगभय, दक्षिणी भारत में सुभिक्ष रहे, काश्मीर एवं राजस्थान में दुष्काल एवं देश में राजनैतिक कांटा छाटी होगी। प्रजा में नेत्ररोग भय है, इस पक्ष में वृश्चिक राशि में चतुर्ग्रही योग बनता है, प्राकृतिक-प्रकोप से कहीं फसल को हानि पहुंचे, कहीं युद्ध की विभीषिका उत्पन्न हो–एकराशी यदा यान्ति चत्वारः पञ्च खेचराः। प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा।।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्षारम्भ में रुई चान्दी चावल तेज होंगे। २५ नवं. को गुड़ खाण्ड तेज हों, २९-३० नवं. को अनाज सोना, चान्दी, रुई कपास सूत में मन्दा बनेगा, स्टाक करें। २ दिसम्बर को चान्दी, चावल, गेहूं, चना, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी, पक्षान्त में पुनः मन्दा रहे।

कृ. सूर्योदये

बु ९, के., श. शु. ७, १०, चं. ८ गु., ६ मं., सू., ११, ५, १२, २ रा., ४, १, ३

मार्ग. कृ.३० रवि, इष्ट ५५।५५,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	५	८	७	६	६	१	७
१८	१५	७	२६	४	१७	२२	२२
३८	५९	७	१०	२७	४१	२०	२०
२३	५६	१९	३८	७	१४	७	७
६०	३४	८२	१३	६९	६	३	३
५६	२४	५५	३४	०	३२	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्येष्ठा १	हस्त २	मूल ३	ज्येष्ठा ३	चित्रा ४	स्वाती ४	रोहि. ४	ज्येष्ठा २

आकाश लक्षण–२२-२३ नव. को वायु का जोर रहेगा। नवं. २५, २८ एवं दिसं. १-२ को द. प्र. मद्रास, उ. प्र. लंका में वर्षा होगी तथा हि. प्र. में भी वर्षा हो। पंजाब, हिमाचल, हरियाणा में बादल चाल रहे।
शकुन विचार–यदि मार्गशीर्ष कृष्ण चतुर्दशी एवं अमावस को सूर्य बादलों से आच्छन्न रहे तो अनाजों में शीघ्र ही तेजी आती है।

श्री वि. सं २०४०, शाक १९०५, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १६ — (२१ नवं. से ४ दिसं. तक, सन् १९८३ ई.), द. अ.–गो., हेमन्त ऋतु,

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	भा. स्टै. टा. चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	५४	१	चं.	२५	१	रो.	५२	५६	शि.	४४	२८	कौ.	२५	१	६	२१	३०	१५	वृष	६	५७	५	१९	७	४	३१	४१
२५	५२	२	मं.	२१	२३	मृ.	५०	३४	सि.	३८	१८	ग.	२१	२३	७	२२	मा.१	१६	मि. २१।४५	६	५८	५	१९	७	५	३२	१७
२५	४९	३	बु.	१७	०	आ.	४७	३७	सा.	३१	३७	वि.	१७	०	८	२३	२	१७	मिथुन	६	५९	५	१८	७	६	३२	५५
२५	४६	४	गु.	१२	७	पुन.	४४	१५	शु.	२४	३४	बा.	१२	७	९	२४	३	१८	क. ३०।९	७	०	५	१८	७	७	३३	३४
२५	४३	५	शु.	६	५२	पु.	४०	३६	शु.	१७	१४	तै.	६	५२	१०	२५	४	१९	कर्क	७	१	५	१८	७	८	३४	१५
२५	४०	६	श.	१	२५	आश्ले.	३६	५२	ब्र.	९	४७	व.	१	२५	११	२६	५	२०	सि. ३६।५२	७	१	५	१८	७	९	३४	५७
अकर		७	श.	५६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	३८	८	र.	५०	३८	म.	३३	१३	ऐं.	५४	५५	बा.	२३	१९	१२	२७	६	२१	सिंह	७	२	५	१७	७	१०	३५	४३
२५	३५	९	चं.	४५	२७	पू.फा.	२९	४१	वि.	४७	४६	तै.	१८	२	१३	२८	७	२२	क. ४३।५३	७	३	५	१७	७	११	३६	२८
२५	३३	१०	मं.	४०	३८	उ.फा.	२६	२९	प्री.	४०	५१	व.	१३	२	१४	२९	८	२३	कन्या	७	४	५	१७	७	१२	३७	१६
२५	३०	११	बु.	३६	१७	ह.	२३	४२	आ.	३४	१८	ब.	८	२८	१५	३०	९	२४	तु. ५२।३६	७	५	५	१७	७	१३	३८	६
२५	२८	१२	गु.	३२	३५	चि.	२१	३१	सौ.	२८	१५	कौ.	४	२६	१६	दि.१	१०	२५	तुला	७	६	५	१७	७	१४	३८	५७
२५	२६	१३	शु.	२९	४३	स्वा.	२०	७	शो.	२२	५१	ग.	१	९	१७	२	११	२६	तुला	७	६	५	१७	७	१५	३९	४९
२५	२४	१४	श.	२७	४८	वि.	१९	३७	अ.	१८	११	श.	२७	४८	१८	३	१२	२७	वृ. ४।४५	७	७	५	१७	७	१६	४०	४३
२५	२२	३०	र.	२७	२	अनु.	२०	१२	सु.	१४	२२	ना.	२७	२	१९	४	१३	२८	वृश्चिक	७	८	५	१७	७	१७	४१	३८

ग्रह-दर्शन :–२२ नवं. को बुध पश्चिम में उदित होगा। २ दिसं. को गुरु अस्त हो जाएगा। प्रातः मंगल, शनि एवं शुक्र को पूर्व कपाल में देखा जा सकेगा।

- बुध ज्येष्ठा में १।३८,
- भ. ४९।११ उ., शाक मार्गशीर्ष प्रा., सूर्य मा. धनु में ४९।३५ बुध पश्चिम में◻
- भ. १७।० या., श्री गणेश ४ व्र., ◻उदित ४८।२०, गुरु ज्येष्ठा ३ में १३।३०
- मंगल हस्त में ३४।२५,
- शुक्र चित्रा में ७।२, शनि स्वाती ४ में ३४।२
- भ. १।२५ उ., २८।४३ या.,
- सप्तमी तिथिक्षय,
- श्री महाकाल भैरवाष्टमी (कालाष्टमी)
- भ. १३।२ उ., ४०।३८ या., बुध मूल धनु में ५७।२८, गुरु वार्धक्य प्रा. ६।०,
- उत्पन्ना ११ व्र. स.,
- दिसम्बर प्रा., शुक्र तुला में २।१२,
- भ. २९।४३ उ., ५८।४६ या., सूर्य ज्येष्ठा में ५९।२०, गुरु अस्त ६।०, प्रदोष व्र.,
- मेला पुरमण्डल, देविका स्नान (जम्मू)

गुरु अस्त
२ दिसं.

मार्ग. कृ. ८ रवि., इष्ट ५६।१०,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	५	७	७	५	६	१	७
११	११	२७	२४	२६	१६	२२	२२
३२	५७	१	३६	२९	५४	४२	४२
३३	३१	३२	१२	२७	२९	२३	२३
६०	९४	८८	१३	६७	६	३	३
४५	४९	२९	२५	३७	४७	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. ३	हस्त १	ज्ये. ४	ज्ये. ३	चित्रा १	स्वाती ४	रोहि. ४	ज्ये. २

क. सूर्योदये

लोक भविष्य–बुध ज्येष्ठ नक्षत्र में उदित होगा, २१ नवं. को गुरु केतु की युति भी होगी, पशुओं में रोगभय, दक्षिणी भारत में सुभिक्ष रहे, काश्मीर एवं राजस्थान में दुष्काल एवं देश में राजनैतिक कांटा छांटी होगी। प्रजा में नेत्ररोग भय है, इस पक्ष में वृश्चिक राशि में चतुर्ग्रही योग बनता है, प्राकृतिक-प्रकोप से कहीं फसल को हानि पहुंचे, कहीं युद्ध की विभीषिका उत्पन्न हो–एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पञ्च खेचराः। प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा।।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्षारम्भ में रुई चान्दी चावल तेज होंगे। २५ नवं. को गुड़ खाण्ड तेज हों, २९-३० नवं. को अनाज सोना, चान्दी, रुई कपास सूत में मन्दा बनेगा, स्टाक करें। २ दिसम्बर को चान्दी, चावल, गेहूं, चना, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी, पश्चात् में पुनः मन्दा रहे।

क. सूर्योदये

बु ९
के.
श. शु. ७
१०
चं. ८ गु.
सू.
६ मं.
११
५
१२
२
रा.
४
१
३

मार्ग. कृ. ३० रवि, इष्ट ५५।५५,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	५	८	७	६	६	१	७
१८	१५	७	२६	४	१७	२२	२२
३८	५९	७	१०	२७	४१	२०	२०
२३	५६	१९	३८	७	१४	७	७
६०	३४	८२	१३	६९	६	३	३
५६	२४	५५	३४	०	३२	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्येष्ठा १	हस्त २	मूल ३	ज्येष्ठा ३	चित्रा ४	स्वाती ४	रोहि. ४	ज्येष्ठा २

आकाश लक्षण–२२-२३ नवं. को वायु का जोर रहेगा। नवं. २५, २८ एवं दिसं. १-२ को द. पू. मद्रास, उ. पू. लंका में वर्षा होगी तथा हि. प्र. में भी वर्षा हो। पंजाब, हिमाचल, हरियाणा में बादल चाल रहे।
शकुन विचार–यदि मार्गशीर्ष कृष्ण चतुर्दशी एवं अमावस को सूर्य बादलों से आच्छन्न रहे तो अनाजों में शीघ्र ही तेजी आती है।

श्री वि. सं. २०४०, शाक १९०५, पौष कृष्ण पक्ष १८ (२१ दिसं (१९८३ ई.) से ३ जन. १९८४ ई. तक) हेमन्त-शिशिर ऋतु

वि. मा. घं.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	धा. स्टैं. टा. चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
अवम		१	मं.	५४	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२४	५९	२	बु.	४७	४८	आ.	७	२२	ब.	३९	६	तै.	२१	८	६	२१	३०	१५	क. ४८।३४	७	२०	५	२०	८	४	५९	७
२५	०	३	गु.	४०	४३	पुन.	५६	५८	ऐ.	३०	१७	व.	१४	१५	७	२२	पौ.१	१६	कर्क	७	२०	५	२०	८	६	०	१३
२५	१	४	शु.	३३	३४	आश्ले.	५१	४२	वै.	२१	२१	ब.	७	८	८	२३	२	१७	सि. ५१।४२	७	२१	५	२१	८	७	१	१९
२५	२	५	श.	२६	४३	म.	४६	४८	वि.	१२	३६	कौ.	०	८	९	२४	३	१८	सिंह	७	२१	५	२२	८	८	२	२७
२५	३	६	र.	२०	२६	पू.फा.	४२	३०	प्री.	५६	२८	व.	२०	२६	१०	२५	४	१९	क. ५६।३६	७	२२	५	२३	८	९	३	३५
२५	४	७	चं.	१४	५४	उ.फा.	३९	५	सौ.	४९	२८	ब.	१४	५४	११	२६	५	२०	कन्या	७	२२	५	२३	८	१०	४	४३
२५	५	८	मं.	१०	२१	ह.	३६	३९	शो.	४३	१२	कौ.	१०	२१	१२	२७	६	२१	कन्या	७	२३	५	२४	८	११	५	५३
२५	६	९	बु.	६	४९	चि.	३५	१३	अ.	३७	४६	ग.	६	४९	१३	२८	७	२२	तु. ५।५६	७	२३	५	२५	८	१२	७	२
२५	७	१०	गु.	४	२२	स्वा.	३४	५४	सु.	३३	१४	वि.	४	२२	१४	२९	८	२३	तुला	७	२३	५	२६	८	१३	८	१२
२५	८	११	शु.	३	३	वि.	३५	३९	धृ.	२९	३४	बा.	३	३	१५	३०	९	२४	वृ. २०।२७	७	२४	५	२६	८	१४	९	२४
२५	९	१२	श.	२	४९	अनु.	३७	२६	शू.	२६	४३	तै.	२	४९	१६	३१	१०	२५	वृश्चिक	७	२४	५	२७	८	१५	१०	३४
२५	११	१३	र.	३	३८	ज्ये.	४०	१४	गं.	२४	४०	व.	३	३८	१७	ज.१	११	२६	ध. ४०।१४	७	२४	५	२८	८	१६	११	४६
२५	१२	१४	चं.	५	३१	मू.	४४	३	वृ.	२३	२७	श.	५	३१	१८	२	१२	२७	धनु	७	२५	५	२९	८	१७	१२	५८
२५	१३	३०	मं.	८	२६	पू.षा.	४८	४८	ध्रु.	२२	५९	ना.	८	२६	१९	३	१३	२८	धनु	७	२५	५	२९	८	१८	१४	१०

ग्रह-दर्शन :–२५ दिसं. को बुध पश्चिम में अस्त होगा। २८ दिस. को गुरु उदित होगा। मंगल, शनि एवं शुक्र को प्रातः पूर्वकपाल में देखा जा सकेगा।

प्रतिपदा तिथिक्षय,

बुध वक्री ५८।१०, गुरु मूल १ धनु में ४६।१५, यूरेनस ज्येष्ठा १ में, भ. १४।१५ उ., ४०।४३ या., शाक पौष प्रा., सूर्य सा. मकर में २१।४२,*

*उत्तरायण शिशिर ऋतु प्रा.

श्री गणेश ४ व्र.,

© संगीतमेला बाबा हरवल्लभ (जालन्धर) प्रा., जोड मेला म भ. २०।२६ उ., ४७।४० या., **बुध पश्चिम में अस्त ३।५,** **शुक्र वृश्चिक में ४०।५८,** जोडमेला श्री फतेहगढ़ साहेब प्रा.,

गुरु उदित २८ दिसं.

श्री बोधायनाचार्य जयन्ती (पिण्डोरीधाम, गुरदासपुर)

भ. ३५।३५ उ., **गुरु उदित ३६।०, शनि दिशा. १ में ७।५३,**©

भ. ४।२२ या., सूर्य पू. षा. में ११।३५, शुक्र अनु. में २७।५८,

मंगल तुला में २।८, सफला ११ व्र. #

गुरु बाल्य स. ३६।०, **शनि प्रदोष व्र., सन् १९८३ ई. समाप्त,** #

भ. ३।३८ उ., ३४।३५ या., **जनवरी सन् १९८४ ई. प्रा.,** व. बुध मूल धनु में □

□४७।५

भौमवती अमावस,

पौष कृ. ८ मंगल, इष्ट ५५।१८							
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	८	८	७	६	१	७
१२	२८	१९	१	१	१९	२१	२१
२	५१	३८	२३	२८	५८	७	७
१४	२३	१६	२७	५८	५३	०	०
६१	३२	७०	१३	७१	५	३	३
९	३०	१	३१	५१	१८	११	११
	मा. उ.	व. अ.	मा. अ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
मूल ४	चित्रा २	पू. षा. २	मूल १	विशा. ४	स्वाती ४	रोहि. ४	ज्ये. ३

क. सूर्योदये

लोक भविष्य–इस पक्ष में मंगल तुला में आकर शनि के साथ योग करेगा। विश्व के देशों में विग्रह और संघर्ष की स्थिति बनेगी। किन्हीं दो देशों में परस्पर सैन्यसंघर्ष के कारण अशान्ति व्याप्त होगी। जर्मनी, फिलस्तीन, मिश्र, आस्ट्रिया, चीन, तिब्बत एवं जापान में प्राकृतिक प्रकोप से कहीं जनधन हानि होगी। अमा को सूर्य चन्द्र गुरु एकत्र हैं, –**दिननाथेन्दु गुरवः यदैकत्र समाश्रिताः। उत्तरस्यां दिशिभयं प्रजाः क्रन्दन्ति नित्यशः।**" उत्तर दिशा में शत्रु देश की गतिविधि से सावधान रहना चाहिए, प्रजा में भय व्याप्त हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–इस पक्ष में २१-२२ दिस. को रुई, चान्दी में तेजी बनेगी, वायदा व्यापारी लाभ में रहेंगे। फिर भी २९ दिस. को बाजार का रुख देख कर ही काम करें, बाजार में उत्तम तेजी या मन्दे की लाईन बनेगी। बृहस्पति चार के अनुसार हमारे विचार से रुई, कपास, गुड़, खाण्ड में पहले झटके के साथ मन्दा आ सकता है, लेकिन शीघ्र ही उत्तम तेज़ी आएगी। बाजार का रुख देखकर ही लाभ उठा लें। इस पक्ष में सभी तरह के अनाजों में अच्छी तेजी रहेगी।

क. सूर्योदये

१० चं. के. शु. ८ म.
११ गु. ९ सू. बु. ७ श.
१२ ६
१ ३ ५
२ रा. ४

पौष कृ. ३० मंगल, इष्ट ५५।१२							
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	६	८	८	७	६	१	७
१९	२	१०	२	९	२०	२०	२०
१०	३६	४१	५७	५३	३४	४४	४४
२९	४६	५९	४३	४३	२८	४४	४४
६१	३१	६२	१३	७२	४	३	३
१०	४६	४४	२२	२३	४८	११	११
	मा. उ.	व. अ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
पू. षा. २	चित्रा ३	मूल. ४	मूल. १	अनु. २	विशा. १	रोहि. ४	ज्ये. ३

आकाश लक्षण–दिस. २१, २२, २६, २८, ३० एवं १-२ जनवरी को पंजाब, हिमाचल, हरियाणा, जम्मूकाश्मीर, उ. प्र. में बादल चाल, वर्षा व वायु का जोर रहे। शीत लहर चले।

शकुन विचार–पौष कृ. ५ को यदि वर्षा हो तो आने वाली फसल अच्छी रहे, पौष कृ ८ को यदि बादल चाल किंवा वर्षा हो तो फरवरी में अनाज तेज हो।

श्री वि. सं. २०४०, शाक १९०५, पौष शुक्ल पक्ष १९															तारीखें				चन्द्र	भा. स्टैं. टा.		उदय-कालिक			
दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	संचार घ. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	१४	१	बु.	१२	२०	उ.षा.	५४	३०	व्या.	२३	१५	व.	१२	२०	२०	४	१४	२९	म. ५।१२	७ २५	५ ३०	८	१९	१५	२२
२५	१५	२	गु.	१७	१२	श्र.	६०	०	ह.	२४	१४	कौ.	१७	१२	२१	५	१५	र.१	मकर	७ २५	५ ३१	८	२०	१६	३३
२५	१६	३	शु.	२२	५२	श्र.	१	१	व.	२५	४७	ग.	२२	५२	२२	६	१६	२	कु. ३४।३५	७ २५	५ ३२	८	२१	१७	४५
२५	१७	४	श.	२९	५	ध.	८	८	सि.	२७	४५	वि.	२९	५	२३	७	१७	३	कुम्भ	७ २५	५ ३३	८	२२	१८	५७
२५	१९	५	र.	३५	३५	श.	१५	३८	व्य.	२९	५६	ब.	२	२०	२४	८	१८	४	कुम्भ	७ २५	५ ३३	८	२३	२०	७
२५	२१	६	चं.	४१	५०	पू.भा.	२३	३	व.	३१	५७	कौ.	८	४२	२५	९	१९	५	मी. ६।१२	७ २५	५ ३४	८	२४	२१	१७
२५	२४	७	मं.	४७	२३	उ.भा.	२९	५५	प.	३३	३१	ग.	१४	३६	२६	१०	२०	६	मीन	७ २५	५ ३५	८	२५	२२	२७
२५	२६	८	बु.	५१	४३	रे.	३५	४७	शि.	३४	१६	वि.	१९	३३	२७	११	२१	७	मे. ३५।४७	७ २५	५ ३६	८	२६	२३	३५
२५	२८	९	गु.	५४	२१	अ.	४०	७	सि.	३३	४९	बा.	२३	२	२८	१२	२२	८	मेष	७ २५	५ ३६	८	२७	२४	४४
२५	३०	१०	शु.	५५	५	भ.	४२	३९	सा.	३१	५८	तै.	२४	४३	२९	१३	२३	९	वृ. ५७।४७	७ २५	५ ३७	८	२८	२५	५२
२५	३३	११	श.	५३	४१	कृ.	४३	१०	शु.	२८	३२	व.	२४	२३	मा.१	१४	२४	१०	वृष	७ २५	५ ३८	८	२९	२६	५७
२५	३६	१२	र.	५०	१८	रो.	४१	४३	शु.	२३	२९	ब.	२२	०	२	१५	२५	११	वृष	७ २५	५ ३९	९	०	२८	४
२५	३९	१३	चं.	४५	४	मृ.	३८	२७	ब्र.	१६	५६	कौ.	१७	४२	३	१६	२६	१२	मि. १०।५	७ २५	५ ४०	९	१	२९	९
२५	४२	१४	मं.	३८	१४	आ.	३३	१७	ऐ.	९	०	ग.	११	४२	४	१७	२७	१३	मिथुन	७ २५	५ ४१	९	२	३०	१२
२५	४४	१५	बु.	३०	२९	पुन.	[illegible]	२६	वै.	४०	८	वि.	४	२३	५	१८	२८	१४	क. १४।१०	७ २५	५ ४२	९	३	३१	१७

(४ से १८ जनवरी तक, सन् १९८४ ई.), उ. अ., द. गो., **शिशिर ऋतु,**

ग्रह-दर्शन :–६ जनवरी को बुध पूर्व में उदित होगा। प्रातः मंगल को समध्यासन्न तथा गुरु-शुक्र-शनि को पूर्व कपाल में देख सकेंगे।

चन्द्र दर्शन, मुहूर्ती ४५,

रवी उस्मानी मु. प्रा., गुरु मूल २ में ३५।१५,

भ. ५५।५८ उ., पंचक प्रा. ३४।३५, बुध पूर्व में उदित १९।५८,

भ. २९।५ या.,

शुक्र ज्येष्ठा में ३१।१०,

भ. ४७।२३ उ., **बुध मार्गी ५९।४५, जन्मदिन श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी,**

भ. १९।३३ या., पंचक स. ३५।४७, सूर्य उ. षा. में १६।५, मंगल स्वाती में ४०।३०,

लोहड़ी (पंजाब)

भ. २४।२३ उ., ५३।४१ या., सं. सूर्य मकर में ३२।२८, मु. ३०, पुण्यकाल अगले दिन १२।२८ या., पुत्रदा ११ व्र. स. मेला मुक्तसर (पं.)

सोम प्रदोष व्र.,

भ. ३८।१९ उ., राहु रोहि. ३ केतु ज्येष्ठा १ में ५९।२५,

भ. ४।२३ या., सत्य व्र. **माघ स्नान प्रा.,**

पौष शु. ८ बुध, इष्ट ५५।१०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कु. सूर्योदये

१० ९ सू. बु. के. शु. ८ मं. ७ श. ११ १२ चं. १ २ रा. ३ ४ ५ ६

लोक भविष्य–इस पक्ष में मकर संक्रान्ति शनिवारी है, खाद्य पदार्थों में तेज़ी से रोष व्याप्त होगा। प्रजा में रोग व्याप्त हो। शीतलहर से जनहानि के समाचार मिलेंगे। कहीं असमलम व हिमानी तूफान से हानि होगी। शनि-मंगल का तुला राशि में इकट्ठे होना कहीं युद्ध का वातावरण व कहीं दंगल की स्थिति करता है–"युद्धो [illegible] तथा दुर्भिक्षकारकौ।"

सट्टा बाजार का रुख–६ जन. से ९ जन. तक [illegible] १० जनवरी [illegible] तेज़ हो जाएगी, [illegible] हमारे विचार में भी [illegible] तेज़ी बनेगी। यह [illegible]

कु. सूर्योदये

११ १० सू. ९ बु. गु. के. ८ शु. १२ १ ७ मं. श. २ रा. ४ ३ चं. ५ ६

पौष शु. १५ बुध, इष्ट ५५।१२,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	८	८	७	६	१	७
४	१०	१०	६	२८	२१	१९	१९
२७	२०	२८	१४	५	३८	५७	५७
२९	८	४३	४४	४०	५	३	३
६१	२९	५१	१२	७३	३	३	३
२	४७	३२	४८	९	३४	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण–६, १० जनवरी को हवा का ज़ोर रहे। शीत ज़ोरों पर रहेगी। [illegible] पर्वत-शिखरों पर इस पक्ष में हिमपात से शीत लहर चले। कहीं खण्ड वृष्टि हो। हिमानी तूफान व अन्य प्राकृतिक प्रकोप से हानि का समाचार मिलेगा।

शकुन विचार–यदि पौष शुक्ल पूर्णिमा को बिजली चमके और आकाश में घन बादल हों, तो आगे अनाज की फसल अच्छी हो।

श्री वि. सं. २०४०, शाक १९०५, माघ कृष्ण पक्ष २० (१९ जनवरी से १ फर. तक, सन् १९८४ ई.), उ. अ., द. गो., शिशिर ऋतु,

ग्रह-दर्शन :—प्रातः मंगल शनि समध्यासन्न एवं गुरु-शुक्र पूर्व कपाल में परस्पर आसन्न होंगे। इस समय बुध पूर्व में होगा।

ति. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५	४६	१	गु.	२१	५१	पू.	२०	५३	प्री.	३९	५५	कौ.	२१	५१	६	१९	२९	१५	कर्क	७	२५	५	४२	९	४	३२	२०	
२५	४८	२	शु.	१२	५९	आश्ले.	१३	५३	आ.	२९	३३	ग.	१२	५९	७	२०	३०	१६	सि. १३।५३	७	२४	५	४३	९	५	३३	२२	म. ३८।३८ उ., गुरु मूल ३ में ५४।४५, शुक्र मूल धनु में २९।०, सूर्य मा. कुम्भ•
२५	५१	३	श.	४	१६	म.	७	१	सौ.	१९	२७	वि.	४	१६	८	२१	मा.१	१७	सिंह	७	२४	५	४४	९	६	३४	२४	म. ४।१६ या., शाक माघ प्रा., सूर्य अभिजित् में ५।३०, श्री गणेश ४ व्र., संकट□
अयम		४	श.	५६	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय, •में ४७।५७, □चतुर्थी (चन्द्रोदय रात्रि ९ घं. ५ मि. पर)
२५	५४	५	र.	४९	०	पू.फा	५५	३५	शो.	९	५७	कौ.	२२	३५	९	२२	२	१८	क. १४।३१	७	२४	५	४५	९	७	३५	२५	बुध पू. षा. में १।१०,
२५	५८	६	च.	४३	११	ह.	५१	४०	अ.	५३	४२	ग.	१६	६	१०	२३	३	१९	कन्या	७	२४	५	४६	९	८	३६	२६	म. ४३।११ उ., जन्म दिन नेता जी सुभाष,
२६	१	७	मं.	३८	५२	चि.	४९	१७	धृ.	४७	२४	वि.	११	२	११	२४	४	२०	तु. २०।२९	७	२३	५	४७	९	९	३७	२७	म. ११।२ या., सूर्य श्रवण में २२।१०, जन्म दिन स्वा. विवेकानन्द जी,
२६	४	८	बु.	३६	१२	स्वा.	४८	३१	शू.	४२	२५	बा.	७	३२	१२	२५	५	२१	तुला	७	२३	५	४८	९	१०	३८	२७	सूर्य अभिजित् से निवृत्त १४।३७,
२६	७	९	गु.	३५	९	वि.	४९	२०	गं.	३८	४०	तै.	५	४०	१३	२६	६	२२	वृ. ३४।८	७	२२	५	४९	९	११	३९	२७	भारत गणतन्त्र दिवस,
२६	९	१०	शु.	३५	४०	अनु.	५१	३८	वृ.	३६	९	व.	५	२५	१४	२७	७	२३	वृश्चिक	७	२२	५	४९	९	१२	४०	२६	म. ५।२५ उ., ३५।४० या.
२६	१२	११	श.	३७	३६	ज्ये.	५५	१४	ध्रु.	३४	४२	ब.	६	३८	१५	२८	८	२४	ध. ५५।१४	७	२१	५	५०	९	१३	४१	२४	षट्तिला ११ व्र. स., जन्मदिन ला. लाजपतराय,
२६	१५	१२	र.	४०	४०	मू.	५९	५१	व्या.	३४	८	कौ.	९	८	१६	२९	९	२५	धनु	७	२१	५	५१	९	१४	४२	२३	
२६	१८	१३	चं.	४४	४३	पू.षा.	६०	०	ह.	३४	१८	ग.	१२	४२	१७	३०	१०	२६	धनु	७	२०	५	५२	९	१५	४३	२०	म. ४४।४३ उ., सोम प्रदोष व्र., निर्वाण दिन श्री म. गांधी
२६	२२	१४	मं.	४९	३३	पू.षा.	५	२४	व.	३५	६	वि.	१७	८	१८	३१	११	२७	म. २१।५७	७	२०	५	५३	९	१६	४४	१६	म. १७।८ या., शुक्र पू. षा. में २२।५२,
२६	२५	३०	बु.	५४	५७	उ.षा.	११	३५	सि.	३६	२१	च.	२२	१५	१९	फ.१	१२	२८	मकर	७	१९	५	५३	९	१७	४५	१२	फरवरी प्रा., मौनी अमावस, महोदय पर्व. मेला मस्तआणा (प.)

माघ कृ. ८ बुध, इष्ट ५५।१८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	८	८	८	६	१	७
११	१३	१७	७	६	२२	१९	१९
३४	४५	३४	४३	३८	१	३४	३४
४२	२०	५७	१७	४४	१०	४७	४७
६१	२८	७०	१२	७३	२	३	३
०	३८	४९	२६	२७	५६	११	११
	मा	मा.	मा	मा.	मा	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्रव. १	स्वा. ३	पू.षा. २	मूल ३	मूल. २	विशा. १	रोहि. ३	ज्ये. १

कु. सूर्योदये

लोक भविष्य—शनि-मंगल तुलास्थ हैं, उत्पात, वर्षा शीतलहर से हानि होगी। शनि-मंगल युति का समय अरब राष्ट्र अफ्रीकी देश एवं अन्य मुस्लिम देशों के लिए भयावह है। १९ जन. को गुरु-नेपच्यून युति एवं २७ जन. को गुरु-शुक्र युति व्यापारिक क्षेत्र एवं राजनैतिक क्षेत्र में विशेष घटनाप्रद रहेगी। किसी भाग में अतिवर्षण आदि प्राकृतिक विपदाओं से भारी हानि का योग है। कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी— "गुरु शुक्रावेक राशि गतौ दुर्भिक्ष-दुःखदौ।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में ही गेहूं जौ चना आदि अन्न, चान्दी सोना ताम्बा आदि धातु और शेयर तेज होंगे। २२ जनवरी को सोना चान्दी में खासी मन्दी हो। इस पक्ष में १९ जन. को बृहस्पति और नेपच्यून की युति, २७ जन. को गुरु शुक्र युति एवं १ फर. को केतु-युरेनस युति का प्रभाव व्यापार पर होगा। विचार पूर्वक काम करें।

कु. सूर्योदये

११
चं. १० सू.
गु.९ बु. शु.
१२
८के.
१
श. ७ मं.
२ रा.
४
६
३
५

माघ कृ. ३० बुध, इष्ट ५५।२८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	८	८	८	६	१	७
१८	१७	२६	९	१५	२२	१९	१९
४१	१	२५	९	१३	१९	१२	१२
३०	५९	६	२	३३	४०	३२	३२
६१	२७	८१	११	७३	२	३	३
१५	१९	१७	५९	४०	१६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्रव. ३	स्वा. ४	पू.षा. ४	मूल. ३	पू.षा. १	विशा. १	रोहि. ३	ज्ये. १

आकाश लक्षण—इस पक्ष में लका, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा में वर्षा होगी, हि. प्र. में कहीं अधिक हिमपात एवं अधिक वर्षा व हिमस्खलन से हानि होगी।

शकुन विचार—माघ कृष्ण तृतीया को यदि मेघ गरजें, परन्तु वर्षा न हो तो गेहूं जौ चना का स्टाक करने से आगे लाभ मिलेगा। माघ कृ. ६ को यदि आकाश एवं दिशाएं निर्मल रहें तो कपास के संग्रह से आगे लाभ मिलेगा।

श्री वि. सं. २०४०, शाक १९०५, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २२ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टैं. टा. | उदय-कालिक (१७ फर. से २ मार्च तक, सन् १९८४ ई.), उ. अ., द. गो., **शिशिर बसन्त ऋतु,**

वि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह-दर्शन :–२० फर. को बुध पूर्व में अस्त होगा। प्रात: म. श. खमध्य में पश्चिम कपाल की ओर जाते हुए तथा गुरु-शनि को पूर्वकपाल में देख सकेंगे।
२७	३१	१	शु.	४७	५२	म.	३४	२९	अ.	४२	२०	बा.	२२	४५	५	१७	२८	१४	सिंह	७	६	६	७	१०	३	५६	४१	
२७	३५	२	श.	३८	२०	पू.फा.	२६	४७	सु.	३१	२७	तै.	१३	६	६	१८	२९	१५	क. ४०।०	७	६	६	८	१०	४	५७	१०	
२७	४०	३	र.	२९	३३	उ.	१९	४१	धृ.	२१	६	व.	३	५६	७	१९	३०	१६	कन्या	७	५	६	९	१०	५	५७	३८	
२७	४५	४	चं.	२१	५७	ह.	१३	४३	शू.	११	४०	बा.	२१	५७	८	२०	फा.१	१७	त. ४१।३०	७	४	६	१०	१०	६	५८	५	भ. ३।५६ उ., २९।३३ या., सूर्य शत. में ४२।०, सूर्य सा. मीन में २४।१७,*
२७	५०	५	मं.	१५	५७	चि.	९	१७	गं.	५६	४५	तै.	१५	५७	९	२१	२	१८	तुला	७	३	६	११	१०	७	५८	३०	शक फाल्गुन प्रा., बुध पूर्व में अस्त ५६।१८,
२७	५४	६	बु.	११	४८	स्वा.	६	३८	धृ.	५१	३०	व.	११	४८	१०	२२	३	१९	वृ. ५१।६	७	२	६	१२	१०	८	५८	५४	*वसन्त प्रा., बुध धनि. में ५७।५०, श्री गणेश ४ व्र.
२७	५९	७	गु.	९	३७	वि.	५	५५	व्या.	४८	१	ब.	९	३७	११	२३	४	२०	वृश्चिक	७	०	६	१३	१०	९	५९	१६	भ. ११।४८ उ., ४०।४३ या., शुक्र श्रवण में ४।२५,
२८	३	८	शु.	९	२९	अनु.	७	१३	ह.	४५	५८	कौ.	९	२९	१२	२४	५	२१	वृश्चिक	६	५९	६	१३	१०	१०	५९	३७	बुध कुम्भ में ५८।५८,
२८	७	९	श.	११	१२	ज्ये.	१०	१८	व.	४५	१२	ग.	११	१२	१३	२५	६	२२	ध १०।१८	६	५८	६	१४	१०	११	५९	५८	गुरु पू. षा. १ में ३१।३२, शनि वक्री ५६।१८,
२८	११	१०	र.	१४	२९	मू.	१४	५४	सि.	४५	३१	वि.	१४	२९	१४	२६	७	२३	धनु	६	५७	६	१४	१०	१३	०	१६	भ. ४२।५० उ.,
२८	१५	११	चं.	१९	१	पू.षा.	२०	४२	व्य.	४६	३७	बा.	१९	१	१५	२७	८	२४	म. ३७।२०	६	५६	६	१५	१०	१४	०	३३	भ. १४।२९ या.,
२८	१९	१२	मं.	२४	२५	उ.षा.	२७	१९	व.	४८	१८	तै.	२४	२५	१६	२८	९	२५	मकर	६	५५	६	१५	१०	१५	०	५०	बुध शत. में ५१।१५, विजया ११ व्र. स.,
२८	२३	१३	बु.	३०	१७	श्र.	३४	२८	प.	५०	१९	व.	३०	१७	१७	२९	१०	२६	मकर	६	५४	६	१६	१०	१६	१	३	भौम प्रदोष व्र.,
२८	२६	१४	गु.	३६	३७	ध.	४१	५०	शि.	५२	२७	वि.	३	२७	१८	मा.१	११	२७	कुं. ८।९	६	५३	६	१६	१०	१७	१	१६	*भ. ३०।१७ उ., श्री महाशिव रात्रि व्र.,
२८	३०	३०	शु.	४२	५५	श.	४९	१७	सि.	५४	३९	च.	९	४६	१९	२	१२	२८	कुम्भ	६	५२	६	१७	१०	१८	१	२६	भ. ३।२७ या., पंचक प्रा. ८।९, मार्च प्रा.

फाल्गु. कृ. ८ शुक्र, इष्ट ५६।५८,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	६	१०	८	९	६	१	७
११	२६	१	१३	१३	२२	१७	१७
५६	२९	३७	२४	३१	४५	५९	५९
१९	१०	१४	९	४०	४९	२४	२४
६०	२१	१०२	९	७४	०	३	३
२१	१३	५६	५९	०	६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. २	विशा. २	धनि. ३	पू.षा. १	श्रव. २	विशा. १	रोहि. ३	ज्ये. १

कु. सूर्योदये

- १२
- ११ बु. सू.
- १० शु.
- ९ गु.
- १
- २ रा.
- चं. ८ के.
- ३
- ५
- ७ मं. श.
- ४
- ६

लोक भविष्य–इस मास में ५ शुक्रवार एवं ५ शनिवार हैं, यावन देशों में प्रधान शासक को विषम स्थिति का सामना करना पड़ेगा। भारत के किसी प्रान्तीय शासन व्यवस्था में उल्ट फेर होगा। अफ्रीका, पाकिस्तान एवं बंगला देश के लिए समय उलझनपूर्ण है। प्रजा में रोगभय व्याप्त हो। चोरी व ठगी की घटनाएं अधिक हो।

ग्रह चाल और बाजार का रुख–पक्षारम्भ में सोना चान्दी, तेल एवं तेलबीया में साधारण तेजी का वातावरण रहेगा। फरवरी को बुध के अस्त होने पर अनाजों, धातुओं, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दे का रुख रहे, रुई में घटाबढ़ी चले। लेकिन २४ फरवरी के बाद बाजार का रुख बदलेगा, बाजार का रुख देखकर काम करें, हमारे विचार से बाजारों में तेजी आएगी।

कु. सूर्योदये

- १२
- ११ सू. बु. चं.
- १० शु.
- ९ गु.
- १
- २ रा.
- ८ के.
- ३
- ५
- ७ मं. श.
- ४
- ६

फाल्गु. कृ. ३० शुक्र, इष्ट ५६।३५,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	६	१०	८	९	६	१	७
१८	२८	१३	१४	२२	२२	१७	१७
५८	५०	५९	३१	९	४२	३७	३७
१४	१०	३	४०	४७	५५	८	८
६०	१८	११०	९	७४	०	३	३
१०	३८	६	११	१	४९	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. ४	विशा. ३	शत. ३	पू.षा. १	श्रव. ४	विशा. १	रोहि. ३	ज्ये. १

आकाश लक्षण–फरवरी २०, २३, २४, को हि. प्र., पंजाब, हरियाणा, जम्मू काश्मीर में वायुवेग के साथ कहीं बूंदाबांदी होगी। कहीं बादल चाल मात्र हो। मौसम में परिवर्तन नज़र आएगा।

शकुन विचार–फाल्गुन में यदि बादल हों, परन्तु वर्षा न हो तो आगे वर्षाकाल में अच्छी वर्षा हो।

श्री वि सं. २०४०, शाक १९०५, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २३ — (३ से १७ मार्च तक, सन् १९८४ ई.), उ. अ., द. गो., बसन्त ऋतु,

ति. मा घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. फाल्गुन	अ. मार्च	श. फाल्गुन	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	भा. स्टैं. टा. चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२८	३५	१	श.	४९	१०	पू.भा.	५६	३९	सा.	५६	४७	कि.	१६	२	२०	३	१३	२९	मी. ३९।४९	६	५०	६	१८	१०	१९	१	३६
२८	३९	२	र.	५५	८	उ.भा.	६०	०	श.	५८	५०	बा.	२२	९	२१	४	१४	३०	मीन	६	४९	६	१८	१०	२०	१	४२
२८	४३	३	चं.	६०	०	उ.भा.	३	४८	शु.	६०	०	तै.	२७	५७	२२	५	१५	ज.१	मीन	६	४८	६	१९	१०	२१	१	४७
२८	४८	३	मं.	०	४६	रे.	१०	३१	शु.	०	२२	ग.	०	४६	२३	६	१६	२	मे.१०।३१	६	४७	६	२०	१०	२२	१	५१
२८	५२	४	बु.	५	४१	अ.	१६	३३	ब्र.	१	३०	वि.	५	४१	२४	७	१७	३	मेष	६	४६	६	२१	१०	२३	१	५१
२८	५७	५	गु.	९	३६	भ.	२१	३६	ऐं.	१	५४	बा.	९	३६	२५	८	१८	४	वृ.३७।३३	६	४५	६	२१	१०	२४	१	४९
२९	२	६	शु.	१२	१७	कृ.	२५	२३	वै.	५९	४०	तै.	१२	१७	२६	९	१९	५	वृष	६	४३	६	२२	१०	२५	१	४६
२९	६	७	श.	१३	२१	रो	२७	३३	प्री.	५६	५८	व.	१३	२१	२७	१०	२०	६	मि.५७।४४	६	४२	६	२२	१०	२६	१	४०
२९	१०	८	र	१२	३३	मृ.	२७	५४	आ.	५१	५९	व.	१२	३३	२८	११	२१	७	मिथुन	६	४१	६	२३	१०	२७	१	३१
२९	१५	९	चं	९	५१	आ.	२६	२१	सौ.	४५	५१	कौ.	९	५१	२९	१२	२२	८	मिथुन	६	४०	६	२४	१०	२८	१	२१
२९	२०	१०	मं.	५	१२	पुन	२२	५६	शो.	३८	१३	ग.	५	१२	मा.१	१३	२३	९	क.८।५०	६	३९	६	२४	१०	२९	१	९
अव	म	११	बु.	५८	४४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	००	०	०	०	०	०	०	
२९	२५	१२	बु	५०	३०	पु.	१७	४१	अ.	२९	१९	ब.	२४	५०	२	१४	२४	१०	कर्क	६	३७	६	२५	११	०	०	५३
२९	३०	१३	गु.	४२	०	आश्ले	११	२८	सु.	१९	२५	कौ.	१६	२८	३	१५	२५	११	सिं.११।२८	६	३६	६	२६	११	१	०	३६
२९	३५	१४	शु.	३२	२५	म.	५६	२५	धृ.	५७	५३	ग.	७	१२	४	१६	२६	१२	सिंह	६	३५	६	२६	११	२	०	१७
२९	४०	१५	श.	२८	४५	पू.फा.	४८	४५	शू.	४७	०	ब.	२२	४२	५	१७	२७	१३	क.९।३०	६	३४	६	२७	११	२	५	५५

ग्रह-दर्शन :–बुध अस्त है। प्रातः शनि-मंगल को पश्चिम कपाल में, गुरु को समध्य की ओर जाता तथा शुक्र को पूर्वकपाल में देख सकेंगे।

शुक्र धनि. में ५४।३५, सूर्य पू. भा. में ५८।१५,
चन्द्रदर्शन मु. ४५, जन्म दिन श्री राम कृष्ण परमहंस,
जमद-उम्मानी मु. प्रा.,
भ. ३३।१३ उ., पंचक म. १०।३१, मंगल वृश्चिक में ४८।५८, बुध पू. भा.• में ११।२०
भ. ५।४१ या.

शुक्र कुम्भ में १८।०,
भ. १३।२१ उ., ४२।५७ या.,
बुध मीन में २३।४८, होलाष्टक प्रा.,

भ. ३१।५८ उ., ५८।४४ या., सं. सूर्य मीन में ५९।२, मु. ३०, पुण्यकाल अगले□ दिन मध्यान्ह से पूर्व, बुध उ. भा. में ५।४०, आमलकी#
एकादशी तिथिक्षय,
शुक्र शत. में ४२।२५, आमलकी ११ब्र. वै., गोविन्द द्वादशी. #११ ब्र. स्मा.
प्रदोष व्र.,
भ. ३२।२५ उ., ५७।३४ या., व्रत व्र., होलिका दहन (देखें पृ. ६०)
सूर्य उ. भा. में २०।१०, धुलण्डी, होलाष्टक समाप्त, होली,

कु. सूर्योदये

१२, ११, शु. सू., १०, ९ गु., १, २ रा., के. ८ मं., ३ चं., ४, ५, ६, ७ श.

लोक भविष्य– इस पक्ष में बुध अतिचारी एवं शनि वक्री चल रहा है।– "यदा शुभग्रहः कश्चिद् अतिचार करोति च। तदा नृपाः क्षयं यान्ति दुर्भिक्षं तत्र दारुणम्॥" प्रतिष्ठित-राजनीतिज्ञ का पद रिक्त होगा। कहीं राजनीतिक अस्थिरता बनेगी। कहीं प्रशासन के नए ... [illegible] ... १० मार्च के बाद ११, १२ मार्च ... [illegible] ... किसी यान दुर्घटना से जनधन हानि का योग है।

[illegible]

कु. सूर्योदये

१, १२, शु. ११, १०, २ रा., बु. सू., ३, ९ गु., ४, ६, ८ मं. के., ५ चं., ७ श.

फाल्गु. श. १५ शनि, ५७। २०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	७	११	८	१०	६	१	७
३	२	१२	१६	१०	२२	१६	१६
५६	४३	५७	३६	४०	२०	४९	४९
५७	२६	१४	१५	१९	१६	२७	२७
५९	११	११	७	७४	२	३	३
३८	३७	५५	१३	२	१५	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ. भा. १	विशा. ४	उ. भा. ३	पू. षा. १	शत. ४	विशा. १	रोहि. ३	ज्ये. १

[illegible] ... बाजारों में तेजी का वातावरण बनाएगी।
[illegible] ... इस पक्ष में भाव परिवर्तन असम्भव होगा।
[illegible]

श्री वि. सं. २०४०, शाक १९०५, चैत्र कृष्ण पक्ष २४ (१८ मार्च से १ अप्रै. तक, सन् १९८४ ई.), उ. अ., द. उ. गो., बसन्त ऋतु.

ग्रह-दर्शन :—२२ मार्च को बुध पश्चिम में उदित होगा। प्रातः शनि-मंगल को पश्चिम कपाल में, गुरु को समध्यासन्न एवं शुक्र को पूर्वकपाल में देखा जा सकेगा।

ति. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	ता.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२९	४६	१	र.	१३	२०	ह.	४१	४२	वृ.	३६	३८	कौ.	१३	२०	६	१८	२८	१४	कन्या	६	३३	६	२८	११	३	५९	३२	गुरु पू. षा. २ में २८।३५, पूरेनस वक्री, होला मेला श्री आनन्दपुर साहेब (पं.)
२९	५१	२	चं.	४	४६	चि	३५	४०	ध्रु.	२७	५	ग.	४	४६	७	१९	२९	१५	तु. ८।४१	६	३२	६	२९	११	४	५९	६	भ. ३१।५ उ., ५७।२५ या., बुध रेवती में ५१।१८,
अवम		३	चं.	५७	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथिक्षय,
२९	५७	४	मं.	५१	४०	स्वा.	३१	९	व्या.	१८	४३	ब.	२४	३२	८	२०	३०	१६	तुला	६	३१	६	३०	११	५	५८	३९	सूर्य सा. मेष में २३।३२, उ. गोल प्रा., महाविषुव दिन, राहु रोह. २०
३०	२	५	बु.	४७	५५	वि.	२८	२८	ह.	११	४८	कौ.	१९	४८	९	२१	चै.१	१७	वृ. १४।८	६	३०	६	३०	११	६	५८	११	शाक चैत्र प्रा., मंगल अनु. में १८।२,
३०	७	६	बृ.	४६	१४	अनु.	२७	४७	व.	६	३०	ग.	१७	५	१०	२२	२	१८	वृश्चिक	६	२८	६	३१	११	७	५७	४०	भ. ४६।१४ उ., बुध पश्चिम में उदित १४।४५, मेला शीतला माता (फुराली) (पं.)
३०	१२	७	शु.	४६	४०	ज्ये.	२९	११	सि.	२	५१	वि.	१६	२७	११	२३	३	१९	ध.२९।११	६	२७	६	३२	११	८	५७	८	भ. १६।२७ या.,
३०	१७	८	श.	४९	५	मू.	३२	३३	व्य.	०	५२	बा.	१७	५२	१२	२४	४	२०	धनु	६	२६	६	३२	११	९	५६	३४	*में केतु अनु. ४ में ५५।४५, श्री गणेश ४ व्र., श्री भगवान् नारायण#
३०	२०	९	र.	५३	५	पू.षा.	३७	३४	व.	०	२१	तै.	२१	५	१३	२५	५	२१	म. ५४।८	६	२५	६	३३	११	१०	५५	५८	शुक्र पू. भा. में ३१।२२, #जयन्ती (पिंडोरी धाम) गुरुदासपुर
३०	२४	१०	चं.	५८	२१	उ.षा	४३	५२	प.	०	५९	व.	२५	४३	१४	२६	६	२२	मकर	६	२३	६	३४	११	११	५५	२१	भ. २५।४३ उ., ५८।२१ या.,
३०	२८	११	मं.	६०	०	श्र.	५१	१	शि.	२	३३	व.	३१	२३	१५	२७	७	२३	मकर	६	२२	६	३४	११	१२	५४	४३	बुध अश्वि. मेष में ५०।५२,
३०	३२	११	बु.	४	२५	ध.	५८	३१	सि.	४	४०	बा.	४	२५	१६	२८	८	२४	कुं.२४।४६	६	२१	६	३५	११	१३	५४	१	पंचक प्रा. २४।४६, पाप मोचिनी ११ व्र. स.,
३०	३६	१२	बृ.	१०	४३	श.	६०	०	सा.	६	५९	तै.	१०	४३	१७	२९	९	२५	कुम्भ	६	२०	६	३५	११	१४	५३	१९	प्रदोष व्र., वारुणी पर्व,
३०	४०	१३	शु.	१७	२	श.	६	८	शु.	९	२१	व.	१७	२	१८	३०	१०	२६	मी.५६।३२	६	१९	६	३६	११	१५	५२	३५	भ. १७।२ उ., ५०।२ या., सूर्य रेवती में ४८।०
३०	४६	१४	श.	२३	१	पू.भा	१३	२६	शु.	११	२९	श.	२३	१	१९	३१	११	२७	मीन	६	१७	६	३७	११	१६	५१	४८	मेला पृथूदक (पिहोवा तीर्थ) हरयाणा,
३०	५०	३०	र.	२८	३१	उ.भा.	२०	१६	ब्र.	१३	१६	ना.	२८	३१	२०	१	१२	२८	मीन	६	१६	६	३७	११	१७	५०	५९	अप्रैल प्रा., चान्द्र संवत्सर पूर्ण,

चैत्र कृ. ८ शनि, इष्ट ५७।४२,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	७	११	८	१०	६	१	७
१०	३	२६	१७	१९	२२	१६	१६
५३	५२	८	२३	१८	२	२७	२७
४५	४२	३६	४८	३२	३७	११	११
५९	७	१०२	६	७४	२	३	३
२६	२९	४५	११	१	५२	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ. भा. ३	अनु. १	रेव. ३	पू. षा. २	शत. ४	विशा. १	रोहि. २	अनु. ४

कु. सूर्योदये

लोक भविष्य—इस मास में ५ रविवार हैं; प्रजा में रोग-पीडा से परेशानी पैदा होगी:—"पंचार्कवासरे रोगा:"। बच्चों को चेचक आदि रोगों से कष्ट हो। इस पक्ष में धनुस्थ चन्द्रमा से २३-२४-२५ मार्च को भी भूकम्पन योग बनता है-"**उपप्लवात् सप्तमगो महीजो महीसुतात् पञ्चमगो यदा बुधः। बुधाद्विधुः स्याच्च चतुष्टये स्थितः सचेह भूकम्पन योग ईरितः।।**" इस योग का प्रभाव यावन राष्ट्रों पर देखा जा सकेगा। कहीं भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन से हानि होगी। दो विरोधी देशों में परस्पर तनाव भी बढ़ेगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में २५ मार्च तक वायदा व्यापार में साधारण तेजी मन्दी रहेगी। लेकिन २६ मार्च के बाद ३१ मार्च तक गेहूं ज्वार बाजरा जौ चना अलसी मूंग मोठ में तेजी आएगी। घी, गुड़, खाण्ड एवं तिलहन में अच्छी तेजी हो।

कु. सूर्योदये

१ बु.
१२
११ शु.
२ रा.
चं. सू.
१०
३
९ गु.
४
६
८ मं.
के.
५
७ श.

चैत्र कृ. ३० रवि, इष्ट ५८।८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	७	०	८	१०	६	१	७
१८	४	७	१८	२९	२१	१६	१६
४८	३४	४१	८	१०	३७	१	१
२१	११	३६	५५	४४	३६	४५	४५
५९	२	६१	४	७४	३	३	३
१०	८	५७	५५	१	२८	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. १	अनु. १	अश्वि. ३	पू. षा. २	पू. भा. ३	विशा. १	रोहि. २	अनु. ४

आकाश लक्षण—मार्च १८, २२, २३, २७ को बादल छाए हों तथा २२, २७ मार्च को वायु का जोर रहे। दिन में तापमान बढ़े।

शकुन विचार—यदि चैत्र कृ. ७ को आकाश मेघाच्छन्न रहे तो गुड़, खाण्ड, गेहूं, मसरी, सोना में आगे तेजी आती है। "चन्द्रमौलि शंकर चरण बार बार सिर नाय। संवत् यह पूरण कियो गिरा-गणेश मनाय।।" ॐ

भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में दिए गए तिथि-नक्षत्र आदि को समझने के लिए आवश्यक निर्देश

क्योंकि पड़ी-पत्रों में दिए गए तिथि-नक्षत्र आदि के काल एक ही स्थान के सूर्योदय से सम्बन्ध रखते हैं, अतः वे देश में सर्वत्र ग्राह्य नहीं हो सकते। भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में यदि इन्हें दिया जाए तो ये भारत के किसी भी स्थान पर बिना किसी परिवर्तन के स्वीकार किए जा सकते हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर हमने भा. स्टै. टा. में तिथि-नक्षत्रों का समाप्ति-काल, चन्द्रमा का राशि प्रवेशकाल, ग्रहों के नक्षत्रराशि प्रवेश आदि का काल एवं भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल देना प्रारम्भ किया है। इन्हें समझने के लिए कुछ निर्देशन आवश्यक है, इसे पढ़ लेना चाहिए।

दिन के १२ बजे के बाद के बाद रात के १२ बजे तक के टाईम (घण्टों) को क्रमशः १३ से २४ तक के अंकों द्वारा प्रकट किया जाता है। अर्थात् दिन के १ बजे को १३ बजे, २ बजे को १४ बजे इत्यादि ढंग से लिखते हुए रात के १२ बजे को २४ बजे लिखा गया है। किन्तु रात्रि के १२ बजे (अर्थात् २४ बजे) के बाद सूर्योदय तक के टाईम (घण्टों) को क्रमशः २५, २६, २७, २८, २९, ३० एवं ३१ अंकों द्वारा प्रकट किया गया है। अर्थात् इस नियम के अनुसार रात के १ बजे को २५ बजे, २ को २६ बजे इत्यादि लिखते हुए सूर्योदय से पहले बजने वाले ७ को ३१ बजे लिखा गया है। ध्यान—रहे, सूर्योदय के बाद ६, ७ घण्टों को ६, ७ ही लिखा गया है। नीचे दिए गए उदाहरणों को पढ़ने से यह सब बिल्कुल स्पष्ट हो जायगा :—

(१) १७ अप्रैल (१९८३ ई.) को चैत्र शुक्ल चतुर्थी रविवार के आगे ९ घं. ६ मि. लिखा है। इसका अर्थ है, कि वह तिथि १७ अप्रैल को ९ बज कर ६ मिनट पर समाप्त होगी।

(२) १९ जून (१९८३ ई.) को मघा नक्षत्र के आगे १६ घं. ४६ मि. लिखा है। इसका अर्थ है, कि मघा नक्षत्र उस दिन शाम को ४ बज कर ४६ मिनट पर समाप्त होगा।

(३) १० जुलाई (१९८३ ई.) रविवार के आगे चन्द्र-सञ्चार के कालम में [illegible] लिखा है। इसका अर्थ है चन्द्रमा १० जुलाई की [illegible] बजकर [illegible] मिनट पर [illegible] भारतीय ज्योतिष के अनुसार इस प्रकार रविवार ही होगा क्योंकि भारतीय ज्योतिष के अनुसार वार सूर्योदय के समय बदलता है। पाश्चात्य (अंग्रेजी) ज्योतिष के अनुसार चन्द्रमा के [illegible] राशि में प्रवेश के समय सोमवार ही होगा क्योंकि इस मत के अनुसार तारीख के साथ ही रात के १२ बजे वार बदल जाता है।

ऐसा ही एक और उदाहरण लीजिए—

(४) [illegible] जून (१९८३ ई.) बुधवार को भद्रा आदि के कालम के नीचे भ. २९।१४ उ. लिखा है। इसका अर्थ है, कि भद्रा [illegible] को सूर्योदय से पूर्व ५ बजकर १४ मिनट पर शुरू होगी। [illegible] भारतीय ज्योतिष के अनुसार बुधवार और अंग्रेजी पद्धति के अनुसार गुरुवार ही होगा।"

भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में तिथि नक्षत्र चन्द्रसंचार एवं भद्रा आदि (सं. २०४०)

मा. पक्ष	ता. १९८३	तिथि	वार	घं. मि.	नक्ष.	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
चैत्र शुक्ल पक्ष	अप्रै. १४	१	गु.	१२।५३	अ.	१४।५९	मेष	सं० सूर्य अश्वि. मेष में ८।४६(A)
	१५	२	शु.	११।५५	भ.	१४।४०	वृ. २०।३२	
	१६	३	श.	१०।३७	कृ.	१४।३	वृष	भ. २१।५२उ, शुक्र रोहि. में १८।२६
	१७	४	र.	९।६	रो.	१३।१३	मि. २४।४३	भ. ९।६ या., व. गुरु अनु. ४में १३।३९
	१८	५	सं.	७।२२ / २९।३०	मृ.	१२।१२	मिथुन	
	१९	७	मं.	२७।३०	आ.	११।३	क२८।६	भ. २७।३० उ.
	२०	८	बु.	२५।२३	पुन	९।४६	कर्क	भ. १४।२६या, सूर्य सा. वृष में २१।२१
	२१	९	गु.	२३।१२	पुष्य	८।२२	कर्क	बुध कृत्ति. में ७।२
	२२	१०	शु.	२०।५९	आश्ले.	६।५५ / २९।२६	सि. ६।५५	
	२३	११	श.	१८।४६	पू.फा.	२८।२	सिंह.	भ. ७।५३उ. १८।४६ या
	२४	१२	र.	१६।४०	उ.फा.	२६।४६	क. ९।४२	
	२५	१३	सं.	१४।४६	ह.	२५।४५	कन्या	बुध वृष में ११।१६,
	२६	१४	मं.	१३।११	चि.	२५।५	तु. १३।२४	भ. १३।११उ. २४।३६ या,
	२७	१५	बु.	१२।१	स्वा.	२४।५४	तुला.	सूर्य भर. में २४।३८(B)
वैशाख कृष्ण पक्ष	२८	१	गु.	११।२३	वि.	२५।१८	वृ. १९।११	
	२९	२	शु.	११।२२	अनु.	२६।२०	वृश्चिक	भ. २३।४१ उ.,
	३०	३	श.	१२।११	ज्ये.	२८।१	ध. २८।१	भ. १२।११ या.
	मई १	४	र.	१३।२०	मू.	......	धनु	
	२	५	सं.	१५।१२	मू.	६।१६	धनु	बुध वक्री १४।३९, नेपच्यून वक्री
	३	६	मं.	१७।२९	पू.षा	९।०	म. १५।४५	भ. १७।२९उ., मंगलकृतिमें १२।५४(C)
	४	७	बु.	१९।५८	उ.षा	११।५९	मकर	भ. ६।४४ या,
	५	८	गु.	२२।२५	श्र.	१५।००	कु. २८।२४	पंचक प्रा. २८।२४
	६	९	शु.	२४।३४	ध.	१७।४८	कुम्भ	
	७	१०	श.	२६।१४	श	२०।११	कुम्भ	भ. १३।२४उ. २६।१४या., मंगल वृष में २८।१८
	८	११	र.	२७।१६	पू.भा.	२२।५९	मी. १५।३१	[illegible] बुध मेष २२।४७
	९	१२	सं.	२७।३८	उ.भा.	२३।८	मीन	शुक्र आर्द्रा में २२।१७
	१०	१३	मं.	२७।१८	रे.	२३।२७	मे. २३।३७	भ. २७।१८उ., पंचक स. २३।२७,
	११	१४	बु.	२६।२३	अ.	[illegible]।२९	मेष	भ. १४।५१या, सूर्यकृति. में १८।४९(D)
	१२	३०	गु.	२४।५६	भ.	२२।५०	वृ. २८।३६	

(A) मंगल भरणी में २९।१९, (B) शुक्र मृग. में २९।२४, (C) शुक्र मिथुन में २५।१० व शनि विशा. ४ में [illegible], बुध पश्चिम में अस्त [illegible], (D) राहु मृग. ३ में केतु मूल १ में १६।३८,

*दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि किसी तारीख के आगे लिखे टाईम में यदि घण्टे २४ से ज्यादा हों तो वहां घण्टों में २४ घटा दीजिए और शेष घण्टा मिनटों को अगली तारीख का (सूर्योदय से पहिले का) टाईम समझिए।

भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं २०४०)

मास पक्ष	ता. १९८३	तिथि	वार	घं. मि.	नक्ष.	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
वैशाख शुक्ल पक्ष	१३मई	१	गु.	२३।३	कृ.	२१।४४	वृष	
	१४	२	शु.	२०।५३	रो.	२०।२१	वृष	बुध भर. में १८।१९
	१५	३	र.	१८।३१	मृ.	१८।४६	मि. ७।३३,	भ. २९।१७ उ.,‡
	१६	४	चं.	१६।३	आ.	१७।५	मिथुन	भ. १६।३ या.,
	१७	५	मं.	१३।३५	पुन.	१५।२४	क. ९।४९	‡सं.·सूर्य वृष में ५।४
	१८	६	बु.	११।१०	पु.	१३।४७	कर्क	
	१९	७	गु.	८।५२	आश्ले.	१२।१७	सि.१२।१७	भ. ८।५२ उ. १९।४८ या;
	२०	८	शु.	{६।४४ / २८।४९}	म.	१०।५७	सिंह	व. गुरु. अनु. ३ में २५।४६,
	२१	१०	श.	२७।९	पू. फा.	९।५१	क.१५।३५	शुक्र पुन. में २३।११ सूर्य सायन मिथुन (A)
	२२	११	र.	२५।४७	उ. फा.	९।१	कन्या	भ. १४।२८ उ. २५।४७ या (B)
	२३	१२	चं.	२४।४६	ह.	८।२८	तु. २०।२४	
	२४	१३	मं.	२४।१९	चि.	८।१८	तुला	भ.२३।५९उ.सूर्यरोहि.में१५।२
	२५	१४	बु.	२३।५९	स्वा	८।३३	वृ. २७।५	भ.१२।८या.,बुधमार्गी ७।४४
	२६	१५	गु.	२४।१८	वि	९।१५	वृश्चिक	
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	२७	१	शु.	२५।८	अनु.	१०।२६	वृश्चिक	
	२८	२	श.	२६।२९	ज्ये.	१२।८	ध १२।८	
	२९	३	र	२८।१९	मू.	१४।१९	धनु	भ. १५।२४उ. २८।१९या.,
	३०	४	चं.	———	पू. षा.	१६।५५	म.२३।३९	
	३१	४	मं.	६।३०	उ. षा.	१९।४९	मकर	शुक्र कर्क में ७।३०
	१जून	५	बु.	८।५५	श्र.	२२।५०	मकर	
	२	६	गु.	११।२२	ध.	२५।४६	कु. १२।१९	भ. ११।२२ उ. २४।३०या. पंचक (C)
	३	७	शु.	१३।३८	श.	२८।२६	कुम्भ	शुक्र पुष्य में १२।१३
	४	८	श.	१५।३०	पू. भा.	———	मी. २४।४	बुध. कृति. में २४।१६, (D)
	५	९	र.	१६।४८	पू. भा.	६।३७	मीन	भ. २९।६ उ.
	६	१०	चं.	१७।२५	उ. भा.	८।९	मीन	भ. १७।२५ या.
	७	११	मं.	१७।१८	रे.	८।५९	मे. ८।५९	पंचक स. ८।५९
	८	१२	बु.	१६।२५	अ.	९।५	मेष	सूर्य मृग.में१२।५६बुध (E)
	९	१३	गु.	१४।५२	भ	८।२९	वृ.१४।१०	भ. १४।५२ उ.२५।४८या.,
	१०	१४	शु.	१२।४४	कृ.	७।१७	वृष	मंगल मृग. में ९।२८
	११	३०	श.	१०।८	रो.	{५।३५ / २७।३१}	मि.१६।३३	

(A) में २०।३८, (B) मंगल रोहि. में ६।११, बुध पूर्व में उदित १५।४०, (C) प्रा. १२।१९, (D) व. यूरेनस अनु. ३ में, (E) वृष में २१।५६ व. वेंकटेश (प्लूटो) चित्रा ३ में,

मास पक्ष	ता. १९८३	तिथि	वार	घं. मि.	नक्ष.	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	जून१२	१	र.	{७।१३ / २८।६}	आ.	२५।१५	मिथुन	
	१३	३	चं.	२७।५९	पुन	२२।५५	क.१७।२९	
	१४	४	मं.	२१।५२	पु.	२०।३८	कर्क	भ. ११।२५उ. २१।५२ या.,
	१५	५	बु.	१८।५९	आश्ले,	१८।३३	सि.१८।३३	सं. सूर्य मिथुन में १२।१७
	१६	६	गु.	१६।२५	म.	१६।४६	सिंह	व.गुरु अनु. ३में२७।४२ (A)
	१७	७	शु.	१४।१२	पू. फा.	१५।२२	क.२१।८	भ.१४।१२उ.२५।१९या(B)
	१८	८	श.	१२।२७	उ. फा.	१४।२५	कन्या	
	१९	९	र.	११।१२	ह.	१३।५९	तु. २६।०	मंगल मिथुन में २६।४९,
	२०	१०	चं.	१०।२७	चि	१४।२	तुला	भ. २२।२० उ.
	२१	११	मं.	१०।१३	स्वा.	१४।३५	तुला	भ१०।१३या,सू.गा.कर्कमें२८।३७
	२२	१२	बु.	१०।३०	वि	१५।३९	वृ. ९।२३	सूर्य आर्द्रा में ११।५३
	२३	१३	गु.	११।१५	अनु.	१९।१०	वृश्चिक	
	२४	१४	शु.	१२।२७	ज्ये.	१९।६	ध. १९।६	भ. १२।२७ उ. २५।१५या.
	२५	१५	श.	१४।३	मू.	२१।२६	धनु.	बुध मृग. में ९।२९,
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	२६	१	र.	१६।०	पू. षा.	२४।४	धनु	
	२७	२	चं.	१८।१४	उ. षा.	२६।५७	म. ६।४८	
	२८	३	मं.	२०।३८	श्र.	———	मकर	भ.७।२६उ. २०।३८ या (C)
	२९	४	बु.	२३।५	श्र.	५।५८	कु.१९।२७	पंचक प्रा. १९।२७, मंगल*
	३०	५	गु.	२५।२५	ध.	८।५७	कुम्भ	*आर्द्रा में २२।४२
	जुला.१	६	शु.	२७।३०	श.	११।४८	कुम्भ	भ. २६।३० उ., बुध आर्द्रा में (D)
	२	७	श.	२९।७	पू. भा.	१४।१९	मी. ७।४१	भ.१६।१९या., शनि मार्गी§
	३	८	र.	———	उ. भा.	१६।२०	मीन	§५।३१
	४	८	चं.	६।१	रे.	१७।४४	मे.१७।४४	पंचक स.१७।४४
	५	९	मं.	६।२९	अ.	१८।२३	मेष	भ. १८।१५ उ.,
	६	१०	बु.	{६।२ / २८।४८}	भ.	१८।१७	वृ. २४।४	भ.६।२या.,सूर्यपुन.में११।३३,
	७	१२	गु.	२६।५४	कृ.	१७।२६	वृष	
	८	१३	शु.	२४।२०	रो.	१५।५५	मि. २६।५२	भ.२४।२०उ., (E)
	९	१४	श.	२१।१५	मृ.	१३।५०	मिथुन	भ. १०।४८ या.,
	१०	३०	र.	१७।५०	आ.	११।२०	क.२७।१६	

(A) शुक्र आश्लेषा में २०।५९, (B) बुध रोहि. में ५।२७, (C) बुध मिथुन में २१।१९, बुध पूर्व में अस्त १६।१८,(D) २७।५१, शुक्र मघा सिंह में २१।५४, (E) बुध पुनः में ९।३, वेंकटेश (प्लूटो) मार्गी,

भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र चन्द्रसंचार एवं भद्रा आदि (सं २०४०)

मास पक्ष	ता.१९८३	तिथि	वार	घं. मि.	नक्ष.	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	सितं. ८	२	गु.	२५।१४	उ. फा.	१५।३३	कन्या	बुध पश्चिम में अस्त २४।३२
	९	३	शु.	२२।३१	ह.	१३।२२	तु २४।३५	[गुरु अनु. ३ में ९।५१, नेपच्यून मार्गी,]
	१०	४	श.	२०।२८	चि.	११।४८	तुला	भ. ९।२९ उ. २०।२८ या
	११	५	र.	१९।१४	स्वा	१०।५९	वृ. २९।१०	व शुक्र आश्ले कर्क में ८।६
	१२	६	च.	१८।५३	वि.	११।१	वृश्चिक	
	१३	७	मं.	१९।२२	अनु.	११।५४	वृश्चिक	[भ. १९।२२ उ., सूर्य उ.फा. में २१।२६]
	१४	८	बु.	२०।३८	ज्ये.	१३।३४	ध. १३।३४	भ. ८।० या., (A)
	१५	९	गु.	२२।१२	मू.	१५।५३	धनु	शुक्र मार्गी १५।५६
	१६	१०	शु.	२४।५०	पू. पा.	१८।३९	म. २५।२३	
	१७	११	श.	२७।२०	उ. पा.	२१।३९	मकर	भ.१४।५ उ.,२७।२०या.,(B)
	१८	१२	र.	२९।१२	श्र.	२४।४२	मकर	
	१९	१३	चं.	...	ध.	२७।३६	कु. १४।९	पंचक प्रा. १४।९ (C)
	२०	१३	मं.	८।१२	श.	...	कुम्भ	शुक्र मघा सिंह में १४।३८
	२१	१४	बु.	१०।१९	श.	६।१८	मी. २६।५	भ. १०।१९ उ., २३।१३ या.,
	२२	१५	गु.	१२।७	पू. भा.	८।४२	मीन	
आश्विन कृष्ण पक्ष	२३	१	शु.	१३।३४	उ. भा.	१०।४१	मीन	सूर्य सा. तुला में २०।१०,(D)
	२४	२	श.	१४।४१	रे.	१२।३१	मे. १२।३१	[भ. २७।३ उ. पंचक स. १२।३१.]
	२५	३	र.	१५।२६	अ.	१३।५५	मेष	[भ. १५।२६ या., बुध मार्गी २२।४६
	२६	४	चं.	१५।४८	भ.	१४।५६	वृ. २१।५	
	२७	५	मं.	१५।४६	कृ.	१५।३४	वृष	सूर्य हस्त में १३।१.
	२८	६	बु.	१५।१७	रो.	१५।४५	मि. २७।३५	भ. १५।१७ उ. २६।४७ या,
	२९	७	गु.	१४।१७	मृ.	१५।२६	मिथुन	
	३०	८	शु.	१२।४८	आ.	१४।३८	मिथुन	शनि स्वाती २ में १५।४१
	अक्तू. १	९	श.	१०।४८	पुन.	१३।१९	क. ७।४०	[भ. २१।३४ उ., बुध उ. फा. में २६।३३
	२	१०	र.	[८।२० २९।२९	पु.	११।३३	कर्क	[भ. ८।२० या., गुरु अनु. ४ में २२।३७
	३	१२	च.	२६।२२	आश्ले.	९।२५	सि. ९।२५	
	४	१३	मं.	२३।६	म.	[७।३ २८।३०]	सिंह	भ. २३।६ उ., बुध*
	५	१४	बु.	१९।५०	उ. फा	२६।६	क. ९।५४	
	६	३०	गु.	१६।४७	ह.	२३।५४	कन्या	भ. ९।२८ या. कन्या में २१।१७

(A) व बुध सिंह में १३।४, राहु मृग. १ में केतु ज्ये. ३ में ११।५५, (B) स. सूर्य कन्या में ७।३२ मु. ४२ पुण्य-काल १३।५६ या, वक्री बुध पू. फा. में २०।१४, (C) मंगल मघा सिंह में २४।५३, (D) बुध पूर्व में उदित २४।५२

मास पक्ष	ता. १९८३	तिथि	वार	घं. मि.	नक्ष.	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
आश्विन शुक्ल पक्ष	अक्तू. ७	१	शु.	१४।४	चि.	२२।६	तु ११।००	
	८	२	श.	११।५२	स्वा.	२०।५३	तुला	
	९	३	र.	१०।२२	वि.	२०।२३	वृ. १४।३१	भ. २१।५७ उ.,
	१०	४	च	९।३७	अनु.	२०।३९	वृश्चिक	[भ ९।३७ या., सूर्य चित्रा में २५।५५
	११	५	मं	९।४२	ज्ये.	२१।५४	ध. २१।५४	[मंगल पूर्वा. फा. में ११।५३, बुध हस्त में १०।१७,
	१२	६	बु.	१०।३६	मू.	२३।३४	धनु	बुध पूर्व में अस्त १०।४
	१३	७	गु.	१२।१२	पू. पा.	२६।०	धनु	भ. १२।१२ उ., २५।१७ या.,
	१४	८	शु.	१४।२१	उ. पा.	२८।५१	म. ८।४३	शनि अस्त ८।४५
	१५	९	श.	१६।४८	श्र.	...	मकर	शुक्र पू. फा. में २१।३
	१६	१०	र.	१९।१९	श्र.	७।५१	कु. २१।१९	पंचक प्रा. २१।१९
	१७	११	चं.	२१।४३	ध.	१०।४८	कुम्भ	[भ. ८।३१ उ., २१।४३ या., सं. सूर्य तुला मं. (A)
	१८	१२	मं.	२३।४७	श.	१३।११	कुम्भ	बुध चित्रा में २९।१०
	१९	१३	बु.	२५।२७	पू. भा.	१५।५२	मी. ९।१७	
	२०	१४	गु.	२६।३९	उ. भा.	१७।४८	मीन	भ. २६।३९ उ.
	२१	१५	शु.	२७।३३	रे.	१९।१६	मे. १९।१६	[भ. १५।१ या., पंचक समाप्त १९।१६ (B)
कार्तिक कृष्ण पक्ष	२२	१	श.	२७।४२	अ.	२०।१८	मेष	बुध तुला में २६।२७
	२३	२	र.	२७।३७	भ.	२०।५७	वृ. २७।२	सूर्य सा. वृश्चि. में २९।२५
	२४	३	चं.	२७।८	कृ.	२१।१४	वृष	[भ. १५।२२ उ., २७।८या., सूर्य स्वाती में १२।२७]
	२५	४	मं.	२६।२१	रो.	२१।१०	वृष	यूरनेस अनु. ४ में
	२६	५	बु.	२५।१५	मृ.	२०।४८	मि. ९।००	[बुध स्वाती में २५।१८, नेपच्यून मूला २ में,]
	२७	६	गु.	२३।४९	आ.	२०।७	मिथुन	भ. २३।४९ उ.,
	२८	७	शु.	२२।६	पुन.	१९।९	क. १३।२४	भ. १०।५७ या., (C)
	२९	८	श.	२०।६	पु.	१७।५८	कर्क	
	३०	९	र.	१७।५१	आश्ले.	१६।२३	सि. १६।२३	[भ. २८।३८ उ. शुक्र उ.फा. में २३।२५]
	३१	१०	चं.	१५।२५	म.	१४।४१	सिंह	भ. १५।२५ या.,
	नवं० १	११	मं.	१२।५४	पू फा.	१२।५३	क. १८।२५	
	२	१२	बु.	१०।२१	उ. फा.	११।४	कन्या	मंगल उ. फा. में ९।२७,
	३	१३	गु.	७।५४ २९।४२	ह.	९।२२	तु. २०।३७	भ. ७।५४उ.,१८।४८या.,(D)
	४	३०	शु.	२७।५१	चि.	७।५४	तुला	

(A) १९।२८, मु. १५, पुण्य १३।४ उ., (B) गुरु ज्येष्ठा १ में १३।१९, (C) शनि स्वा ३ में २४।५१, (D) बुध विशा. में २८।३०, शुक्र कन्या में ९।१९,

भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं २०४०)

मास पक्ष	ता.१९८४	तिथि	वार	घं. मि.	नक्ष.	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं मि	भद्रा आदि
पौष शुक्ल पक्ष	जन.४	१	बु.	१२।२१	उ. षा.	२९।१३	म. ९।३०	
	५	२	गु.	१४।१८	श्र.	...	मकर	गुरु मूल २ में २१।३१
	६	३	शु.	१६।३४	श्र.	७।५०	कु २१।५	भ. २९।४९ उ., (A)
	७	४	श.	१९।४	ध.	१०।८१	कुम्भ	भ. १९।४ या.,
	८	५	र.	२१।४०	श.	१३।४१	कुम्भ	
	९	६	च.	२४।१०	पू. भा.	१६।३९	मी. ९।५५	शुक्र ज्येष्ठा में १९।५४
	१०	७	मं.	२६।२३	उ. भा.	१९।२४	मीन	भ. २६।२३ उ., बुध मार्गी ३१।२०
	११	८	बु.	२८।७	रे.	२१।४४	मे २१।४४	भ. १५।१५ या., पंचक समाप्त २१।४४ (B)
	१२	९	गु.	२९।१०	अ.	२३।२८	मेष	
	१३	१०	शु.	२९।२८	भ.	२४।२९	वृ. ३०।३३	
	१४	११	श.	२८।५४	कृ.	२४।४२	वृष	भ. १७।११उ.२८।५४या.,(C)
	१५	१२	र.	२७।३३	रो.	२४।७	वृष	
	१६	१३	च.	२५।२७	मृ.	२२।४८	मि. ११।२७	
	१७	१४	मं.	२२।४५	आ.	२०।५२	मिथुन	भ. २२।४५ उ., राहु, रोहि. ३ में केतु ज्येष्ठा १में ३१।११
	१८	१५	बु.	१९।३५	पुन.	१८।२८	क. १३।५	भ. ९।१० या.,
माघ कृष्ण पक्ष	१९	१	गु.	१६।९	पु.	१५।४६	कर्क	
	२०	२	शु.	१२।३६	आश्ले	१२।५७	सि११।५४	भ. २२।५१ उ., गुरु मूल ३ में २८।५८ (D)
	२१	३	श.	[९।७ २९।५१	म.	१०।१३	सिंह	भ. ९।७ या., सूर्य अभिजित में ९।३६
	२२	५	र	२७।०	पू. फा.	[७।४३ २९।३८	क. १३।१२	बुध पू. षा में ७।५२
	२३	६	चं.	२८।४०	ह.	२८।४	कन्या	भ. २४।४० उ.,
	२४	७	मं.	२२।५६	चि.	२७।६	तु. १५।३५	भ. ११।४८ या., सूर्य श्रवण में १६।१५
	२५	८	बु.	२१।५१	स्वा	२६।४७	तुला	सूर्य अभिजित से निवृत्त १३।१४
	२६	९	गु.	२१।२६	वि.	२७।६	वृ. २१।३	
					अनु.	२८।१	वृश्चिक	भ. ९।३२ उ. २१।३८ या
	२७	१०	शु.	२१।३८	ज्ये.	२९।२७	ध. २९।२७	
	२८	११	श.	२२।२४	मू.	३१।१७	धनु.	
	२९	१२	र.	२३।२७	पू. षा.	...	धनु.	भ. २५।१३ उ
	३०	१३	च.	२५।१३	पू. षा.	९।२९	म. १६।७	भ. १४।११ या., शुक्र पू.षा. में १६।२९
	३१	१४	मं.	२७।९				
	फ. १	३०	बु.	२९।१८	उ. षा.	११।५४	मकर	

(A) पंचक प्रा. २१।५, बुध पूर्व में उदित १५।२८, (B) सूर्य उ.षा. में १३।५२, मंगलस्वाती में २३।३८, (C) सं. सूर्य मकर में २०।२४ मु. ३० पुण्य अगले दिन १२।२५ या., (D) शुक्र मूल धनु में१९।१०, सूर्य सा. कुम्भ में २६।३५,

मास पक्ष	ता.१९८४	तिथि	वार	घं. मि.	नक्ष.	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
माघ शुक्ल पक्ष	फर.२	१	गु.	...	श्र.	१४।३८	कु. २८।४	पंचक प्रा. २८।४, बुध उषा. में ९।५४,
	३	१	शु.	७।४०	ध.	१७।२९	कुम्भ	
	४	२	श.	१०।१०	श.	२०।२७	कुम्भ	बुध मकर में २०।१३, प्लूटो वक्री,
	५	३	र.	१२।४३	पू. भा.	२३।२६	मी. १६।४१	भ. २५।५९ उ.
	६	४	चं	१५।१५	उ. भा	२६।२०	मीन	भ. १५।१५ या. (A)
	७	५	मं.	१७।३५	रे.	२८।५९	मे. २८।५९	पंचक स. २८।५९, (B)
	८	६	बु.	१९।३४	अ.	...	मेष	मंगल विशा. में २१।२७,
	९	७	गु.	२१।२	अ.	७।१५	मेष	भ. २१।२उ.,
	१०	८	शु.	२१।४८	भ.	८।५६	वृ. १५।७	भ. ९।२५ या.,
	११	९	श.	२१।४६	कृ.	११।५३	वृष	बुध श्रव. में १७।४५, (C)
	१२	१०	र.	२०।५३	रो.	१०।३	मि. २१।४३	
	१३	११	चं.	१९।१०	मृ.	९।२२	मिथुन	भ. ८।१उ. १९।१० या. (D)
	१४	१२	मं.	१६।४१	आ	[७।५४ २९।४५]	क. २४।१७	
	१५	१३	बु.	१३।३५	पु.	२७।५	कर्क	
	१६	१४	गु	[९।११ ३०।१०]	आश्ले.	२४।०४	सि. २४।४	भ. १०।१ उ., २०।६ या.,
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	१७	१	शु.	२६।१५	म.	२०।५४	सिंहक.	
	१८	२	श.	२२।२५	पू. फा.	१७।४८	२३।६	भ.८।३९उ १८।५४या, (E)
	१९	३	र.	१८।५४	उ. फा.	१४।५७	कन्या	बुध पूर्व में अस्त २९।३५
	२०	४	चं.	१५।५०	ह.	१२।३३	तु २३।४०	
	२१	५	मं.	१३।२५	चि.	१०।४५	तुला	भ. ११।४५उ.२३।१८या.,(F)
	२२	६	बु.	११।४५	स्वा.	९।४९	वृ. २७।२८	
	२३	७	गु.	१०।५१	वि.	९।२३	वृश्चिक	बुध कुम्भ में ३०।३७
	२४	८	शु.	१०।४७	अनु.	९।५३	वृश्चिक	गुरु पू. षा, १ में १९।३६,(G)
	२५	९	श.	११।२७	ज्ये.	११।६	ध ११।६	भ. २४।६ उ.
	२६	१०	र.	१२।४५	मू.	१२।५६	धनु	भ. १२।४५ या.
	२७	११	चं.	१४।३३	पू षा.	१५।१३	म. २१।५२	बुध श.त. में २७।२६
	२८	१२	मं	१६।४१	उ. षा.	१७।५१	मकर	
	२९	१३	बु.	१९।१	श्र.	२०।४१	मकर	भ. १९।१ उ.
	मार्च १	१४	गु.	२१।३१	ध.	२३।३७	कु. १०।९	भ. ८।१६ या.,
	२	३०	शु.	२४।१	श.	२६।३४	कुम्भ	*पंचक प्रा. १०।९

(A) सूर्य धनि. में १९।१८, गुरु मूल ४ में १२।३३, (B) नेपच्यून मूल ३ में, (C) शुक्र उ. षा. में १७।५६, (D) सं. सूर्य कुम्भ में ९।२२ पुण्य १५।४६ या., शुक्र मकर में २९।५७, (E) सूर्य शत में २३।५३, सूर्य सा. मीन में १६।४८, बुध धनि. में ३०।१३, (F) शुक्र श्रवण में ८।४९, (G) शनि वक्री २९।३०,

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं ३० मि., ग्रा. स्टै. टा.)

(१ मई को अयनांश = २३°।३७'।१८")

तारीख सन् १९८३ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.
अप्रैल १४	११।२९।५१।५७	०। ८। ३।२५	०।१२।३६।२९	०।१७।३१।३९	७।१६।५१।२७	११। ७। ०।४७	६। ८। ६।२१	२।४।४७।१९	९। ८	८।१०	-४।१०
१९८३ १५	०। ०।५०।४४	०।२१।२९। ६	०।१३।२०।३८	०।१९। ३।५६	७।१६।४८।१४	११। ८।११।२७	६। ८। १।५०	२।४।४४। ९	९।२९	१३। ९	-३।२३
१६	०। १।४९।२९	१। ५। ६।३२	०।१४। ४।४५	०।२०।३१।४१	७।१६।४४।५०	११। ९।२१। ०	६।७।५७।१८	२।४।४०।५८	९।५१	१७।३३	-२।२३
१७	०। २।४८।१३	१।१८।५२।२७	०।१४।४८।४८	०।२१।५४।४४	७।१६।४१।१६	११।१०।३२।२९	६।७।५२।४५	२।४।३७।४७	१०।१२	२१। ४	-१।१५
१८	०। ३।४६।५४	२। २।४६।१२	०।१५।३२।४८	०।२३।१२।५१	७।१६।३७।३२	११।११।४२।५०	६।७।४८।११	२।४।३४।३६	१०।३३	२३।२२	०। १
१९	०। ४।४५।३३	२।१६।४५।२२	०।१६।१६।४५	०।२४।२५।५५	७।१६।३३।३८	११।१२।५३। ५	६।७।४३।३७	२।४।३१।२५	१०।५४	२४।१५	१।१३
२०	०। ५।४४।१०	३। ०।४९।३४	०।१७। ०।४०	०।२५।३३।४८	७।१६।२९।३४	११।१४। ३।१४	६।७।३९। २	२।४।२८।१५	११।१५	२३।३४	२।२३
२१	०। ६।४२।४५	३।१४।५८।२७	०।१७।४४।३१	०।२६।३६।२१	७।१६।२५।२०	११।१५।१३।१६	६।७।३४।२७	२।४।२५। ४	११।३६	२१।२४	३।२५
२२	०। ७।४१।१७	३।२९। ९।३६	०।१८।२८।१८	०।२७।३३।३०	७।१६।२०।५७	११।१६।२३।११	६।७।२९।५२	२।४।२१।५३	११।५६	१७।५५	४।१५
२३	०। ८।३९।४८	४।१३।२१।३४	०।१९।१२। ३	०।२८।२५। ९	७।१६।१६।२४	११।१७।३२। ०	६।७।२५।१८	२।४।१८।४२	१२।१६	१३।२४	४।४८
२४	०। ९।३८।१६	४।२७।३१।५७	०।१९।५५।४५	०।२९।११।१३	७।१६।११।४२	११।१८।४२।४१	६।७।२०।४३	२।४।१५।३२	१२।३६	८।१०	५। ५
२५	०।१०।३६।४४	५।११।३५।५०	०।२०।३९।२४	०।२९।४९।४०	७।१६। ६।५०	११।१९।५२।१६	६।७।१६। ८	२।४।१२।२१	१२।५६	२।३३	५। ३
२६	०।११।३५। ७	५।२५।२९।३७	०।२१।२२।५८	११। ०।२६।२४	७।१६। १।५०	११।२१। १।४२	६।७।११।३५	२।४। ९।१०	१३।१६	-३। ८	४।४२
२७	०।१२।३३।३०	६। ९। ९।५०	०।२२। ६।३१	११। ०।५५।२७	७।१५।५६।४१	११।२२।११। ३	६।७। ७। १	२।४। ५।५९	१३।३५	-८।३५	४। ६
२८	०।१३।३१।५१	६।२२।३२।१३	०।२२।५०। १	११। १।१८।४८	७।१५।५१।२४	११।२३।२०।१६	६।७। २।२९	२।४। २।४८	१३।५४	-१३।३२	३।१७
२९	०।१४।३०। ९	७। ५।३६। १	०।२३।३३।२६	११। १।३६।२५	७।१५।४५।५८	११।२४।२९।२०	६।६।५७।५७	२।३।५९।३८	१४।१३	-१७।४४	२।१९
३०	०।१५।२८।२६	७।१८।१९।५६	०।२४।१६।५०	११। १।४८।२७	७।१५।४०।२४	११।२५।३८।१७	६।६।५३।२६	२।३।५६।२७	१४।३२	-२१। ०	१।१४
मई १	०।१६।२६।४२	८। ०।४५।४९	०।२५। ०।१०	११। १।५४।५३	७।१५।३४।४२	११।२६।४७। ८	६।६।४८।५७	२।३।५३।१६	१४।५०	-२३।१२	०। ८
२	०।१७।२४।५४	८।१२।५६।५३	०।२५।४३।२७	११। १।५५।५४	७।१५।२८।५२	११।२७।५५।४८	६।६।४४।२९	२।३।५०। ५	१५। ९	-२४।१४	०।५८
३	०।१८।२३। ७	८।२४।५५।५७	०।२६।२६।४२	११। १।५१।३९	७।१५।२२।५४	११।२९। ४।२३	६।६।४०। २	२।३।४६।५५	१५।२७	-२४। ८	-२। ०
४	०।१९।२१।१८	९। ६।४८। २	०।२७। ९।५३	११। १।४२।२३	७।१५।१६।४९	२। ०।१२।४९	६।६।३५।३७	२।३।४३।४४	१५।४४	-२२।५६	-२।५६
५	०।२०।१९।२६	९।१८।३८।३२	०।२७।५३। १	११। १।२८।१९	७।१५।१०।३७	२। १।२१। ५	६।६।३१।१४	२।३।४०।३३	१६। २	-२०।४३	-३।४५
६	०।२१।१७।३४	१०। ०।३१।३७	०।२८।३६। ७	११। १। ९।४८	७।१५। ४।१८	२। २।२९।१४	६।६।२६।५२	२।३।३७।२२	१६।१९	-१७।३७	-४।२४
७	०।२२।१५।४१	१०।१२।३२।४२	०।२९।१९। ९	११। ०।४७।१६	७।१४।५७।५३	२। ३।३७।१४	६।६।२२।३२	२।३।३४।१२	१६।३६	-१३।४६	-४।५३
८	०।२३।१३।४४	१०।२४।४६।५०	११। ०। २। ८	११। ०।२१। ४	७।१४।५१।२१	२। ४।४५। ४	६।६।१८।१५	२।३।३१। १	१६।५२	-९।१८	-५। ८
९	०।२४।११।४७	११। ७।१६।४८	११। ०।४५। ५	०।२९।५१।४९	७।१४।४४।४३	२। ५।५२।४७	६।६।१३। ०	२।३।२७।५०	१७। ९	-४।२२	-५। ९
१०	०।२५। ९।५०	११।२०। ५।४७	११। १।२७।५९	०।२९।१९।५७	७।१४।३७।५८	२। ७। ०।२०	६।६। ९।४७	२।३।२४।३९	१७।२५	०।५३	-४।५५
११	०।२६। ७।४९	०। ३।१५।३३	११। २।१०।४९	०।२८।४६। ८	७।१४।३१। ९	२। ८। ७।४२	६।६। ५।३६	२।३।२१।२८	१७।४१	६।१४	-४।२६
१२	०।२७। ५।४८	०।१६।४४।३८	११। २।५३।३७	०।२८।१०।५५	७।१४।२४।१४	२। ९।१४।५६	६।६। १।२९	२।३।१८।१८	१७।५६	११।२७	-३।४१
१३	०।२८। ३।४६	१। ०।३१।३७	११। ३।३६।२२	०।२७।३५। ०	७।१४।१७।१४	२।१०।२१। ०	६।५।५७।२४	२।३।१५। ७	१८।११	१६।१२	-२।४२
१४	०।२९। १।४०	१।१४।३३।४६	११। ४।१९। ३	०।२६।५८।५७	७।१४।१०।१०	२।११।२८।५२	६।५।५३।२२	२।३।११।५६	१८।२६	२०।१०	-१।३२
१५	०।२९।५९।३५	१।२८।४५।५४	११। ५। १।४२	०।२६।२३।२९	७।१४। ३। ०	२।१२।३५।३५	६।५।४९।२२	२।३। ८।४५	१८।४१	२२।५८	०।१६

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं.३० मि., भा. स्टै. टा.) (१ जून को अयनांश = २३°।३७'।१२")

तारीख सन् १९८३ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.
मई १६	११। ०।५७।२७	२।१३। ४।१५	११। ५।४४।१८	०।२५।४९। ५	७।१३।५५।४७	२।१३।४२। ६	६।५।४५।२७	२।३। ५।३५	१८।५५	२४।१८	१। २
१७	११। १।५५।१९	२।२७।२५।२०	११। ६।२६।५१	०।२५।१६।२८	७।१३।४८।३०	२।१४।४८।२७	६।५।४१।३४	२।३। २।२४	१९। ९	२४। २	२।१७
१८	११। २।५३। ८	३।११।४४।२७	११। ७। ९।२०	०।२४।४६। ६	७।१३।४१।१०	२।१५।५४।३५	६।५।३७।४५	२।२।५९।१३	१९।२३	२२।१२	३।२२
१९	११। ३।५०।५५	३।२५।५९।२३	११। ७।५१।४७	०।२४।१८।२३	७।१३।३३।४६	२।१७। ०।३३	६।५।३३।५९	२।२।५६। २	१९।३६	१८।५८	४।१५
२०	११। ४।४८।४२	४।१०। ८।२८	११। ८।३४।११	०।२३।५३।५२	७।१३।२६।१९	२।१८। ६।१८	६।५।३०।१७	२।२।५२।५१	१९।४९	१४।३९	४।५२
२१	११। ५।४६।२६	४।२४। ८।४७	११। ९।१६।३१	०।२३।३२।५१	७।१३।१८।५०	२।१९।११।५०	६।५।२६।३८	२।२।४९।४१	२०। १	९।३६	५।११
२२	११। ६।४४। ९	५। ७।५९।२२	११। ९।५८।४९	०।२३।१५।३७	७।१३।११।१९	२।२०।१७।१०	६।५।२३। ४	२।२।४६।३०	२०।१४	४। ७	५।१२
२३	११। ७।४१।५१	५।२१।३९।२४	११।१०।४१। ३	०।२३। २।२७	७।१३। ३।४५	२।२१।२२।१८	६।५।१९।३३	२।२।४३।१९	२०।२६	-१।२९	४।५५
२४	११। ८।३९।३१	६। ५। ६।२८	११।११।२३।१४	०।२२।५३।३२	७।१२।५६।१०	२।२२।२७।११	६।५।१६। ६	२।२।४०। ८	२०।३७	-६।५७	४।२२
२५	११। ९।३७। ९	६।१८।२०। १	११।१२। ५।२३	०।२२।४८।५६	७।१२।४८।३४	२।२३।३१।५१	६।५।१२।४४	२।२।३६।५८	२०।४८	-१२। १	३।३५
२६	११।१०।३४।४७	७। १।१९।४५	११।१२।४७।२९	०।२२।४८।५०	७।१२।४०।५७	२।२४।३६।१८	६।५। ९।२५	२।२।३३।४७	२०।५९	-१६।२७	२।३८
२७	११।११।३२।२२	७।१४। ४।१९	११।१३।२९।३१	०।२२।५३।१२	७।१२।३३।१९	२।२५।४०।२९	६।५। ६।११	२।२।३०।३६	२१।१०	-२०। ३	१।३४
२८	११।१२।२९।५६	७।२६।३५। ४	११।१४।११।३०	०।२३। २। ५	७।१२।२५।४०	२।२६।४४।२६	६।५। ३। १	२।२।२७।२५	२१।२०	-२२।३८	०।२७
२९	११।१३।२७।३०	८। ८।५२। ४	११।१४।५३।२७	०।२३।१५।२९	७।१२।१८। २	२।२७।४८। ९	६।४।५९।५६	२।२।२४।१५	२१।३०	-२४। ६	०।४१
३०	११।१४।२५। २	८।२०।५७।४४	११।१५।३५।२१	०।२३।३३।१८	७।१२।१०।२४	२।२८।५१।३५	६।४।५६।५५	२।२।२१। ४	२१।३९	-२४।२४	-१।४६
३१	११।१५।२२।३३	९। २।५५।१४	११।१६।१७।१२	०।२३।५५।३०	७।१२। २।४६	२।२९।५४।४५	६।४।५३।५९	२।२।१७।५३	२१।४८	-२३।३३	-२।४५
जून १	[illegible]	[illegible]	११।१६।५९। ०	०।२४।२२। १	७।११।५५। ९	३। ०।५७।४१	६।४।५१। ८	२।२।१४।४२	२१।५७	-२१।३९	-३।३७
२	[illegible]	[illegible]	११।१७।४०।४६	०।२४।५२।४५	७।११।४७।३४	३। २। ०।१८	६।४।४८।२१	२।२।११।३२	२२। ५	-१८।५०	-४।२०
३	[illegible]	[illegible]	११।१८।२२।२८	०।२५।२७।३६	७।११।३९। ०	३। ३। २।३९	६।४।४५।३९	२।२। ८।२१	२२।१३	-१५।१४	-४।५२
४	[illegible]	[illegible]	११।१९। ४। ८	०।२६। ६।३१	७।११।३२।२७	३। ४। ४।४३	६।४।४३। २	२।२। ५।१०	२२।२०	-११। ०	-५।११
५	[illegible]	[illegible]	११।१९।४५।४५	०।२६।४९।२०	७।११।२४।५७	३। ५। ६।२७	६।४।४०।३०	२।२। १।५९	२२।२७	-६।१६	-५।१६
६	[illegible]	[illegible]	११।२०।२७।१९	०।२७।३६। १	७।११।१७।२९	३। ६। ७।५४	६।४।३८। ३	२।१।५८।४८	२२।३४	-१।११	-५। ७
७	[illegible]	[illegible]	११।२१। ८।५२	०।२८।२६।२७	७।११।१०। ४	३। ७। ९। २	६।४।३५।४२	२।१।५५।३८	२२।४१	४। ६	-४।४३
८	[illegible]	[illegible]	११।२१।५०।२०	०।२९।२०।३१	७।११। २।४२	३। ८। ९।५०	६।४।३३।२५	२।१।५२।२७	२२।४६	९।२१	-४। ३
९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१। ०।१८।१०	७।१०।५५।२३	३। ९।१०।१७	६।४।३१।१४	२।१।४९।१६	२२।५२	१४।२०	-३। ९
१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१। १।१९।२०	७।१०।४८। ८	३।१०।१०।२४	६।४।२९। ८	२।१।४६। ५	२२।५७	१८।४२	-२। १
११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७।१०।४०।५७	३।११।१०। ९	६।४।२७। ७	२।१।४२।५५	२३। २	२२। ३	०।४५
१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७।१०।३३।५०	३।१२। ९।३१	६।४।२५।१२	२।१।३९।४४	२३। ६	२४। २	०।३६
१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७।१०।२६।४८	३।१३। ८।३१	६।४।२३।२२	२।१।३६।३३	२३।१०	२४।२१	१।५५
१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७।१०।१९।५०	३।१४। ७। ६	६।४।२१।३८	२।१।३३।२२	२३।१३	२२।५८	३। ७
१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७।१०।१२।५८	३।१५। ५।१६	६।४।१९।५९	२।१।३०।११	२३।१६	२०। २	४। ६
१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७।१०। ६।११	३।१६। ३। २	६।४।१८।२६	२।१।२७। १	२३।१९	१५।५२	४।४८

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भारतीय स्टैंडर्ड टाईम) (१ जुलाई को अयनांश २३°।३७'।१६")

तारीख सन् १९८३ ई	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.
जून १७	२।१।३८।२५	४।२०।५२।२३	१।२८।१।३९	१।१०।०।११	७।९।५९।३०	३।१७।०।२०	६।४।१६।५९	२।१।२३।५०	२३।२१	१०।५३	५।१२
१८	२।२।३५।४२	५।४।५२।२८	१।२८।४२।४०	१।११।२७।१७	७।९।५२।५५	३।१७।५७।११	६।४।१५।३७	२।१।२०।३९	२३।२३	५।२६	५।१७
१९	२।३।३२।०	५।१८।३४।८	१।२९।२३।३९	१।१२।५७।३०	७।९।४६।२६	३।१८।५३।३४	६।४।१४।२१	२।१।१७।२८	२३।२५	०।१०	५।३
२०	२।४।३०।१६	६।१।५८।७	२।०।४।३५	१।१४।३०।४६	७।९।४०।३	३।१९।४९।२७	६।४।१३।१०	२।१।१४।१८	२३।२६	-५।३९	४।३३
२१	२।५।२७।३०	६।१५।५।५३	२।०।४५।२८	१।१६।७।१	७।९।३३।४७	३।२०।४४।५०	६।४।१२।६	२।१।११।७	२३।२६	-१०।४७	३।५०
२२	२।६।२४।४६	६।२७।५७।४५	२।१।२६।१९	१।१७।४६।१८	७।९।२७।३८	३।२१।३९।४२	६।४।११।७	२।१।७।५६	२३।२६	-१५।२१	२।५५
२३	२।७।२१।५९	७।१०।३५।४६	२।२।७।७	१।१९।२८।३२	७।९।२१।३७	३।२२।३४।१	६।४।१०।१४	२।१।४।४५	२३।२६	-१९।९	१।५३
२४	२।८।१९।१२	७।२३।२।१	२।२।४७।५२	१।२१।१३।३९	७।९।१५।४२	३।२३।२७।४७	६।४।९।२७	२।१।१।३४	२३।२६	-२२।०	०।४६
२५	२।९।१६।२५	८।५।१७।५	२।३।२८।३४	१।२३।१।३९	७।९।९।५५	३।२४।२०।५८	६।४।८।४६	२।०।५८।२४	२३।२५	-२३।४८	०।२१
२६	२।१०।१३।३८	८।१७।२३।५	२।४।९।१५	१।२४।५२।२६	७।९।४।१६	३।२५।१३।३४	६।४।८।११	२।०।५५।१३	२३।२३	-२४।२६	-१।२७
२७	२।११।१०।४९	८।२९।२२।१८	२।४।४९।५२	१।२६।४५।५२	७।८।५८।४५	३।२६।५।३२	६।४।७।४१	२।०।५२।२	२३।२१	-२३।५५	-२।२९
२८	२।१२।८।१	९।११।१५।४७	२।५।३०।२६	१।२८।४१।५३	७।८।५३।२३	३।२६।५६।५२	६।४।७।१८	२।०।४८।५१	२३।१९	-२२।१९	-३।२३
२९	२।१३।५।१३	९।२३।६।२५	२।६।१०।५९	२।०।४०।२२	७।८।४८।८	३।२७।४७।३३	६।४।७।०	२।०।४५।४१	२३।१६	-१९।४६	-४।८
३०	२।१४।२।२४	१०।४।५७।३३	२।६।५१।२८	२।२।४१।४	७।८।४३।२	३।२८।३७।३२	६।४।६।४९	२।०।४२।३०	२३।१३	-१६।२३	-४।४३
जुलाई १	२।१४।५९।३५	१०।१६।५१।३०	२।७।३१।५६	२।४।४३।५३	७।८।३८।५	३।२९।२६।४९	६।४।६।४३	२।०।३९।१९	२३।१०	-१२।२१	-५।६
२	२।१५।५६।४७	१०।२८।५२।२६	२।८।१२।२१	२।६।४८।३३	७।८।३३।१७	४।०।१५।२३	६।४।६।४३	२।०।३६।८	२३।६	-७।४८	-५।१६
३	२।१६।५३।०	११।११।४।५४	२।८।५२।४४	२।८।५४।५१	७।८।२८।३७	४।१।३।१०	६।४।६।४९	२।०।३२।५७	२३।१	-२।५३	-५।११
४	२।१७।५०।१०	११।२३।३२।८	२।९।३३।३	२।११।२।२५	७।८।२४।७	४।१।५०।१०	६।४।७।१	२।०।२९।४७	२२।५७	२।१४	-४।५२
५	२।१८।४८।२३	०।६।१८।४७	२।१०।१३।२१	२।१३।११।७	७।८।१९।४६	४।२।३६।२२	६।४।७।१९	२।०।२६।३६	२२।५२	७।२५	-४।१९
६	२।१९।४५।३५	०।१९।२९।३	२।१०।५३।३७	२।१५।२०।३७	७।८।१५।३५	४।३।२१।४३	६।४।७।४३	२।०।२३।२५	२२।४६	१२।२६	-३।३१
७	२।२०।४२।४७	१।३।४।३६	२।११।३३।४९	२।१७।३०।३३	७।८।११।३३	४।४।६।९	६।४।८।१३	२।०।२०।१४	२२।४०	१७।०	-२।३०
८	२।२१।४०।०	१।१७।६।२०	२।१२।१४।०	२।१९।४०।४४	७।८।७।४१	४।४।४९।४२	६।४।८।४९	२।०।१७।४	२२।३४	२०।४७	-१।१८
९	२।२२।३७।१४	२।१।३३।५३	२।१२।५४।९	२।२१।५०।४८	७।८।३।५९	४।५।३२।१९	६।४।९।३०	२।०।१३।५३	२२।२७	२३।२३	०।१
१०	२।२३।३४।२६	२।१६।२१।४४	२।१३।३४।१४	२।२४।०।३०	७।८।०।२७	४।६।१३।५५	६।४।१०।१८	२।०।१०।४२	२२।२०	२४।२५	१।२२
११	२।२४।३१।४०	३।१।२३।३८	२।१४।१४।१८	२।२६।९।३८	७।७।५७।५	४।६।५४।३०	६।४।११।१२	२।०।७।३१	२२।१३	२३।४३	२।३८
१२	२।२५।२८।५४	३।१६।३१।२९	२।१४।५४।२०	२।२८।१७।५८	७।७।५३।५३	४।७।३३।०	६।४।१२।११	२।०।४।२१	२२।५	२१।१७	३।४३
१३	२।२६।२६।७	४।१।३४।३४	२।१५।३४।१८	३।०।२५।१४	७।७।५०।५२	४।८।१२।२५	६।४।१३।१६	२।०।१।१०	२१।५६	१७।२४	४।३३
१४	२।२७।२३।२२	४।१६।२५।२२	२।१६।१४।१५	३।२।३१।२४	७।७।४८।१	४।८।४९।४१	६।४।१४।२७	१।२९।५७।५९	२१।४८	१२।२८	५।३
१५	२।२८।२०।३६	५।०।५५।५९	२।१६।५४।९	३।४।३६।१२	७।७।४५।२०	४।९।२५।४३	६।४।१५।४५	१।२९।५४।४८	२१।३९	६।५७	५।१३
१६	२।२९।१७।५०	५।१५।३।०	२।१७।३४।०	३।६।३९।३२	७।७।४२।५०	४।१०।०।३०	६।४।१७।७	१।२९।५१।३८	२१।३०	१।१३	५।४
१७	३।०।१५।६	५।२८।४५।४१	२।१८।१३।५०	३।८।४१।२४	७।७।४०।३१	४।१०।३४।१	६।४।१८।३६	१।२९।४८।२७	२१।२०	-४।२५	४।३८
१८	३।१।१२।२०	६।१२।३।४९	२।१८।५३।३७	३।१०।४१।३७	७।७।३८।२३	४।११।६।१०	६।४।२०।१०	१।२९।४५।१६	२१।१०	-९।४२	३।५७

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टै. टा.)

(१ अगस्त को अयनांश = २३°३७'२०")

तारीख सन् १९८३ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.
जुलाई १९	३। २। ९।३५	६।२५। ०।२२	२।१९।३३।२१	३।१२।४०।१०	७।७।३६।२५	४।११।३६।५६	६।४।२१।५१	१।२९।४२। ५	२०।५९	-१४।२४	३। ५
२०	३। ३। ६।५०	७। ७।३९। ४	२।२०।१३। ४	३।१४।२७। २	७।७।३४।३८	४।१२। ६।१५	६।४।२३।३७	१।२९।३८।५४	२०।४९	-१८।२३	२। ५
२१	३। ४। ४। ५	७।२०। २।१७	२।२०।५२।४४	३।१६।३२।१०	७।७।३३। २	४।१२।३३।५९	६।४।२५।२८	१।२९।३५।४४	२०।३७	-२१।२७	१। १
२२	३। ५। १।२१	८। २।१३।५२	२।२१।३२।२१	३।१८।२५।३०	७।७।३१।३७	४।१३। ०।१४	६।४।२७।२६	१।२९।३२।३३	२०।२६	-२३।२८	०। ६
२३	३। ५।५८।३७	८।१४।१७।१७	२।२२।११।५६	३।२०।१७। ८	७।७।३०।२३	४।१३।२४।५०	६।४।२९।२८	१।२९।२९।२२	२०।१४	-२४।२३	-१।११
२४	३। ६।५५।५३	८।२६।१४। ७	२।२२।५१।२९	३।२२। ६।५८	७।७।२९।२०	४।१३।४७।४५	६।४।३१।३७	१।२९।२६।११	२०। २	-२४। ९	-२।१२
२५	३। ७।५३।१०	९। ८। ७। ३	२।२३।३०। ०	३।२३।५५। ४	७।७।२८।२७	४।१४। ८।५७	६।४।३३।५१	१।२९।२३। १	१९।४९	-२२।४९	-३। ७
२६	३। ८।५०।२७	९।१९।५८।३१	२।२४।१०।२८	३।२५।४१।२१	७।७।२७।४६	४।१४।२८।१९	६।४।३६।११	१।२९।१९।५०	१९।३७	-२०।२८	-३।५४
२७	३। ९।४७।४४	१०। १।४९।२४	२।२४।४९।५३	३।२७।२५।५४	७।७।२७।१६	४।१४।४५।५०	६।४।३८।३६	१।२९।१६।३९	१९।२३	-१७।१७	-४।३१
२८	३।१०।४५। ४	१०।१३।४२। ७	२।२५।२९।१८	३।२९। ८।४४	७।७।२६।५७	४।१५। १।२८	६।४।४१। ७	१।२९।१३।२८	१९।१०	-१३।२३	-४।५६
२९	३।११।४२।२२	१०।२५।३९।१९	२।२६। ८।३९	४। ०।४९।४८	७।७।२६।४८	४।१५।१५। ६	६।४।४३।४३	१।२९।१०।१७	१८।५६	-८।५७	-५। ८
३०	३।१२।३९।४२	११। ७।४२।३८	२।२६।४७।५९	४। २।२९। ९	७।७।२६।५१	४।१५।२६।४३	६।४।४६।२५	१।२९। ७। ७	१८।४२	-४। ९	-५। ७
३१	३।१३।३७। ४	११।१९।५५।३५	२।२७।२७।१६	४। ४। ६।४६	७।७।२७। ५	४।१५।३६।१७	६।४।४९।१२	१।२९। ३।५६	१८।२८	०।५३	-४।५१
अगस्त १	३।१४।३४।२५	०। २।२२।११	२।२८। ६।३१	४। ५।४२।३८	७।७।२७।३०	४।१५।४३।४१	६।४।५२। ४	१।२९। ०।४५	१८।१३	५।५८	-४।२३
२	३।१५।३१।४९	०।१५। ५।१२	२।२८।४५।४५	४। ७।१६।४९	७।७।२८। ५	४।१५।४८।५७	६।४।५५। २	१।२८।५७।३४	१७।५८	१०।५६	-३।४०
३	३।१६।२९।१४	०।२८। ९। २	२।२९।२४।५७	४। ८।४९।१६	७।७।२८।५२	४।१५।५१।५६	६।४।५८। ५	१।२८।५४।२४	१७।४३	१५।३३	-२।४५
४	३।१७।२६।३८	१।११।३७।४०	३। ०। ४। ५	४।१०।१९।४७	७।७।२९।५०	४।१५।५२।४०	६।५। १।१३	१।२८।५१।१३	१७।२७	१९।३३	-१।४०
५	[illegible]	१।२५।३२।२९	३। ०।४३।१३	४।११।४८।५६	७।७।३०।५८	४।१५।५१। ७	६।५। ४।२६	१।२८।४८। २	१७।११	२२।३४	०।२६
६	[illegible]	२। ९।४८। १	३। १।२२।१९	४।१३।१६। ९	७।७।३२।१७	४।१५।४७।१५	६।५। ७।४५	१।२८।४४।५१	१६।५५	२४।१५	०।५१
७	[illegible]	२।२४।४०।५४	३। २। १।२२	४।१४।४१।३३	७।७।३३।४७	४।१५।४०।५६	६।५।११। ८	१।२८।४१।४०	१६।३९	२४।१७	२। ७
८	[illegible]	[illegible]	३। २।४०।२३	४।१६। ५।११	७।७।३५।२८	४।१५।३२।२०	६।५।१४।३७	१।२८।३८।३०	१६।२२	२२।३४	३।१६
९	[illegible]	[illegible]	३। ३।१९।२२	४।१७।२६।५९	७।७।३७।२०	४।१५।२१।२२	६।५।१८।११	१।२८।३५।१९	१६। ५	१९।१२	४।११
१०	[illegible]	[illegible]	३। ३।५८।२०	४।१८।४६।५५	७।७।३९।२३	४।१५। ७। ०	६।५।२१।५०	१।२८।३२। ८	१५।४८	१४।३२	४।४८
११	[illegible]	[illegible]	३। ४।३७।१६	४।२०। ४।५३	७।७।४१।३६	४।१४।५२।१८	६।५।२५।३३	१।२८।२८।५७	१५।३०	९। १	५। ५
१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४।२१।२०।५५	७।७।४३। ०	४।१४।३४।१४	६।५।२९।२२	१।२८।२५।४७	१५।१२	३। ६	५। १
१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७।७।४६।३४	४।१४।१३।५६	६।५।३३।१५	१।२८।२२।३६	१४।५४	-२।४८	४।३८
१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७।७।४९।१९	४।१३।५१।२८	६।५।३७।१३	१।२८।१९।२५	१४।३६	-८।२३	३।५९
१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७।७।५२।१५	४।१३।२६।५३	६।५।४१।१६	१।२८।१६।१४	१४।१८	-१३।२३	३। ९
१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७।७।५५।२१	४।१३। ०।१३	६।५।४५।२४	१।२८।१३। ३	१३।५९	-१७।३७	२।१०
१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७।७।५८।३७	४।१२।३१।४०	६।५।४९।३६	१।२८। ९।५३	१३।४०	-२०।५६	१। ७
१८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४।१२। १।२५	६।५।५३।५३	१।२८। ६।४२	१३।२१	-२३।१३	०। २
१९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४।११।२९।३०	६।५।५८।१४	१।२८। ३।३१	१३। २	-२४।२३	-१। २

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भारतीय स्टैंडर्ड टाइम)

(१ सितम्बर को अयनांश २३°।३७'।२४")

तारीख सन् १९८३ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.
अगस्त २०	४। २।४८। ४	८।२३।१७।४३	३।१०।२६। ०	५। ०। ९।२९	७। ८। ९।२८	४।१०।५६।१४	६।६। २।३९	११२८। ०।२०	१२।४२	-२४।२४	-२। २
२१	४। ३।४५।४८	९। ५। ९।१४	३।११। ४।३५	५। १। ४। ५	७। ८।१३।२५	४।१०।२१।३५	६।६। ७।१०	११२७।५७।१०	१२।२३	-२३।१७	-२।५७
२२	४। ४।४३।३४	९।१६।५९।५४	३।११।४३। ८	५। १।५५।४३	७। ८।१७।३२	४। ९।४६। ३	६।६।११।४४	११२७।५३।५९	१२। ३	-२१। ९	-३।४४
२३	४। ५।४१।२०	९।२८।५१। ४	३।१२।२१।३८	५। २।४४।१०	७। ८।२१।४९	४। ९। ९।४४	६।६।१६।२३	११२७।५०।४८	११।४३	-१८। ७	-४।२१
२४	४। ६।३९। ७	१०।१०।४४।५९	३।१३। ०। ६	५। ३।२९।१७	७। ८।२६।१६	४। ८।३२।४६	६।६।२१। ६	११२७।४७।३७	११।२२	-१४।२०	-४।४६
२५	४। ७।३६।५७	१०।२२।४३।३६	३।१३।३८।३३	५। ४।१०।५१	७। ८।३०।५३	४। ७।५५।३२	६।६।२५।५३	११२७।४४।२६	११। २	-९।५९	-५। ०
२६	४। ८।३४।४८	११। ४।४७।१३	३।१४।१६।५८	५। ४।४८।४१	७। ८।३५।३९	४। ७।१८। ९	६।६।३०।४५	११२७।४१।१६	१०।४१	-५।१२	-५। ०
२७	४। ९।३२।४०	११।१६।५७।४८	३।१४।५५।२०	५। ५।२२।३०	७। ८।४०।३५	४। ६।४०।५६	६।६।३५।४०	११२७।३८। ५	१०।२०	०।११	-४।४६
२८	४।१०।३०।३४	११।२९।१७।३८	३।१५।३३।४२	५। ५।५२। ७	७। ८।४५।४१	४। ६। ४।१०	६।६।४०।४०	११२७।३४।५४	९।५९	४।५४	-४।१९
२९	४।११।२८।३०	०।११।४८। २	३।१६।१२। ०	५। ६।१७।१४	७। ८।५०।५६	४। ५।२८। ५	६।६।४५।४३	११२७।३१।४३	९।३८	९।५३	-३।३९
३०	४।१२।२६।२७	०।२४।३२।४९	३।१६।५०।१७	५। ६।३७।३६	७। ८।५६।२०	४। ४।५२।४१	६।६।५०।५१	११२७।२८।३३	९।१७	१४।३४	-२।४८
३१	४।१३।२४।२७	१। ७।३४।११	३।१७।२८।३३	५। ६।५२।५६	७। ९। १।५४	४। ४।१८।३२	६।६।५६। २	११२७।२५।२२	८।५६	१८।४०	-१।४७
सितं. १	४।१४।२२।२८	१।२०।५५।५४	३।१८। ६।४६	५। ७। २। ०	७। ९। ७।३७	४। ३।४५।४३	६।७। १।१८	११२७।२२।११	८।३४	२१।५५	०।३८
२	४।१५।२०।३१	२। ४।४१।२१	३।१८।४४।५८	५। ७। ७।२८	७। ९।१३।२९	४। ३।१४।१७	६।७। ६।३७	११२७।१९। ०	८।१२	२४। ०	०।३५
३	४।१६।१८।३७	२।१८।५०।५६	३।१९।२३। ८	५। ७। ६। ७	७। ९।१९।३१	४। २।४४।३५	६।७।११। ०	११२७।१५।५०	७।५०	२४।३८	१।४७
४	४।१७।१६।४३	३। ३।२४।३५	३।२०। १।१७	५। ६।५८।४५	७। ९।२५।४१	४। २।१६।३८	६।७।१७।२६	११२७।१२।३९	७।२८	२३।३७	२।५५
५	४।१८।१४।५२	३।१८।१९।२०	३।२०।३९।२३	५। ६।४५। ५	७। ९।३१। ०	४। १।५०।३८	६।७।२२।५६	११२७। ९।२८	७। ६	२०।५५	३।५२
६	४।१९।१३। ४	४। ३।२७। ९	३।२१।१७।२८	५। ६।२५। ८	७। ९।३८।२८	४। १।२६।४६	६।७।२८।३०	११२७। ६।१७	६।४४	१६।४६	४।३४
७	४।२०।११।१७	४।१८।३९। ७	३।२१।५५।३१	५। ५।५८।४६	७। ९।४५। ४	४। १। ५। ५	६।७।३४। ७	११२७। ३। ६	६।२२	११।३१	४।५७
८	४।२१। ९।३१	५। ३।४५। ४	३।२२।३३।३२	५। ५।२६। ५	७। ९।५१।५०	४। ०।४५।३०	६।७।३९।४८	११२६।५९।५६	५।५९	५।३६	४।५९
९	४।२२। ७।४९	५।१८।३३।३७	३।२३।११।३१	५। ४।४७।१४	७। ९।५८।४४	४। ०।२८।२०	६।७।४५।३२	११२६।५६।४५	५।३७	०।३१	४।४०
१०	४।२३। ६। ७	६। २।५७।४०	३।२३।४९।२९	५। ४। २।३८	७।१०। ५।४६	४। ०।१३।२९	६।७।५१।२०	११२६।५३।३४	५।१४	-६।२८	४। ४
११	४।२४। ४।२७	६।१६।५३।२३	३।२४।२७।२४	५। ३।१२।४५	७।१०।१२।५६	४। ०। १। ५	६।७।५७।१०	११२६।५०।२३	४।५१	-११।५४	३।१४
१२	४।२५। २।४९	७। ०।१८।४८	३।२५। ५।१७	५। २।१८।२०	७।१०।२०।१५	३।२९।५९। ४	६।८। ३। ४	११२६।४७।१३	४।२९	-१६।३४	२।१६
१३	४।२६। १।१२	७।१३।१६।३०	३।२५।४३। ९	५। १।२०।१४	७।१०।२७।४२	३।२९।४३।२२	६।८। ९। १	११२६।४४। २	४। ६	-२०।१८	१।११
१४	४।२६।५९।३७	७।२५।५०।५८	३।२६।२०।५८	५। ०।१९।३३	७।१०।३५।१७	३।२९।३८।१०	६।८।१५। १	११२६।४०।५१	३।४३	-२२।५६	०। ६
१५	४।२७।५८। ४	८। ८। ६।१३	३।२६।५८।४६	४।२९।१७।३५	७।१०।४३। ०	३।२९।३५।२१	६।८।२१। ४	११२६।३७।४०	३।२०	-२४।२५	०।५९
१६	४।२८।५६।३२	८।२०। ८। ५	३।२७।३६।३२	४।२८।१५।३७	७।१०।५०।५१	३।२९।३४।५२	६।८।२७।१०	११२६।३४।२९	२।५७	-२४।४२	-१।५९
१७	४।२९।५५। २	९। २। २।११	३।२८।१४।१५	४।२७।१५।१४	७।१०।५८।४९	३।२९।३६।४२	६।८।३३।१९	११२६।३१।१९	२।३४	-२३।५२	-२।५४
१८	५। ०।५३।३४	९।१३।५२।११	३।२८।५१।५७	४।२६।१७।५०	७।११। ६।५६	३।२९।४०।५२	६।८।३९।३१	११२६।२८। ८	२।१०	-२१।५७	-३।४१
१९	५। १।५२। ६	९।२५।४२।२८	३।२९।२९।३६	४।२५।२४।५५	७।११।१५।१०	३।२९।४७।१६	६।८।४५।४५	११२६।२४।५७	१।४७	-१९। ६	-४।१८
२०	५। २।५०।४०	१०। ७।३६।३६	४। ०। ७।१४	४।२४।३७।५०	७।११।२३।३१	३।२९।५५।५४	६।८।५२। २	११२६।२१।४६	१।२४	-१५।२७	-४।४४

(१ अक्तूबर को अयनांश = २३°।३७'।२८")

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. टै. टा.)

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चं. क्रां.	चं. श.
सन् १९८३ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
सितं. २१	५। ३।४९।१७	१०।१९।३५।५५	४। ०।४८।५०	४।२३।५७।५१	७।११। ३।१ ०	४। ०। ६।४०	६। ८।५८।२२	१।२६।१८।३६	१। १	·११।१०	-४।५८
२२	५। ४।४७।५५	११। १।४२।२५	४। १।२२।२४	४।२३।२५।५३	७।११।४०।३६	४। ०।१९।३२	६। ९। ४।४४	१।२६।१५।२५	०।३७	-६।२५	-४।५८
२३	५। ५।४६।३५	११।१३।५७।३३	४। १।५९।५५	४।२३। २।५४	७।११।४९।१९	४। ०।३४।२९	६। ९।११। ९	१।२६।१२।१४	०।१४	-१।२१	-४।४५
२४	५। ६।४५।१७	११।२६।२०।५६	४। २।३७।२६	४।२२।४९।२३	७।११।५८। ९	४। ०।५१।२७	६। ९।१७।३६	१।२६। ९। ३	०। ९	. ३।५०	-४।१८
२५	[illegible] ७।४४। १	०। ८।५३।४०	४। ३।१८।५४	४।२२।४५।४५	७।१२। ७। ७	४। १।१०।१८	६। ९।२४। ६	१।२६। ५।५३	०।३३	८।५६	-३।३९
२६	५। ८।४२।४६	०।२१।३७। ६	४। ३।५२।२०	४।२२।५२। ९	७।१२।१६।११	४। १।३१। ३	६। ९।३०।३८	१।२६। २।४२	०।५६	१३।४५	-२।४८
२७	५। ९।४१।३५	१। ४।३१।२९	४। ४।२९।४४	४।२३। ८।३१	७।१२।२५।२३	४। १।५३।३९	६। ९।३७।१३	१।२५।५९।३१	-१।१९	१८। १	-१।४७
२८	५।१०।४०।२५	१।१७।३९। ६	४। ५। ७। ७	४।२३।३४।३७	७।१२।३४।४१	४। २।१७।५९	६। ९।४३।४९	१।२५।५६।२०	-१।४३	२१।२९	०।४०
२९	५।११।३९।१८	२। १। २।३५	४। ५।४४।२७	४।२४।१०। ६	७।१२।४४। ५	४। २।४४। ३	६। ९।५०।२८	१।२५।५३। ९	-२। ६	२३।५१	०।३१
३०	५।१२।३८।१२	२।१४।४२।५५	४। ६।२१।४६	४।२४।५४।२७	७।१२।५३।३७	४। ३।११।४३	६। ९।५७। ९	१।२५।४९।५९	-२।२९	२४।५२	१।४२
अक्तूबर १	५।१३।३७।१०	२।२८।४२। ४	४। ६।५९। ४	४।२५।४७। ७	७।१३। ३।१४	४। ३।४१। २	६।१०। ३।५२	१।२५।४६।४८	-२।५३	२४।२१	२।४८
२	५।१४।३६।११	३।१३। १।४०	४। ७।३६।१९	४।२६।४७।२५	७।१३।१२।५९	४। ४।११।५३	६।१०।१०।३७	१।२५।४३।३७	-३।१६	२२।१४	३।४५
३	५।१५।३५।१२	३।२७।३५।३५	४। ८।१३।३२	४।२७।५४।३८	७।१३।२२।४९	४। ४।४४।११	६।१०।१७।२४	१।२५।४०।२६	-३।३९	१८।४०	४।२९
४	५।१६।३४।१७	४।१२।२२।५२	४। ८।५०।४८	४।२९। ८। ५	७।१३।३२।४६	४। ५।१७।५७	६।१०।२४।१३	१।२५।३७।१६	-४। ३	१३।५२	४।५५
५	५।१७।३३।२४	४।२७।१६।१२	४। ९।२७।५८	५। ०।२७। ३	७।१३।४२।४९	४। ५।५३। ४	६।१०।३१। ३	१।२५।३४। ५	-४।२६	८।१३	५। २
६	५।१८।३२।३२	५।१२। ५।५१	४।१०। ५। १	५। १।५०।४६	७।१३।५२।५८	४। ६।२९।३०	६।१०।३७।५६	१।२५।३०।५४	-४।४९	२। ८	४।४९
७	५।१९।३१।४४	५।२६।४८।३८	४।१०।४२। ८	५। ३।१८।४१	७।१४। ३।१३	४। ७। ७।१४	६।१०।४४।५०	१।२५।२७।४३	-५।१२	-४। ०	४।१६
८	[illegible]	६।११। १।३९	४।११।१९।१२	५। ४।५०। ७	७।१४।१३।३४	४। ७।४६।१२	६।१०।५१।४६	१।२५।२४।३२	-५।३५	-९।४९	३।२८
९	[illegible]	६।२४।५६।३५	४।११।५६।१३	५। ६।२४।२७	७।१४।२४। १	४। ८।२६।१७	६।१०।५८।४३	१।२५।२१।२२	-५।५८	-१४।५८	२।२९
१०	[illegible]	७। ८।२३।४५	४।१२।३३।१३	५। ८। १।१६	७।१४।३४।३३	४। ९। ७।३३	६।११। ५।४१	१।२५।१८।११	-६।२१	-१९।१३	१।२३
११	[illegible]	[illegible]	४।१३।१०।१३	५। ९।४०। १	७।१४।४५।११	४। ९।४९।५५	६।११।१२।४१	१।२५।१५। ०	-६।४३	-२२।२२	०।१४
१२	[illegible]	[illegible]	४।१३।४७। ७	५।११।२०।१९	७।१४।५५।५४	४।१०।३३।१८	६।११।१९।४३	१।२५।११।४९	-७। ६	-२४।१८	०।५३
१३	[illegible]	[illegible]	४।१४।२४। ०	५।१३। १।४९	७।१५। ६।४३	४।११।१७।४३	६।११।२६।४५	१।२५। ८।३९	-७।२९	-२५। ०	-१।५६
१४	[illegible]	[illegible]	४।१५। ०।५२	५।१४।४४।१६	७।१५।१७।३७	४।१२। ३। ६	६।११।३३।४९	१।२५। ५।२८	-७।५१	-२४।२९	-२।५३
१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५।१६।२७।१२	७।१५।२८।३६	४।१२।४९।२४	६।११।४०।५४	१।२५। २।१७	-८।१३	-२२।५१	-३।४१
१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५।१८।१०।३०	७।१५।३९।४०	४।१३।३६।३८	६।११।४७। ०	१।२४।५९। ६	-८।३६	-२०।१४	-४।२०
१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५।१९।५४।१३	७।१५।५०।४९	४।१४।२४।४३	६।११।५४। ७	१।२४।५५।५५	-८।५८	-१६।४६	-४।४८
१८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५।२१।३८।२१	७।१६। २। ३	४।१५।१३।३८	६।१२। २।१५	१।२४।५२।४५	-९।२०	-१२।३८	-५। ३
१९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४।१६। ३।२४	६।१२। ९।२३	१।२४।४९।३४	-९।४२	-७।५७	-५। ५
२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४।१६।५३।५५	६।१२।१६।३३	१।२४।४६।२३	-१०। ३	-२।५४	-४।५३
२१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४।१७।४५।१२	६।१२।२३।४३	१।२४।४३।१२	-१०।२५	२।२०	-४।२७
२२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४।१८।३७।१३	६।१२।३०।५४	१।२४।४०। २	-१०।४६	७।३६	-३।४८

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टै. टा.)

(१ नवम्बर को अयनांश = २३°।३७'।८")

तारीख सन् १९८३ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.
अक्तू. २३	६। ५।२२।५८	०।१८।१६।५३	४।२०।३०।५४	६। ०।१३। १	७।१६।५९।२५	४।१९।२९।५६	६।१२।३८। ५	१।२४।३६।५१	-११। ८	१२।३७	-२।५६
२४	६। ६।२२।४२	१। १।२०। ८	४।२१। ७।२३	६। १।५४।५८	७।१७।११। ७	४।२०।२३।२१	६।१२।४५।१८	१।२४।३३।४०	-११।२९	१७।१०	-१।५४
२५	६। ७।२२।२६	१।१४।३५।११	४।२१।४३।५०	६। ३।३६।२५	७।१७।२२।५३	४।२१।१७।२५	६।१२।५२।३०	१।२४।३०।२९	-११।५०	२०।५६	०।४५
२६	६। ८।२२।१३	१।२८। ०।३८	४।२२।२०।१४	६। ५।१७।२४	७।१७।३४।४४	४।२२।१२। ७	६।१२।५९।४३	१।२४।२७।१८	-१२।१०	२३।३८	०।२७
२७	६। ९।२२। २	२।११।३६।५७	४।२२।५६।३७	६। ६।५७।५५	७।१७।४६।३८	४।२३। ७।२७	६।१३। ६।५६	१।२४।२४। ८	-१२।३१	२४।५९	१।३९
२८	६।१०।२१।५३	२।२५।२४।४७	४।२३।३२।५७	६। ८।३७।५३	७।१७।५८।३७	४।२४। ३।२३	६।१३।१४।१०	१।२४।२०।५७	-१२।५१	२४।५०	२।४७
२९	६।११।२१।४७	३। ९।२३। १	४।२४। ९।१५	६।१०।१७।२२	७।१८।१०।४०	४।२४।५९।५३	६।१३।२१।२४	१।२४।१७।४६	-१३।११	२३। ८	३।४५
३०	६।१२।२१।४३	३।२३।३१।४१	४।२४।४५।३१	६।११।५६।२२	७।१८।२२।४७	४।२५।५६।५९	६।१३।२८।३८	१।२४।१४।३५	-१३।३१	१९।५९	४।३०
३१	६।१३।२१।४१	४। ७।४९।५०	४।२५।२१।४४	६।१३।३४।५०	७।१८।३४।५७	४।२६।५४।३६	६।१३।३५।५२	१।२४।११।२५	-१३।५१	१५।३६	४।५९
नवं. १	६।१४।२१।४१	४।२२।१३।३०	४।२५।५७।५५	६।१५।१२।५१	७।१८।४७।१२	४।२७।५२।४४	६।१३।४३। ७	१।२४। ८।१४	-१४।११	१०।२०	५।१०
२	६।१५।२१।४५	५। ६।३९। ६	४।२६।३४। ४	६।१६।५०।२३	७।१८।५९।३०	४।२८।५१।२४	६।१३।५०।२१	१।२४। ५। ३	-१४।३०	४।२९	५। १
३	६।१६।२१।४९	५।२१। १।५८	४।२७।१०।१०	६।१८।२७।२७	७।१९।११।५२	४।२९।५०।३२	६।१३।५७।३५	१।२४। १।५२	-१४।४९	-१।३५	४।३३
४	६।१७।२१।५६	६। ५।१५।१५	४।२७।४६।१३	६।२०। ४। ३	७।१९।२४।१७	५। ०।५०। ९	६।१४। ४।४९	१।२३।५८।४२	-१५। ८	-७।३१	३।४९
५	६।१८।२२। ५	६।१९।१४।१४	४।२८।२२।१५	६।२१।४०।१६	७।१९।३६।४६	५। १।५०।१४	६।१४।१२। ३	१।२३।५५।३१	-१५।२६	-१२।५९	२।५१
६	६।१९।२२।१५	७। २।५५।१९	४।२८।५८।१४	६।२३।१५। ०	७।१९।४९।१८	५। २।५०।४४	६।१४।१९।१६	१।२३।५२।२०	-१५।४५	-१७।४२	१।४५
७	६।२०।२२।२८	७।१६।१४।५१	४।२९।३४।१०	६।२४।५१।२३	७।२०। १।५३	५। ३।५१।४२	६।१४।२६।२९	१।२३।४९। ९	-१६। ३	-२१।२३	०।३४
८	६।२१।२२।४४	७।२९।१२।४८	५। ०।१०। ४	६।२६।२६।२२	७।२०।१४।३२	५। ४।५३। ४	६।१४।३३।४२	१।२३।४५।५९	-१६।२१	-२३।५२	०।३७
९	६।२२।२२।५८	८।११।५०।५०	५। ०।४५।५४	६।२८। ०।५७	७।२०।२७।१३	५। ५।५४।४८	६।१४।४०।५४	१।२३।४२।४८	-१६।३८	-२५। ४	-१।४४
१०	६।२३।२३।१७	८।२४।१०।३८	५। १।२१।४२	६।२९।३५।१२	७।२०।३९।५८	५। ६।५६।५७	६।१४।४८। ६	१।२३।३९।३७	-१६।५५	-२४।५९	-२।४५
११	६।२४।२३।३६	९। ६।१६।३१	५। १।५७।२८	७। १। ९। ८	७।२०।५२।४५	५। ७।५९।२९	६।१४।५५।१७	१।२३।३६।२६	-१७।१२	-२३।४२	-३।३७
१२	६।२५।२३।५६	९।१८।१३।३०	५। २।३३। ९	७। २।४२।४१	७।२१। ५।३५	५। ९। २।२०	६।१५। २।२६	१।२३।३३।१५	-१७।२९	-२१।२३	-४।१९
१३	६।२६।२४।१८	१०। ०। ५।३०	५। ३। ८।४९	७। ४।१५।५७	७।२१।१८।२८	५।१०। ५।३४	६।१५। ९।३६	१।२३।३०। ५	-१७।४५	-१८।१०	-४।५०
१४	६।२७।२४।४२	१०।११।५७।५५	५। ३।४४।२६	७। ५।४८।५६	७।२१।३१।२४	५।११। ९। ८	६।१५।१६।४४	१।२३।२६।५४	-१८। १	-१४।१४	-५। ९
१५	६।२८।२५। ५	१०।२३।५५।५६	५। ४।१९।५९	७। ७।२१।३५	७।२१।४४।२२	५।१२।१२। ०	६।१५।२३।५१	१।२३।२३।४३	-१८।१७	-९।४३	-५।१४
१६	६।२९।२५।३२	११। ६। २।४८	५। ४।५५।३०	७। ८।५३। ०	७।२१।५७।२२	५।१३।१७।१२	६।१५।३०।५८	१।२३।२०।३२	-१८।३२	-४।४७	-५। ५
१७	७। ०।२५।५९	११।१८।२२।३३	५। ५।३०।५८	७।१०।२६। ८	७।२२।१०।२५	५।१४।२१।४४	६।१५।३८। ३	१।२३।१७।२१	-१८।४७	०।२५	-४।४३
१८	७। १।२६।२७	०। ०।५८।१९	५। ६। ६।२२	७।११।५७। ०	७।२२।२३।३०	५।१५।२६।३२	६।१५।४५। ७	१।२३।१४।११	-१९। २	५।४३	-४। ६
१९	७। २।२६।५७	०।१३।५०।३५	५। ६।४१।४३	७।१३।२९।३५	७।२२।३६।३७	५।१६।३१।३८	६।१५।५२।१०	१।२३।११। ०	-१९।१७	१०।५५	-३।१६
२०	७। ३।२७।२८	०।२७। ०।०२	५। ७।१७। १	७।१५। ०।५७	७।२२।४९।४७	५।१७।३७। १	६।१५।५९।११	१।२३। ७।४९	-१९।३१	१५।४५	-२।१५
२१	७। ४।२८। १	११।१०।२६।४४	५। ७।५२।१६	७।१६।३२। २	७।२३। २।५९	५।१८।४२।४१	६।१६। ६।११	१।२३। ४।३८	-१९।४४	१९।५४	-१।१५
२२	७। ५।२८।३४	१।२४। ७।२१	५। ८।२७।२८	७।१८। २।५२	७।२३।१६।१२	५।१९।४८।३६	६।१६।१३।१०	१।२३। १।२८	-१९।५८	२३। ३	०।१०
२३	७। ६।२९।११	२। ८। ०।३३	५। ९। २।३७	७।१९।३३।२६	७।२३।२९।२८	५।२०।५४।४८	६।१६।२०। ७	१।२२।५८।१७	-२०।११	२४।५२	१।२६

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मिं., भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ दिसं. को अयनांश २३°।३७'।३६")

तारीख सन् १९८३ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.
नवं. २४	७। ७।२९।४७	२।२२। २।१८	५। ९।३७।४२	७।२१। ३।४२	७।२३।४२।४५	५।२२। १।१५	६।१६।२७। ३	१।२२।५५। ६	-२०।२३	२५। ७	२।३७
२५	७। ८।३०।२६	३। ६।१०।१४	५।१०।१२।४४	७।२२।३३।४१	७।२३।५६। ४	५।२३। ७।५६	६।१६।३३।५७	१।२२।५१।५५	-२०।३६	२३।४६	३।४०
२६	७। ९।३१। ६	३।२०।२२। ७	५।१०।४७।४३	७।२४। ३।२०	७।२४। ९।२५	५।२४।१४।५२	६।१६।४०।४९	१।२२।४८।४५	-२०।४७	२०।५५	४।२९
२७	७।१०।३१।४९	४। ४।३४।१९	५।११।२२।३९	७।२५।३२।३९	७।२४।२२।४८	५।२५।२२। ३	६।१६।४७।४०	१।२२।४५।३४	-२०।५९	१६।४८	५। २
२८	७।११।३२।३३	४।१८।४५। ६	५।११।५७।३१	७।२७। १।३२	७।२४।३६।१२	५।२६।२९।२७	६।१६।५४।२९	१।२२।४२।२३	-२१।१०	११।४६	५।१६
२९	७।१२।३३।१८	५। २।५२।५४	५।१२।३२।२०	७।२८।३०। १	७।२४।४९।३७	५।२७।३७। ४	६।१७। १।१६	१।२२।३९।१२	-२१।२१	६। ८	५।११
३०	७।१३।३४। ६	५।१६।५४।२५	५।१३। ७। ५	७।२९।५७।५९	७।२५। ३। ५	५।२८।४४।५५	६।१७। ८। १	१।२२।३६। १	-२१।३१	०।१४	४।४८
दि. १	७।१४।३४।५४	६। ०।४८।३६	५।१३।४१।४६	८। १।२५।२२	७।२५।१६।३३	५।२९।५२।५७	६।१७।१४।४४	१।२२।३२।५१	-२१।४१	-५।३८	४। ८
२	७।१५।३५।४४	६।१४।३२। ८	५।१४।१६।२५	८। २।५२। ७	७।२५।३०। ३	६। १। १।१३	६।१७।२१।२५	१।२२।२९।४०	-२१।५०	-११।१०	३।१४
३	७।१६।३६।३७	६।२८। ३।३०	५।१४।५०।५९	८। ४।१८। ७	७।२५।४३।३३	६। २। ९।४०	६।१७।२८। ४	१।२२।२६।२९	-२१।५९	-१६। ६	२।१०
४	७।१७।३७।२९	७।११।२९।२७	५।१५।२५।२९	८। ५।४३।१३	७।२५।५७। ५	६। ३।१८।१८	६।१७।३४।४०	१।२२।२३।१८	-२२। ८	-२०। ९	१। ०
५	७।१८।३८।२३	७।२४।२३।४०	५।१५।५९।५६	८। ७। ७।१९	७।२६।१०।३८	६। ४।२७। ७	६।१७।४१।१४	१।२२।२०। ७	-२२।१६	-२३। ६	०।१२
६	७।१९।३९।१९	८। ७।१०। ९	५।१६।३४।२०	८। ८।३०।१४	७।२६।२४।१२	६। ५।३६। ७	६।१७।४७।४६	१।२२।१६।५७	-२२।२४	-२४।४८	-१।२२
७	७।२०।४०।१५	८।१९।३९।४९	५।१७। ८।३८	८। ९।५१।४६	७।२६।३७।४७	६। ६।४५।१७	६।१७।५४।१५	१।२२।१३।४६	-२२।३१	-२५।१२	-२।२७
८	७।२१।४१।१२	९। १।५८।५९	५।१७।४२।५३	८।११।११।४३	७।२६।५१।२२	६। ७।५४।३७	६।१८। ०।४२	१।२२।१०।३५	-२२।३८	-२४।२१	-३।२३
९	७।२२।४२।११	९।१४। ४।२८	५।१८।१७। ३	८।१२।२९।५०	७।२७। ४।५८	६। ९। ४। ७	६।१८। ७। ६	१।२२। ७।२४	-२२।४४	-२२।२१	-४।१०
१०	७।२३।४३।११	९।२६। १।५३	५।१८।५१।१०	८।१३।४५।४७	७।२७।१८।३४	६।१०।१३।४६	६।१८।१३।२८	१।२२। ४।१४	-२२।५०	-१९।२५	-४।४५
११	७।२४।४४।[illegible]	१०। ७।५४। ८	५।१९।२५।११	८।१४।५९।११	७।२७।३२।११	६।११।२३।३३	६।१८।१९।४६	१।२२। १। ३	-२२।५६	-१५।४२	-५। ७
१२	७।२५।४५।[illegible]	१०।१९।४६।३०	५।१९।५९। ८	८।१६। ९।४४	७।२७।४५।४८	६।१२।३३।२९	६।१८।२६। २	१।२१।५७।५२	-२३। १	-११।२३	-५।१७
१३	७।२६।४६।[illegible]	११। १।४२।३९	५।२०।३३। १	८।१७।१६।५३	७।२७।५९।२५	६।१३।४३।३४	६।१८।३२।१५	१।२१।५४।४१	-२३। ६	-६।३७	-५।१३
१४	[illegible]	११।१३।४७।४८	५।२१। ६।५०	८।१८।२०। ९	७।२८।१३। ३	६।१४।५३।४५	६।१८।३८।२५	१।२१।५१।३१	-२३।१०	-१।३४	-४।५५
१५	[illegible]	११।२६। ६।३९	५।२१।४०।३३	८।१९।१८।५६	७।२८।२६।४१	६।१६। ४। ६	६।१८।४४।३२	१।२१।४८।२०	-२३।१४	३।४०	-४।२३
१६	[illegible]	०। ८।४३।१५	५।२२।१४।१२	८।२०।१२।३५	७।२८।४०।१९	६।१७।१४।३४	६।१८।५०।३५	१।२१।४५। ९	-२३।१७	८।५२	-३।३९
१७	८। [illegible]	०।२१।४०।१६	५।२२।४७।४६	८।२१। ०।२१	७।२८।५३।५६	६।१८।२५। ९	६।१८।५६।३६	१।२१।४१।५८	-२३।२०	१३।५१	-२।४१
१८	८। [illegible]	१। ४। ०।२४	५।२३।२१।१५	८।२१।४१।२८	७।२९। ७।३४	६।१९।३५।४२	६।१९। २।३३	१।२१।३८।४७	-२३।२२	१८।२०	-१।३४
१९	८। [illegible]	१।१८।४७।४३	५।२३।५४।४०	८।२२।१५। १	७।२९।२१।११	६।२०।४६।४१	६।१९। ८।२७	१।२१।३५।३७	-२३।२४	२१।५७	०।२०
२०	८। [illegible]	२। २।४४।२०	५।२४।२८। ३	८।२२।४०।१०	७।२९।३४।४८	६।२१।५७।३७	६।१९।१४।१८	१।२१।३२।२६	-२३।२५	२४।२१	०।५८
२१	८। [illegible]	[illegible]	५।२५। १।२३	८।२२।५६। १	७।२९।४८।२५	६।२३। ८।४१	६।१९।२०। ५	१।२१।२९।१५	-२३।२६	२५।१३	२।१३
२२	८। [illegible]	३। १।२४। ८	५।२५।३४।४१	८।२३। १।४२	८। ०। २। १	६।२४।१९।५०	६।१९।२५।४८	१।२१।२६। ४	-२३।२६	२४।२२	३।२१
२३	८। [illegible]	३।१५।४२।५४	५।२६। ७।५६	८।२२।५६।२८	८। ०।१५।३७	६।२५।३१। ५	६।१९।३१।२९	१।२१।२२।५४	-२३।२६	२१।५२	४।१६
२४	८। [illegible]	४। ०।२३।२४	५।२६।४१। ८	८।२२।३९।१६	८। ०।२९।१२	६।२६।४२।२८	६।१९।३७। ५	१।२१।१९।४३	-२३।२६	१७।५७	४।५४
२५	८। [illegible]	४।१४।२३।३६	५।२७।१४।१७	८।२२।११।१६	८। ०।४२।४७	६।२७।५३।५७	६।१९।४२।३८	१।२१।१६।३२	-२३।२५	१३। १	५।१३

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मिं., भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम) (१ जन. (१९८४) को अयनांश २३°।३७'।४०")

तारीख़	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चं. क्रां.	चं. श.
सन् १९८३ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
दिसं० २६	८। ९।५९।५७	४।२९।४२।३९	५।२७।४६। ४	८।२१।३१। ७	८। ०।५६।२१	६।२९। ५।३१	६।१९।४८। ७	१।२१।१३।२१	-२३।२३	७।२५	५।१३
२७	८।११। ११। ५	५।१३।४७। ५	५।२८।१८।४७	८।२०।३९।४५	८। १। ९।५४	७। ०।१७।१२	६।१९।५३।३२	१।२१।१०।१०	-२३।२२	१।३३	४।५३
२८	८।१२। २।१४	५।२७।३६।१५	५।२८।५१।२३	८।१९।३८।१६	८। १।२३।२७	७। १।२८।५८	६।१९।५८।५३	१।२१। ६। ०	-२३।१९	-४।१९	४।१७
२९	८।१३। ३।२३	६।११।१०।३८	५।२९।२३।५३	८।१८।२८।१५	८। १।३६।५८	७। २।४०।४९	६।२०। ४।११	१।२१। ३।४९	-२३।१६	-९।५३	३।२७
३०	८।१४। ४।३३	६।२४।२९।४५	५।२९।५६।१८	८।१७।११।४७	८। १।५०।२९	७। ३।५२।४६	६।२०। ९।२४	१।२१। ०।३८	-२३।१३	-१४।५३	२।२७
३१	८।१५। ५।४३	७। ७।३५। ८	६। ०।२८।३६	८।१५।५१।१८	८। २। ३।५८	७। ५। ४।४८	६।२०।१४।३३	१।२०।५७।२७	-२३। ९	-१९। ७	१।२०
जन. ८४ १	८।१६। ६।५४	७।२०।२८।१९	६। १। ०।४८	८।१४।२९।२९	८। २।१७।२६	७। ६।१६।५४	६।२०।१९।३८	१।२०।५४।१७	-२३। ५	-२२।२०	०। ९
२	८।१७। ८। ६	८। ३। ९। ७	६। १।३२।५४	८।१३। ९। ३	८। २।३०।५३	७। ७।२९। ६	६।२०।२४।३९	१।२०।५१। ६	-२३। ०	-२४।२४	-१। ०
३	८।१८। ९।१७	८।१५।३८।४८	६। २। ४।५३	८।११।५२।२७	८। २।४४।१९	७। ८।४१।२२	६।२०।२९।३६	१।२०।४७।५५	-२२।५५	-२५।१२	-२। ५
४	८।१९।१०।२९	८।२७।५८।३८	६। २।३६।४६	८।१०।४१।५९	८। २।५७।४३	७। ९।५३।४३	६।२०।३४।२८	१।२०।४४।४४	-२२।४९	-२४।४४	-३। ४
५	८।२०।११।३९	९।१०। ८।३१	६। ३। ८।३२	८। ९।३९।१५	८। ३।११। ५	७।११। ६। ६	६।२०।३९।१६	१।२०।४१।३४	-२२।४३	-२३। ५	-३।५३
६	८।२१।१२।५१	९।२२।१०।१६	६। ३।४०।११	८। ८।४५।३५	८। ३।२४।२६	७।१२।१८।३५	६।२०।४३।५९	१।२०।३८।२३	-२२।३७	-२०।२४	-४।३१
७	८।२२।१४।२	१०। ४। ६।११	६। ४।११।४४	८। ८। १।३९	८। ३।३७।४५	७।१३।३१। ८	६।२०।४८।३८	१।२०।३५।१२	-२२।३०	-१६।५४	-४।५७
८	८।२३।१५।१२	१०।१५।५७।४८	६। ४।४३। ८	८। ७।२७।५०	८। ३।५१। २	७।१४।४३।४३	६।२०।५३।१२	१।२०।३२। १	-२२।२२	-१२।४५	-५।१०
९	८।२४।१६।२२	१०।२७।४८।४६	६। ५।१४।२६	८। ७। ४। ४	८। ४। ४।१८	७।१५।५६।२३	६।२०।५७।४१	१।२०।२८।५०	-२२।१५	-८। ८	-५।१०
१०	८।२५।१७।३३	११। ९।४३।२२	६। ५।४५।३६	८। ६।५०। ७	८। ४।१७।३१	७।१७। ९। ६	६।२१। २। ६	१।२०।२५।४०	-२२। ६	-३।१२	-४।५६
११	८।२६।१८।४०	११।२१।४५। १	६। ६।१६।३८	८। ६।४५।२८	८। ४।३०।४२	७।१८।२१।५०	६।२१। ६।२६	१।२०।२२।२९	-२१।५८	१।५५	-४।३०
१२	८।२७।१९।४९	०। ३।५८।५७	६। ६।४७।३४	८। ६।४९।३३	८। ४।४३।५१	७।१९।३४।४०	६।२१।१०।४१	१।२०।१९।१८	-२१।४८	७। २	-३।५१
१३	८।२८।२०।५७	०।१६।३०।३१	६। ७।१८।२१	८। ७। १।४५	८। ४।५६।५७	७।२०।४७।३२	६।२१।१४।५१	१।२०।१६। ७	-२१।३९	१२। १	-३। ०
१४	८।२९।२२। ३	०।२९।२३।१८	६। ७।४८।५९	८। ७।२१।१९	८। ५।१०। १	७।२२। ०।२५	६।२१।१८।५६	१।२०।१२।५७	-२१।२९	१६।३८	-१।५८
१५	९। ०।२३।१०	१।१२।४२। १	६। ८।१९।३०	८। ७।४७।४१	८। ५।२३। ३	७।२३।१३।२३	६।२१।२२।५६	१।२०। ९।४६	-२१।१८	२०।३४	०।४९
१६	९। १।२४।१६	१।२६।२७।४०	६। ८।४९।५३	८। ८।२०।१०	८। ५।३६। २	७।२४।२६।२४	६।२१।२६।५१	१।२०। ६।३५	-२१। ८	२३।३०	०।२६
१७	९। २।२५।१९	२।१०।४०।३६	६। ९।२०। ६	८। ८।५८।१०	८। ५।४८।५९	७।२५।३९।२६	६।२१।३०।४१	१।२०। ३।२४	-२०।५६	२५। ३	१।४१
१८	९। ३।२६।२४	२।२५।१८।१८	६। ९।५०।१२	८। ९।४१।१२	८। ६। १।५३	७।२६।५२।३१	६।२१।३४।२५	१।२०। ०।१३	-२०।४५	२४।५६	२।५२
१९	९। ४।२७।२९	३।१०।१३।३०	६।१०।२०। ८	८।१०।२८।४३	८। ६।१४।४४	७।२८। ५।४०	६।२१।३८। ५	१।१९।५७। ३	-२०।३३	२३। ३	३।५२
२०	९। ५।२८।३१	३।२५।१८।१४	६।१०।४९।५५	८।११।२०।१५	८। ६।२७।३२	७।२९।१८।४९	६।२१।४१।३९	१।१९।५३।५२	-२०।२०	१९।३१	४।३७
२१	९। ६।२९।३४	४।१०।२३।१४	६।११।१९।३४	८।१२।१५।२८	८। ६।४०।१७	८। ०।३२। ३	६।२१।४५। ८	१।१९।५०।४१	-२०। ७	१४।४३	५। २
२२	९। ७।३०।३६	४।२५।१७।५१	६।११।४९। २	८।१३।१३।५७	८। ६।५२।५९	८। १।४५।१८	६।२१।४८।३१	१।१९।४७।३०	-१९।५४	९। ५	५। ७
२३	९। ८।३१।३७	५। ९।५५। ७	६।१२।१८।२१	८।१४।१५।२४	८। ७। ५।३९	८। २।५८।३५	६।२१।५१।४९	१।१९।४४।१९	-१९।४१	३। २	४।५१
२४	९। ९।३२।४०	५।२४।१०।५३	६।१२।४७।३१	८।१५।१९।३३	८। ७।१८।१५	८। ४।११।५६	६।२१।५५। २	१।१९।४१। ९	-१९।२७	-३। १	४।१८
२५	९।१०।३३।४१	६। ८। २।१०	६।१३।१६।३०	८।१६।२६। ८	८। ७।३०।४८	८। ५।२५।१९	६।२१।५८। ९	१।१९।३७।५८	-१९।१३	-८।४६	३।३०
२६	९।११।३४।४२	६।२१।३०।१३	६।१३।४५।२०	८।१७।३४।५७	८। ७।४३।१७	८। ६।३८।४४	६।२२। १।१०	१।१९।३४।४७	-१८।५८	-१३।५७	२।२२

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मिं., भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम) (१ फर. को अयनांश २३°।३७'।४४")

तारीख सन् १९८४ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.
जन २७	९।१२।३५।४२	७। ४।३७।४९	६।१४।१३।५८	८।१८।४५।४६	८। ७।५५।४३	८। ७।५२।११	६।२२। ४। ६	१।१९।३१।३६	-१८।४३	-१८।२२	१।२७
२८	९।१३।३६।४१	७।१७।२७। ०	६।१४।४२।२७	८।१९।५८।२६	८। ८। ८। ६	८। ९। ५।३९	६।२२। ६।५६	१।१९।२८।२६	-१८।२८	-२१।४७	०।१९
२९	९।१४।३७।४१	८। ०। १।३५	६।१५।१०।४४	८।२१।१२।५१	८। ८।२०।२५	८।१०।१९।११	६।२२। ९।४१	१।१९।२५।१५	-१८।१२	-२४। ५	०।४८
३०	९।१५।३८।३९	८।१२।२५। ३	६।१५।३८।५०	८।२२।२८।४८	८। ८।३२।४०	८।११।३२।४४	६।२२।१२।१९	१।१९।२२। ४	-१७।५६	-२५।१०	-१।५२
३१	९।१६।३९।३७	८।२४।३८।५३	६।१६। ६।४५	८।२३।४६।१४	८। ८।४४।५१	८।१२।४६।१८	६।२२।१४।५२	१।१९।१८।५३	-१७।४०	-२५। ०	-२।५०
फर. १	९।१७।४०।३५	९। ६।४५।३१	६।१६।३४।२८	८।२५। ५। २	८। ८।५६।५९	८।१३।५९।५५	६।२२।१७।१९	१।१९।१५।४३	-१७।२३	-२३।३८	-३।३९
२	९।१८।४१।३०	९।१८।४६।५७	६।१७। १।५९	८।२६।२५। ६	८। ९। ९। २	८।१५।१३।३३	६।२२।१९।४०	१।१९।१२।३२	-१७। ६	-२१।१२	-४।१८
३	९।१९।४२।२५	१०। ०।४३।२५	६।१७।२९।१८	८।२७।४६।२३	८। ९।२१। १	८।१६।२७।१३	६।२२।२१।५६	१।१९। ९।२१	-१६।४९	-१७।५३	-४।४५
४	९।२०।४३।१९	१०।१२।३६।३७	६।१७।५६।२५	८।२९। ८।४८	८। ९।३२।५७	८।१७।४०।५४	६।२२।२४। ५	१।१९। ६।१०	-१६।३१	-१३।५२	-५। ०
५	९।२१।४४।११	१०।२४।२८।३१	६।१८।२३।१९	९। ०।३२।१८	८। ९।४४।४७	८।१८।५४।३५	६।२२।२६। ८	१।१९। २।५९	-१६।१४	-९।१९	-५। २
६	९।२२।४५। २	११। ६।२०। ७	६।१८।५०। ०	९। १।५६।५०	८। ९।५६।३४	८।२०। ८।१८	६।२२।२८। ६	१।१८।५९।४९	-१५।५६	-४।२७	-४।५१
७	९।२३।४५।५२	११।१८।१४।३१	६।१९।१६।२८	९। ३।२२।२४	८।१०। ८।१९	८।२१।२२। ३	६।२२।२९।५७	१।१८।५६।३८	-१५।३७	०।३७	-४।२७
८	९।२४।४६।४०	०। ०।१५।३३	६।१९।४२।४२	९। ४।४८।५३	८।१०।१९।५३	८।२२।३५।४८	६।२२।३१।४२	१।१८।५३।२७	-१५।१९	५।४२	-३।५१
९	९।२५।४७।२६	०।१२।२६।१८	६।२०। ८।४३	९। ६।१६।२०	८।१०।३१।२५	८।२३।४९।३४	६।२२।३३।२२	१।१८।५०।१६	-१५। ०	१०।३९	-३। ४
१०	९।२६।४८।११	०।२४।५१।५१	६।२०।३४।३०	९। ७।४४।४३	८।१०।४२।५३	८।२५। ३।२१	६।२२।३४।५५	१।१८।४७। ६	-१४।४१	१५।१८	-२। ८
११	९।२७।४८।५३	१। ७।३७।४०	६।२१। ०। २	९। ९।१३।५८	८।१०।५४।१६	८।२६।१७। ८	६।२२।३६।२२	१।१८।४३।५५	-१४।२१	१९।२३	-१। ३
१२	९।२८।४९।३४	१।२०।४७।२४	६।२१।२५।१९	९।१०।४४। ७	८।११। ५।३३	८।२७।३०।५७	६।२२।३७।४२	१।१८।४०।४४	-१४। २	२२।३८	०। ६
१३	९।२९।५०।१५	२। ४।२५।१८	६।२१।५०।२२	९।१२।१५।११	८।११।१६।४६	८।२८।४४।४७	६।२२।३८।५७	१।१८।३७।३३	-१३।४२	२४।४३	१।१८
१४	१०। ०।५०।५३	२।१८।३३।४५	६।२२।१५।१०	९।१३।४७। ४	८।११।२७।५४	८।२९।५८।३६	६।२२।४०। ६	१।१८।३४।२२	-१३।२२	२५।१९	२।२७
१५	१०। १।५१।३०	३। ३।१०।३०	६।२२।३९।४१	९।१५।१९।५२	८।११।३८।५६	९। १।१२।२७	६।२२।४१। ८	१।१८।३१।१२	-१३। १	२४।१३	३।२९
१६	[illegible]	[illegible]	६।२३। ३।५७	९।१६।५३।३२	८।११।४९।५३	९। २।२६।१९	६।२२।४२। ४	१।१८।२८। १	-१२।४१	२१।२२	४।१८
१७	[illegible]	[illegible]	६।२३।२७।५६	९।१८।२८। ५	८।१२। ०।४४	९। ३।४०।१३	६।२२।४२।५४	१।१८।२४।५०	-१२।२०	१७। ०	४।५०
१८	[illegible]	[illegible]	६।२३।५१।३८	९।२०। ३।३०	८।१२।११।३०	९। ४।५४। ५	६।२२।४३।३८	१।१८।२१।३९	-११।५९	११।३०	५। १
१९	[illegible]	[illegible]	६।२४।१५। ३	९।२१।३९।५०	८।१२।२२।११	९। ६। ७।५९	६।२२।४४।१५	१।१८।१८।२९	-११।३८	५।२१	४।५०
२०	[illegible]	[illegible]	६।२४।३८।११	९।२३।१७। ५	८।१२।३२।४५	९। ७।२१।५४	६।२२।४४।४६	१।१८।१५।१८	-११।१७	-१। १	४।२०
२१	[illegible]	[illegible]	६।२५। १। ०	९।२४।५५।१२	८।१२।४३।१४	९। ८।३५।४९	६।२२।४५।११	१।१८।१२। ७	-१०।५५	-७।१०	३।३३
२२	[illegible]	[illegible]	६।२५।२३।३२	९।२६।३४।१८	८।१२।५३।३७	९। ९।४९।४६	६।२२।४५।३०	१।१८। ८।५६	-१०।३४	-१२।४५	२।३५
२३	[illegible]	[illegible]	६।२५।४५।४६	९।२८।१४।१९	८।१३। ३।५४	९।११। ३।४३	६।२२।४५।४३	१।१८। ५।४५	-१०।१२	-१७।३२	१।३०
२४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९।२९।५५।१७	८।१३।१४। ५	९।१२।१७।४१	६।२२।४५।४९	१।१८। २।३५	-९।५०	-२१।१७	०।२१
२५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०। १।३७।१४	८।१३।२४। ९	९।१३।३१।४०	६।२२।४५।४९	१।१७।५९।२४	-९।२८	-२३।५३	०।४६
२६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०। ३।२०।१०	८।१३।३४। ८	९।१४।४५।४०	६।२२।४५।४३	१।१७।५६।१३	-९। ६	-२५।१३	-१।४९
२७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०। ५। ४। ५	८।१३।४४। ०	९।१५।५९।३९	६।२२।४५।३०	१।१७।५३। २	-८।४३	-२५।१८	-२।४६

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मिं., भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ मार्च को अयनांश २३°।३७'।४८")

तारीख सन् १९८४ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.
फर. २८	१०।१४।५७।१६	९। ३।५०।१२	६।२७।३१।४७	१०। ६।४९। १	८।१३।५३।४५	९।१७।१३।४०	६।२२।४५।११	११७।४९।५१	-८।२१	-२४।११	-३।३५
२९	१०।१५।५७।३३	९।१५।४७।५६	६।२७।५१।५६	१०। ८।३४।५९	८।१४। ३।२४	९।१८।२७।४१	६।२२।४४।४७	११७।४६।४१	-७।५८	-२१।५८	-४।१४
मार्च १	१०।१६।५७।४८	९।२७।४१।५९	६।२८।११।४३	१०।१०।२१।५७	८।१४।१२।५६	९।१९।४१।४२	६।२२।४४।१६	११७।४३।३०	-७।३५	-१८।४९	-४।४१
२	१०।१७।५८। १	१०। ९।३४।४६	६।२८।३१। ८	१०।१२। ९।५९	८।१४।२२।२१	९।२०।५५।४४	६।२२।४३।३८	११७।४०।१९	-७।१३	-१४।५५	-४।५६
३	१०।१८।५८।१४	१०।२१।२६।५०	६।२८।५०।१०	१०।१३।५९। ३	८।१४।३१।४०	९।२२। ९।४७	६।२२।४२।५५	११७।३७। ८	-६।५०	-१०।२७	-४।५८
४	१०।१९।५८।२४	११। ३।१९।५३	६।२९। ८।४८	१०।१५।४९। ९	८।१४।४०।५१	९।२३।२३।४८	६।२२।४२। ६	११७।३३।५८	-६।२७	-५।३५	-४।४७
५	१०।२०।५८।३१	११।१५।१५।३९	६।२९।२७। २	१०।१७।४०।१७	८।१४।४९।५५	९।२४।३७।५१	६।२२।४१।१०	११७।३०।४७	-६। ३	०।३०	-४।२४
६	१०।२१।५८।३८	११।२७।१४।४८	६।२९।४४।५२	१०।१९।३२।२९	८।१४।५८।५२	९।२५।५१।५५	६।२२।४०। ९	११७।२७।३६	-५।४०	४।३८	-३।४८
७	१०।२२।५८।४२	०। ९।१९।५७	७। ०। २।१६	१०।२१।२५।३८	८।१५। ७।४२	९।२७। ५।५६	६।२२।३९। १	११७।२४।२५	-५।१७	९।३९	-३। २
८	१०।२३।५८।४३	०।२१।३४।२६	७। ०।१९।१५	१०।२३।१९।४८	८।१५।१६।२४	९।२८।१९।५९	६।२२।३७।४८	११७।२१।१५	-४।५४	१४।२२	-२। ७
९	१०।२४।५८।४३	१। ४। ०।४५	७। ०।३५।४८	१०।२५।१४।५३	८।१५।२४।५९	९।२९।३४। २	६।२२।३६।२८	११७।१८। ४	-४।३०	१८।३५	-१। ६
१०	१०।२५।५८।४०	१।१६।४३।३१	७। ०।५१।५३	१०।२७।१०।५१	८।१५।३३।२५	१०। ०।४८। ४	६।२२।३५। ३	११७।१४।५३	-४। ७	२२। १	०। १
११	१०।२६।५८।३४	१।२९।४७।३४	७। १। ७।३२	१०।२९।७।३७	८।१५।४१।४५	१०। २। २। ६	६।२२।३३।३२	११७।११।४२	-३।४३	२४।२६	१।१०
१२	१०।२७।५८।२७	२।१३।१५।५१	७। १।२२।४३	११। १। ५। ७	८।१५।४९।५६	१०। ३।१६। ९	६।२२।३१।५५	११७। ८।३२	-३।२०	२५।३२	२।१६
१३	१०।२८।५८।१८	२।२७।११।४३	७। १।३७।२५	११। ३। ३।१५	८।१५।५७। ०	१०। ४।३०।११	६।२२।३०।१३	११७। ५।२१	-२।५६	२५। ४	३।१७
१४	१०।२९।५८। ५	३।११।३६।२०	७। १।५१।३८	११। ५। १।४८	८।१६। ५।५५	१०। ५।४४।१२	६।२२।२८।२५	११७। २।१०	-२।३२	२२।५८	४। ८
१५	११। ०।५७।५२	३।२६।२५।५६	७। २। ५।२२	११। ७। ०।४४	८।१६।१३।४२	१०। ६।५८।१५	६।२२।२६।३१	११६।५८।५९	-२। ९	१९।१६	४।४३
१६	११। १।५७।३६	४।११।३४।५०	७। २।१८।३४	११। ८।५९।४६	८।१६।२१।२२	१०। ८।१२।१७	६।२२।२४।३२	११६।५५।४८	-१।४५	१४।१५	५। ०
१७	११। २।५७।१६	४।२६।५४। ६	७। २।३१।१६	११।१०।५८।४०	८।१६।२८।५२	१०। ९।२६।१७	६।२२।२२।२७	११६।५२।३८	-१।२१	८।१६	४।५६
१८	११। ३।५६।५७	५।१२।११। २	७। २।४३।२६	११।१२।५७।१४	८।१६।३६।१५	१०।१०।४०।१९	६।२२।२०।१६	११६।४९।२७	०।५७	१।४९	४।३०
१९	११। ४।५६।३५	५।२७।१४।५९	७। २।५५। ३	११।१४।५५। ९	८।१६।४३।२८	१०।११।५४।२१	६।२२।१८। १	११६।४६।१६	०।३४	-४।४०	३।४६
२०	११। ५।५६।१०	६।११।५७।३१	७। ३। ६। ७	११।१६।५२। ३	८।१६।५०।३४	१०।१३। ८।२२	६।२२।१५।४०	११६।४३। ५	०।१०	-१०।४६	२।४७
२१	११। ६।५५।४५	६।२६।११।४४	७। ३।१६।३६	११।१८।४७।४०	८।१६।५७।३०	१०।१४।२२।२४	६।२२।१३।१३	११६।३९।५४	०।१४	-१६। ६	१।४०
२२	११। ७।५५।१८	७। ९।५६।१२	७। ३।२६।३२	११।२०।४१।३१	८।१७। ४।१८	१०।१५।३६।२६	६।२२।१०।४२	११६।३६।४४	०।३७	-२०।२४	०।२९
२३	११। ८।५४।४८	७।२३।१२।२९	७। ३।३५।५२	११।२२।३३।१३	८।१७।१०।५७	१०।१६।५०।२८	६।२२। ८। ५	११६।३३।३३	१। १	-२३।२९	०।४२
२४	११। ९।५४।१८	८। ६। २।४२	७।३।४४।३५	११।२४।२२।२५	८।१७।१७।२७	१०।१८। ४।३०	६।२२। ५।२३	११६।३०।२२	१।२५	-२५।१४	-१।४८
२५	११।१०।५३।४५	८।१८।३१।५०	७। ३।५२।४२	११।२६। ८।३६	८।१७।२३।४८	१०।१९।१८।३२	६।२२। २।३७	११६।२७।११	१।४८	-२५।३९	-२।४७
२६	११।११।५३।११	९। ०।४५।१६	७। ४। ०।११	११।२७।५१।२१	८।१७।२९।५९	१०।२०।३२।३३	६।२१।५९।४५	११६।२४। १	२।१२	-२४।४८	-३।३७
२७	११।१२।५२।३६	९।१२।४६।४८	७। ४। ७। २	११।२९।३०।१६	८।१७।३६। १	१०।२१।४६।३५	६।२१।५६।४९	११६।२०।५०	२।३५	-२२।४८	-४।१७
२८	११।१३।५१।५८	९।२४।४१।१७	७। ४।१३।१५	०। १। ४।५५	८।१७।४१।५४	१०।२३। ०।३८	६।२१।५३।४८	११६।१७।३९	२।५९	-१९।५०	-४।४५
२९	११।१४।५१।१८	१०। ६।३२।५६	७। ४।१८।४७	०। २।३४।५३	८।१७।४७।३८	१०।२४।१४।३८	६।२१।५०।४२	११६।१४।२८	३।२२	-१६। ५	-५। ०
३०	११।१५।५०।३७	१०।१८।२३।५०	७। ४।२३।३९	०। ३।५९।५३	८।१७।५३।१२	१०।२५।२८।४१	६।२१।४७।३२	११६।११।१८	३।४६	-११।४२	-५। ३
३१	११।१६।४९।५४	११। ०।१६।४९	७। ४।२७।५२	०। ५।१९।३१	८।१७।५८।३६	१०।२६।४२।४२	६।२१।४४।१८	११६। ८। ७	४। ९	-६।५३	-४।५२
अप्रै. १	११।१७।४९। ८	११।१२।१४। ७	७। ४।३१।२२	०। ६।३३।३०	८।१८। ३।५०	१०।२७।५६।४३	६।२१।४०।५९	११६। ४।५६	४।३२	-१।४७	-४।२९
२	११।१८।४८।२१	११।२४।१६। ८	७। ४।३४।११	०। ७।४१।३६	८।१८। ८।५५	१०।२९।१०।४४	६।२१।३७।३६	११६। १।४५	४।५५	३।२६	-३।५४

निरयण यूरेनस नेपच्यून (५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा., वि. सं. २०४०)

ग्रह= तारीख १९८३ ई.	यूरेनस रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	तारीख ८३ ई.	यूरेनस रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	तारीख १९८४	यूरेनस रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.
१४ अप्रै.	७।१५।६	८।५।३४	२४ अग.	७।११।२८	८।२।५३	३ जन	७।१७।१९	८।५।२४
१८	७।१५।०	८।५।३१	२८	७।११।३०	८।२।५२	७	७।१७।१६	८।५।४१
२२	७।१४।५३	८।५।२९	१ सितं.	७।११।३३	८।२।५१	११	७।१७।३२	८।५।४९
२६	७।१४।४५	८।५।२६	५	७।११।३६	८।२।५०	१५	७।१७।४७	८।५।५७
३०	७।१४।३७	८।५।२३	९	७।११।४०	८।२।४९	१९	७।१८।२	८।६।६
४ मई	७।१४।२९	८।५।२०	१३	७।११।४४	८।२।५०	२३	७।१८।१५	८।६।१४
८	७।१४।२०	८।५।१७	१७	७।११।५०	८।२।५१	२७	७।१८।२५	८।६।२१
१२	७।१४।१२	८।५।१३	२१	७।११।५७	८।२।५२	३१	७।१८।३८	८।६।२८
१६	७।१४।३	८।५।९	२५	७।१२।४	८।२।५३	४ फर	७।१८।४५	८।६।३५
२०	७।१३।५५	८।५।५	२९	७।१२।११	८।२।५५	८	७।१८।५५	८।६।४१
२४	७।१३।[illegible]	८।४।५९	३ अक्तू.	७।१२।२०	८।२।५८	१२	७।१९।५	८।६।४९
२८	७।१३।३७	८।४।५२	७	७।१२।३०	८।३।१	१६	७।१९।१४	८।६।५७
१ जून	७।१३।२७	८।४।४५	११	७।१२।४०	८।३।४	२०	७।१९।२२	८।७।४
५	७।१३।१७	८।४।३८	१५	७।१२।५०	८।३।८	२४	७।१९।२९	८।७।९
९	७।१३।७	८।४।३१	१९	७।१३।१	८।३।१२	२८	७।१९।३५	८।७।१३
१३	७।१२।५८	८।४।२४	२३	७।१३।१३	८।३।१७	३ मार्च	७।१९।४०	८।७।१७
१७	७।१२।४९	८।४।१७	२७	७।१३।२४	८।३।२२	७	७।१९।४४	८।७।२१
२१	७।१२।३९	८।४।१०	३१	७।१३।३६	८।३।२८	११	७।१९।४७	८।७।२६
२५	७।१२।[illegible]	८।४।४	४ नव.	७।१३।४८	८।३।३४	१५	७।१९।५१	८।७।३०
२९	७।१२।२०	८।३।५७	८	७।१४।२	८।३।४१	१९	७।१९।५४	८।७।३५
३ जुलाई	७।१२।१५	८।३।५१	१२	७।१४।१६	८।३।४८	२३	७।१९।५७	८।७।४०
७	७।१२।४	८।३।४५	१६	७।१४।२९	८।३।५६	२७	७।१९।५९	८।७।४४
११	७।११।५७	८।३।४०	२०	७।१४।४२	८।४।३	३१	७।१९।५९	८।७।४८
१५	७।११।[illegible]	८।३।[illegible]	२४	७।१४।५६	८।४।१०	४ अप्रै.	७।१९।५८	८।७।४९
१९	७।११।[illegible]	८।३।[illegible]	२८	७।१५।१०	८।४।१७			
२३	७।११।[illegible]	८।३।[illegible]	२ दिस.	७।१५।२४	८।४।२५			
२७	७।११।[illegible]	८।३।[illegible]	६	७।१५।[illegible]	८।४।[illegible]			
३१	७।११।[illegible]	८।३।[illegible]	१०	७।१५।[illegible]	८।४।[illegible]			
४ अग	७।११।[illegible]	८।३।[illegible]	१४	७।१६।[illegible]	८।५।[illegible]			
८	७।११।[illegible]	८।३।[illegible]	१८	[illegible]	८।५।[illegible]			
१२	७।११।[illegible]	८।३।[illegible]	२२	[illegible]	८।५।[illegible]			
१६	७।११।[illegible]	८।२।[illegible]	२६	[illegible]	८।५।[illegible]			
२०	७।११।[illegible]	८।२।[illegible]	३०	[illegible]	८।५।[illegible]			

वेंकटेश (प्लूटो)

तारीख	रा. अं. क.
१ अप्रै. ८३	६।५।१
१ मई	६।४।५१
१ जून	६।३।२७
१ जुला.	६।३।६
१ अग.	६।३।१५
१ सित.	६।३।५६
१ अक्तू.	६।४।५७
१ नवं.	६।६।१०
१ दिस.	६।७।१९
१ जन. ८४	६।८।९
१ फर.	६।८।३०
१ मार्च	६।८।१८
१ अप्रै.	६।७।३९
१ मई	६।६।४९

ग्रहों की समकल-युतियां (वि. सं. २०४०)

युतग्रह	तारीख	युतग्रह	तारीख
सू. मं.	३-६-१९८३	बु. वें.	२५-१०-१९८३
सू. बु.	१२-५-१९८३	गु. शु.	२७-१-१९८४
"	९-७-१९८३	गु. के.	२१-११-१९८३
"	१५-९-१९८३	गु. ने.	१९-१-१९८४
"	३०-१०-१९८३	शु. श.	१७-१२-१९८३
"	३१-१२-१९८३	शु. रा.	७-५-१९८३
"	८-३-१९८४	शु. के.	१२-१-१९८४
सू. गु.	१४-१२-१९८३	शु. यू.	१०-१-१९८४
सू. शु.	२५-८-१९८३	श. ने.	२६-१-१९८४
सू. श.	३१-१०-१९८३	श. वें.	७-१२-१९८३
सू. रा.	१६-६-१९८३	के. यू.	१-२-१९८४
सू. के.	९-१२-१९८३		
सू. यू.	२-१२-१९८३		
सू. ने.	२१-१२-१९८३		
सू. वें.	२४-१०-१९८३		
मं. बु.	७-५-१९८३		
मं. बु.	३-७-१९८३		
मं. शु.	१८-९-१९८३		
मं. शु.	२५-१०-१९८३		
मं. श	१५-२-१९८४		
मं. रा.	१९-४-१९८३		
मं. वें.	१५-१-१९८४		
बु. गु.	२६-११-१९८३		
बु. शु.	७-८-१९८३		
बु. श	३१-१०-१९८३		
बु. रा.	२९-६-१९८३		
बु. यू.	२०-११-१९८३		
बु. ने.	३-१२-१९८३		

ग्रहों के उदयास्त

ग्रह	दिशा उदयास्त	तारीख
मंगल	पू. उ.	२ अग. ८३
बुध	प. अ.	३ मई ८३
"	पू. उ.	२२ " "
"	पू. अ.	२८ जून
"	प. उ.	२१ जुला
"	प. अ.	९ सित
"	पू. उ.	२४ सितं.
"	पू. अ.	१२ अक्तू.
"	प. उ.	२२ नवं.
"	प. अ.	२५ दिसं.
"	पू. उ.	६ जन. ८४
"	पू. अ.	२० फर. "
"	प. उ.	२३ मार्च "
गुरु	प. अ.	२ दिसं. ८३
	पू. उ.	२८ " "
शुक्र	प. अ.	१५ अग. ८३
"	पू. उ.	३१ " "
शनि	पू. अ.	१४ अक्तू.
	पू. उ.	१७ नवं.

मंगल आदि ग्रहों के क्रान्तिशर (सं. २०४० वि.)

ग्रह	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि	
तारीख १९८३ई.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क
अप्रै. १९	१४।४५	०। २	१९।४२	२।३५	-२१। ४	०।५६	२२।५९	१।३७	-९।२२	२।४५
२५	१६।१९	०। २	२१।२४	२।५०	-२१। ०	०।५६	२४।१८	१।५३	-९।१२	२।४५
मई १	१७।२८	०। ६	२१।२९	२।२४	-२०।५५	०।५६	२५।१३	२। ८	-९। ३	२।४५
७	१८।४०	०।१०	२०। ५	१।१४	-२०।४९	०।५६	२५।४५	२।२०	-८।५४	२।४४
१३	१९।४५	०।१३	१७।३९	०।२५	-२०।४३	०।५५	२५।५२	२।३०	-८।४६	२।४४
१९	२०।४४	०।१७	१५।११	-२। ५	-२०।३६	०।५५	२५।३६	२।३५	-८।३९	२।४३
२५	२१।३६	०।२०	१३।३८	-३।१५	-२०।२९	०।५५	२४।५७	२।३७	-८।३२	२।४२
३१	२२।२०	०।२४	१३।२६	-३।४७	-२०।२२	०।५४	२३।५६	२।३५	-८।२७	२।४१
जून ६	२२।५७	०।२७	१४।२८	-३।४४	-२०।१५	०।५३	२२।३७	२।२८	-८।२२	२।३९
१२	२३।२६	०।३१	१६।२५	-३।१२	-२०। ८	०।५२	२१। १	२।१५	-८।१९	२।३८
१८	२३।४७	०।३४	१८।५२	-२।१९	-२०। १	०।५१	१९।११	१।५७	-८।१७	२।३६
२४	२४। १	०।३७	२१।२३	-१।१३	-१९।५५	०।५०	१७।११	१।३२	-८।१६	२।३५
३०	२४। ६	०।४०	२३।२१	०। ३	-१९।५०	०।४९	१५। ३	१। ०	-८।१७	२।३३
जुला. ६	२४। ५	०।४३	२४। ६	०।५८	-१९।४६	०।४८	१२।५१	०।२१	-८।१९	२।३२
१२	२३।५६	०।४६	२३।१५	१।३७	-१९।४३	०।४६	१०।३९	०।२६	-८।२२	२।३०
१८	२३।४०	०।४९	२०।५७	१।४९	-१९।४१	०।४५	८।३१	-१।२१	-८।२६	२।२९
२४	२३।१६	०।५१	१७।४०	१।३७	-१९।४०	०।४४	६।३३	-२।२५	-८।३२	२।२७
३०	२२।४७	०।५४	१३।५२	१। ७	-१९।४१	०।४२	४।४९	-३।३७	-८।३८	२।२५
अग. ५	२२।११	०।५७	९।५१	०।२२	-१९।४३	०।४१	३।२८	-४।५४	-८।४६	२।२४
११	२१।२९	०।५९	५।५५	०।३२	-१९।४७	०।४०	२।३८	-६।१२	-८।५५	२।२२
१७	२०।४१	१। १	२।१४	-१।३३	-१९।५२	०।३८	२।२५	-७।२१	-९। ५	२।२१
२३	१९।४८	१। ४	०।५५	-२।३४	-१९।५७	०।३७	२।५२	-८। ९	-९।१५	२।२०
२९	१८।५१	१। ६	-३।१२	-३।३२	-२०। ४	०।३६	३।५०	-८।२८	-९।२७	२।१९
४	१७।४९	१। ८	-४। ६	-४।१२	-२०।१२	०।३५	५। ६	-८।१५	-९।३९	२।१७
१०	१६।४३	१।१०	-२।५७	-४।१३	-२०।२१	०।३३	६।२३	-७।३७	-९।५१	२।१६
१६	१५।३४	१।१२	०।१७	-३।१२	-२०।३०	०।३२	७।२७	-६।४२	-१०। ५	२।१५
२२	१४।२१	१।१४	३।५४	-१।१९	-२०।४१	०।३१	८।११	-५।४०	-१०।१८	२।१५
२८	१३। ६	१।१६	५।३०	०।२९	-२०।५१	०।३०	८।३२	-४।३७	-१०।३२	२।१४
सित. ३	११।४८	१।१८	४।२०	१।३५	-२१। २	०।२९	८।२९	-३।३५	-१०।४६	२।१३
९	१०।२९	१।२०	१। ८	१।५७	-२१।१३	०।२८	८। ३	-२।३७	-११। १	२।१३
१५	९। ८	१।२१	-३। १	१।४७	-२१।२४	०।२७	७।१५	-१।४४	-११।१५	२।१२
२१	७।४५	१।२३	-७।२३	१।२०	-२१।३४	०।२७	६। ६	०।५६	-११।२९	२।१२
२७	६।२२	१।२५	-११।३५	०।४३	-२१।४५	०।२६	४।४०	०।१३	-११।४४	२।१२
अक्तू. २	४।५८	१।२६	-१५।२५	०। ३	-२१।५५	०।२५	२।५८	०।२४	-११।५८	२।१२
९	३।३४	१।२८	-१८।४६	०।३७	-२२। ५	०।२४	१। ३	०।५६	-१२।१२	२।१२
१५	२।११	१।२९	-२१।३६	-१।१६	-२२।१५	०।२४	-१। ३	१।२३	-१२।२५	२।१२
२१	०।४७	१।३१	-२३।४३	-१।४६	-२२।२४	०।२३	-३।१६	१।४५	-१२।३८	२।१२
२७	०।३५	१।३२	-२५। ९	-२।१०	-२२।३२	०।२२	-५।३४	२। २	-१२।५१	२।१२

तारीख १९८३-८४	मंगल क्रान्ति अं. क.	मंगल शर अं. क	बुध क्रान्ति अं. क	बुध शर अं. क.	गुरु क्रान्ति अं. क.	गुरु शर अं. क	शुक्र क्रान्ति अं. क.	शुक्र शर अं. क.	शनि क्रान्ति अं. क.	शनि शर अं. क
नवं. २	-१।५६	१।३३	-२५।४८	-२।२२	-२२।३९	०।२२	-७।५४	२।१३	-१३। ३	२।१३
८	-३।१५	१।३५	-२५।३५	-२।१७	-२२।४६	०।२१	-१०।१३	२।२०	-१३।१४	२।१४
१४	-४।३३	१।३६	-२४।३४	-१।४६	-२२।५२	०।२१	-१२।२७	२।२३	-१३।२५	२।१४
२०	-५।४९	१।३७	-२३। १	०।३६	-२२।५७	०।२०	-१४।३५	२।२२	-१३।३५	२।१५
२६	-७। २	१।३८	-२१।२७	१।१४	-२३। १	०।२०	-१६।३३	२।१७	-१३।४४	२।१६
दिस. १	-८।१३	१।३९	-२०।२४	२।५२	-२३। ४	०।१९	-१८।१७	२। ८	-१३।५३	२।१७
८	-९।२०	१।४०	-२०।१३	३।१४	-२३। ६	०।१९	-१९।४६	१।५७	-१४। ०	२।१८
१४	-१०।२५	१।४०	-२०।५१	२।३६	-२३। ८	०।१८	-२०।५७	१।४४	-१४। ६	२।१९
२०	-११।२६	१।४१	-२१।४३	१।३८	-२३। ९	०।१८	-२१।४७	१।२८	-१४।१२	२।२०
२६	-१२।२३	१।४१	-२२।१८	०।४०	-२३। ९	०।१८	-२२।१५	१।११	-१४।१६	२।२१
जन. १	-१३।१७	१।४१	-२२।२१	०।१३	-२३। ८	०।१७	-२२।२०	०।५३	-१४।२०	२।२३
७	-१४। ७	१।४१	-२१।४२	०।५७	-२३। ७	०।१७	-२२। १	०।३५	-१४।२२	२।२४
१३	-१४।५२	१।४१	-२०।१८	-१।३२	-२३। ५	०।१६	-२१।१९	०।१७	-१४।२३	२।२५
१९	-१५।३४	१।४०	-१८। ६	-१।५६	-२३। २	०।१६	-२०।१३	०। १	-१४।२३	२।२७
२५	-१६।११	१।३९	-१५। ६	-२। ७	-२३। ०	०।१६	-१८।४७	०।१८	-१४।२३	२।२८
३१	-१६।४५	१।३७	-११।१८	-२। ४	-२२।५७	०।१५	-१७। १	०।३४	-१४।२१	२।२९
फर. ६	१७।१४	१।३४	-६।४३	-१।४२	-२२।५४	०।१५	-१४।५७	०।४९	-१४।१८	२।३१
१२	-१७।३९	१।३१	-१।२८	-१। २	-२२।५१	०।१४	-१२।३९	-१। १	-१४।१४	२।३२
१८	-१८। १	१।२७	४। ८	०। १	-२२।४८	०।१४	-१०। ८	-१।१२	-१४। ९	२।३३
२४	-१८।१८	१।२२	९।२८	१।१०	-२२।४५	०।१४	-७।२८	-१।२०	-१४। ४	२।३४
मार्च १	-१८।३१	१।१६	१३।४२	२।१८	-२२।४२	०।१३	-४।४०	-१।२६	-१३।५८	२।३५
७	-१८।४०	१। ८	१६।१०	३। १	-२२।४०	०।१३	-१।४७	-१।३०	-१३।५१	२।३६
१३	-१८।४४	०।५९	१६।३६	३। ३	-२२।३९	०।१२	१। ८	-१।३१	-१३।४३	२।३६

यूरेनस नेपच्यून वैकटेश (प्लूटो) के क्रान्ति शर (से २०४० वि.)

तारीख	यूरेनस		नेपच्यून		वैकटेश (प्लूटो)	
	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
१ अप्रै. (१९८३)	२१।४२	+०।६	-२२।१२	+१।१५	+५।२६	+१७।३३
१ मई	२१।३५	०।६	२२।११	१।१६	५।४३	१७।३३
१ जून	२१।२३	०।६	२२।१०	१।१६	५।५०	१७।२४
१ जुलाई	२१।११	०।६	२२।९	१।१६	५।४३	१७।९
१ अगस्त	२१।५	०।५	२२।९	१।१६	५।२३	१६।५१
१ सितम्बर	२१।६	०।५	२२।१०	१।१४	४।५४	१६।३५
१ अक्तुबर	२१।१५	०।४	२२।१२	१।१२	४।२५	१६।२५
१ नवम्बर	२१।३०	०।४	२२।१४	१।१०	३।५८	१६।२३
१ दिसम्बर	२१।४७	०।४	२२।१६	१।१६	३।४१	१६।२९
१ जन. (१९८४)	२२।४	०।३	२२।१७	१।१०	३।३७	१६।४२
१ फर.	२२।१६	०।४	२२।१९	१।१०	३।४६	१६।५९
१ मार्च	२२।२२	०।३	२२।१६	१।११	४।४	१७।१४
१ अप्रैल	-२१।४२	+०।३	-२२।१५	+१।१२	+४।२६	+१७।२४

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त (भा.स्टै.टा.) (सं. २०४० वि.)

ता. १९८३	ति. वै.शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८३	ति. वै.कृ.	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९८३	ति. वै.शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८३	ति. ज्ये.कृ.	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९८३	ति. ज्ये.शु.	चन्द्रस्त घं. मि.	ता. १९८३	ति. आ.कृ.	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९८३	ति. आ.शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८३	ति. श्रा.कृ.	चन्द्रोदय घं. मि.
अप्री. १४	१	१९।५४	अप्री.२८	१	२०।९	मई१३	१	१९।४९	मई२७	१	१८।५६	जून१२	१	२०।५२	जू.२६	१	२०।३१	जु.११	१	२०।३५	जु.२५	१	१९।५६
१५	२	२०।५७	२९	२	२१।१०	१४	२	२०।५५	२८	२	२०।५२	१३	३	२१।५२	२७	२	२१।१६	१२	२	२१।२५	२६	१	२०।३३
१६	३	२२।३	३०	३	२२।७	१५	३	२२।२	२९	३	२१।४६	१४	४	२२।४६	२८	३	२१।५७	१३	३	२२।९	२७	२	२१।७
१७	४	२३।७	मई १	४	२३।३	१६	४	२३।३	३०	४	२२।३५	१५	५	२३।३१	२९	४	२२।३३	१४	५	२२।४८	२८	३	२१।३९
१८	५	—	२	५	२३।५८	१७	५	२३।५९	३१	४	२३।१९	१६	६	—	३०	५	२३।६	१५	६	२३।२३	२९	४	—
१९	७	०।१०	३	६	—	१८	६	—	जून १	५	२३।५७	१७	७	०।१२	जुला.१	६	२३।३७	१६	७	२३।५६	३०	५	२२।३८
२०	८	१।९	४	७	०।४१	१९	७	०।५०	२	६	—	१८	८	०।४८	२	७	—	१७	८	—	३१	६	२३।७
२१	९	२।२	५	८	१।२२	२०	८	१।३३	३	७	०।३३	१९	९	१।२२	३	८	०।८	१८	९	०।२९	अग.१	७	२३।३८
२२	१०	२।४९	६	९	२।००	२१	१०	२।१०	४	८	१।६	२०	१०	१।५५	४	८	०।३७	१९	१०	१।४	२	८	—
२३	११	३।३०	७	१०	२।३५	२२	११	२।४५	५	९	१।३७	२१	११	२।२८	५	९	१।६	२०	११	१।४०	३	९	०।१४
२४	१२	४।८	८	११	३।७	२३	१२	३।१९	६	१०	२।७	२२	१२	३।३	६	१०	१।४०	२१	१२	२।२०	४	१०	०।५४
२५	१३	४।४४	९	१२	३।३७	२४	१३	३।५२	७	११	२।३७	२३	१३	३।४०	७	१२	२।१७	२२	१३	३।२	५	११	१।४१
२६	१४	५।१८	१०	१३	४।८	२५	१४	४।२६	८	१२	३।१०	२४	१४	४।२१	८	१३	३।१	२३	१४	३।५०	६	१२	२।३५
२७	१५	५।५२	११	१४	४।४०	२६	१५	५।२	९	१३	३।४६	२५	१५	५।५	९	१४	३।५३	२४	१५	४।४९	७	१३	३।३९
			१२	३०	५।१४				१०	१४	४।२८				१०	३०	४।५३				८	३०	४।४७
									११	३०	५।१५												

ता. १९८३	ति. श्रा.शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८३	ति. भा.कृ.	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९८३	ति. भा.शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८३	ति. आ.कृ.	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९८३	ति. आ.शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८३	ति. का.शु.	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९८३	ति. का.शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८३	ति. मार्ग.कृ.	चन्द्रोदय घं. मि.
अग. ९	१	[illegible]	अग.२४	१	[illegible]	सित.८	२	१९।४९	सित.२३	१	१९।१३	अक्तू.७	१	१८।५३	अ.२२	१	१८।१५	नव. ५	१	१८।०	नव२१	१	१८।७
१०	२	[illegible]	२५	२	[illegible]	९	३	२०।२४	२४	२	१९।४२	८	२	१९।३०	२३	२	१८।४९	६	२	१८।४०	२२	२	१८।४५
११	३	[illegible]	२६	३	[illegible]	१०	४	२०।५९	२५	३	२०।१४	९	३	२०।९	२४	३	१९।२५	७	३	१९।२०	२३	३	१९।४५
१२	४	[illegible]	२७	४	[illegible]	११	५	२१।३६	२६	४	२०।४९	१०	४	२०।५९	२५	४	२०।१२	८	४	२०।१२	२४	४	२०।५८
१३	५	[illegible]	२८	५	[illegible]	१२	६	[illegible]	२७	५	२१।२८	११	५	२१।३९	२६	५	२१।४	९	५	२१।४	२५	५	२२।५
१४	६	[illegible]	२९	६	[illegible]	१३	७	[illegible]	२८	६	२२।१५	१२	६	२२।२३	२७	६	२२।२	१०	६	२१।५८	२६	६	२३।१३
१५	७	[illegible]	३०	७	[illegible]	१४	८	[illegible]	२९	७	२३।८	१३	७	२३।१९	२८	७	२३।६	११	७	२२।५४	२७	८	—
१६	८	—	३१	८	[illegible]	१५	९	—	३०	८	—	१४	८	—	२९	८	—	१२	७	२३।५०	२८	९	०।२०
१७	९	०।१९	सित.१	९	—	१६	१०	[illegible]	अक्तू.१	९	०।१०	१५	९	०।१९	३०	९	०।१३	१३	८	—	२९	१०	१।२५
१८	१०	१।१२	२	१०	[illegible]	१७	११	[illegible]	२	१०	१।१६	१६	१०	१।१४	३१	१०	१।२०	१४	९	०।४४	३०	११	२।२८
१९	११	[illegible]	३	११	[illegible]	१८	१२	[illegible]	३	१२	२।२५	१७	११	२।७	नव. १	११	२।२८	१५	१०	१।३९	दिस.१	१२	३।३१
२०	१२	[illegible]	४	१२	[illegible]	१९	१३	[illegible]	४	१३	३।३५	१८	१२	३।५५	२	१२	३।३५	१६	११	२।३३	२	१३	४।३३
२१	१३	[illegible]	५	१३	[illegible]	२०	[illegible]	[illegible]	५	१४	४।४४	१९	१३	३।६९	३	१३	४।३९	१७	१२	३।२८	३	१४	५।३७
२२	१४	४।२५	६	१४	[illegible]	२१	१४	[illegible]	६	३०	५।५२	२०	१४	४।४४	४	३०	५।४५	१८	१३	४।२४	४	३०	६।४१
२३	१५	५।१९	७	३०	[illegible]	२२	१५	[illegible]				२१	१५	५।४०				१९	१४	५।२३			
																		२०	१५	६।२५			

नोट :—क्योंकि शुक्ल पक्ष में चन्द्रोदय और कृष्ण पक्ष में चन्द्रास्त दिन के समय हुआ करता है, अतः अनावश्यक समझ कर इनका समय यहां नहीं दिया गया है ।

मंगल आदि ग्रहों के क्रान्तिशर (सं. २०४० वि.)

ग्रह	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि	
तारीख १९८३ई.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क
अप्रै. १९	१४।४५	०। २	१९।४२	२।३५	-२१। ४	०।५६	२२।५९	१।३७	-९।२२	२।४५
२५	१६।१९	०। २	२१।२४	२।५०	-२१। ०	०।५६	२४।१८	१।५३	-९।१२	२।४५
मई १	१७।२८	०। ६	२१।२९	२।२४	-२०।५५	०।५६	२५।१३	२। ८	-९। ३	२।४५
७	१८।४०	०।१०	२०। ५	१।१४	-२०।४९	०।५६	२५।४५	२।२०	-८।५४	२।४४
१३	१९।४५	०।१३	१७।३९	०।२५	-२०।४३	०।५५	२५।५२	२।३०	-८।४६	२।४४
१९	२०।४४	०।१७	१५।११	-२। ५	-२०।३६	०।५५	२५।३६	२।३५	-८।३९	२।४३
२५	२१।३६	०।२०	१३।३८	-३।१५	-२०।२९	०।५५	२४।५७	२।३७	-८।३२	२।४२
३१	२२।२०	०।२४	१३।२६	-३।४७	-२०।२२	०।५४	२३।५६	२।३५	-८।२७	२।४१
जून ६	२२।५७	०।२७	१४।२८	-३।४४	-२०।१५	०।५३	२२।३७	२।२८	-८।२२	२।३९
१२	२३।२६	०।३१	१६।२५	-३।१२	-२०। ८	०।५२	२१। १	२।१५	-८।१९	२।३८
१८	२३।४७	०।३४	१८।५२	-२।१९	-२०। १	०।५१	१९।११	१।५७	-८।१७	२।३६
२४	२४। १	०।३७	२१।२३	-१।१३	-१९।५५	०।५०	१७।११	१।३२	-८।१६	२।३५
३०	२४। ६	०।४०	२३।२१	०। ३	-१९।५०	०।४९	१५। ३	१। ०	-८।१७	२।३३
जुला. ६	२४। ५	०।४३	२४। ६	०।५८	-१९।४६	०।४८	१२।५१	०।२१	-८।१९	२।३२
१२	२३।५६	०।४६	२३।१५	१।३७	-१९।४३	०।४६	१०।३९	०।२६	-८।२२	२।३०
१८	२३।४०	०।४९	२०।५७	१।४९	-१९।४१	०।४५	८।३१	-१।२१	-८।२६	२।२९
२४	२३।१६	०।५१	१७।४०	१।३७	-१९।४०	०।४४	६।३३	-२।२५	-८।३२	२।२७
३०	२२।४७	०।५४	१३।५२	१। ७	-१९।४१	०।४२	४।४९	-३।३७	-८।३८	२।२५
अग. ५	२२।११	०।५७	९।५१	०।२२	-१९।४३	०।४१	३।२८	-४।५४	-८।४६	२।२४
११	२१।२९	०।५९	५।५५	०।३२	-१९।४७	०।४०	२।३८	-६।१२	-८।५५	२।२२
१७	२०।४१	१। १	२।१४	-१।३३	-१९।५२	०।३८	२।२५	-७।२१	-९। ५	२।२१
२३	१९।४८	१। ४	०।५५	-२।३४	-१९।५७	०।३७	२।५२	-८। ९	-९।१५	२।२०
२९	१८।५१	१। ६	-३।१२	-३।३२	-२०। ४	०।३६	३।५०	-८।२८	-९।२७	२।१९
४	१७।४९	१। ८	-४। ६	-४।१२	-२०।१२	०।३५	५। ६	-८।१५	-९।३९	२।१७
१०	१६।४३	१।१०	-२।५७	-४।१३	-२०।२१	०।३३	६।२३	-७।३७	-९।५१	२।१६
१६	१५।३४	१।१२	०।१७	-३।१२	-२०।३०	०।३२	७।२७	-६।४२	-१० ।५	२।१५
२२	१४।२१	१।१४	३।५४	-१।१९	-२०।४१	०।३१	८।११	-५।४०	-१०।१८	२।१५
२८	१३। ६	१।१६	५।३०	०।२९	-२०।५१	०।३०	८।३२	-४।३७	-१०।३२	२।१४
सित. ३	११।४८	१।१८	४।२०	१।३५	-२१। २	०।२९	८।२९	-३।३५	-१०।४६	२।१३
९	१०।२९	१।२०	१। ८	१।५७	-२१।१३	०।२८	८। ३	-२।३७	-११। १	२।१३
१५	९। ८	१।२१	-३। १	१।४७	-२१।२४	०।२७	७।१५	-१।४४	-११।१५	२।१२
२१	७।४५	१।२३	-७।२३	१।२०	-२१।३४	०।२७	६। ६	०।५६	-११।२९	२।१२
२७	६।२२	१।२५	-११।३५	०।४३	-२१।४५	०।२६	४।४०	०।१३	-११।४४	२।१२
अक्तू. २	४।५८	१।२६	-१५।२५	०। ३	-२१।५५	०।२५	२।५८	०।२४	-११।५८	२।१२
९	३।३४	१।२८	-१८।४६	०।३७	-२२। ५	०।२४	१। ३	०।५६	-१२।१२	२।१२
१५	२।११	१।२९	-२१।३६	-१।१४	-२२।१५	०।२४	-१। ३	१।२३	-१२।२५	२।१२
२१	०।४७	१।३१	-२३।४३	-१।४६	-२२।२४	०।२३	-३।१६	१।४५	-१२।३८	२।१२
२७	०।३५	१।३२	-२५। ९	-२।१०	-२२।३२	०।२२	-५।३४	२। २	-१२।५१	२।१२

	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि	
तारीख १९८३-८४	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	क्रान्ति अं. क.	शर अं. क
नव. २	-१।५६	१।३३	-२५।४८	-२।२२	-२२।३९	०।२२	-७।५४	२।१३	-१३। ३	२।१३
८	-३।१५	१।३५	-२५।३५	-२।१७	-२२।४६	०।२१	-१०।१३	२।२०	-१३।१४	२।१४
१४	-४।३३	१।३६	-२४।३४	-१।४६	-२२।५२	०।२१	-१२।२७	२।२३	-१३।२५	२।१४
२०	-५।४९	१।३७	-२३। १	०।३६	-२२।५७	०।२०	-१४।३५	२।२२	-१३।३५	२।१५
२६	-७। २	१।३८	-२१।२७	१।१४	-२३। १	०।२०	-१६।३३	२।१७	-१३।४४	२।१६
दिस. १	-८।१३	१।३९	-२०।२४	२।५२	-२३। ४	०।१९	-१८।१७	२। ८	-१३।५३	२।१७
८	-९।२०	१।४०	-२०।१३	३।१४	-२३। ६	०।१९	-१९।४६	१।५७	-१४। ०	२।१८
१४	-१०।२५	१।४०	-२०।५१	२।३६	-२३। ८	०।१८	-२०।५७	१।४४	-१४। ६	२।१९
२०	-११।२६	१।४१	-२१।४३	१।३८	-२३। ९	०।१८	-२१।४७	१।२८	-१४।१२	२।२०
२६	-१२।२३	१।४१	-२२।१८	०।४०	-२३। ९	०।१८	-२२।१५	१।११	-१४।१६	२।२१
जन. १	-१३।१७	१।४१	-२२।२१	०।१३	-२३। ८	०।१७	-२२।२०	०।५३	-१४।२०	२।२३
७	-१४। ७	१।४१	-२१।४२	०।५७	-२३। ७	०।१७	-२२। १	०।३५	-१४।२२	२।२४
१३	-१४।५२	१।४१	-२०।१८	-१।३२	-२३। ५	०।१६	-२१।१९	०।१७	-१४।२३	२।२५
१९	-१५।३४	१।४०	-१८। ६	-१।५६	-२३। २	०।१६	-२०।१३	०। १	-१४।२३	२।२७
२५	-१६।११	१।३९	-१५। ६	-२। ७	-२३। ०	०।१६	-१८।४७	०।१८	-१४।२३	२।२८
३१	-१६।४५	१।३७	-११।१८	-२। ४	-२२।५७	०।१५	-१७। १	०।३४	-१४।२१	२।२९
फर. ६	१७।१४	१।३४	-६।४३	-१।४२	-२२।५४	०।१५	-१४।५७	०।४९	-१४।१८	२।३१
१२	-१७।३९	१।३१	-१।२८	-१। २	-२२।५१	०।१४	-१२।३९	-१। १	-१४।१४	२।३२
१८	-१८। १	१।२७	४। ८	०। १	-२२।४८	०।१४	-१०। ८	-१।१२	-१४। ९	२।३३
२४	-१८।१८	१।२२	९।२८	१।१०	-२२।४५	०।१४	-७।२८	-१।२०	-१४। ४	२।३४
मार्च १	-१८।३१	१।१६	१३।४२	२।१८	-२२।४२	०।१३	-४।४०	-१।२६	-१३।५८	२।३५
७	-१८।४०	१। ८	१६।१०	३। १	-२२।४०	०।१३	-१।४७	-१।३०	-१३।५१	२।३६
१३	-१८।४४	०।५९	१६।३६	३। ३	-२२।३९	०।१२	१। ८	-१।३१	-१३।४३	२।३६

यूरेनस नेपच्यून वैकटेश (प्लूटों) के क्रान्ति शर (से २०४० वि.)

तारीख	यूरेनस		नेपच्यून		वेंकटेश (प्लूटो)	
	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
१ अप्रै. (१९८३)	२१।४२	+०।६	-२२।१२	+१।१५	+५।२६	+१७।३३
१ मई	२१।३५	०।६	२२।११	१।१६	५।४३	१७।३३
१ जून	२१।२३	०।६	२२।१०	१।१६	५।५०	१७।२४
१ जुलाई	२१।११	०।६	२२।९	१।१६	५।४३	१७।९
१ अगस्त	२१।५	०।५	२२।९	१।१६	५।२३	१६।५१
१ सितम्बर	२१।६	०।५	२२।१०	१।१४	४।५४	१६।३५
१ अक्तूबर	२१।१५	०।४	२२।१२	१।१२	४।२५	१६।२५
१ नवम्बर	२१।३०	०।४	२२।१४	१।१०	३।५८	१६।२३
१ दिसम्बर	२१।४७	०।४	२२।१६	१।१६	३।४१	१६।२९
१ जन. (१९८४)	२२।४	०।३	२२।१७	१।१०	३।३७	१६।४२
१ फर.	२२।१६	०।४	२२।१९	१।१०	३।४६	१६।५९
१ मार्च	२२।२२	०।३	२२।१६	१।११	४।४	१७।१४
१ अप्रैल	-२१।४२	+०।३	-२२।१५	+१।१२	+४।२६	+१७।२४

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त (भा.स्टै.टा.) (सं. २०४० वि.)

ता. १९८३	ति. चै. शु.	चन्द्रास्त घ. मि.
अप्रै. १४	१	१९।५४
१५	२	२०।५७
१६	३	२२।३
१७	४	२३।७
१८	५	——
१९	७	०।१०
२०	८	१।९
२१	९	२।२
२२	१०	२।४९
२३	११	३।३०
२४	१२	४।८
२५	१३	४।४४
२६	१४	५।१८
२७	१५	५।४२

ता. १९८३	ति. वै. कृ.	चन्द्रोदय घ. मि.
अप्रै. २८	१	२०।९
२९	२	२१।१०
३०	३	२२।७
मई १	४	२३।३
२	५	२३।५४
३	६	——
४	७	०।४१
५	८	१।२२
६	९	२।००
७	१०	२।३५
८	११	३।७
९	१२	३।३७
१०	१३	४।८
११	१४	४।४०
१२	३०	५।१४

ता. १९८३	ति. वै. शु.	चन्द्रास्त घ. मि.
मई १३	१	१९।४९
१४	२	२०।५५
१५	३	२२।२
१६	४	२३।३
१७	५	२३।५९
१८	६	——
१९	७	०।५०
२०	८	१।३३
२१	१०	२।१०
२२	११	२।४५
२३	१२	३।१९
२४	१३	३।५२
२५	१४	४।२६
२६	१५	५।२

ता. १९८३	ति. ज्ये. कृ.	चन्द्रोदय घ. मि.
मई २७	१	१९।५६
२८	२	२०।५२
२९	३	२१।४६
३०	४	२२।३५
३१	४	२३।१९
जून १	५	२३।५७
२	६	——
३	७	०।३३
४	८	१।६
५	९	१।३७
६	१०	२।७
७	११	२।३७
८	१२	३।१०
९	१३	३।४६
१०	१४	४।२८
११	३०	५।१६

ता. १९८३	ति. ज्ये. शु.	चन्द्रस्त घं. मि.
जून १२	१	२०।५२
१३	३	२१।५२
१४	४	२२।४६
१५	५	२३।३१
१६	६	——
१७	७	०।१२
१८	८	०।४८
१९	९	१।२२
२०	१०	१।५५
२१	११	२।२८
२२	१२	३।३
२३	१३	३।४०
२४	१४	४।२१
२५	१५	५।५

ता. १९८३	ति. आ. कृ.	चन्द्रोदय घं. मि.
जू. २६	१	२०।३१
२७	२	२१।१६
२८	३	२१।५७
२९	४	२२।३३
३०	५	२३।६
जुला. १	६	२३।३७
२	७	——
३	८	०।८
४	८	०।३७
५	९	१।६
६	१०	१।४०
७	१२	२।१७
८	१३	३।१
९	१४	३।५३
१०	३०	४।५३

ता. १९८३	ति. आ. शु.	चन्द्रास्त घं. मि.
जु. ११	१	२०।३५
१२	२	२१।२५
१३	३	२२।९
१४	५	२२।४८
१५	६	२३।२३
१६	७	२३।५६
१७	८	——
१८	९	०।२९
१९	१०	१।४
२०	११	१।४०
२१	१२	२।२०
२२	१३	३।२
२३	१४	३।५०
२४	१५	४।४९

ता. १९८३	ति. श्रा. कृ.	चन्द्रोदय घ. मि.
जु. २५	१	१९।५६
२६	१	२०।३३
२७	२	२१।७
२८	३	२१।३९
२९	४	——
३०	५	२२।१८
३१	६	२३।७
अग. १	७	२३।३८
२	८	——
३	९	०।१४
४	१०	०।५४
५	११	१।४१
६	१२	२।३५
७	१३	३।३९
८	३०	४।४७

ता. १९८३	ति. श्रा. शु.	चन्द्रास्त घ. मि.
अग. ९	१	[illegible]
१०	२	[illegible]
११	३	[illegible]
१२	४	[illegible]
१३	५	[illegible]
१४	६	[illegible]
१५	७	[illegible]
१६	८	——
१७	९	[illegible]
१८	१०	[illegible]
१९	११	[illegible]
२०	१२	[illegible]
२१	१३	३।१२
२२	१४	४।२५
२३	१५	५।१९

ता. १९८३	ति. भा. कृ.	चन्द्रोदय घ. मि.
अग. २४	१	१९।४८
२५	२	[illegible]
२६	३	[illegible]
२७	४	[illegible]
२८	५	[illegible]
२९	६	[illegible]
३०	७	[illegible]
३१	८	——
सित. १	९	[illegible]
२	१०	[illegible]
३	११	[illegible]
४	१२	[illegible]
५	१३	[illegible]
६	१४	[illegible]
७	३०	[illegible]

ता. १९८३	ति. भा. शु.	चन्द्रास्त घ. मि.
सित. ८	२	१९।४९
९	३	२०।२४
१०	४	२०।५९
११	५	२१।३६
१२	६	२२।१४
१३	७	२२।५६
१४	[illegible]	२३।४१
१५	८	——
१६	[illegible]	[illegible]
१७	[illegible]	[illegible]
१८	[illegible]	[illegible]
१९	[illegible]	[illegible]
२०	[illegible]	[illegible]
२१	[illegible]	[illegible]
२२	१५	[illegible]

ता. १९८३	ति. आ. कृ.	चन्द्रोदय घ. मि.
सित. २३	१	१९।१३
२४	२	१९।४२
२५	३	२०।१४
२६	४	२०।४९
२७	५	२१।२८
२८	६	२२।१५
२९	७	२३।८
३०	८	——
अक्तू. १	९	०।१०
२	१०	१।१६
३	११	२।२४
४	१३	३।३४
५	१४	४।४४
६	३०	५।५२

ता. १९८३	ति. आ. शु.	चन्द्रास्त घ. मि.
अक्तू. ७	१	१८।५३
८	२	१९।३०
९	३	२०।९
१०	४	२०।५४
११	५	२१।३९
१२	६	२२।२३
१३	७	२३।१९
१४	८	——
१५	९	०।१९
१६	१०	१।१४
१७	११	२।१०
१८	१२	२।५५
१९	१३	३।४९
२०	१४	४।४४
२१	१५	५।४०

ता. १९८३	ति. का. शु.	चन्द्रोदय घं. मि.
अ. २२	१	१८।१५
२३	२	१८।४९
२४	३	१९।२७
२५	४	२०।१२
२६	५	२१।४
२७	६	२२।२
२८	७	२३।६
२९	८	——
३०	९	०।१३
३१	१०	१।२०
नवं. १	११	२।२८
२	१२	३।३५
३	१३	४।३९
४	३०	५।४५

ता. १९८३	ति. का. शु.	चन्द्रास्त घ. मि.
नवं. ५	१	१८।१०
६	२	१८।४०
७	३	१९।२०
८	४	२०।१२
९	५	२१।४
१०	६	२१।५८
११	७	२२।५४
१२	७	२३।५०
१३	८	——
१४	९	०।४४
१५	१०	१।३९
१६	११	२।३३
१७	१२	३।२८
१८	१३	४।२४
१९	१४	५।२३
२०	१५	६।२५

ता. १९८३	ति. मार्ग. कृ.	चन्द्रोदय घ. मि.
नवं. २१	१	१८।७
२२	२	१८।५८
२३	३	१९।५५
२४	४	२०।५८
२५	५	२२।५
२६	६	२३।१३
२७	८	——
२८	९	०।२०
२९	१०	१।२५
३०	११	२।२८
दिस. १	१२	३।३१
२	१३	४।३३
३	१४	५।३७
४	३०	६।४१

नोट :—क्योंकि शुक्ल पक्ष में चन्द्रोदय और कृष्ण पक्ष में चन्द्रास्त दिन के समय हुआ करता है, अतः अनावश्यक समझ कर इनका समय यहां नहीं दिया गया है।

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त (भा. स्टै. टा.) (सं० २०४० वि.)

ता. १९८३	ति. मार्ग शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८३-८४	ति. पौष कृ.	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९८४	ति. पौष शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८४	ति. माघ कृ.	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९८४	ति. माघ शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८४	ति. फाल्गु. कृ.	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९८४	ति. फाल्गु. शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८४	ति. चैत्र कृ.	चन्द्रोदय घं. मि.
दिसं ५	१	१८।१३	दि.२१	२	१८।४५	जन. ४	१	१८।३२	जन.१९	१	१८।४१	फर. २	१	१८।१७	फर.१७	१	१८।४०	मार्च ३	१	१८।५४	मा.१८	१	१९।४५
६	२	१८।५४	२२	३	१९।५३	५	२	१९।२८	२०	२	१९।५४	३	१	१९।१२	१८	२	१९।५०	४	२	१९।४७	१९	२	२०।५४
७	३	१९।४८	२३	४	२१।२	६	३	२०।२५	२१	३	२१।५	४	२	२०।६	१९	३	२१।०	५	३	२०।४९	२०	४	२२।०
८	४	२०।४३	२४	५	२२।१२	७	४	२१।१९	२२	५	२२।११	५	३	२०।५९	२०	४	२२।७	६	३	२१।३६	२१	५	२३।६
९	५	२१।३९	२५	६	२३।१७	८	५	२२।१२	२३	६	२३।१७	६	४	२१।५२	२१	५	२३।११	७	४	२२।३२	२२	६	—
१०	६	२२।३४	२६	७	—	९	६	२३।५	२४	७	—	७	५	२७।४६	२२	६	—	८	५	२३।२१	२३	७	०।११
११	७	२३।२८	२७	८	०।२३	१०	७	२३।५९	२५	८	०।२१	८	६	२३।४०	२३	७	०।१७	९	६	—	२४	८	१।११
१२	८	—	२८	९	१।२५	११	८	—	२६	९	१।२३	९	७	—	२४	८	१।२०	१०	७	०।३०	२५	९	२।६
१३	८	०।२२	२९	१०	२।२८	१२	९	०।५५	२७	१०	२।२५	१०	८	०।३७	२५	९	२।२१	११	८	१।३१	२६	१०	२।५६
१४	९	१।१६	३०	११	३।२९	१३	१०	१।५१	२८	११	३।२६	११	९	१।३६	२६	१०	३।१८	१२	९	२।३२	२७	११	३।४०
१५	१०	२।११	३१	१२	४।३१	१४	११	२।५०	२९	१२	४।२६	१२	१०	२।४०	२७	११	४।११	१३	१०	३।३२	२८	११	४।१८
१६	११	३।७	जन. १	१३	५।३२	१५	१२	३।५३	३०	१३	५।२१	१३	११	३।४३	२८	१२	४।४८	१४	१२	४।२५	२९	१२	४।५२
१७	१२	४।६	२	१४	६।३१	१६	१३	४।५८	३१	१४	६।१२	१४	१२	४।४७	२९	१३	५।३९	१५	१३	५।१४	३०	१३	५।२२
१८	१३	५।९	३	३०	७।२७	१७	१४	६।५	फर. १	३०	६।५८	१५	१३	५।४६	मार्च १	१४	६।१७	१६	१४	५।५८	३१	१४	५।५१
१९	१४	५।१६				१८	१५	७।७				१६	१४	६।४०	२	३०	६।४९	१७	१५	६।३८	अप्रै. १	३०	६।१८
२०	१५	७।२२																					

अक्षांश भेद से समस्त भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें व उन्नत-शृंग (सं. २०४० वि.)

(+ उत्तर) (— दक्षिण)

मास→	चैत्र		वैशाख		ज्येष्ठ		आषाढ़		श्रावण		भाद्रपद		आश्विन		कार्तिक		मार्गशीर्ष		पौष		माघ		फाल्गुन	
भारतीय ←अक्षांश	चन्द्रदर्शन (१९८३ ई०)	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन (१९८३ ई०)	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन (१९८३ ई०)	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन (१९८३ ई०)	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन (१९८३ ई०)	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन (१९८३ ई०)	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन (१९८३ ई०)	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन (१९८३ ई०)	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन (१९८३ ई०)	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन (१९८४ ई०)	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन (१९८४ ई०)	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन (१९८४ ई०)	शृंगोन्नति अंश
	अप्रैल		मई		जून		जुलाई		अगस्त		सितम्बर		अक्तूबर		नवम्बर		दिसम्बर		जनवरी		फरवरी		मार्च	
५°	,, १४	— २	,, १४	— ५	,, १२	— २	,, ११	०	,, १०	+ ११	,, ८	+ १४	,, ७	+ १३	,, ६	+ १९	,, ६	+ १८	,, ४	+ १४	,, २	+ ७	,, ४	— ३
१५°	,,	+ ८	,,	+ ६	,,	+ ९	,,	+ ११	,,	+ २२	,,	+ २४	,,	+ २३	,,	+ २९	,,	+ २८	,,	+ २४	,,	+ १७	,,	+ ७
२५°	,,	+ १८	,,	+ १६	,,	+ १९	,,	+ २१	,,	+ ३२	,,	+ ३४	,,	+ ३४	,,✲	+ ३९	,,	+ ३८	,,	+ ३४	,,	+ २६	,,	+ १७
३५°	,,	+ २१	,,	+ २७	,,	+ २९	,,	+ ३१	,,	+ ४३	,,	+ ४४	,, ८	+ ५२	,,	+ ४९	,,	+ ४९	,,* ५	+ ४०	,,	+ ३७	,,	+ २७

✲ २५ से ३० अक्षांश के मध्य स्थित भारतीय प्रदेशों में ७ अक्तूबर को चन्द्रदर्शन संभवतः न हो सके। जम्मू काश्मीर, पंजाब, हि० प्र० में चन्द्रदर्शन ८ अक्तूबर को ही होगा।

* २५ से अधिक अक्षांश वाले भारतीय प्रदेशों में चन्द्रदर्शन ४ जनवरी को शायद ही हो। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हि. प्र. जम्मू, काश्मीर में तो चन्द्रदर्शन ५ जनवरी ही होगा।

ग्रहों के निरयण राशि नक्षत्र चरण चार एवं वक्र-मार्ग (सं. २०४० वि०)

सूर्यचार

तारीख सन् १९८३ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८३ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८३ ई.	नक्षत्र चरण राशि
अप्रै. १४	अश्वि. १ मेष	अग. १३	आश्ले. ४	दिसं. ९	ज्येष्ठा ३
१७	२	१७	मघा १ सिंह	१३	४
२१	३	२०	२	१६	मूल १ धनु
२४	४	२४	३	१९	२
२७	भरणी १	२७	४	२२	३
मई १	२	३०	पू.फा. १	२६	४
४	३	सितं. ३	२	२९	पू.षा. १
७	४	६	३	जन. १ (१९८४)	२
११	कृति. १	१०	४	४	३
१५	२ वृष	१३	उ.फा. १	८	४
१८	३	१७	२ कन्या	११	उ.षा. १
२१	४	२०	३	१४	२ मकर
२५	रोहिणी १	२३	४	१८	३
२८	२	२७	हस्त १	२१	४
३१	३	३०	२	२४	श्रवण १
जून ४	४	अक्तू. ४	३	२७	२
८	मृग. १	७	४	३१	३
१२	२	११	चित्रा १	फर. ३	४
१५	३ मिथुन	१४	२	६	धनि. १
१९	४	१७	३ तुला	१०	२
२२	आर्द्रा १	२०	४	१३	३ कुम्भ
२५	२	२४	स्वा. १	१६	४
२९	३	२७	२	२०	शत. १
जुला. २	४	३०	३	२३	२
६	पुन. १	नव. ३	४	२६	३
९	२	६	विशा. १	२९	४
१३	३	१०	२	मार्च ४	पू.भा. १
१६	४ कर्क	१३	३	७	२
२०	पुष्य १	१६	४ वृश्चिक	१०	३
२३	२	२०	अनु. १	१४	४ मीन
२७	३	२३	२	१७	उ.भा. १
३०	४	२६	३	२०	२
अग. ३	आश्ले. १	२९	४	२४	३
६	२	दिस. ३	ज्येष्ठा १	२७	४
१०	३	६	२		

मंगलचार

तारीख सन् १९८३ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८३ ई.	नक्षत्र चरण राशि
मार्च ३१	रेव. १	सितं. २०	मघा १ सिंह
मंगलचार		२५	२
अप्रै. १५	भरणी १	३०	३
१९	२	अक्तू. ६	४
२४	३	११	पू.फा. १
२८	४	१६	२
मई ३	कृति. १	२२	३
८	२ वृष	२७	४
१२	३	नवंबर २	उ.फा. १
१७	४	७	२ कन्या
२२	रोहि. १	१३	३
२७	२	१८	४
३१	३	२४	हस्त १
जून ५	४	३०	२
१०	मृग. १	दिस. ६	३
१५	२	१२	४
२०	३ मिथुन	१८	चित्रा १
२४	४	२४	२
२९	आर्द्रा १	३०	३ तुला
जुलाई ४	२	जन. ५ (१९८४)	४
१०	३	११	स्वा. १
१४	४	१८	२
१९	पुन. १	२४	३
२४	२	फर. १	४
३०	३	८	विशा. १
अग. ४	४ कर्क	१६	२
९	पुष्य १	२५	३
१४	२	मार्च ७	४ वृश्चिक
१९	३	२९	अनु. १
२४	४	**बुधचार**	
२९	आश्ले. १	अप्रै. १५	भरणी ३
सितं. ३	२	१८	४
९	३	२१	कृति. १
१४	४		

बुधचार

तारीख सन् १९८३	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८३ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८३ ई.	नक्षत्र चरण राशि
अप्रै. २५	२ वृष	अग. १	३	नवं. १०	४ वृश्चि.
मई ८	१ मेष	४	४	१२	अनु. १
१४	भरणी २	६	पू.फा. १	१४	२
२१	३	८	२	१६	३
२९	४	११	३	१९	४
जून ५	कृति. १	१३	४	२१	ज्ये. १
८	२ वृष	१६	उ.फा. १	२३	२
१२	३	२०	२ कन्या	२५	३
१४	४	२३	३	२७	४
१७	रोहि. १	३०	४	३०	मूल १ धनु.
१९	२	सितं. ५	३	दिसं. २	२
२१	३	११	२	४	३
२३	४	१४	१ सिंह	७	४
२५	मृग. १	१७	पू.फा. ४	९	पू.षा. १
२६	२	२२	३	१२	२
२८	३ मिथुन	२७	४	१५	३
३०	४	अक्तू. २	उ.फा. १	२७	२
जुलाई २	आर्द्रा १	४	२ कन्या	३०	१
३	२	७	३	जनवरी २ (१९८४)	मूल ४
५	३	९	४	४	३
६	४	११	हस्त १	१८	४
८	पुन. १	१४	२	२२	पू.षा. १
९	२	१५	३	२५	२
११	३	१७	४	२८	३
१३	४ कर्क	१९	चित्रा १	३०	४
१४	पुष्य १	२१	२	फर. २	उ.षा १
१६	२	२३	३ तुला	४	२ मकर
१७	३	२५	४	६	३
१९	४	२७	स्वा. १	९	४
२१	आश्ले १	२९	२	११	श्रवण १
२३	२	३१	३	१३	२
२४	३	नव. २	४	१६	३
२६	४	४	विशा. १	१८	४
२८	मघा १ सिंह	६	२	२०	धनि. १
३०	२	८	३		

ग्रहों के निरयण राशि नक्षत्र चरणचार एवं वक्र-मार्ग (सं. २०४० वि.)

बुधचार

तारीख सन्	नक्षत्र चरण राशि
फर. २२	धनि. २
२४	३ कुंभ
२६	४
२८	शत. १
मार्च १	२
२	३
४	४
६	पू.भा. १
८	२
९	३
११	४ मीन
१३	उ.भा. १
१५	२
१६	३
१८	४
२०	रेव. १
२१	२
२३	३
२५	४
२८	अश्वि. १ मेष
२९	२

गुरु चार

तारीख सन्	नक्षत्र चरण राशि
अप्रैल १७	अनुराधा ४
(१९८३)	
मई २१	३
जून १७	२
सितं. ९	३
अक्तू. २	४
२१	ज्येष्ठा १
नव ७	२
२८	३

गुरुचार

तारीख सन् १९८३ ई.	नक्षत्र चरण राशि
दिसं. ७	ज्ये ४
२२	मूल १ धनु
जन. ५	२
(१९८४)	
२१	३
फर. ६	४
२४	पू.षा. १
मार्च १८	२

शुक्र चार

तारीख सन्	नक्षत्र चरण राशि
अप्रै. १६	रोहि. १
(१९८३)	
१९	२
२२	३
२५	४
२८	मृग. १
मई १	२
४	३ मिथुन
६	४
९	आर्द्रा १
१२	२
१५	३
१८	४
२१	पुन. १
२५	२
२८	३
३१	पुन. ४ कर्क
जून ३	पुष्य १
६	२
१०	३
१३	४
१६	आश्ले. १

शुक्रचार

तारीख सन् १९८३ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८३ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८४ ई.	नक्षत्र चरण राशि
जून २०	आश्ले. २	दिसं. ४	चित्रा ४	फर. २७	धन ३
२४	३	७	स्वाती १	मार्च १	४
२६	४	१०	२	४	धनि. १
जुला. १	मघा.१सिंह	१२	३	६	२
६	२	१५	४	९	धनि.३कुंभ
१०	३	१८	विशा. १	१२	४
१६	४	२१	२	१४	शत. १
२३	पू.फा. १	२४	३	१७	२
अग. १५	मघा ४	२६	४ वृश्चि.	२०	३
२१	३	२८	अनु. १	२३	४
२७	१	जन. १	२	२५	पू.भा. १
सितं. २	आश्ले २	(१९८४)		२८	२
११	४ कर्क	४	३	३०	३
२०	मघा १सिंह	६	४		
३०	२	९	ज्ये. १		
अक्तू ६	३	१२	२		
११	४	१५	३		
१५	पू.फा. १	१८	४		
१९	२	२०	मूल १ धनु		
२३	३	२३	२		
२७	४	२६	३		
३०	उ.फा. १	२८	४		
नवं ३	कन्या २	३१	पू.षा. १		
६	३	फर. ३	२		
९	४	६	३		
१३	हस्त १	८	४		
१६	२	११	उ.षा. १		
१९	३	१४	२ मकर		
२२	४	१६	३		
२५	चि. १	१९	४		
२८	२	२२	श्रव. १		
दिसं. १	तुला ३	२४	२		

शनिचार (१९८३)

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
मई ३	चित्रा ४
अग. २८	स्वाती १
सितं.३०	२
अक्तू.२९	३
नवं. २५	४
दिसं. २८	विशा. १

राहुचार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
मई ११	मृग ३
(१९८३)	
जुला.१३	२ वृष
सितं.१४	१
नवं. १६	रोहि ४
जन. १८	
(१९८४)	३
मार्च २१	२

केतुचार

केतुचार (१९८३ ई.)

तारीख सन् ८३-८४ई.	नक्षत्र चरण राशि
मई ११	मू. १
जुला.१३	ज्ये.४ वृश्चि.
सितं १४	३
नवं १६	२
जन. १८	१
(१९८४	
मार्च २१	अनु. ४

यूनेरस चार (१९८३)

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
जून ४	अनु. ३
अक्तू.२५	४
दिसं २१	ज्ये. १

नेपच्यून चार (१९८३)

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
जुला.२६	मूल १
अक्तू.२६	मू. २
फर. ७	३
(१९८४)	

बेंकटेश (प्लूटो) चार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
जून ८	चित्रा ३
(१९८३)	
अग. ५	४
नवं. १३	स्वा. १

ग्रहों के वक्रमार्ग

ग्रह	वक्र या मार्ग	तारीख
बुध	वक्री	२- ५-८३
बुध	मार्गी	२६- ५-८३
बुध	वक्री	३- ९-८३
बुध	मार्गी	२५- ९-८३
बुध	वक्री	२२-१२-८३
बुध	मार्गी	११-१-१९८४ई०
गुरु	मार्गी	२९- ७-८३
शुक्र	वक्री	३- ८-८३
शुक्र	मार्गी	१५- ९-८३
शनि	मार्गी	२- ७-८३
शनि	वक्री	२५- २-८४
यूरे.	मार्गी	१४- ८-८३
यूरे.	वक्री	१८- ३-८४
नेप.	वक्री	२- ५-८३
नेप.	मार्गी	९- ९-८३
प्लूटो	मार्गी	८- ७-८३
प्लूटो	वक्री	४- २-८४

—दैनिक लग्न सारणी से लग्न ज्ञान—

आगे दी गई दैनिक लग्न सारणी में अंग्रेजी तारीख और प्रविष्टों के अनुसार चण्डीगढ़ (पं.) में निरयण लग्नों का समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) दिया गया है। किसी अंग्रेजी तारीख या प्रविष्टे को कौन सा लग्न कब समाप्त होता है—यह इस सारणी से तुरन्त जाना जा सकता है। कई बार सारणी में दिए गए प्रविष्टे और अंग्रेजी तारीखों में परस्पर एक दिन का अन्तर पाया जाएगा, इस से गणक को भ्रान्ति नहीं होनी चाहिए। अधिक सूक्ष्मता चाहने वाले गणक को इन सारणियों का प्रयोग अंग्रेजी तारीख के अनुसार ही करना चाहिए।

ध्यान रहे—लग्न सारणी में दुहरी लाईन से दाईं ओर छपे घ.मि. अगली अंग्रेजी तारीख के हैं। जैसे १३ अप्रै. के आगे धनु से मीन तक के घ. मि. १४ अप्रै. के हैं।

अयन चलन आदि के कारण दैनिक लग्न सारणी में दिए गए लग्न के समाप्ति कालों में प्रतिवर्ष थोड़ी २ स्थूलता आती जाती है। इस स्थूलता को दूर करने के लिए यहां दाईं ओर एक कोष्ठक (वार्षिक संस्कार कोष्ठक) दिया गया है। अपने अभीष्ट ईस्वी सन् के अनुसार इस कोष्ठक से लिया गया संस्कार दैनिक सारणी के लग्न समाप्ति काल में देने पर लग्न की समाप्ति का काल पर्याप्त सूक्ष्मता से ज्ञात हो जाएगा। इस संस्कार के अनन्तर लग्न के समाप्ति काल में एक मिनट से कम ही स्थूलता रहेगी। इस वार्षिक संस्कार कोष्ठक में लीप इयर दो बार दिया गया है, एक के पहिले ‡ ऐसा और दूसरे के पहिले * ऐसा चिह्न लगाया गया है। ‡ इस चिह्न के आगे लिखा संस्कार १ जन. से २८ फर. तक के लिए तथा * इस चिन्ह के आगे लिखा संस्कार २९ फर. से ३१ दिस. तक के लिए है। २९ फर. के लिए दैनिक लग्न सारणी में २८ फर. को प्रयोग में लाइए।

यहां वार्षिक संस्कार कोष्ठक द्वारा शुद्ध लग्न समाप्ति काल जानने के उदाहरण देते हैं :—

(i) १३ अप्रैल सन् १९७४ को चण्डीगढ़ में मिथुनलग्न का प्रारम्भ काल, दूसरे शब्दों में वृष लग्न का समाप्ति काल बतलाइए ?—दैनिक लग्न सारणी में १३ अप्रै. को वृष का समाप्ति काल ९ घ. [illegible] मि. लिखा है। "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" में सन् १९७४ के आगे वृष के नीचे +१ मिनट लिखा है। अतः ९ घ. [illegible] मि. में १ मि. जोड़ने पर ९ घ. [illegible] मि. वृष लग्न का सूक्ष्म समाप्ति काल ज्ञात हो गया।

(ii) सन् १९७६ की १ जन. को चण्डीगढ़ में मकर लग्न कब समाप्त हुआ ?—दैनिक लग्न सारणी में १ जन. को मकर का समाप्ति काल [illegible] घ. ५७ मि. लिखा है। "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" में सन् १९७६ दो बार लिखा है। जैसा कि पहिले बतलाया गया है कि ‡ इस चिह्न वाला संस्कार १ जन. से २८ फर. तक के लिए है। ‡ इस चिह्न वाले सन् १९७६ के आगे मकर के नीचे +३ मिनट लिखा है। अतः चिह्नानुसार [illegible] घ. ५७ मि. में जोड़ने पर [illegible] घ. [illegible] मि. मकर का सूक्ष्म समाप्ति काल हुआ।

(iii) २९ फर. सन् १९८० को चण्डीगढ़ में कुम्भ लग्न कब समाप्त हुआ ? दैनिक लग्न सारणी में २९ फर. नहीं है, इसके लिए २८ फर. को प्रयोग में लाएंगे। २८ फर. के आगे कुम्भ का समाप्ति काल ७ घ. [illegible] मि. लिखा है। "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" में इस चिह्न वाले सन् १९८० के आगे कुम्भ के नीचे −१ मिनट लिखा है। इसे चिह्नानुसार ७ घ. [illegible] मि. में से घटाने पर ७ घ. [illegible] मि. कुम्भ का सूक्ष्म समाप्तिकाल हुआ।

वार्षिक संस्कार कोष्ठक

ईस्वी सन् ↓	मेष	वृष	मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ मीन	ईस्वी सन् ↓	मेष	वृष	मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ मीन
	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.		मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
‡ १९५६	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	‡ १९७२	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९५६	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	* १९७२	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
* १९५७	०	०	०	०	०	०	०	१९७३	०	०	०	०	०	०	०
१९५८	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	१९७४	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९५९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+[illegible]	१९७५	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९६०	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+[illegible]	१९७६	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९६०	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	१९७६	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९६१	०	०	०	०	०	०	०	१९७७	०	०	०	०	०	०	०
१९६२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	१९७८	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९६३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	१९७९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९६४	+३	+३	+३	+३	+३	+३	३	‡ १९८०	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९६४	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	* १९८०	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९६५	०	०	०	०	०	०	०	१९८१	०	०	०	०	०	०	०
१९६६	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	१९८२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९६७	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	१९८३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९६८	+३	+३	+२	+३	+३	+३	+३	‡ १९८४	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९६८	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	* १९८४	−१	−१	०	०	−१	−१	−१
१९६९	०	०	०	०	०	०	०	१९८५	०	०	+१	+१	०	०	०
१९७०	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	१९८६	+१	+१	+२	+२	+१	+१	+१
१९७१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	१९८७	+२	+२	+३	+३	+२	+२	+२

(यह 'वार्षिक संस्कार कोष्ठक' मेरे "गणकमार्त्तण्ड" के लग्न प्रकरण में दिए गए एकवृहत् कोष्ठक का एक भाग है जिसमें सन् १९०० से सन् २२०० तक का सूक्ष्मतम वार्षिक संस्कार दिया गया है। दुनिया के किसी भी नगर में लग्नों का सूक्ष्म समाप्ति काल तुरन्त जानने के लिए "गणक मार्त्तण्ड" में एक अद्भुत सारणी दी गई है)।

यह दैनिक लग्न सारिणी चण्डीगढ़ (पं) के लिए है। समस्त पंजाब, हि. प्र., हरियाणा, दिल्ली, जम्मू काश्मीर के किसी भी नगर में लग्नों का लगभग समाप्ति काल जानने के लिए इस सारणी को प्रयोग में लाया जा सकता है। इसी पंचाग में आगे दी गई 'पंचांग परिवर्तन सारणी' की सहायता से भारत के प्रसिद्ध २४ नगरों में किसी भी दिन किसी भी लग्न का समाप्ति काल पर्याप्त सूक्ष्मता से जाना जा सकता है।

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं०) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा० स्टै० टा०]

वैशाख

मास	अंग्रेजी तारीख	वैशाख प्रविष्टे	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.
अप्रैल	१३	१	७।३६	९।३०	११।४४	१४। ७	१६।२७	१८।४४	२१। ६	२३।२६	१।३१	३।१२	४।३७	५।५९
	१४	२	७।३२	९।२६	११।४०	१४। ३	१६।२३	१८।४०	२१। २	२३।२२	१।२७	३। ८	४।३३	५।५५
	१५	३	७।२८	९।२२	११।३७	१३।५९	१६।१९	१८।३६	२०।५८	२३।१८	१।२३	३। ४	४।२९	५।५१
	१६	४	७।२४	९।१८	११।३३	१३।५५	१६।१५	१८।३३	२०।५४	२३।१४	१।१९	३। ०	४।२५	५।४७
	१७	५	७।२०	९।१४	११।२९	१३।५१	१६।११	१८।२९	२०।५०	२३।१०	१।१५	२।५६	४।२१	५।४३
	१८	६	७।१६	९।११	११।२५	१३।४७	१६। ७	१८।२५	२०।४६	२३। ६	१।११	२।५२	४।१७	५।३९
	१९	७	७।१२	९। ७	११।२१	१३।४३	१६। ३	१८।२१	२०।४२	२३। २	१। ७	२।४८	४।१३	५।३५
	२०	८	७। ८	९। ३	११।१७	१३।३९	१५।५९	१८।१७	२०।३८	२२।५८	१। ३	२।४४	४। ९	५।३१
	२१	९	७। ४	८।५९	११।१३	१३।३५	१५।५५	१८।१३	२०।३४	२२।५४	०।५९	२।४०	४। ५	५।२८
	२२	१०	७। ०	८।५५	११। ९	१३।३१	१५।५१	१८। ९	२०।३०	२२।५१	०।५५	२।३६	४। १	५।२४
	२३	११	६।५६	८।५१	११। ५	१३।२७	१५।४७	१८। ५	२०।२७	२२।४७	०।५१	२।३२	३।५७	५।२०
	२४	१२	६।५२	८।४७	११। १	१३।२३	१५।४३	१८। १	२०।२३	२२।४३	०।४७	२।२८	३।५३	५।१६
	२५	१३	६।४८	८।४३	१०।५७	१३।१९	१५।३९	१७।५७	२०।१९	२२।३९	०।४३	२।२४	३।४९	५।१२
	२६	१४	६।४४	८।३९	१०।५३	१३।१६	१५।३६	१७।५३	२०।१५	२२।३५	०।३९	२।२०	३।४५	५। ८
	२७	१५	६।४१	८।३५	१०।४९	१३।१२	१५।३२	१७।४९	२०।११	२२।३१	०।३५	२।१६	३।४२	५। ४
	२८	१६	६।३७	८।३१	१०।४५	१३। ८	१५।२८	१७।४५	२०। ७	२२।२७	०।३२	२।१३	३।३८	५। ०
	२९	१७	६।३३	८।२७	१०।४२	१३। ४	१५।२४	१७।४१	२०। ३	२२।२३	०।२८	२। ९	३।३४	४।५६
	३०	१८	६।२९	८।२३	१०।३८	१३। ०	१५।२०	१७।३७	१९।५९	२२।१९	०।२४	२। ५	३।३०	४।५२
मई	१	१९	६।२५	८।१९	१०।३४	१२।५६	१५।१६	१७।३४	१९।५५	२२।१५	०।२०	२। १	३।२६	४।४८
	२	२०	६।२१	८।१६	१०।३०	१२।५२	१५।१२	१७।३०	१९।५१	२२।११	०।१६	१।५७	३।२२	४।४४
	३	२१	६।१७	८।१२	१०।२६	१२।४८	१५। ८	१७।२६	१९।४७	२२। ७	०।१२	१।५३	३।१८	४।४०
	४	२२	६।१३	८। ८	१०।२२	१२।४४	१५। ४	१७।२२	१९।४३	२२। ३	०। ८	१।४९	३।१४	४।३६
	५	२३	६। ९	८। ४	१०।१८	१२।४०	१५। ०	१७।१८	१९।३९	२१।५९	०। ४	१।४५	३।१०	४।३२
	६	२४	६। ५	८। ०	१०।१४	१२।३६	१४।५६	१७।१४	१९।३५	२१।५६	०। ०	१।४१	३। ६	४।२९
	७	२५	६। १	७।५६	१०।१०	१२।३२	१४।५२	१७।१०	१९।३२	२१।५२	२३।५६	१।३७	३। २	४।२५
	८	२६	५।५७	७।५२	१०। ६	१२।२८	१४।४८	१७। ६	१९।२८	२१।४८	२३।५२	१।३३	२।५८	४।२१
	९	२७	५।५३	७।४८	१०। २	१२।२४	१४।४४	१७। २	१९।२४	२१।४४	२३।४८	१।२९	२।५४	४।१७
	१०	२८	५।४९	७।४४	९।५८	१२।२०	१४।४०	१६।५८	१९।२०	२१।४०	२३।४४	१।२५	२।५०	४।१३
	११	२९	५।४५	७।४०	९।५४	१२।१७	१४।३६	१६।५४	१९।१६	२१।३६	२३।४०	१।२१	२।४६	४। ९
	१२	३०	५।४२	७।३६	९।५०	१२।१३	१४।३३	१६।५०	१९।१२	२१।३२	२३।३७	१।१८	२।४३	४। ५
	१३	३१	५।३८	७।३२	९।४६	१२। ९	१४।२९	१६।४६	१९। ८	२१।२८	२३।३३	१।१४	२।३९	४। १
	१४	ज्ये. १	५।३४											

ज्येष्ठ

मास	अंग्रेजी तारीख	ज्येष्ठ प्रविष्टे	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.
मई	१४	१	७।२८	९।४३	१२। ५	१४।२५	१६।४२	१९। ४	२१।२४	२३।२९	१।१०	२।३५	३।५७	५।३०
	१५	२	७।२४	९।३९	१२। १	१४।२१	१६।३८	१९। ०	२१।२०	२३।२५	१। ६	२।३१	३।५३	५।२६
	१६	३	७।२०	९।३५	११।५७	१४।१७	१६।३५	१८।५६	२१।१६	२३।२१	१। २	२।२७	३।४९	५।२२
	१७	४	७।१७	९।३१	११।५३	१४।१३	१६।३१	१८।५२	२१।१२	२३।१७	०।५८	२।२३	३।४५	५।१८
	१८	५	७।१३	९।२७	११।४९	१४। ९	१६।२७	१८।४८	२१। ८	२३।१३	०।५४	२।१९	३।४१	५।१४
	१९	६	७। ९	९।२३	११।४५	१४। ५	१६।२३	१८।४४	२१। ४	२३। ९	०।५०	२।१५	३।३७	५।१०
	२०	७	७। ५	९।१९	११।४१	१४। १	१६।१९	१८।४०	२१। १	२३। ५	०।४६	२।११	३।३४	५। ६
	२१	८	७। १	९।१५	११।३७	१३।५७	१६।१५	१८।३६	२०।५७	२३। १	०।४२	२। ७	३।३०	५। २
	२२	९	६।५७	९।११	११।३३	१३।५३	१६।११	१८।३३	२०।५३	२२।५७	०।३८	२। ३	३।२६	४।५८
	२३	१०	६।५३	९। ७	११।२९	१३।४९	१६। ७	१८।२९	२०।४९	२२।५३	०।३४	१।५९	३।२२	४।५४
	२४	११	६।४९	९। ३	११।२५	१३।४५	१६। ३	१८।२५	२०।४५	२२।४९	०।३०	१।५५	३।१८	४।५०
	२५	१२	६।४५	८।५९	११।२२	१३।४१	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२२।४५	०।२६	१।५१	३।१४	४।४७
	२६	१३	६।४१	८।५५	११।१८	१३।३८	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।४२	०।२२	१।४८	३।१०	४।४३
	२७	१४	६।३७	८।५१	११।१४	१३।३४	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।३८	०।१९	१।४४	३। ६	४।३९
	२८	१५	६।३३	८।४७	११।१०	१३।३०	१५।४७	१८। ९	२०।२९	२२।३४	०।१५	१।४०	३। २	४।३५
	२९	१६	६।२९	८।४४	११। ६	१३।२६	१५।४३	१८। ५	२०।२५	२२।३०	०।११	१।३६	२।५८	४।३१
	३०	१७	६।२५	८।४०	११। २	१३।२२	१५।४०	१८। १	२०।२१	२२।२६	०। ७	१।३२	२।५४	४।२७
	३१	१८	६।२२	८।३६	१०।५८	१३।१८	१५।३६	१७।५७	२०।१७	२२।२२	०। ३	१।२८	२।५०	४।२३
जून	१	१९	६।१८	८।३२	१०।५४	१३।१४	१५।३२	१७।५३	२०।१३	२२।१८	२३।५९	१।२४	२।४६	४।१९
	२	२०	६।१४	८।२८	१०।५०	१३।१०	१५।२८	१७।४९	२०। ९	२२।१४	२३।५५	१।२०	२।४२	४।१५
	३	२१	६।१०	८।२४	१०।४६	१३। ६	१५।२४	१७।४५	२०। ५	२२।१०	२३।५१	१।१६	२।३८	४।११
	४	२२	६। ६	८।२०	१०।४२	१३। २	१५।२०	१७।४१	२०। २	२२। ६	२३।४७	१।१२	२।३५	४। ७
	५	२३	६। २	८।१६	१०।३८	१२।५८	१५।१६	१७।३७	१९।५८	२२। २	२३।४३	१। ८	२।३१	४। ३
	६	२४	५।५८	८।१२	१०।३४	१२।५४	१५।१२	१७।३४	१९।५४	२१।५८	२३।३९	१। ४	२।२७	३।५९
	७	२५	५।५४	८। ८	१०।३०	१२।५०	१५। ८	१७।३०	१९।५०	२१।५४	२३।३५	१। ०	२।२३	३।५५
	८	२६	५।५०	८। ४	१०।२६	१२।४६	१५। ४	१७।२६	१९।४६	२१।५०	२३।३१	०।५६	२।१९	३।५१
	९	२७	५।४६	८। ०	१०।२३	१२।४३	१५। ०	१७।२२	१९।४२	२१।४६	२३।२७	०।५२	२।१५	३।४८
	१०	२८	५।४२	७।५६	१०।१९	१२।३९	१४।५६	१७।१८	१९।३८	२१।४३	२३।२३	०।४९	२।११	३।४४
	११	२९	५।३८	७।५२	१०।१५	१२।३५	१४।५२	१७।१४	१९।३४	२१।३९	२३।२०	०।४५	२। ७	३।४०
	१२	३०	५।३४	७।४९	१०।११	१२।३१	१४।४८	१७।१०	१९।३०	२१।३५	२३।१६	०।४१	२। ३	३।३६
	१३	३१	५।३०	७।४५	१०। ७	१२।२७	१४।४५	१७। ६	१९।२६	२१।३१	२३।१२	०।३७	१।५९	३।३२
	१४	आ. १	५।२६											

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं०) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा० स्टैं० टा०]

मास	अंग्रेजी तारीख	भाद्रपद प्रविष्टे	सिंह घ. मि.	कन्या घ. मि.	तुला घ. मि.	वृश्चिक घ. मि.	धनु घ. मि.	मकर घ. मि.	कुम्भ घ. मि.	मीन घ. मि.	मेष घ. मि.	वृष घ. मि.	मिथुन घ. मि.	कर्क घ. मि.
अगस्त	१६	१	८।१५	१०।३३	१२।५४	१५।१५	१७।१९	१९। ०	२०।२५	२१।४८	२३।२०	१।१५	३।२९	५।५१
	१७	२	८।११	१०।२९	१२।५०	१५।११	१७।१५	१८।५६	२०।२१	२१।४४	२३।१६	१।११	३।२५	५।४७
	१८	३	८। ७	१०।२५	१२।४६	१५। ७	१७।११	१८।५२	२०।१७	२१।४०	२३।१२	१। ७	३।२१	५।४३
	१९	४	८। ३	१०।२१	१२।४२	१५। ३	१७। ७	१८।४८	२०।१३	२१।३६	२३। ८	१। ३	३।१७	५।३९
	२०	५	७।५९	१०।१७	१२।३८	१४।५९	१७। ३	१८।४४	२०। ९	२१।३२	२३। ४	०।५९	३।१३	५।३६
	२१	६	७।५५	१०।१३	१२।३४	१४।५५	१६।५९	१८।४०	२०। ५	२१।२८	२३। १	०।५५	३। ९	५।३२
	२२	७	७।५२	१०। ९	१२।३१	१४।५१	१६।५६	१८।३६	२०। १	२१।२४	२२।५७	०।५१	३। ५	५।२८
	२३	८	७।४८	१०। ५	१२।२७	१४।४७	१६।५२	१८।३३	१९।५८	२१।२०	२२।५३	०।४७	३। १	५।२४
	२४	९	७।४४	१०। १	१२।२३	१४।४३	१६।४८	१८।२९	१९।५४	२१।१६	२२।४९	०।४३	२।५८	५।२०
	२५	१०	७।४०	९।५७	१२।१९	१४।३९	१६।४४	१८।२५	१९।५०	२१।१२	२२।४५	०।३९	२।५४	५।१६
	२६	११	७।३६	९।५४	१२।१५	१४।३५	१६।४०	१८।२१	१९।४६	२१। ८	२२।४१	०।३६	२।५०	५।१२
	२७	१२	७।३२	९।५०	१२।११	१४।३१	१६।३६	१८।१७	१९।४२	२१। ४	२२।३७	०।३२	२।४६	५। ८
	२८	१३	७।२८	९।४६	१२। ७	१४। ७	१६।३२	१८।१३	१९।३८	२१। ०	२२।३३	०।२८	२।४२	५। ४
	२९	१४	७।२४	९।४२	१२। ३	१४।२३	१६।२८	१८। ९	१९।३४	२०।५६	२२।२९	०।२४	२।३८	५। ०
	३०	१५	७।२०	९।३८	११।५९	१४।१९	१६।२४	१८। ५	१९।३०	२०।५२	२२।२५	०।२०	२।३४	४।५६
	३१	१६	७।१६	९।३४	११।५५	१४।१५	१६।२०	१८। १	१९।२६	२०।४९	२२।२१	०।१६	२।३०	४।५२
सितम्बर	१	१७	७।१२	९।३०	११।५२	१४।१२	१६।१६	१७।५७	१९।२२	२०।४५	२२।१७	०।१२	२।२६	४।४८
	२	१८	७। ८	९।२६	११।४८	१४। ८	१६।१२	१७।५३	१९।१८	२०।४१	२२।१३	०। ८	२।२२	४।४४
	३	१९	७। ४	९।२२	११।४४	१४। ४	१६। ८	१७।४९	१९।१४	२०।३७	२२। ९	०। ४	२।१८	४।४०
	४	२०	७। ०	९।१८	११।४०	१४। ०	१६। ४	१७।४५	१९।१०	२०।३३	२२। ५	०। ०	२।१४	४।३६
	५	२१	६।५७	९।१४	११।३६	१३।५६	१६। ०	१७।४१	१९। ६	२०।२९	२२। १	२३।५६	२।१०	४।३२
	६	२२	६।५३	९।१०	११।३२	१३।५२	१५।५७	१७।३८	१९। ३	२०।२५	२१।५८	२३।५२	२। ६	४।२९
	७	२३	६।४९	९। ६	११।२८	१३।४८	१५।५३	१७।३४	१८।५९	२०।२१	२१।५४	२३।४८	२। ३	४।२५
	८	२४	६।४५	९। २	११।२४	१३।४४	१५।४९	१७।३०	१८।५५	२०।१७	२१।५०	२३।४४	१।५९	४।२१
	९	२५	६।४१	८।५९	११।२०	१३।४०	१५।४५	१७।२६	१८।५१	२०।१३	२१।४६	२३।४०	१।५५	४।१७
	१०	२६	६।३७	८।५५	११।१६	१३।३६	१५।४१	१७।२२	१८।४७	२०। ९	२१।४२	२३।३६	१।५१	४।१३
	११	२७	६।३३	८।५१	११।१२	१३।३२	१५।३७	१७।१८	१८।४३	२०। ५	२१।३८	२३।३३	१।४७	४। ९
	१२	२८	६।२९	८।४७	११। ८	१३।२८	१५।३३	१७।१४	१८।३९	२०। १	२१।३४	२३।२९	१।४३	४। ५
	१३	२९	६।२५	८।४३	११। ४	१३।२४	१५।२९	१७।१०	१८।३५	१९।५७	२१।३०	२३।२५	१।३९	४। १
	१४	३०	६।२१	८।३९	११। ०	१३।२१	१५।२५	१७। ६	१८।३१	१९।५४	२१।२६	२३।२१	१।३५	३।५७
	१५	३१	६।१७	८।३५	१०।५६	१३।१७	१५।२१	१७। २	१८।२७	१९।५०	२१।२२	२३।१७	१।३१	३।५३
	१६ आ।		६।१३											

मास	अंग्रेजी तारीख	आश्विन प्रविष्टे	कन्या घ. मि.	तुला घ. मि.	वृश्चिक घ. मि.	धनु घ. मि.	मकर घ. मि.	कुम्भ घ. मि.	मीन घ. मि.	मेष घ. मि.	वृष घ. मि.	मिथुन घ. मि.	कर्क घ. मि.	सिंह घ. मि.
सितम्बर	१६	१	८।३१	१०।५३	१३।१३	१५।१७	१६।५८	१८।२३	१९।४६	२१।१८	२३।१३	१।२७	३।४९	६। ९
	१७	२	८।२७	१०।४९	१३। ९	१५।१३	१६।५४	१८।१९	१९।४२	२१।१४	२३। ९	१।२३	३।४५	६। ५
	१८	३	८।२३	१०।४५	१३। ५	१५। ९	१६।५०	१८।१५	१९।३८	२१।१०	२३। ५	१।१९	३।४२	६। १
	१९	४	८।१९	१०।४१	१३। १	१५। ५	१६।४६	१८।११	१९।३४	२१। ७	२३। १	१।१५	३।३८	५।५८
	२०	५	८।१५	१०।३७	१२।५७	१५। २	१६।४२	१८। ८	१९।३०	२१। ३	२२।५७	१।११	३।३४	५।५४
	२१	६	८।११	१०।३३	१२।५३	१४।५८	१६।३९	१८। ४	१९।२६	२०।५९	२२।५३	१। ७	३।३०	५।५०
	२२	७	८। ७	१०।२९	१२।४९	१४।५४	१६।३५	१८। ०	१९।२२	२०।५५	२२।४९	१। ४	३।२६	५।४६
	२३	८	८। ३	१०।२५	१२।४५	१४।५०	१६।३१	१७।५६	१९।१८	२०।५१	२२।४५	१। ०	३।२२	५।४२
	२४	९	८। ०	१०।२१	१२।४१	१४।४६	१६।२७	१७।५२	१९।१४	२०।४७	२२।४१	०।५६	३।१८	५।३८
	२५	१०	७।५६	१०।१७	१२।३७	१४।४२	१६।२३	१७।४८	१९।१०	२०।४३	२२।३८	०।५२	३।१४	५।३४
	२६	११	७।५२	१०।१३	१२।३३	१४।३८	१६।१९	१७।४४	१९। ६	२०।३९	२२।३४	०।४८	३।१०	५।३०
	२७	१२	७।४८	१०। ९	१२।२९	१४।३४	१६।१५	१७।४०	१९। २	२०।३५	२२।३०	०।४४	३। ६	५।२६
	२८	१३	७।४४	१०। ५	१२।२५	१४।३०	१६।११	१७।३६	१८।५८	२०।३१	२२।२६	०।४०	३। २	५।२२
	२९	१४	७।४०	१०। १	१२।२२	१४।२६	१६। ७	१७।३२	१८।५५	२०।२७	२२।२२	०।३६	२।५८	५।१८
	३०	१५	७।३६	९।५७	१२।१८	१४।२२	१६। ३	१७।२८	१८।५१	२०।२३	२२।१८	०।३२	२।५४	५।१४
अक्तूबर	१	१६	७।३२	९।५४	१२।१४	१४।१९	१५।५९	१७।२४	१८।४७	२०।१९	२२।१४	०।२८	२।५०	५।१०
	२	१७	७।२८	९।५०	१२।१०	१४।१५	१५।५५	१७।२०	१८।४३	२०।१५	२२।१०	०।२४	२।४६	५। ६
	३	१८	७।२४	९।४६	१२। ६	१४।१०	१५।५१	१७।१६	१८।३९	२०।११	२२। ६	०।२०	२।४२	५। ३
	४	१९	७।२०	९।४२	१२। २	१४। ६	१५।४७	१७।१२	१८।३५	२०। ८	२२। २	०।१६	२।३९	४।५९
	५	२०	७।१६	९।३८	११।५८	१४। ३	१५।४३	१७। ९	१८।३१	२०। ४	२१।५८	०।१२	२।३५	४।५५
	६	२१	७।१२	९।३४	११।५४	१३।५९	१५।४०	१७। ५	१८।२७	२०। ०	२१।५४	०। ८	२।३१	४।५१
	७	२२	७। ८	९।३०	११।५०	१३।५५	१५।३६	१७। १	१८।२३	१९।५६	२१।५०	०। ५	२।२७	४।४७
	८	२३	७। ५	९।२६	११।४६	१३।५१	१५।३२	१६।५७	१८।१९	१९।५२	२१।४६	०। १	२।२३	४।४३
	९	२४	७। १	९।२२	११।४२	१३।४७	१५।२८	१६।५३	१८।१५	१९।४८	२१।४२	२३।५७	२।१९	४।३९
	१०	२५	६।५७	९।१८	११।३८	१३।४३	१५।२४	१६।४९	१८।११	१९।४४	२१।३८	२३।५३	२।१५	४।३५
	११	२६	६।५३	९।१४	११।३४	१३।३९	१५।२०	१६।४५	१८। ७	१९।४०	२१।३४	२३।४९	२।११	४।३१
	१२	२७	६।४९	९।१०	११।३०	१३।३५	१५।१६	१६।४१	१८। ३	१९।३६	२१।३०	२३।४५	२। ७	४।२७
	१३	२८	६।४५	९। ६	११।२६	१३।३१	१५।१२	१६।३७	१७।५९	१९।३२	२१।२७	२३।४१	२। ३	४।२३
	१४	२९	६।४१	९। २	११।२३	१३।२७	१५। ८	१६।३३	१७।५५	१९।२८	२१।२३	२३।३७	१।५९	४।१९
	१५	३०	६।३७	८।५९	११।१९	१३।२३	१५। ४	१६।२९	१७।५२	१९।२४	२१।१९	२३।३३	१।५५	४।१५
	१६ का।		६।३३											

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं.) में लग्नों का समाप्तिकाल | भा. स्टै. टा. |

पौष

मास	अंग्रेजी तारीख	पौष प्रविष्टे	धनु घं.मि.	मकर घं.मि.	कुम्भ घं.मि.	मीन घं.मि.	मेष घं.मि.	वृष घं.मि.	मिथुन घं.मि.	कर्क घं.मि.	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.	वृश्चिक घं.मि.
दिसम्बर	१५	१	९।२३	११। ४	१२।२९	१३।५२	१५।२४	१७।१९	१९।३३	२१।५६	०।१६	२।३३	४।५५	७।१५
	१६	२	९।१९	११। ०	१२।२५	१३।४८	१५।२१	१७।१५	१९।२९	२१।५२	०।१२	२।२९	४।५१	७।११
	१७	३	९।१६	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१७	१७।११	१९।२५	२१।४८	०। ८	२।२५	४।४७	७। ७
	१८	४	९।१२	१०।५३	१२।१८	१३।४०	१५।१३	१७। ७	१९।२२	२१।४४	०। ४	२।२१	४।४३	७। ३
	१९	५	९। ८	१०।४९	१२।१४	१३।३६	१५। ९	१७। ३	१९।१८	२१।४०	०। ०	२।१७	४।३९	६।५९
	२०	६	९। ४	१०।४५	१२।१०	१३।३२	१५। ५	१६।५९	१९।१४	२१।३६	२३।५६	२।१४	४।३५	६।५५
	२१	७	९। ०	१०।४१	१२। ६	१३।२८	१५। १	१६।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५२	२।१०	४।३१	६।५१
	२२	८	८।५६	१०।३७	१२। २	१३।२४	१४।५७	१६।५२	१९। ६	२१।२८	२३।४८	२। ६	४।२७	६।४७
	२३	९	८।५२	१०।३३	११।५८	१३।२०	१४।५३	१६।४८	१९। २	२१।२४	२३।४४	२। २	४।२३	६।४३
	२४	१०	८।४८	१०।२९	११।५४	१३।१६	१४।४९	१६।४४	१८।५८	२१।२०	२३।४०	१।५८	४।१९	६।३९
	२५	११	८।४४	१०।२५	११।५०	१३।१२	१४।४५	१६।४०	१८।५४	२१।१६	२३।३६	१।५४	४।१५	६।३६
	२६	१२	८।४०	१०।२१	११।४६	१३। ९	१४।४१	१६।३६	१८।५०	२१।१२	२३।३२	१।५०	४।१२	६।३२
	२७	१३	८।३६	१०।१७	११।४२	१३। ५	१४।३७	१६।३२	१८।४६	२१। ८	२३।२८	१।४६	४। ८	६।२८
	२८	१४	८।३२	१०।१३	११।३८	१३। १	१४।३३	१६।२८	१८।४२	२१। ४	२३।२४	१।४२	४। ४	६।२४
	२९	१५	८।२८	१०। ९	११।३४	१२।५७	१४।२९	१६।२४	१८।३८	२१। ०	२३।२०	१।३८	४। ०	६।२०
	३०	१६	८।२४	१०। ५	११।३०	१२।५३	१४।२६	१६।२०	१८।३४	२०।५७	२३।१७	१।३४	३।५६	६।१६
	३१	१७	८।२०	१०। १	११।२६	१२।४९	१४।२२	१६।१६	१८।३०	२०।५३	२३।१३	१।३०	३।५२	६।१२
जनवरी	१	१८	८।१६	९।५७	११।२२	१२।४४	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४८	२३। ८	१।२५	३।४७	६। ७
	२	१९	८।१२	९।५३	११।१८	१२।४०	१४।१३	१६। ७	१८।२२	२०।४४	२३। ४	१।२१	३।४३	६। ३
	३	२०	८। ८	९।४९	११।१४	१२।३६	१४। ९	१६। ३	१८।१८	२०।४०	२३। ०	१।१७	३।३९	५।५९
	४	२१	८। ४	९।४५	११।१०	१२।३२	१४। ५	१५।५९	१८।१४	२०।३६	२२।५६	१।१४	३।३५	५।५५
	५	२२	८। ०	९।४१	११। ६	१२।२८	१४। १	१५।५६	१८।१०	२०।३२	२२।५२	१।१०	३।३१	५।५१
	६	२३	७।५६	९।३७	११। २	१२।२४	१३।५७	१५।५२	१८। ६	२०।२८	२२।४८	१। ६	३।२७	५।४७
	७	२४	७।५२	९।३३	१०।५८	१२।२०	१३।५३	१५।४८	१८। २	२०।२४	२२।४४	१। २	३।२३	५।४३
	८	२५	७।४८	९।२९	१०।५४	१२।१६	१३।४९	१५।४४	१७।५८	२०।२०	२२।४०	०।५८	३।१९	५।३९
	९	२६	७।४४	९।२५	१०।५०	१२।१३	१३।४५	१५।४०	१७।५४	२०।१६	२२।३६	०।५४	३।१५	५।३६
	१०	२७	७।४०	९।२१	१०।४६	१२। ९	१३।४१	१५।३६	१७।५०	२०।१२	२२।३२	०।५०	३।१२	५।३२
	११	२८	७।३६	९।१७	१०।४२	१२। ५	१३।३७	१५।३२	१७।४६	२०। ८	२२।२८	०।४६	३। ८	५।२८
	१२	२९	७।३२	९।१३	१०।३८	१२। १	१३।३३	१५।२८	१७।४२	२०। ४	२२।२४	०।४२	३। ४	५।२४
	१३	माघ १	७।२८											

माघ

मास	अंग्रेजी तारीख	माघ प्रविष्टे	मकर घं.मि.	कुम्भ घं.मि.	मीन घं.मि.	मेष घं.मि.	वृष घं.मि.	मिथुन घं.मि.	कर्क घं.मि.	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.	वृश्चिक घं.मि.	धनु घं.मि.
जनवरी	१३	१	९। ९	१०।३४	११।५७	१३।२९	१५।२४	१७।३८	२०। ०	२२।२०	०।३८	३। ०	५।२०	७।२४
	१४	२	९। ५	१०।३०	११।५३	१३।२६	१५।२०	१७।३४	१९।५७	२२।१७	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
	१५	३	९। १	१०।२७	११।४९	१३।२२	१५।१६	१७।३०	१९।५३	२२।१३	०।३०	२।५२	५।१२	७।१७
	१६	४	८।५८	१०।२३	११।४५	१३।१८	१५।१२	१७।२६	१९।४९	२२। ९	०।२६	२।४८	५। ८	७।१३
	१७	५	८।५४	१०।१९	११।४१	१३।१४	१५। ८	१७।२३	१९।४५	२२। ५	०।२२	२।४४	५। ४	७। ९
	१८	६	८।५०	१०।१५	११।३७	१३।१०	१५। ४	१७।१९	१९।४१	२२। १	०।१९	२।४०	५। ०	७। ५
	१९	७	८।४६	१०।११	११।३३	१३। ६	१५। १	१७।१५	१९।३७	२१।५७	०।१५	२।३६	४।५६	७। १
	२०	८	८।४२	१०। ७	११।२९	१३। २	१४।५७	१७।११	१९।३३	२१।५३	०।११	२।३२	४।५२	६।५७
	२१	९	८।३८	१०। ३	११।२५	१२।५८	१४।५३	१७। ७	१९।२९	२१।४९	०। ७	२।२८	४।४८	६।५३
	२२	१०	८।३४	९।५९	११।२१	१२।५४	१४।४९	१७। ३	१९।२५	२१।४५	०। ३	२।२४	४।४४	६।४९
	२३	११	८।३०	९।५५	११।१७	१२।५०	१४।४५	१६।५९	१९।२१	२१।४१	२३।५९	२।२०	४।४१	६।४५
	२४	१२	८।२६	९।५१	११।१४	१२।४६	१४।४१	१६।५५	१९।१७	२१।३७	२३।५५	२।१६	४।३७	६।४१
	२५	१३	८।२२	९।४७	११।१०	१२।४२	१४।३७	१६।५१	१९।१३	२१।३३	२३।५१	२।१३	४।३३	६।३७
	२६	१४	८।१८	९।४३	११। ६	१२।३८	१४।३३	१६।४७	१९। ९	२१।२९	२३।४७	२। ९	४।२९	६।३३
	२७	१५	८।१४	९।३९	११। २	१२।३४	१४।२९	१६।४३	१९। ५	२१।२५	२३।४३	२। ५	४।२५	६।२९
	२८	१६	८।१०	९।३५	१०।५८	१२।३०	१४।२५	१६।३९	१९। २	२१।२२	२३।३९	२। १	४।२१	६।२५
	२९	१७	८। ६	९।३१	१०।५४	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५८	२१।१८	२३।३५	१।५७	४।१७	६।२२
	३०	१८	८। २	९।२८	१०।५०	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५४	२१।१४	२३।३१	१।५३	४।१३	६।१८
	३१	१९	७।५९	९।२४	१०।४६	१२।१९	१४।१३	१६।२८	१८।५०	२१।१०	२३।२७	१।४९	४। ९	६।१४
फरवरी	१	२०	७।५५	९।२०	१०।४२	१२।१५	१४। ९	१६।२४	१८।४६	२१। ६	२३।२३	१।४५	४। ५	६।१०
	२	२१	७।५१	९।१६	१०।३८	१२।११	१४। ५	१६।२०	१८।४२	२१। २	२३।२०	१।४१	४। १	६। ६
	३	२२	७।४७	९।१२	१०।३४	१२। ७	१४। २	१६।१६	१८।३८	२०।५८	२३।१६	१।३७	३।५७	६। २
	४	२३	७।४३	९। ८	१०।३०	१२। ३	१३।५८	१६।१२	१८।३४	२०।५४	२३।१२	१।३३	३।५३	५।५८
	५	२४	७।३९	९। ४	१०।२६	११।५९	१३।५४	१६। ८	१८।३०	२०।५०	२३। ८	१।२९	३।४९	५।५४
	६	२५	७।३५	९। ०	१०।२२	११।५५	१३।५०	१६। ४	१८।२६	२०।४६	२३। ४	१।२५	३।४५	५।५०
	७	२६	७।३१	८।५६	१०।१९	११।५१	१३।४६	१६। ०	१८।२२	२०।४२	२३। ०	१।२१	३।४२	५।४६
	८	२७	७।२७	८।५२	१०।१५	११।४७	१३।४२	१५।५६	१८।१८	२०।३८	२२।५६	१।१७	३।३८	५।४२
	९	२८	७।२३	८।४८	१०।११	११।४३	१३।३८	१५।५२	१८।१४	२०।३४	२२।५२	१।१४	३।३४	५।३८
	१०	२९	७।१९	८।४४	१०। ७	११।३९	१३।३४	१५।४८	१८।१०	२०।३०	२२।४८	१।१०	३।३०	५।३४
	११	३०	७।१५	८।४०	१०। ३	११।३५	१३।३०	१५।४७	१८। ६	२०।२६	२२।४४	१। ६	३।२६	५।३०
	१२	फा. १	७।११											

अक्षांशादि सारिणी

• भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. स.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
अकोला (म. रा.)	२०।४२	७७। २	—२१।५२	कुमारी अन्तरीप	८। ५	७७।३४	—१९।४४	झालरापाटन	२४।३२	७६।१२	—२५।१२
अजमेर	२६।२७	७४।४२	—३१।१२	कुम्भकोणम्	१०।५८	७९।२५	—१२।२०	झांसी	२५।२७	७८।३७	—१५।३२
अगरतला	२३।४६	९१।१७	+३५।०८	कोटा (राज.)	२५।१०	७५।५२	—२६।३२	झालावाड़	२४।३६	७४। ९	—३३।२४
अमृतसर	३१।३७	७४।४८	—३०।४८	कोहिमा	२५।४१	९४। ७	+४६।२८	ट्रावनकोर	९। ०	७७। ०	—२२। ०
अम्बाला	३०।२१	७६।५२	—२२।३२	कोल्हापुर	१६।४२	७४।१६	—३२।५६	टोंक (राज.)	२६।११	७५।५०	—२६।४०
अयोध्या	२६।४८	८२।१४	— १। ४	कोचीन बंदर	९।५८	७६।१७	—२४।५२	डिबाई	२८।१२	७८।१५	—१७। ०
अलमोड़ा	२९।३७	७९।४०	—११।२०	खंभात	२२।१६	७२।३६	—३९।३६	डूंगरपुर (राज.)	२३।५०	७३।४३	—३५। ८
अहमदनगर	२७।३४	७६।३८	—२३।२८	गया	२४।४६	८५। १	+१०। ४	डिब्रूगढ़	२७।२६	९४।५६	+४९।४४
अहमदाबाद	१९। ५	७४।४८	—३०।४८	गंगटोक	२७।२०	८८।४०	+२४।४०	त्रिवेन्द्रम्	८।३०	७६।५७	—२२।१२
अलीगढ़ (यू. पी.)	२३। २	७२।३८	—३९।२८	ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	—१७।२०	तलागंग	३२।५६	७२।२८	—४०। ८
आगरा (,,)	२७।५४	७८। ६	—१७।३६	गाजीपुर (यू. पी.)	२५।३४	८३।३५	+ ४।२०	त्रिचनापल्ली	१०।५०	७८।४६	—१४।५६
आजमगढ़ (,,)	२७।१०	७८। ५	—१७।४०	गिलगित	३५।५५	७४।२२	—३२।३२	दरभंगा	२६।१०	८५।५७	+१३।४८
आबू	२६। ५	८३।१२	+ २।४८	गोंडा (उ. प्र.)	२७।१०	८१।५७	— २।१२	द्वारिका	२२।१४	६९। १	—५३।५६
इटावा	२४।४०	७२।४५	—३९। ०	गौहाटी	२६।११	९१।४५	+३७। ०	दार्जिलिंग	२७। ३	८८।१८	+२३।१२
इन्दौर	२६।४७	७९। २	—१३।५२	गुरदासपुर	३२। ३	७५।२७	—२८।१२	दिल्ली	२८।३८	७७।१२	—२१।१२
उज्जैन	२२।४४	७५।५०	—२६।४०	गोरखपुर	२६।४५	८३।२४	+ ३।३६	देहरादून	३०।१९	७८। ४	—१७।४४
उदयपुर (मेवाड़)	२३। ६	७५।४३	—२७। ८	गोवा	१५।३०	७३।५७	—३४।१२	धौलपुर	२६।४२	७७।५३	—१८।२८
ललितपुर (म. रा.)	२४।३५	७३।४२	—३५।१२	चम्बा	३२।२६	७६।१०	—२५।२०	नडियाद (गुज.)	२२।४१	७२।५५	—३८।२०
औरङ्गाबाद (हैद.)	२१।१८	७७।३३	—१९।४८	चण्डीगढ़	३०।४४	७६।५२	—२२।३२	नसीराबाद (राज.)	२६।१८	७४।४६	—३०।५६
कठुआ (कश्मीर)	१६।५३	७५।२३	—२८।२८	चीरापुञ्जी	२५।१७	९१।४७	+३७।८	नागपुर	२१। ९	७९। ९	—१३।२४
कपूरथला	३२।१७	७५।३६	—२७।३६	छतरपुर	२४।५४	७९।३८	—११।२८	नाभा	३०।२५	७६। ९	—२५।२४
करनाल	३१।२३	७५।२५	—२८।२०	छपरा (बिहार)	२५।४७	८४।४१	+ ८।४४	नाथद्वारा	२४।५६	७३।५२	—३४।३२
कटक	२९।४२	७७। २	—२१।५२	जलपाइगुड़ी	२६।३२	८८।४६	+२५। ४	नासिक	२०। २	७३।५०	—३४।४०
कलकत्ता	२०।२८	८५।५४	+१३।३६	जम्मू	३२।४४	७४।५४	—३०।२४	नैनीताल	२९।२३	७९।३०	—१२। ०
कोडैकनाल	२२।३४	८८।२४	+२३।३६	जब्बलपुर	२३।१०	७९।५९	—१०। ४	पटना (बिहार)	२५।३७	८५।१३	+१०।५२
कानपुर	१०।१३	७७।२८	—२०।०८	जयपुर	२६।५५	७५।५२	—२६।३२	पटियाला	३०।२०	७६।२५	—२४।२०
कानपुर	२६।२७	८०।२४	— ८।२४	जालन्धर	३१।१९	७५।३४	—२७।४४	पठानकोट	३२।१७	७५।४२	—२७।१२
कटनी (म. प्र.)	२३।५०	८०।२३	— ८।२८	जामनगर	२२।२७	७०। ७	—४९।३२	पठानकोट	२५।२८	८१।५४	— २।२४
काशी	२५।२०	८३। ०	+ २। ०	जीन्द	२९।१९	७६।२३	—२४।२८	प्रयागराज	११।५६	७९।५३	—१०।२८
काशी	३२। ५	७६।१८	—२४।४८	जूनागढ़	२१।३१	७०।३६	—४७।३६	पाण्डीचेरी	३३।५१	७४। ८	—३३।२८
कांगड़ा	२५। २	७३।५४	—३४।२४	जैसलमेर	२६।५५	७०।५७	—४६।१२	पाण्डीचेरी	१८।३०	७३।५३	—३४।२८
कांकरोली	३०। ०	७६।४८	—२२।४८	जोधपुर	२६।१८	७३। ४	—३७।४४	पुञ्छ (का.)	११।४०	९२।४६	+४१। ४
कुरुक्षेत्र				जौनपुर	२५।४६	८२।४४	+ ०।५६	पूना			
								पोर्टब्लेअर (अण्ड.)			

अक्षांशादि सारिणी

भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
अकोला (म. रा.)	२०।४२	७७। २	—२१।५२
अजमेर	२६।२७	७४।४२	—३१।१२
अगरतला	२३।४६	९१।१७	+३५।०८
अमृतसर	३१।३७	७४।४८	—३०।४८
अम्बाला	३०।२१	७६।५२	—२२।३२
अयोध्या	२६।४८	८२।१४	— १। ४
अलमोड़ा	२९।३७	७९।४०	—११।२०
अहमदनगर	२७।३४	७६।३८	—२३।२८
अहमदाबाद	१९। ५	७४।४८	—३०।४८
अलीगढ़ (यू. पी.)	२३। २	७२।३८	—३६।२८
आगरा (..)	२७।५४	७८। ६	—१७।३६
आजमगढ़ (..)	२७।१०	७८। ५	—१७।४०
आबू	२६। ५	८३।१२	+ २।४८
इटावा	२४।४०	७२।४५	—३९। ०
इन्दौर	२६।४७	७९। २	—१३।५२
उज्जैन	२२।४४	७५।५०	—२६।४०
उदयपुर (मेवाड़)	२३। ६	७५।४३	—२७। ८
एलिचपुर (म. रा.)	२४।३५	७३।४२	—३५।१२
औरंगाबाद (हैद.)	२१।१८	७७।३३	—१९।४८
कठुआ (कश्मीर)	१९।५३	७५।२३	—२८।२८
कपूरथला	३२।१७	७५।३६	—२७।३६
करनाल	३१।२३	७५।२५	—२८।२०
कटक	२९।४२	७७। २	—२१।५२
कलकत्ता	२०।२८	८५।५४	+१३।३६
कोडैकनाल	२२।३४	८८।२४	+२३।३६
कानपुर	१०।१३	७७।२८	—२०।०८
कानपुर			
कटनी (म. प्र.)	२६।२७	८०।२४	— ८।२४
काशी	२३।५०	८०।२३	— ८।२८
काशी	२५।२०	८३। ०	+ २। ०
कांगड़ा	३२। ५	७६।१८	—२४।४८
कांकरोली	२५। २	७३।५४	—३४।२४
कुरुक्षेत्र	३०। ०	७६।४८	—२२।४८

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
कुमारी अन्तरीप	८। ५	७७।३४	—१९।४४
कुम्भकोणम्	१०।५८	७९।२५	—१२।२०
कोटा (राज.)	२५।१०	७५।५२	—२६।३२
कोहिमा	२५।४१	९४। ७	+४६।२८
कोल्हापुर	१६।४२	७४।१६	—३२।५६
कोचीन बंदर	६।५८	७६।१७	—२४।५२
संभात	२२।१९	७२।३६	—३६।३६
गया	२४।४६	८५। १	+१०। ४
गंगटोक	२७।२०	८८।४०	+२४।४०
ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	—१७।२०
गाजीपुर (यू. पी.)	२५।३४	८३।३५	+ ४।२०
गिलगित	३५।५५	७४।२२	—३२।३२
गोंडा (उ. प्र.)	२७।१०	८१।५७	— २।१२
गौहाटी	२६।११	९१।४५	+३७। ०
गुरुदासपुर	३२। ३	७५।२७	—२८।१२
गोरखपुर	२६।४५	८३।२४	+ ३।३६
गोवा	१५।३०	७३।५७	—३४।१२
चम्बा	३२।२६	७६।१०	—२५।२०
चण्डीगढ़	३०।४४	७६।५२	—२२।३२
चीरापुञ्जी	२५।१७	९१।४७	+३७।८
छतरपुर	२४।५४	७९।३८	—११।२८
छपरा (बिहार)	२५।४७	८४।४१	+ ८।४४
जलपाइगुड़ी	२६।३२	८८।४६	+२५। ४
जम्मू	३२।४४	७४।५४	—३०।२४
जब्बलपुर	२३।१०	७९।५९	—१०। ४
जयपुर	२६।५५	७५।५२	—२६।३२
जालन्धर	३१।१६	७५।३४	—२७।४४
जामनगर	२२।२७	७०। ७	—४९।३२
जीन्द	२९।१९	७६।२३	—२४।२८
जूनागढ़	२१।३१	७०।३६	—४७।३६
जैसलमेर	२६।५५	७०।५७	—४६।१२
जोधपुर	२६।१८	७३। ४	—३७।४४
जौनपुर	२५।४६	८२।४४	+ ०।५६

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अ. क.	अ. क.	मि. से.
झालरापाटन	२४।३२	७६।१२	—२५।१२
झांसी	२५।२७	७८।३७	—१५।३२
झालावाड़	२४।३६	७४। ६	—३३।२४
ट्रावनकोर	९। ०	७७। ०	—२२। ०
टोंक (राज.)	२६।११	७५।५०	—२६।४०
डियाट्	२८।१२	७८।१५	—१७। ०
डूंगरपुर (राज.)	२३।५०	७३।४३	—३५। ८
डिब्रूगढ़	२७।२९	९४।५६	+४६।४४
त्रिवेन्द्रम	८।३०	७६।५७	—२२।१२
तलागग	३२।५६	७२।२८	—४०। ८
त्रिचनापल्ली	१०।५०	७८।४६	—१४।५६
दरभंगा	२६।१०	८५।५७	+१३।४८
द्वारिका	२२।१४	६९। १	—५३।५६
दार्जिलिंग	२७। ३	८८।१८	+२३।१२
दिल्ली	२८।३८	७७।१२	—२१।१२
देहरादून	३०।१६	७८। ४	—१७।४४
धौलपुर	२६।४२	७७।५३	—१८।२८
नडियाद (गुज.)	२२।४१	७२।५५	—३८।२०
नसीराबाद (राज.)	२६।१८	७४।४६	—३०।५६
नागपुर	२१। ६	७९। ९	—१३।२४
नाभा	३०।२५	७६। ९	—२५।२४
नाथद्वारा	२४।५६	७३।५२	—३४।३२
नासिक	२०। २	७३।५०	—३४।४०
नैनीताल	२९।२३	७९।३०	—१२। ०
पटना (बिहार)	२५।३७	८५।१३	+१०।५२
पटियाला	३०।२०	७६।२५	—२४।२०
पठानकोट	३२।१७	७५।४२	—२७।१२
पठानकोट			
प्रयागराज	२५।२८	८१।५४	— २।२४
पाण्डीचेरी	११।५६	७९।५३	—१०।२८
पाण्डीचेरी	३३।५१	७४। ८	—३३।२८
पञ्जड़ (का.)	१८।३०	७३।५३	—३४।२८
पन्ना	११।४०	९२।४६	+४१। ४
पोर्टब्लेअर (अण्ड.)			

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण एवं श्रमसाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीय-काल का ज्ञान होना चाहिए, नगरों के अक्षांश-रेखांश की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए भिन्न भिन्न २ अक्षांशों की लग्न सारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्न सारणी का ही प्रयोग होता है। आगे १२३ पृष्ठ पर हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न दशम स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में, अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्टकाल, दिनमान और इष्ट-कालिक स्पष्ट की जरूरत नहीं होती जब कि प्राचीन विधि में इन सबकी जरूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न-साधन विधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उसदिन का सूक्ष्म सूर्योदय काल ज्ञात कीजिए। सूर्योदय काल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ. प.) बना लीजिए और इष्ट कालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पञ्चांग में दी गई "अक्षांशादि सारणी" से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कीजिए। अब इस अक्षांश वाली लग्न सारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए :—

पीछे २९, ३०, ३१, अक्षांशों की तीन लग्न सारणियां दी गई हैं जो दिल्ली, पंजाब तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्न सारणी में इष्ट कालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी पलों के दाईं और अगले अंश के नीचे जो घड़ी पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घड़ी पलों का अन्तर जानिए। अन्तर के इन पलों को सहायक सारणी (जो आगे दी गई है) के बाईं ओर पहिले कालम में देखिए। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्टसूर्य की कला-विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला-विकलाएं लिखी हों उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन में जो पल लिखें हों उन्हें लेकर अलग लिखे हुए घड़ी पलों में जोड़ दीजिए और उसमें इष्टकाल के घड़ीपल भी जो दीजिए। इसे हम "अभीष्ट घड़ी पल" कहेंगे। "अभीष्ट घड़ी-पल" यदि ६० घड़ी से अधिक हों तो उनमें से ६० घड़ी घटा कर शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घड़ी-पलों" के बराबर (बराबर न मिले तो उनसे कुछ कम) घड़ीपल लग्नसारणी में ढूंढिए जिन्हें "सारणीस्थ घड़ी पल" कहा जाएगा। "सारणीस्थ घड़ी पलों" के बाईं ओर लग्न सारणी के पहले कालम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशों को अलग लिख लीजिये। 'सारणीस्थ घड़ीपलों' के दाईं ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिए गए घड़ीपलों का "सारणीस्थ घड़ीपलों" से अन्तर कीजिए। इसे "सारणीस्थ अन्तर" कहेंगे। "सारणीस्थ घड़ीपलों" और "अभीष्ट घड़ी पलों" का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के बिल्कुल ऊपर वाली लाईन में जहां लिखे हैं। उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला-विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि-अंशों में जोड़ दें। अब इसमें आगे दी गई "अयनांश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण—मान लीजिए,—वि. सं. २०२९ के वैशाख प्रविष्टे ३ का ५८ घ. ४५प. इष्ट पर शिमला (हि. प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अंश ३७ क. ४७ वि. है। शिमला के अक्षांश ३१ अं. ६क. (उत्तर) है, अतः ३१ अक्षांश वाली लग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की० (मेष) राशि के आगे २ अंश के नीचे २ घ. ५५प. हैं, इन्हें अलग लिखा। सारणी में २ घ. ५५प. के दाईं ओर ३ अंश के नीचे ३ घ. २प. लिखें हैं। इनका २ घ. ५५ प. से अन्तर ७ पल है। "सहायक सारणी" के बाईं ओर पहिले कालम में लिखे हुए ७ पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्टसूर्य की ३७ क. ४७वि. नहीं मिली। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर ३४ क. १७ वि. देखें जिनके बिल्कुल ऊपर ४ पल लिखे हैं। इन्हें अलग लिखे २ घ. ५५ प. में जोड़ा और इष्टकाल के घ. प. भी इसमें जोड़े तो ६१ घ. ४४प. (६० घड़ी घटाने पर १ घ. ४४ प.) 'अभीष्ट घड़ी पल' हुए। लग्न सारणी में "अभीष्ट घड़ी पल" १ घ. ४४ प. नहीं हैं, अतः इस से कुछ कम १ घ. ४० प. सारणी में देखे जो "सारणीस्थ घड़ी पल" है। इनके बाईं ओर सारणी के पहिले कालम में ११ राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में २१ अंश लिखे हैं। इन ११ रा. २१ अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घड़ी पलों" (१ घ. ४० प.) के दाईं ओर २२ अंश के नीचे १ घ. ४६ प. का १ घ. ४० प. से अन्तर ६ प. "सारणीस्थ अन्तर" है। "अभीष्ट घड़ीपल" (१ घ. ४४ प.) और "सारणीस्थ घड़ी पल" (१ घ. ४० प.) का अन्तर ४ पल है। "सहायक सारणी" की ऊपर वाली लाईन में लिखे गए ४ पल के नीचे "सारणीस्थ अन्तर के बराबर ६ पल के आगे ४० क. ० वि. लिखा है। इन्हें ११ रा. २१ अं के जोड़ने पर ११ रा. २१ अं. ४० क. ० वि. हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२९ के आगे +१ कला लिखा है। इसे चिह्नानुसार ११ रा. २१ अं. ४० क. ० वि. में जोड़ने पर ११ रा. २१ अं. ४१ क. ० वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्न साधन

पीछे साम्पातिक काल द्वारा दशमलग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तत्कालिक सूर्यस्पष्ट जानने की आवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सबकी आवश्यकता रहती है।

दशम-साधन विधि :—इष्टकाल के घ. प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिनमान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह 'नतकाल' होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्टसूर्य द्वारा दशम लग्नसारणी से ठीक उसी तरह दशमलग्न स्पष्ट कीजिए, जैसे कि ऊपर लग्न सारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। **दशम लग्न सारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।**

दशम लग्न साधन का उदाहरणः-वि. सं २०२९ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला में ५८ घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं ३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ ५९ प. है. अतः दिनार्ध १६ घ. ० प हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प० में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ. जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है।

दशमलग्न सारिणी में स्पष्ट सूर्य की ० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प. मिला। इसे पृथक् लिखा। सारिणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर(३ अं के नीचे) ४ घ. ६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर -३६ क. ० वि. है। [illegible] इन ६ पलों को [illegible] सारिणी में ६ पल लिखा है। [illegible] नतकाल जोड़ा [illegible] "दशम लग्न [illegible]" अभीष्ट घटी पल हुए। [illegible] "अभीष्ट घटी पल" में कुछ कम घ. प. [illegible] राशि के आगे [illegible] अंश की अलग लिखा। [illegible] [illegible] "सारणीय अन्तर" [illegible] और "अभीष्ट [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२९ के आगे [illegible] संस्कार + १ क. [illegible] ११ क. ० वि. निरयण दशम लग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.
६	१०।०	२०।०	३०।०	४०।०	५०।०	६०।०							
७	८।३४	१७।९	२५।४३	३४।१७	४२।५१	५१।२६	६०।०						
८	७।३०	१५।०	२२।३०	३०।०	३७।३०	४५।०	५२।३०	६०।०					
९	६।४०	१३।२०	२०।०	२६।४०	३३।२०	४०।०	४६।४०	५३।२०	६०।०				
१०	६।०	१२।०	१८।०	२४।०	३०।०	३६।०	४२।०	४८।०	५४।०	६०।०			
११	५।२७	१०।५५	१६।२२	२१।४९	२७।१६	३२।४४	३८।११	४३।३८	४९।५	५४।३३	६०।०		
१२	५।०	१०।०	१५।०	२०।०	२५।०	३०।०	३५।०	४०।०	४५।०	५०।०	५५।०	६०।०	
१३	४।३७	९।१४	१३।५१	१८।२८	२३।५	२७।४२	३२।१९	३६।५६	४१।३३	४६।१०	५०।४७	५५।२३	६०।०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला
२०१०	+१७	२०१६	+१२	२०२२	+७	२०२८	+२	२०३४	—३	२०४०	—८
२०११	+१६	२०१७	+१२	२०२३	+७	२०२९	+१	२०३५	—४	२०४१	—९
२०१२	+१६	२०१८	+११	२०२४	+६	२०३०	+१	२०३६	—४	२०४२	—९
२०१३	+१५	२०१९	+१०	२०२५	+५	२०३१	०	२०३७	—५	२०४३	—१०
२०१४	+१४	२०२०	+९	२०२६	+४	२०३२	—१	२०३८	—६	२०४४	—११
२०१५	+१३	२०२१	+८	२०२७	+३	२०३३	—२	२०३९	—७	२०४५	—१२

दुनिया के किसी भी नगर में सूक्ष्म लग्न-दशम जानने के लिए हमारी "गणक मार्त्तण्ड" पुस्तक की प्रतीक्षा करें. जो शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है। इस पुस्तक में दुनिया के सभी प्रसिद्ध नगरों(लगभग ७ हजार नगरों) के अक्षांश रेखांश तथा अन्य अनेक ज्ञानोपयोगी सारणियों के साथ सभी अक्षांशों की सूक्ष्मतम शुद्ध लग्न सारणियां दी गई है, जिनकी मदद से लग्न आदि सभी भाव बिना गुणा भाग के जुबानी ही तुरन्त जाने जा सकते हैं।

लग्न सारणी (अक्षांश २९ उत्तर)

(पलभा ६।३९।६)

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
०	प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१	प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मिथुन	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२	प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३	प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिंह	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५	प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६	प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७	प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
धन	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८	प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९	प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१०	प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४८

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार के, जीन्द, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए

लग्न सारणी (अक्षांश ३० उत्तर)

(पलभा ६।५५।४२)

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
०	प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष	घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१	प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२	प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३	प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५	प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६	प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७	प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धन	घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८	प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१०	प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अलमोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए।

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि दे रहे हैं। स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पष्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने 'साम्पातिककाल' (*Sidereal Time*) की पद्धति को अपनाया है। यहां हम "साम्पातिककाल क्या है"—इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक-विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट करने की सर्व-साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं।

विधि :— सां.का. (साम्पातिककाल) से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों) से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते है, तैयार करें—

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर (+ या—)

ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी' से उठाइये।

विशेष—यदि "अक्षांशादि सारणी" में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते हैं।

ध्यान रहे—भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही हैं।

(४) **अभीष्ट नगर का स्थानीय मध्यमकाल**—जिस समय लग्नस्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड-टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो वहां) के स्टैण्डर्ड-अन्तर के मिनटादि (या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का "स्थानीयमध्यमकाल" बन जाता है। '+' यह चिन्ह जोड़ने की एवं '—' यह चिन्ह घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है।

जैसे—चण्डीगढ़ में दोपहर के १२ घं. ५७ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर स्थानीयमध्यमकाल जानने के लिए हम (भा. स्टैं. टा.) में से चण्डीगढ़ का स्टैण्डर्ड अन्तर—२२ मिनट ३२ सैकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घ. ३४ मि. २८ सै. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१ सितं. १९४२ ई. से १५ अक्तू. १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थीं। अतः इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे—सन् १९४४ की २० अग. को कोई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन के १२ बजकर ४५ मि. पर पैदा हुआ। इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्मकाल भा.स्टैं.टा. के अनुसार ११ घं. ४५ मि. मानना होगा।

(५) **अभीष्ट तारीख का अयनांश**—आगे दो [नं. (१) और नं. (२)] अयनांश-सारणियां दी गई है। अयनांशसारणी नं. (१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखे अंशादि अयनांश लें और 'अयनांशसारणी' सारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें;—यह अयनांश होगा।

जैसे—१५ जुलाई १९९२ ई. को अयनांश जानने के लिए "अयनांशसारणी" नं. (१) में से सन् १९९२ ई. के आगे लिखा अयनांश २३ अ. २५ क. २६ वि. प्राप्त किया। इसमें "अयनांशसारणी" नं. (२) से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोड़ने पर २३ अ. २५ क. ५३ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ।

(६) **इष्टकालिक साम्पातिककाल**—आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गए हैं। इनके आधार पर 'इष्टकालिक साम्पातिककाल' इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है—

सा. का. कोष्टक नं. (१) में से अभीष्ट सन का सा. का. उठाएं। उसमें साम्पा-तिककाल कोष्ठक नं. (२) से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीपईयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सा. का. लेकर जोड़ें। इसमें सां. का. कोष्ठक नं. (३) से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठाकर चिन्हानुसार जोड़ें या घटाएं। इस प्रकार मिले सा. का. के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल (जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा-मिनटादि जोड़ें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा-मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं. (४) से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का. बन जाएगा। इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण—यहांहम १५ जुलाई १९९९ को भा.स्टैं.टा. के अनुसार प्रातः १० घं. ४५ मि पर चम्बा (हि.प्र.) में सां.का. स्पष्ट करेंगे। अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २६ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १० क. (पूर्व) एवं स्टैं. अन्तर—२५ मि. २० सै. है। स्टैण्डर्डअन्तर ऋण चिह्न वाला है, अतः इसे १० घण्टे ४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० सै. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ। सा.का. कोष्ठक नं. (१) से सन् १९९९ ई. का सां.का. (६ घं. ४१ मि. २ सै.) लिया। इसमें कोष्ठक नं. (२) से लिया गया १५ जुला. का सा.का. (१२ घं. ४८ मि.४९ सै.) जोड़ा तो १९ घं. २९ मि. ५१ सै. हुआ। चम्बा के रेखांश ७६ अं. १० क. के लिए कोष्ठक नं. (३) वाला संस्कार तो ० है। अब १९ घ. २९ मि. ५१ सै. में चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १० घ. १९ मि. ४० सै. जोड़ा तो २९ घ. ४९ मि. ३१ सै. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (४) से स्थानीयमध्यमकाल के १० घं. २० मि. से उठाए गए १ मि. ४२ सै. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ सै. हुए। यहां घण्टे २४ से अधिक हैं अतः २४ घं. घटाएं तो ५ घं ५१ मि. १३ सै. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन तीन बातों को भी ध्यान में रखें :—

[१] यदि धन (+) चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टैं. अं.) के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल ४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में २४ मि. जोड़ कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें। जैसे—कलकत्ता में २ जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बजकर ५५ मि.) भा.स्टैं.टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है। कलकत्ता का रेखांश

८८ अं. २४ क, (पूर्व) और स्टैं अन्तर +२३ मि. ३६ सै. है। स्थानीयमध्यमकाल बनाने
के लिए २३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि, ३६ सै. हुए। यह
२४ घं. से ज्यादा हो गया है, अतः इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ सै.
स्थानीय-मध्यमकाल हुआ। अब सां.का. बनाने के लिए कोष्ठक नं. (१) से १९७४ के आगे
लिखे ६ घं. ४० मि. १२ सै. में कोष्ठक नं. (२) से लिए गए २ जन के ० घं. ३ मि.
५७ सै. जोड़ने पर ६ घं. ४४ मि. ९ सै. हुए। इसमें कोष्ठक नं० (३) से कलकत्ता के
रेखांश ८८ से प्राप्त—८ सैं. चिह्न के अनुसार घटाए, तो ६ घं. ४४ मि. १ सै. हुए।
इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं, २ मि. ३७ सै. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (४) से
स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ सै. जोड़ने पर ७ घं. २ मि. ४० सै.
हुए। क्योंकि स्टै. टा. में स्टै. अन्तर के मिनट जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से
ज्यादा हो गया था। अतः उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६
मि. ४० सै. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना। लग्न और दशम को स्पष्ट करने के
लिए इसी सां. का. का प्रयोग में लाइए।

(२) सां. का. बनाते समय दूसरी बात यह भी ध्यान में रखें, कि यदि स्टै. टा. से
(—) ऋण चिह्न वाले स्टै. अन्तर के मिनटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने
के लिए स्टै. टा. में २४ घंटे जोड़ कर स्टै. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सां.
का. कोष्ठक नं. (४) का प्रयोग नहीं करना चाहिए। जैसे—जयपुर में १५ मार्च १९७०
को ० घं. १५ मि. (भा.स्टै.टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है। जयपुर के रेखांश ७५
अं. ५२ क. (पूर्व) और स्टै. अं.—२६ मि. ३२ सै. है। यहां स्टै. टा. के घं मि. से स्टै. अं.
ज्यादा है, अतः स्टै.टा. में २४ घं जोड़ कर स्टै. अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ सै.
स्थानीयमध्यमकाल बना। सां. का. के कोष्ठक नं. (१) से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४०
मि. ५ सै. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४७ मि. ४९ सै. जोड़ने पर
११ घं. [illegible] मि. २४ सै. हुए। जयपुर के रेखांश ७५ (पूर्व) का कोष्ठक नं. (३) वाला
[illegible] है। अब ११ घं. [illegible] मि. ५४ सै. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५
घं. [illegible] मि. [illegible] सै. हुए। क्योंकि हमारा स्टै. टा. हमारे नगर के ऋण स्टै. अं. से कम
था, अतः [illegible] कोष्ठक नं. (४) का प्रयोग हम नहीं करेंगे। इसलिए
हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११ घं. [illegible] मि. [illegible] सै. ही हुआ। यहां घंटे २४ से
अधिक होने से उनमें से २४ घंटे घटा दिए गए।

(३) [illegible] इस कोष्ठक की [illegible] —लीपइयर (२९ फरवरी वाले साल) में
फरवरी के बाद के महीनों की किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में
[illegible] "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)" का प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे—
[illegible] सां. का. स्पष्ट करना है।
[illegible] १२ मार्च सन् १९[illegible] को [illegible] मि. १७ सै.
"साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१)" में सन् १९[illegible] के आगे लिखे [illegible]
[illegible] क्योंकि [illegible] और दूसरी तारीख (१२ मार्च) फरवरी के बाद
[illegible] "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)" में [illegible] १२ मार्च की जगह १३
[illegible] इसलिए "साम्पातिककाल [illegible] और इसी [illegible] मि. १७
मार्च के घं. मि. सै. (४ घं. २१ मि. ४२ सै.) [illegible] सां. का. स्पष्ट करना
सै. में जोड़ेंगे। ध्यान रहे—यदि सन् १९[illegible] की १० फर. को हम सां. का. स्पष्ट करना
हो तो "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)" से १० फर. के घं. मि. सै. ही उठाने होंगे।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधि :—

ऊपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को
आगे दी गई लग्नसारणी के बाईं ओर वाले पहिले कालम में देखें। इसके आगे अभीष्ट
नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश-कला लिखी है, उन्हें अलग नोट कर लें।
क्योंकि सारणी में सां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अंक्षांशों
के अन्तर पर दी हुई है। अतः अधिकतर यहां सम्भव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ट
सां. का. के घं. मि. न मिलें, और यह भी अधिकतर सम्भव है कि आपको अभीष्ट अक्षांश
वाली लग्नसारणी न मिले। ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम
(अभीष्ट सां. का. से कम) सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम
(अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखी लग्न की अंश-कलाएं नोट
करें—यह "स्थूलतम लग्न" है। अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए,
(अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३० मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है)। ३० मि. की
लग्नगति की कलाओं को सां. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर
कलाएं मिलेंगी। इन्हें "स्थूलतम लग्न" में जोड़ देने से "स्थूललग्न" बन जाएगा। अब
सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें। ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो
यह "३ अक्षांशों की लग्नगति" ऋण, अन्यथा धन होगी। अपने अक्षांश की शेष अंश-
कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें "३ अक्षांशों की लग्नगति" की कलाओं से गुणा करके
१८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी। इन्हें "३ अक्षांशों की लग्नगति" के धन-ऋण
चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा। इसमें से उस
दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :—लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशम-
लग्न) दिया गया है। इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात्—
दशम स्पष्ट करने के लिए अक्षांशों की जरूरत नहीं होती।) अभीष्ट सां. का. के घं.मि. के
आगे सारणी में दशम (दशमलग्न) की अंश-कलाएं उठा लें। यह "स्थूलदशमलग्न" है।
सा. का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३०
से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी। इन्हें "स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर इष्टकालिक
सायनदशम होगा। इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट
हो जाएगा।

लग्नसाधन का उदाहरण :—चम्बा (हि. प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को
प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.) पर लग्न स्पष्ट करना है।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रातः १० घंटे ४५ मि. (भा. स्टै. टा.)
पर सां. का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है। चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. है।
लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि.के आगे लग्न १७३ अं. ३४ क.
लिखा है। यह "स्थूलतम लग्न" है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं.
३० मि.के आगे १७३ अं. ३४ क. और सां. का. ६ घं ० मि. के आगे १८० अं. ० क. लिखा
है। इन दोनों का अन्तर ६ अं. २६.क. (=३८६ क.) लग्न की ३० मि. की गति है। हमारे
अभीष्ट सां. का. ५ घं. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है। इन २१ मि.
(सां. का. के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मि० की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३०
का भाग देने पर २७०क. (=४अं.३०क.) मिलीं। इन्हें "स्थूलतमलग्न" में जोड़ने पर १७८

लग्नसारणी (पूरे भारत के लिए) भाग २ य)

साम्पातिक काल	सभी स्थलों के लिए	अक्षांश ८° (उ)	अक्षांश ११° (उ.)	अक्षांश १४° (उ.)	अक्षांश १७° (उ.)	अक्षांश २०° (उ.)
	दशम	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न
घं. मि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
०।०	०।०	९३।१२	९४।२४	९५।४०	९६।५६	९८।१४
०।३०	८।१०	१००।१३	१०१।१५	१०२।२७	१०३।४१	१०४।५७
१।०	१६।१७	१०६।५४	१०८।३	१०९।१३	११०।२४	१११।३६
१।३०	२४।१८	११३।४७	११४।५३	११५।५९	११७।६	११८।१४
२।०	३२।११	१२०।४३	१२१।४५	१२२।४७	१२३।५०	१२४।५२
२।३०	३९।५५	१२७।४५	१२८।४३	१२९।४०	१३०।३६	१३१।३३
३।०	४७।२८	१३४।५४	१३५।४५	१३६।३६	१३७।२७	१३८।१८
३।३०	५४।५१	१४२।१०	१४२।५५	१४३।३९	१४४।२२	१४५।६
४।०	६२।५	१४९।३३	१५०।१०	१५०।४६	१५१।२३	१५१।५८
४।३०	६९।१२	१५७।३	१५७।३१	१५८।०	१५८।२७	१५८।५५
५।०	७६।११	१६४।३८	१६४।५८	१६५।१७	१६५।३६	१६५।५४
५।३०	८३।७	१७२।१८	१७२।२८	१७२।३८	१७२।४७	१७२।५७
६।०	९०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०
६।३०	९६।५३	१८७।४२	१८७।३२	१८७।२२	१८७।१३	१८७।३
७।०	१०३।४९	१९५।२२	१९५।२	१९४।४३	१९४।२४	१९४।६
७।३०	११०।४८	२०२।५७	२०२।२९	२०२।०	२०१।३३	२०१।५
८।०	११७।५५	२१०।२७	२०९।५०	२०९।१४	२०८।३७	२०८।२
८।३०	१२५।९	२१७।५०	२१७।५	२१६।२१	२१५।३८	२१४।५४
९।०	१३२।३२	२२५।६	२२४।१५	२२३।२४	२२२।३३	२२१।४२
९।३०	१४०।५	२३२।१५	२३१।१७	२३०।२०	२२९।२४	२२८।२७
१०।०	१४७।४९	२३९।१७	२३८।१५	२३७।१३	२३६।१०	२३५।८
१०।३०	१५५।४२	२४६।१३	२४५।७	२४४।१	२४२।५४	२४१।४६
११।०	१६३।४३	२५३।६	२५१।५७	२५०।४७	२४९।३६	२४८।२४
११।३०	१७१।५०	२५९।५७	२५८।४५	२५७।३३	२५६।१९	२५५।३
१२।०	१८०।०	२६६।४८	२६५।३५	२६४।२०	२६३।१४	२६१।४६

साम्पातिक काल	सभी स्थलों के लिए	अक्षांश ८° (उ.)	अक्षांश ११° (उ.)	अक्षांश १४° (उ.)	आक्षांश २६° (उ.)	अक्षांश २०° (उ.)
	दशम	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न
घं. मि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
१२।०	१८०।०	२६६।४८	२६५।३५	२६४।२०	२६३।१४	२६१।४६
१२।३०	१८८।१०	२७३।४१	२७२।२७	२७१।११	२६९।५३	२६८।३३
१३।०	१९६।१७	२८०।३९	२७९।२५	२७८।९	२७६।५०	२७५।२९
१३।३०	२०४।१८	२८७।४३	२८६।३०	२८५।१५	२८३।५७	२८२।३५
१४।०	२१२।११	२९४।५७	२९३।४६	२९२।३३	२९१।१६	२८९।५५
१४।३०	२१९।५५	३०२।२१	३०१।१४	३००।४	२९८।५०	२९७।३२
१५।०	२२७।२८	३०९।५८	३०८।५६	३०७।५१	३०६।४२	३०५।२८
१५।३०	२३४।५१	३१७।४९	३१६।५४	३१५।५५	३१४।५३	३१३।४५
१६।०	२४२।५	३२५।५४	३२५।७	३२४।१७	३२३।२३	३२२।२५
१६।३०	२४९।१२	३३४।१२	३३३।३५	३३२।५५	३३२।१२	३३१।२६
१७।०	२५६।११	३४२।४१	३४२।१५	३४१।४८	३४१।१८	३४०।४५
१७।३०	२६३।७	३५१।१८	३५१।५	३५०।५१	३५०।३६	३५०।१९
१८।०	२७०।०	०।०	०।०	०।०	०।०	०।०
१८।३०	२७६।५३	८।४१	८।५५	९।९	९।२४	९।४१
१९।०	२८३।४९	१७।१९	१७।४५	१८।१२	१८।४२	१९।१५
१९।३०	२९०।४८	२५।४८	२६।२५	२७।५	२७।४८	२८।३४
२०।०	२९७।५५	३४।६	३४।५३	३५।४३	३६।३७	३७।३५
२०।३०	३०५।९	४२।११	४३।६	४४।५	४५।७	४६।१४
२१।०	३१२।३२	५०।२	५१।४	५२।९	५३।१८	५४।३२
२१।३०	३२०।५	५७।३९	५८।४६	५९।५६	६१।१०	६२।२८
२२।०	३२७।४९	६५।३	६६।१४	६७।२७	६८।४४	७०।५
२२।३०	३३५।४२	७२।१७	७३।३०	७४।४५	७६।१३	७७।२५
२३।०	३४३।४३	७९।२१	८०।३५	८१।५१	८३।१०	८४।३१
२३।३०	३५१।५०	८६।१९	८७।३३	८८।४९	९०।७	९१।२७
२४।०	०।०	९३।१२	९४।२५	९५।४०	९६।५६	९८।१४

अं ४ क. "स्थूल लग्न" हुआ। अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे क्रमशः १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क हुआ यह लग्न की "३ अक्षांश की गति" है। क्योंकि लब्ध ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है, अतः यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गतिकलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली। क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्नगति धन है अतः इसे "स्थूललग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायनलग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर १५४ अं. [illegible] क. (=५ रा. ४ अं. ३९ क.) निरयणलग्न बन गया।

दशमलग्नसाधन का उदाहरण :— १५ जुला. १९६९ ई. को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा. स्टे. टा.) पर ही चम्बा (हि. प्र.) में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सा. का. ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालम में सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे दशमलग्न ८३ अं ७ क. है, यह "स्थूलदशमलग्न" है। सारणी में सां. का. ५ घं ३० मि. और ६ घं. ० मि के आगे दशमलग्न क्रमशः ८३ अं. ७ क एवं ९० अं. ० क. है। इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (=४१३ क) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.—५ घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४ अं. ४९ क.) मिली। इन्हें "स्थूल दशमलग्न" में जोड़ने पर ८७ अं ५६ क. सायनदशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क घटा देने पर ६४ अं. ३० क. (=२ रा. ४ अं. ३० क.) इष्टकालिक निरयण दशमलग्न हुआ।

ध्यान दें :—यहां हमने सां का. के संकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझ कर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुतः अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में सम्भव नहीं है; इस तथ्य का विस्तारपूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा "गणकमार्तण्ड" में हमने किया है—वहां पढ़ें।

लग्नसारणी (पूरे भारत के लिये) [भाग २ य]

साम्पातिक काल घं. मि.	सभी स्थानों के लिए दशम अं. क.	अक्षांश २३° (उ.) लग्न अं. क.	अक्षांश २६° (उ.) लग्न अं. क.	अक्षांश २९° (उ.) लग्न अं. क.	अक्षांश ३२° (उ.) लग्न अं. क.	अक्षांश ३५° (उ.) लग्न अं. क.
०।०	०।०	९९।३५	१००।५९	१०२।२६	१०३।५७	१०५।३४
०।३०	८।१०	१०६।१४	१०७।३४	१०८।५७	११०।२४	१११।५३
१।०	१६।१७	११२।४९	११४।४	११५।२२	११६।४३	११८।७
१।३०	२४।१८	११९।२२	१२०।३३	१२१।४५	१२३।०	१२४।१७
२।०	३२।११	१२५।५६	१२७।०	१२८।७	१२९।१७	१३०।२५
२।३०	३९।५५	१३२।३१	१३३।२९	१३४।२९	१३५।३०	१३६।३२
३।०	४७।२८	१३९।९	१४०।०	१४०।५२	१४१।४५	१४२।४०
३।३०	५४।५१	१४५।५०	१४६।३४	१४७।१८	१४८।४	१४८।५०
४।०	६२।१५	१५२।३४	१५३।१०	१५३।४७	१५४।२४	१५५।१
४।३०	६९।१२	१५९।२२	१५९।५०	१६०।१७	१६०।४६	१६१।१४
५।०	७६।११	१६६।१३	१६६।३२	१६६।५०	१६७।९	१६७।२८
५।३०	८३।७	१७३।६	१७३।१५	१७३।२५	१७३।३४	१७३।४४
६।०	९०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०
६।३०	९६।५३	१८६।५४	१८६।४५	१८६।३५	१८६।२६	१८६।१६
७।०	१०३।४९	१९३।४७	१९३।२८	१९३।१०	१९२।५१	१९२।३२
७।३०	११०।४८	२००।३८	२००।१०	१९९।४३	१९९।१४	१९८।४६
८।०	११७।४५	२०७।२६	२०६।५०	२०६।१३	२०५।३६	२०४।५९
८।३०	१२४।१९	२१४।१०	२१३।२६	२१२।४२	२११।५६	२११।१०
९।०	१३२।३२	२२०।५१	२२०।०	२१९।८	२१८।१५	२१७।२०
९।३०	१४०।५	२२७।२६	२२६।३१	२२५।३१	२२४।३०	२२३।२८
१०।०	१४७।४९	२३४।४	२३३।०	२३१।५३	२३०।४५	२२९।३५
१०।३०	१५५।४२	२४०।३८	२३९।२७	२३८।१५	२३७।०	२३५।४१
११।०	[illegible]	२४७।११	२४५।५६	२४४।३८	२४३।१७	२४१।५३
११।३०	[illegible]	२५३।४६	२५२।२९	२५१।१३	२४९।३६	२४८।७
१२।०	[illegible]	२६०।२५	२५९।१	२५७।३४	२५६।१३	२५४।२६

साम्पातिक काल घं. मि.	सभी स्थानों के लिए दशम अं. क.	अक्षांश २३° (उ.) लग्न अं. क.	अक्षांश २६° (उ.) लग्न अं. क.	अक्षांश २९° (उ.) लग्न अं. क.	अक्षांश ३२° (उ.) लग्न अं. क.	अक्षांश ३५° (उ.) लग्न अं. क.
१२।०	१८०।०	२६०।२५	२५९।१	२५७।३४	२५६।१३	२५४।२६
१२।३०	१८८।१०	२६७।१०	२६५।४३	२६४।१२	२६२।३९	२६०।५४
१३।०	१९६।१७	२७४।३	२७२।१४	२७१।०	२६९।२१	२६७।३३
१३।३०	२०४।१८	२८१।९	२७९।३९	२७८।२	२७६।१९	२७४।२९
१४।०	२१२।११	२८८।३०	२८६।५९	२८५।२२	२८३।३६	२८१।४५
१४।३०	२१९।५५	२९६।९	२९४।४०	२९३।४	२९१।२०	२८९।२६
१५।०	२२७।२८	३०४।१०	३०२।४४	३०१।१२	२९९।२८	२९७।३८
१५।३०	२३४।५१	३१२।३३	३११।१५	३०९।४८	३०८।१३	३०६।२५
१६।०	२४२।१५	३२१।२२	३२०।१३	३१८।५६	३१७।३०	३१५।५४
१६।३०	२४९।१२	३३०।३५	३२९।३९	३२८।३६	३२७।२५	३२६।४
१७।०	२५६।११	३४०।९	३३९।३०	३३८।४५	३३७।५४	३३६।५५
१७।३०	२६३।७	३५०।०	३४९।५०	३४९।१६	३४८।४९	३४८।१९
१८।०	२७०।०	०।०	०।०	०।०	०।०	०।०
१८।३०	२७६।५३	१०।०	१०।२०	१०।४४	११।११	११।४१
१९।०	२८३।४९	१९।५१	२०।३०	२१।१५	२२।६	२३।४
१९।३०	२९०।४८	२९।२५	३०।२१	३१।२४	३२।३५	३३।५६
२०।०	२९७।५५	३८।३८	३९।४७	४१।४	४२।३०	४४।१
२०।३०	३०५।१९	४७।२७	४८।४५	५०।१२	५१।४७	५३।३५
२१।०	३१२।३२	५५।५०	५७।११	५८।४८	६०।३२	६२।२२
२१।३०	३२०।५	६३।५१	६५।२०	६६।५६	६८।४०	७०।३४
२२।०	३२७।४९	७१।३०	७३।१	७४।३८	७६।२४	७८।१५
२२।३०	३३५।४२	७८।५१	८०।२१	८१।५८	८३।४१	८५।३१
२३।०	३४३।४३	८५।५६	८७।२६	८९।०	९०।३९	९२।२६
२३।३०	३५१।५०	९२।५०	९४।१७	९५।४८	९७।२४	९९।६
२४।०	०।०	९९।३५	१००।५९	१०२।२६	१०३।५७	१०५।३४

साम्पातिक काल कोष्ठक नं. १.

सन्	सा. का. घं. मि. से.	सन्	सा. का. घं. मि. से.	सन्	सा. का. घं. मि. से.	सन्	सा. का. घं. मि. से.	सन्	सा. का. घं. मि. से.	सन्	सा. का. घं. मि. से.	सन्	सा. का. घं. मि. से.	सन्	सा. का. घं. मि. से.
१९३६	[illegible]	१९४३	[illegible]	१९५०	[illegible]	१९५७	६।४०।४०	१९६४	६।३७।५६	१९७१	६।३९।७	१९७८	६।४०।१९	१९८५	६।४१।३२
१९३७	[illegible]	१९४४	[illegible]	१९५१	[illegible]	१९५८	[illegible]	१९६५	६।४०।५५	१९७२	६।३८।१०	१९७९	६।३९।२२	१९८६	६।४०।३५
१९३८	[illegible]	१९४५	[illegible]	१९५२	[illegible]	१९५९	[illegible]	१९६६	६।३९।५७	१९७३	६।४१।१०	१९८०	६।३८।२४	१९८७	६।३९।३८
१९३९	[illegible]	१९४६	[illegible]	१९५३	[illegible]	१९६०	[illegible]	१९६७	६।३९।०	१९७४	६।४०।१२	१९८१	६।४१।२३	१९८८	६।३८।४०
१९४०	[illegible]	१९४७	[illegible]	१९५४	[illegible]	१९६१	[illegible]	१९६८	६।३८।३	१९७५	६।३९।१५	१९८२	६।४०।२६	१९८९	६।४१।३९
१९४१	[illegible]	१९४८	[illegible]	१९५५	[illegible]	१९६२	[illegible]	१९६९	६।४१।२	१९७६	६।३८।१७	१९८३	६।३९।२९	१९९०	६।४०।४१
१९४२	[illegible]	१९४९	[illegible]	१९५६	[illegible]	१९६३	[illegible]	१९७०	६।४०।५	१९७७	६।४१।१६	१९८४	६।३८।३२	१९९१	६।३९।४४

*साम्पातिक काल कोष्ठक नं. २

ता	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
↓	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.
१	०। ०। ०	२। २।१३	३।५२।३७	५।५४।५०	७।५३। ७	९।५५।२१
२	०। ३।५७	२। ६। ९	३।५६।३३	५।५८।४७	७।५७। ४	९।५९।१७
३	०। ७।५३	२।१०। ६	४। ०।३०	६। २।४३	८। १। ०	१०। ३।१४
४	०।११।५०	२।१४। २	४। ४।२६	६। ६।४०	८। ४।५७	१०। ७।१०
५	०।१५।४६	२।१७।५९	४। ८।२३	६।१०।३६	८। ८।५३	१०।११। ७
६	०।१९।४३	२।२१।५५	४।१२।१९	६।१४।३३	८।१२।५०	१०।१५। ३
७	०।२३।३९	२।२५।५२	४।१६।१६	६।१८।२९	८।१६।४६	१०।१९। ०
८	०।२७।३६	२।२९।४८	४।२०।१२	६।२२।२६	८।२०।४३	१०।२२।५६
९	०।३१।३२	२।३३।४५	४।२४। ९	६।२६।२२	८।२४।३९	१०।२६।५३
१०	०।३५।२९	२।३७।४२	४।२८। ५	६।३०।१९	८।२८।३६	१०।३०।४९
११	०।३९।२५	२।४१।३९	४।३२। २	६।३४।१६	८।३२।३२	१०।३४।४६
१२	०।४३।२२	२।४५।३५	४।३५।५९	६।३८।१३	८।३६।२९	१०।३८।४२
१३	०।४७।१८	२।४९।३२	४।३९।५६	६।४२। ९	८।४०।२५	१०।४२।३९
१४	०।५१।१५	२।५३।२८	४।४३।५२	६।४६। ६	८।४४।२२	१०।४६।३५
१५	०।५५।१२	२।५७।२५	४।४७।४९	६।५०। २	८।४८।१८	१०।५०।३२
१६	०।५९। ८	३। १।२१	४।५१।४५	६।५३।५९	८।५२।१५	१०।५४।२८
१७	१। ३। ४	३। ५।१८	४।५५।४२	६।५७।५५	८।५६।११	१०।५८।२५
१८	१। ७। १	३। ९।१४	४।५९।३८	७। १।५२	९। ०। ८	११। २।२१
१९	१।१०।५७	३।१३।११	५। ३।३५	७। ५।४८	९। ४। ४	११। ६।१८
२०	१।१४।५४	३।१७। ८	५। ७।३१	७। ९।४५	९। ८। १	११।१०।१४
२१	१।१८।५१	३।२१। ५	५।११।२८	७।१३।४१	९।११।५८	११।१४।११
२२	१।२२।४८	३।२५। १	५।१५।२५	७।१७।३८	९।१५।५५	११।१८। ८
२३	१।२६।४४	३।२८।५८	५।१९।२२	७।२१।३४	९।१९।५१	११।२२। ४
२४	१।३०।४१	३।३२।५४	५।२३।१८	७।२५।३१	९।२३।४८	११।२६। १
२५	१।३४।३७	३।३६।५१	५।२७।१५	७।२९।२८	९।२७।४४	११।२९।५८
२६	*१।३८।३४	३।४०।४७	५।३१।११	७।३३।२४	९।३१।४१	११।३३।५४
२७	१।४२।३०	३।४४।४४	५।३५। ८	७।३७।२०	९।३५।३७	११।३७।५१
२८	१।४६।२७	३।४८।४०	५।३९। ५	७।४१।१७	९।३९।३४	११।४१।४७
२९	१।५०।२३	३।५२।३७	५।४३। १	७।४५।१३	९।४३।३०	११।४५।४४
३०	१।५४।२०		५।४६।५८	७।४९।१०	९।४७।२७	११।४९।४१
३१	१।५८।१६		५।५०।५४		९।५१।२४	

ता	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
↓	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.
१	११।५३।३८	१३।५५।५०	१५।५८। ४	१७।५६।२१	१९।५८।३४	२१।५६।५०
२	११।५७।३४	१३।५९।४७	१६। २। ०	१८। ०।१७	२०। २।३१	२२। ०।४७
३	१२। १।३१	१४। ३।४४	१६। ५।५७	१८। ४।१४	२०। ६।२७	२२। ४।४३
४	१२। ५।२७	१४। ७।४०	१६। ९।५३	१८। ८। १	२०।१०।२४	२२। ८।४०
५	१२। ९।२४	१४।११।३६	१६।१३।५०	१८।१२। ७	२०।१४।२०	२२।१२।३६
६	१२।१३।२१	१४।१५।३३	१६।१७।४६	१८।१६। ३	२०।१८।१७	२२।१६।३३
७	१२।१७।१७	१४।१९।२९	१६।२१।४३	१८।२०। ०	२०।२२।१३	२२।२०।३०
८	१२।२१।१४	१४।२३।२६	१६।२५।४०	१८।२३।५७	२०।२६।१०	२२।२४।२७
९	१२।२५।१०	१४।२७।२३	१६।२९।३७	१८।२७।५४	२०।३०। ६	२२।२८।२३
१०	१२।२९। ६	१४।३१।२०	१६।३३।३३	१८।३१।५०	२०।३४। ३	२२।३२।२०
११	१२।३३। ३	१४।३५।१६	१६।३७।३०	१८।३५।४७	२०।३८। ०	२२।३६।१६
१२	१२।३६।५९	१४।३९।१३	१६।४१।२६	१८।३९।४३	२०।४१।५६	२२।४०।१३
१३	१२।४०।५६	१४।४३। ९	१६।४५।२३	१८।४३।४०	२०।४५।५२	२२।४४। ९
१४	१२।४४।५२	१४।४७। ६	१६।४९।१९	१८।४७।३७	२०।४९।४९	२२।४८। ६
१५	१२।४८।४९	१४।५१। २	१६।५३।१६	१८।५१।३३	२०।५३।४५	२२।५२। २
१६	१२।५२।४५	१४।५४।५९	१६।५७।१२	१८।५५।३०	२०।५७।४२	२२।५५।५९
१७	१२।५६।४२	१४।५८।५५	१७। १। ९	१८।५९।२६	२१। १।३९	२२।५९।५६
१८	१३। ०।३८	१५। २।५२	१७। ५। ५	१९। ३।२२	२१। ५।३६	२३। ३।५३
१९	१३। ४।३५	१५। ६।४८	१७। ९। २	१९। ७।१९	२१। ९।३२	२३। ७।४९
२०	१३। ८।३२	१५।१०।४५	१७।१२।५८	१९।११।१५	२१।१३।२९	२३।११।४६
२१	१३।१२।२९	१५।१४।४१	१७।१६।५५	१९।१५।१२	२१।१७।२५	२३।१५।४२
२२	१३।१६।२५	१५।१८।३८	१७।२०।५१	१९।१९। ८	२१।२१।२२	२३।१९।३९
२३	१३।२०।२२	१५।२२।३४	१७।२४।४८	१९।२३। ५	२१।२५।१८	२३।२३।३५
२४	१३।२४।१८	१५।२६।३१	१७।२८।४४	१९।२७। १	२१।२९।१५	२३।२७।३२
२५	१३।२८।१५	१५।३०।२७	१७।३२।४१	१९।३०।५८	२१।३३।११	२३।३१।२८
२६	१३।३२।११	१५।३४।२४	१७।३६।३७	१९।३४।५४	२१।३७। ८	२३।३५।२५
२७	१३।३६। ८	१५।३८।२०	१७।४०।३४	१९।३८।५१	२१।४१। ४	२३।३९।२१
२८	१३।४०। ४	१५।४२।१७	१७।४४।३१	१९।४२।४८	२१।४५। १	२३।४३।१८
२९	१३।४४। १	१५।४६।१४	१७।४८।२८	१९।४६।४५	२१।४८।५७	२३।४७।१४
३०	१३।४७।५७	१५।५०।११	१७।५२।२४	१९।५०।४१	२१।५२।५४	२३।५१।११
३१	१३।५१।५४	१५।५४। ७		१९।५४।३८		२३।५५। ७
३२						२३।५९। ३

*लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं. २ को प्रयोग में लाइए।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं. ३

पूर्व रेखांश →	३०°	३६°	४२°	४८°	५४°	६०°	६६°	७२°	७८°	८४°	९०°	९६°	१०२°	१०८°
सा. का. संस्कार (सैकण्ड)	+३१	+२७	+२३	+१९	+१५	+११	+७	+३	—१	—५	—९	—१३	—१७	—२१

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. ४

मि. →	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
घं ↓	मि. सैं.	मि. सैं.	मि. सैं.	मि. सैं.	मि. सैं.	मि सैं.	मि. सैं.	मि. सैं.	मि. सैं.	मि. सैं.	मि. सैं.	मि. सैं.
०	०। ०	०। १	०। २	०। २	०। ३	०। ४	०। ५	०। ६	०। ७	०। ७	०। ८	०। ९
१	०।१०	०।११	०।११	०।१२	०।१३	०।१४	०।१५	०।१६	०।१६	०।१७	०।१८	०।१९
२	०।२०	०।२१	०।२१	०।२२	०।२३	०।२४	०।२५	०।२५	०।२६	०।२७	०।२८	०।२९
३	०।३०	०।३०	०।३१	०।३२	०।३३	०।३४	०।३४	०।३५	०।३६	०।३७	०।३८	०।३९
४	०।३९	०।४०	०।४१	०।४२	०।४३	०।४४	०।४४	०।४५	०।४६	०।४७	०।४८	०।४८
५	०।४९	०।५०	०।५१	०।५२	०।५३	०।५३	०।५४	०।५५	०।५६	०।५७	०।५७	०।५८
६	०।५९	१। ०	१। १	१। २	१। २	१। ३	१। ४	१। ५	१। ६	१। ७	१। ७	१। ८
७	१। ९	१।१०	१।११	१।११	१।१२	१।१३	१।१४	१।१५	१।१६	१।१६	१।१७	१।१८
८	१।१९	१।२०	१।२०	१।२१	१।२२	१।२३	१।२४	१।२५	१।२५	१।२६	१।२७	१।२८
९	१।२९	१।३०	१।३०	१।३१	१।३२	१।३३	१।३४	१।३४	·३५	१।३६	१।३७	१।३८
१०	१।३९	१।३९	१।४०	१।४१	१।४२	१।४३	१।४३	१।४४	१।४५	१।४६	१।४७	१।४७
११	१।४८	१।४९	१।५०	१।५१	१।५२	१।५३	१।५३	१।५४	१।५५	१।५६	१।५७	१।५७
१२	१।५८	१।५९	२। ०	२। १	२। २	२। २	२। ३	२। ४	२। ५	२। ६	२। ६	२। ७
१३	२। ८	२। ९	२।१०	२।११	२।११	२।१२	२।१३	२।१४	२।१५	२।१६	२।१६	२।१७
१४	२।१८	२।१९	२।२०	२।२०	२।२१	२।२२	२।२३	२।२४	२।२५	२।२५	२।२६	२।२७
१५	२।२८	२।२९	२।२९	२।३०	२।३१	२।३२	२।३३	२।३४	२।३४	२।३५	२।३६	२।३७
१६	२।३८	२।३९	२।३९	२।४०	२।४१	२।४२	२।४३	२।४३	२।४४	२।४५	२।४६	२।४७
१७	२।४८	२।४८	२।४९	२।५०	२।५१	२।५२	२।५२	२।५३	२।५४	२।५५	२।५६	२।५७
१८	२।५७	२।५८	२।५९	३। ०	३। १	३। २	३। २	३। ३	३। ४	३। ५	३। ६	३। ६
१९	३। ७	३। ८	३। ९	३।१०	३।११	३।११	३।१२	३।१३	३।१४	३।१५	३।१५	३।१६
२०	३।१७	३।१८	३।१९	३।२०	३।२०	३।२१	३।२२	३।२३	३।२४	३।२५	३।२५	३।२६
२१	३।२७	३।२८	३।२९	३।२९	३।३०	३।३१	३।३२	३।३३	३।३४	३।३४	३।३५	३।३६
२२	३।३७	३।३८	३।३८	३।३९	३।४०	३।४१	३।४२	३।४३	३।४३	३।४४	३।४५	३।४६
२३	३।४७	३।४८	३।४८	३।४९	३।५०	३।५१	३।५२	३।५२	३।५३	३।५४	३।५५	३।५६

अयनांश सारणी नं. १

ईस्वी	अयनांश	ईस्वी	अयनांश	ईस्वी	अयनांश
सन्	अं. क. वि.	सन्	अं. क. वि.	सन्	अं. क. वि.
१९२१	२२।४५।१३	१९४५	२३। ५।१९	१९६९	२३।२५।२६
१९२२	२२।४६। ३	१९४६	२३। ६।१०	१९७०	२३।२६।१६
१९२३	२२।४६।५४	१९४७	२३। ७। ०	१९७१	२३।२७। ६
१९२४	२२।४७।४४	१९४८	२३। ७।५०	१९७२	२३।२७।५७
१९२५	२२।४८।३४	१९४९	२३। ८।४१	१९७३	२३।२८।४७
१९२६	२२।४९।२५	१९५०	२३। ९।३१	१९७४	२३।२९।३७
१९२७	२२।५०।१५	१९५१	२३।१०।२१	१९७५	२३।३०।२७
१९२८	२२।५१। ५	१९५२	२३।११।११	१९७६	२३।३१।१८
१९२९	२२।५१।५५	१९५३	२३।१२। २	१९७७	२३।३२। ८
१९३०	२२।५२।४५	१९५४	२३।१२।५२	१९७८	२३।३२।५८
१९३१	२२।५३।३६	१९५५	२३।१३।४२	१९७९	२३।३३।४८
१९३२	२२।५४।२६	१९५६	२३।१४।३२	१९८०	२३।३४।३९
१९३३	२२।५५।१६	१९५७	२३।१५।२३	१९८१	२३।३५।२९
१९३४	२२।५६। ७	१९५८	२३।१६।१३	१९८२	२३।३६।१९
१९३५	२२।५६।५७	१९५९	२३।१७। ३	१९८३	२३।३७। ९
१९३६	२२।५७।४७	१९६०	२३।१७।५३	१९८४	२३।३८। ०
१९३७	२२।५८।३७	१९६१	२३।१८।४४	१९८५	२३।३८।५०
१९३८	२२।५९।२८	१९६२	२३।१९।३४	१९८६	२३।३९।४०
१९३९	२३। ०।१८	१९६३	२३।२०।२४	१९८७	२३।४०।३०
१९४०	२३। १। ८	१९६४	२३।२१।१५	१९८८	२३।४१।२०
१९४१	२३। १।५८	१९६५	२३।२२। ५	१९८९	२३।४२।१२
१९४२	२३। २।४९	१९६६	२३।२२।५५	१९९०	२३।४३। २
१९४३	२३। ३।३९	१९६७	२३।२३।४५		
१९४४	२३। ४।२९	१९६८	२३।२४।३६		

अयनांश सारणी नं. २

तारीख →	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	२	२	२	३	३	३	४
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५

तारीख →	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

इस पचांग में जो पहिले दैनिकलग्नसारणी दी गई है वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) बतलाती है। इसी सारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :— दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्ति काल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिन्ह के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। जैसे—मद्रास में ६ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्तिकाल जाना है। ६ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्न सारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास के आगे मिथुन के नीचे+ १६ मिनट लिखे हैं। इन १६ मिनटों को १२ घ. ० मि. में जोड़ने पर १२ घं. १६ मि. मद्रास में ६ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.) बन गया।

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुम्भ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	−१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	−१	−१	−१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	−२	−५	−६	−६	−३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	−१	−४	−८	−११	−१२	−१२	−९	−६	−२
अहमदाबाद	+२०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	−१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	−१	−४	−८	−११	−१३	−१३	−९	−६	−२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	−१	−८	−१३	−११	−४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	−२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	−३	−१०	−१५	−१३	−६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	−१	−२	−२	−२	−१	−१	०
कलकत्ता	−३२	−२८	−३०	−३६	−४५	−५३	−६०	−६५	−६३	−५६	−४७	−४०
कांगड़ा	०	−१	−१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	−९	−५	−६	−९	−१३	−१७	−२२	−२४	−२३	−१९	−१५	−११
काशी	−१५	−१३	−१४	−१८	−२४	−२९	−३४	−३७	−३६	−३१	−२५	−२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	−१	−१	−१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	−५	−८	−७	−२	+४	+९
गुड़गांव	+४	+४	+४	+२	०	−२	−४	−५	−५	−३	−१	+१
गुरदासपुर	+३	−२	−२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	−१८	−१७	−१९	−२१	−२५	−२९	−३४	−३६	−३५	−३१	−२७	−२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	−४	−९	−१३	−१६	−१५	−११	−६	−२
चम्बा	−१	−२	−१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	−३	−५	−४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	−१	−१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	−६	−११	−१६	−१९	−१८	−१३	−७	−२
दिल्ली	+३	+३	+३	+१	−१	−३	−५	−६	−६	−४	−२	०
देहरादून	−५	−५	−५	−५	−५	−५	−६	−६	−६	−५	−५	−५
नागपुर	+८	+११	+१०	+२	−७	−१७	−२६	−३१	−२९	−२०	−११	−२
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+२	+३	+३	+३

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुम्भ मि.	मीन मि.
नैनीताल	−८	−७	−८	−९	−१०	−१२	−१३	−१४	−१४	−१२	−११	−९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	+१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	−२४	−२२	−२३	−२७	−३२	−३८	−४२	−४५	−४४	−३९	−३४	−२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	−११	−९	−१०	−१४	−१९	−२४	−२९	−३१	−३१	−२६	−२१	−१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	−४	−१०	−८	+३	+१४	+२५
बरेली	−६	−६	−६	−८	−१०	−१२	−१४	−१५	−१५	−१३	−११	−९
बंगलौर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	−१६	−३२	−४०	−३७	−२२	−६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	−२	−४	−६	−८	−९	−९	−७	−५	−३
भटिंडा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	−२	−६	−९	−११	−११	−७	−४	०
भुवनेश्वर	−१८	−१४	−१६	−२४	−३४	−४४	−५४	−५८	−५७	−४८	−३९	−२८
भोपाल	+११	+१४	+१३	+६	−४	−८	−१५	−२०	−१८	−११	−४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	−११	−२७	−४३	−५१	−४८	−३३	−१७	०
मथुरा	+३	+४	+२	+१	−२	−६	−९	−१०	−१०	−७	−४	०
मण्डी (हि.प्र.)	−२	−३	−३	−२	−१	०	+२	+२	+२	+१	०	−१
मालेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+२	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	−१	०	−१	−२	−३	−५	−६	−७	−७	−५	−४	−२
मोगा	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	−२	−३	−३	−१	+१	+२
लखनऊ	−९	−८	−९	−१२	−१५	−१९	−२३	−२५	−२४	−२०	−१७	−१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	−२	−२	−२	−२	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−२
श्रीनगर (क.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	−१	−१	−१	−२	−२	−३	−४	−४	−४	−३	−३	−२
हरिद्वार	−४	−४	−४	−५	−५	−६	−७	−७	−७	−६	−६	−५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	−५	−१७	−२८	−३५	−३३	−२२	−९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+२	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

अथ महर्षि-पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान-चक्रम्

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्रदशा वर्ष १०				भौमदशा वर्ष ७			
कृ.उ.फा.उ.षा.				रो.ह.श्रवण				मृ.चि.ध.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	च.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
च.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	गु.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	गु.	१	४	०	श.	१	१	९
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	च.	०	७	०

राहुदशा वर्ष १८				गुरुदशा वर्ष १६				शनिदशा वर्ष १९			
आ.स्वा.श.				पुन.वि.पू.भा.				पु.अनु.उ.भा.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	गु.	२	१	१८	श.	३	०	३
गु.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२
शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	च.	१	७	०
सू.	०	१०	२४	च.	१	४	०	मं.	१	१	९
च.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	गु.	२	६	१२

बुधदशा वर्ष १७				केतुदशा वर्ष ७				शुक्रदशा वर्ष २०			
श्ले.ज्ये.रे.				म.मू.अश्वि.				पू.फा.पू.षा.भ.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	च.	१	८	०
सू.	०	१०	६	च.	०	७	०	मं.	१	२	०
च.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	गु.	२	८	०
रा.	२	६	१८	गु.	०	११	६	श.	३	२	०
गु.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

शिवोक्त योगिनी-दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्रमिदम्

मंगला व. १			पिंगला व. २			धान्या व. ३			भ्रामरी व. ४			भद्रा व. ५			उल्का व. ६			सिद्धा व. ७			संकटा व. ८			दशा तथा वर्ष
चन्द्र			सूर्य			गुरु			मंगल			बुध			शनि			शुक्र			केतु			दशेश ग्रहाः
आर्द्रा चि. श्र.			पुन. स्वा. ध.			पुष्य वि. श.			अ. श्ले. अ. पू.भा.			भ. म. ज्ये. उ.भा.			कृ. पू.फा. मू. रे.			रो. उ.फा. पू.षा.			मृ. ह. उ.षा.			जन्म नक्षत्र
मं.	[illegible]	[illegible]	पि.	[illegible]	[illegible]	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०	अन्तर्दशा मासादि शुभदशा—म.धा.भ.सि. नेष्टदशा—पि.भ्रा.उ.सं.
पि.	[illegible]	[illegible]	धा.	[illegible]	[illegible]	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०	
धा.	[illegible]	[illegible]	भ्रा.	[illegible]	[illegible]	भ.	[illegible]	[illegible]	उ.	८	०	सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०	
भ्रा.	[illegible]	[illegible]	भ.	[illegible]	[illegible]	उ.	[illegible]	[illegible]	सि.	६	१०	सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०	
भ.	[illegible]	[illegible]	उ.	[illegible]	[illegible]	सि.	[illegible]	[illegible]	सं.	१०	२०	मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०	
उ.	[illegible]	[illegible]	सि.	[illegible]	[illegible]	सं.	[illegible]	[illegible]	मं.	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०	
सि.	[illegible]	[illegible]	सं.	[illegible]	[illegible]	मं.	[illegible]	[illegible]	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०	
सं.	[illegible]	[illegible]	मं.	[illegible]	[illegible]	पि.	[illegible]	[illegible]	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०	

दशा का भुक्तभोग्य

[illegible] ६० में से घटाकर हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र घट्यादि जोड़ने से [illegible] वर्ष से गुणाकर भोग के पलों से भाग देवें। [illegible] फिर ३० से गुणाकर करके भभोग के पलों से [illegible] फिर शेष को ६० से गुणा कर भभोग के पलों का [illegible] भोग्य दशा प्राप्त होती है। [illegible]

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ-ग्रहफलबोध चक्रम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृप भीः	धनलाभः	हानिः	कष्टम्	शत्रुनाशः	पीडा	कष्टम्	धर्मनाशः	सुखम्	धनला.	पीडा
चन्द्र	पीडा	धनलाभः	हर्षः	शत्रुनाशः	सुखम्	पीडा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योदयः	विजयः	धनला.	व्यय
भौम	व्रज	धननाशः	जयः	व्यसन	दुर्गतिः	शत्रुनाशः	स्त्रीकष्टम्	पीडा	पुण्योदयः	राज्यला.	धनला.	विरोध
बुध	सौख्यम्	धनलाभः	सुखम्	द्रव्यलाभः	पुत्रलाभः	कलहः	धनलाभः	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	विग्रह
गुरु	सुखम्	धनलाभः	जयः	वाह. ला.	पुत्ररा	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्मलाभ	राज्यला.	धनला.	शोक
शुक्र	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिला.	सुखला.	धनलाभः	शत्रुभीतिः	स्त्रीसुखम्	कष्टम्	धर्मोदय	मानला.	धनला.	व्यय
शनि	बालार्ति	पीडा	धनलाभः	दुःखम्	पुत्रप्रीः	जयः	स्त्रीकष्टम्	रोगः	भाग्यहा.	धनहाः	धनला.	चिन्ता
राहु	शिरोर्ति	राजभी.	सुखम्	दुःखम्	बुद्धि नाश	शत्रुनाशः	रोगभीः	कष्टम्	धर्महा.	विजयः	सुलाभः	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्यं	राजभीः	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेशः	पीडा	भाग्यनो.	धनला.	लाभः	शोकः
मन्था	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टिः	दुःखम्	सुखाप्तिः	कष्टम्	व्यसनम्	दुःखम्	भाग्योद.	राज्यप्राः	लाभः	कष्टम

सूर्यसिद्धान्तीय वर्ष-प्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०		३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	३	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना–वर्षसिद्ध वर्तमान सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान से ८।। पल कम है। अतः सक्षम-वर्ष-प्रवेश-कालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८।। से गुणा करके पलात्मक फल को सारिणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सक्षमवर्षमानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफल-साधन प्रकारः–(१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष करना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गत वर्ष (गताब्द) जानें। स्मरण रहे कि मेषार्क प्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछाड़ी संवत् से करना (वर्षायनतंत्रगणकमत्र सौगत) इस प्रकार गतवर्ष लाकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारिणी में वारादि अंक हैं उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी पल जोड़ने से वर्षप्रवेश कालिक वारादि इष्ट ज्ञान हो जाता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हो तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आजाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्ष प्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्यवत् वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन वर्ष प्रवेश जानना। पंचांगों के अनुसार कभी-कभी वार नहीं मिलता। वहां पर वार को ठीक जानना। इस इष्ट के अनुसार पीछे लिखी स्वदेशीय लग्न सारिणी से लग्न साधन करके जानें। **मुन्थानयनप्रकारः**–गताब्दवृन्द में जन्मलग्न जोड़कर उसमें वर्ष कुण्डली लगाना। १२ का भाग देना, जो शेष बचे वह मुन्था जानना, यह मुन्था प्रतिदिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा–गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें दो घटायें, ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो दशा जाननी १ बचे तो सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ से शुक्र की दशा जानें।

दशा दिनानि–सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६० यह दशा के दिन है।

हर्ष स्थान बल–सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३, मंगल ३, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ वर्ष बल देते हैं।

स्वोच्च बल–सू. १।५, चं. २।४, मं. १।८।१०, बु. ३।६, गु. ९।१२।४, शु. २।७।१२, श. १०।११।७ इन स्थानों में ५ बल देते हैं। **पुरुष स्त्री बल** स्त्रीग्रह (चं. बु. शु. श.) १।२।३।७।८।९ और पुरुषग्रह (सू. मं. बृ.) ४।५।६।१०।११।१२ वें स्थानों में ५ बल देते हैं। **दिनरात्रिबल**–दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिनलग्नेश
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.	रात्रिलग्नेश

वर्ष में दृष्टि-ज्ञान और फल

वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो उस भाव से पांचवें ९वें भाग को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल–कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम लाभ और जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है। उनसे प्रेम होता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से देखता है। फल–कार्य कठिनता एवं गुप्त भाव से सफल हो पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है। फल–शत्रुता उत्पन्न करे, मित्र से वैर, धन हानि, बनते काम को बिगाड़ना आदि फल होते हैं। ४-१० गुप्तशत्रु दृष्टि से देखते हैं। फल–कार्य बड़ी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णयः—जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५, दिन में वर्षप्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी इन पांचों अधिकारियोंमें से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होगा, यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा॥ कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह बल, दृष्टि, अधिकार यह तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश होगा। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे वा जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश होगा॥ फल—वर्षेश ६।८।१२ व अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भय विशेष होगा। यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखश्वर्य की वृद्धि हो।

वर्ष में तबदीली का योग–वर्ष कुण्डली में लग्नेश-तृतीयेश या चतुर्थेश-नवमेश एक घर में हों या एक दूसरे को मित्र दृष्टि से देखे तो उस वर्ष तबदीली होगी। अगर वर्ष-लग्नेश वक्री हो और वह मित्र ग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली होगी।

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एकपाद दृष्टि
५।६	५।६	५।६	५।६	०	५।६	५।६	५।९	५।९	द्विपाददृष्टि
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टि
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्ण दृष्टि
चं. मं. गु.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. च. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बु.	मित्र-ग्रहाः
बु.	मं. श. गु. शु.	शु. श.	मं. श. गु.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. च.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष १०	वृष ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशयः परमोच्चांशाः
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनु १५	मिथुन १५	नीचराशयः नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे. वृश्चि	मि. क.	ध. मी.	वृष. तु.	म. कु.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुं. स्त्री नपुंसक
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपरा.	अपरा	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	अतिस्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्व रस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू.	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	[illegible]	[illegible]
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	संधि	विवर	विवर	स्थान

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म-नक्षत्र संख्या में गताब्द जोड़े ३ और जोड़े ८ से शेष करे तो मंगलादि योगिनी दशा होती है।

सर्वोत्तमादि [illegible] मुद्दादशा [illegible]

[illegible]

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्न लग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करना, फिर उसमें १५०(डेढ़ सौ) का भाग देना। लब्ध जो राश्यादि चार फल आवें उसकी राशि के अंक में प्रश्न लग्न की राशि अंक मिलाना, यहमुथा का स्पष्ट लग्न जानना। और [illegible] से चतुर्थ राशि का स्वामी जन्म लग्नेश जानना अर्थात् पंचाधिकारियों में [illegible] पति के स्थान में प्रश्न लग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जो हो वह लिखना। [illegible] पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष जानना। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है।

[illegible]

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य हो, वह शास्त्र-समस्त शुभ-मुहूर्त में करें, तो अवश्य सफल हो कर सुखप्रद होता है। गया-गोदावरी यात्रा में, नवरात्र कृत्य में एवं चातुर्मास्य व्रत में गुरु-शुक्रास्त का दोष नहीं होता। शुक्ल पक्ष की द्वितीया एवं कृष्णपक्ष की प्रतिपदा सर्व-कार्यों में शुभ मानी है। प्रथम बार देव दर्शन एवं प्रथम तीर्थयात्रा में गुरु शुक्रास्त अवश्य विचार्य है।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां—१, २, ३, ५,७, १०,११,१२,१३। **शुभ-नक्षत्र**—तीनों उत्तरा, मृ. ह.अनु.रो.स्वा.श्र.ध.श.। **शुभ लग्न**—जब लग्न और ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ-ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, सूर्य मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में कन्या होती है।

चित्रा, पुन., पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम है।

गर्भाधान के लिए अशुभ-काल

भद्रा, ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रांति का दिन। सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां, ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी घड़ी, ५, ९, १, लग्नों की आधी घड़ी, ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी, ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक घड़ी, निधन तारा, जन्म नक्षत्र मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा-नक्षत्र, ग्रहण के दिन व्यतिपात वैधृतियोग, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिघ योग का आधा भाग, उत्पात से हत-नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापयुक्त-लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित हैं।

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल रखना चाहिए, और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त—यह गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृ. पुन. पु. ह. मूल और श्रवण नक्षत्र में १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमन्त संस्कार का मुहूर्त—गर्भाधान से छठे या आठवें मास में, जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियों, वारों नक्षत्रों और लग्नों में सीमन्त शुभ होता है।

सीमन्तजातकादीनि प्राशनान्तानि यानि वै। न दोषोमलमासस्य मौढ्यस्य गुरु-शुक्रयोः॥

गर्भ-रक्षा के लिए विष्णुपूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में, शुभलग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधा-जनन संस्कार—बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्ण सहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर 'ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ, भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा-थोड़ा चार बार मधु चटावें। ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तन पान कराने या सूतिका पथ्य का मुहूर्त—रिक्तामा, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों, वार चं. बु. गु. शु. हों, नक्षत्र-मृग. पुन. पु. श्र. रे. म. हों, तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त—रेवती, तीन-उत्तरा, रो. मृ. ह. स्वा, अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में रवि गुरु और भौम वारों में, १,२,३,५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं। आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूतास्त्री के जलपूजन का मुहूर्त—मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार की ४, ९, १४ तिथियों को छोड़ कर अन्य तिथियों में, श्र. पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र, पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त—संक्रान्ति का दिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा. रो. ह. अश्विना पुष्य, अभि, स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों जब लग्न से १. ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानो में पापग्रह हों, तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहण मुहूर्त

सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

जन्मदिन से १०।१२।१६।१८।३२ दिन शुभवार में. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा. रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इनसे रहित तिथियों में १।४।५।६।७।९।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर १।४ ११वें शुभ ग्रह हों ३।६।११वें पापग्रह हों तो उत्तम होता है।

निष्क्रमण मुहूर्त—स्वा. अश्वि. पुन. ह. मृ. पु. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में भौम.-शनि को छोड़ कर अन्य वारों में, रिक्ता अमा भद्रादि से रहित शुभ दिन में तीसरे चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें।

भूम्युपवेशन मुहूर्त—पांचवें महीने में पृथ्वी वराह का पूजन करके भौम के पूर्णबल में तीनों उत्तरा, रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में, ४।६।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिरलग्न में शुभदिन में बालक के करधनी का द्विसूत्र बांध कर पृथ्वी पर बैठावें।

भूम्युपवेशन के लिए मन्त्र—"रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाण सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये! इति॥" इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखें, जिसको बालक ग्रहण करे, उससे उसकी आजीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त—जन्ममास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११वें में कन्या का भद्रादि-दोष रहित १, २, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पु. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, १२ स्थानों में पापग्रह हों दशम स्थान पापग्रह-रहित हो, १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी किसी के मत से जन्म-नक्षत्र अनु. शत-तारका और स्वाती अशुभ है।

कर्णवेध का मुहूर्त—चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) जन्ममास, जन्मनक्षत्र ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़कर जन्म से १२वें दिन या १६वें दिन, ६वें ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पु. अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से [illegible] १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों [illegible] हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। [illegible] या मीन लग्न में बृहस्पति [illegible] (आन्त्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग को [illegible] के हर्निया [illegible]

[illegible] नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत. [illegible] समय नासिका-वेध शुभ है।

[illegible] से विषम अर्थात् ३रे ५वें, ७वें वर्ष [illegible] उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, [illegible] छोड़कर [illegible] से अष्टम लग्न को छोड़ [illegible] दिन को छोड़ कर जब लग्न से [illegible] तिथियों [illegible] पापग्रह हों, ज्ये, मृ., रे. चि. [illegible] लड़के की माता [illegible] की अवस्था के बालक [illegible] नहीं करना चाहिए।

[illegible] शुभ समय [illegible] देखा जाता है, जो [illegible]

[illegible] **क्षौर बनवाने का मुहूर्त**— [illegible] रवि, भौमवार, हजामत [illegible] शनि में [illegible] १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्ति का दिन, [illegible] में नौवें दिन, सन्ध्याकाल, ४, ८, ९, [illegible]

बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर या भोज के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल—यज्ञ विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है। किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य से नियुक्त हैं वे रूपजीवी जैसे नट, भांड आदि किसी दिन हजामत बनवा सकते हैं। वर्णभेद से क्षौर का वार—ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त—जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को ह., अश्वि., पुष्य, अभि. श्र. स्वा. रे. पुन. आर्द्रा. चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों के बुरे योगों और भद्रा को छोड़ कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है। लग्न में मेष, कर्क, तुला, और मकर राशियां नहीं होनी चाहिए।

विद्यारम्भ का मुहूर्त—उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में म., आर्द्रा, पुन., हस्त, चि., स्वा., श्र. ध. शत., अश्विनी, मू., तीनों उत्तरा, रो, पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थान में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त—सूर्य, भौम, शनिवार हों, ४।९।१४ तिथि हों, ज्ये. आश्ले. म. तीनों पूर्वा. भ. कृ. वि. आर्द्रा उ. पा. शत. नक्षत्र शुभ है।

सीने पिरोने (सूचि कर्म) का मुहूर्त—अश्वि. पु. चि. अनु. ध. ये नक्षत्र, सूर्य, बुध, चन्द्र, बृ. श. ये वार, १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त—यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है। देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है मिला देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु-धागा-विशेष) यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक की गुरु, चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से (गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें, इन वर्षों में यदि न किया जाए तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं। उसके बाद सावित्री पतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृ., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेध रहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू. च. बु, (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथी जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघशुक्ल १२ को और संक्रान्ति दिन को तथा रोग बाण को छोड़कर मध्यान्ह से पहले शुभ है। शु. मृ. च. और लग्नेश, ६।८ वें स्थान में, चं. श, १२वें स्थान में, और १।५।८वें में पापग्रह अशुभ है। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में, पापग्रह ३।६।११ स्थानों में, वृष या कर्क का सम्पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु शुक्र के बाल्य, वृद्धत्व, अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है। यदि षोडशाब्दक वर्ष से बालक से उपनयन संस्कार के लिए समय शुद्धि न मिले। अथवा लि. मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

योनि-नाड्यादि-ज्ञान चक्र

नक्षत्र	योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गण	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथ में	पंच शलाका में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	अश्वमुख	३	पू.फा.	पू.फा.
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	योनि	३	अनु.	म.
कृ.	मेष	बानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.
रो.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्वं.	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि.
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उपा.	उपा.
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्वं.	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा	पूषा.
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.
पुष्य	मेष	बानर	मध्य	देव	ऊर्ध्वं.	अंध	क्षिप्रलघु	बाण	३	ज्ये.	ज्ये
आश्ले.	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध.	अनु.
म.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	गृह	५	श्र.	भ.
पू.फा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्रक्रूर	मंचक	२	अश्वि	अश्वि.
उ.फा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्वं.	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	कर	५	उभा	उभा
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदुमैत्र	मुक्ता	१	पूभा	पूभा
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मृदुमैत्र	तोरण	४	कृ.	ध.
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मिश्रसाधा.	बलिनिभ	४	म.	आश्ले.
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य	पु.
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन	पुन.
पू. षा.	बानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्वं.	अंध	उग्रक्रूर	गजदन्त	२	आ	आ.
उ. षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्वं.	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो,
श्र.	बानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्वं.	सुलो.	चरचल	वामन	३	म.	कृ.
ध.	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्वं.	अंध	चरचल	मर्दुल	४	आश्ले	वि.
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्वं.	मंद	चरचल	बतुंल	१००	स्वा.	स्वा.
पू. भा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	मचक	२	चिता.	चित्रा.
उ. भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्वं.	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाम	२	ह.	ह.
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा.

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक ।

स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी और चतुर्थ मित्र समझना चाहिए ।

अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेंढा

वर्ण ज्ञान चक्र

वर्ण→	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि→	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११

मेलापक सारिणी देखने की रीति

मूहूर्त शास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारिणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले को वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिलें उस में गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणों वाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या या चिन्ह भी है। उसका विवरण यह है, कि—नाड़ी दोष की जगह (२), गण महादोष की जगह (१), भकूट महादोष षड़ष्टक में (६), नवपञ्च में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहले है वहां शून्य (०) रखा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया, वहां ऋण का (—) और जहां अधिक समझा गया वहां धन का चिन्ह(+) दिया गया है। गुणों की संख्या के नीचे कोई अंक व चिह्न नहीं है। वहां निर्दोष समझना चाहिए। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिए कि ३६ गुण में केवल १२ मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इसलिए सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इसमें अधिक मिले तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और उसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हों और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हों तो विवाह के लिए विचार नहीं करना चाहिए। क्योंकि अशुभ हैं।

नाड़ी-दोष-परिहार—यदि वर कन्या की राशि एक हो और जन्म नक्षत्र भिन्न हो, अथवा दोनों का जन्मनक्षत्र एक हो राशि भिन्न हो तो नाड़ीदोष एवं गणदोष नहीं होता। यदि दोनों का नक्षत्र एक हो, परन्तु चरणभेद हो तो भी नाड़ीदोष नहीं होता। आवश्यक दोष शान्ति—द्विर्द्वादश दोष होने पर ताम्र-सुवर्ण, वर्णादि दोष में अन्न वस्त्र, सुवर्ण, नव पंचम में कांसी चांदी, अशुभ षडष्टक में गोमियुन अथवा गाय अन्न वस्त्र सुवर्णादि का दान करने पर पाणिग्रहण करें। "गावोऽन्नं वसनं हेम सर्वं दोषापहारकम्।—(गुरुः)। महादोष एकनाड़ी हो तो अत्यावश्यकता में शान्त्यर्थ महामृत्युंजय का जप तथा कम से कम ३१ रत्ती स्वर्ण की नाड़ी एवं गोदान करने पर ही पाणिग्रहण करें अन्यथा नहीं।

अपवाद—न वर्गवर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा। तारा विरुद्धे नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे॥ राशीशयोः सुहृद्भावे मित्रत्वे वांशनाथयोः। गणादि दोषैऽप्युद्वाहः पुत्रपौत्रप्रवर्धनः॥

मिलान के बिना ही विवाह—जो कन्या स्वयं वर का वरण करे, अथवा जहां वर-कन्या को परस्पर देखने से ही वर-कन्या के मन एवं नेत्रों को सन्तोषानुभूति हो, अथवा पुनर्भू एवं क्रीता—स्त्री के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए गुण-ग्रह मेलापनादि विचार शास्त्र विहित नहीं है।

मेलापक सारिणी

कन्यायाः	वरस्य →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क		
	भानि	अ १	भ १	कृ ।	कृ ॥।	रो १	मृ ॥	मृ ॥	आ १	पुन ॥।	पुन ।	पु १	श्ले १
तुला	वि ॥	२२	१४ १३	२८	२३ ६+	१८॥ १६	१०॥ ३६	१२ ३५	२० १५	१८॥ ५+	१९	११ ३	२५
	स्वा १	२६ २+	२८	१६ ३	११ ३६	१४ ३६	२४ -६	२६ ५+	२६ ५+	२७ ५+	२७॥	२६	२३ ३
	वि ॥।	२१	२२ १	२० ३	१५ ३६	९ १३६	१७ -६	१८॥ ५+	२० १५	२० ५+	२०॥	२०॥	१७ ३
वृश्चिक	वि १	१६॥ ६+	१६॥ १६	१४॥ १६	१९॥ ३	१३॥ १३	२७॥	११ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	१८ -५	१८ ५-	१४॥ -३५
	अनु १	२३॥ ६	१४॥ ३६	१८॥ -६	२३॥	२७॥	२७॥ ३	१० ३६	१५ २६	१७॥ ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५
	ज्ये १	१० ३६	१७॥ १६	२३॥ -६	२८॥	२२॥ १	२६॥	१२ ६	२ ३१६२	४ ६३	१९॥ ५३	१६ ५+	२५ -५
धनु	मू १	११॥ ३५	१६ १५	२५ ५+	१६॥ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	२१	१४ १३	१२ ३	७॥ ३६	१७॥ ६	२३ ६
	पूषा १	२५॥ ५	१७॥ ३५	१९॥ -१२५	१४ १६२	१८॥ ६	१०॥ ३६	१६ ३	२६	२७	२२॥ ६	१४॥ २३६	१६॥ १६
	उषा १	२४ ५+	२५॥ ५-	११॥ १३५	६ १३६	१० २३६	१६॥ २६	२५ २+	२६	२७	२२॥ ६	२२॥ ६	८॥ १६३
मकर	उषा ॥।	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	१६॥ २६+	२४॥ -६	२१॥ -६	२८	२८	१४ १३
	श्र १	२८	२७	१४॥ ३२	१२ ३५२	१७ ३५	२६ ५+	२३ -६	१६॥ -६	२१॥ -६	२८	२८ २+	१४ ३
	ध ॥	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५॥	१५ १५	११ ३५	८ ३६	१६ १६	१४॥ -६	२२	१३ ३	२७
कुम्भ	ध ॥	१९॥	१०॥ १३२	२५॥	३०	२५॥ १	१७॥ ३	११ ३५	१८ १५	१७ +५	१२ ६	४ ३६	१८ ६
	शत १	१४॥ ३	२०॥ १	२६॥	३१	२५ १	२९॥	२० ५+	१२ १३५	१२ ३५	६॥ ३६	१३ ६	१६ ६
	पूभा ॥।	१७॥ ३	२४॥ २+	१६॥ -१	२४ -१	३०	३०	२३॥ ५+	१७ ३५	१७ ३५	११॥ ३६	१९॥ ६	१२ १६
मीन	पूभा १	१४॥ ३४	११॥ ४२	१६॥ -१४	१६ १	२५	२५	२४	१७॥ ३	१७॥ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५
	उभा १	२३॥ ४+	१५॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७ ३	२५	२६॥	३६ ५	१६ ३५	२० १५
	रे १	२५ ५+	२३॥ ४+	२०॥ ३४	१३ ३	१७ ३	२६	२५	२४	२५	२४॥ ५	२६ ५	१३ ३५

कन्यायाः	वरस्य →	सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक		
	भानि	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ॥।	ह १	चि ॥	चि ॥	स्वा १	वि ॥।	वि ।	अनु १	ज्ये १
तुला	वि ॥	२४॥	१०॥ १३	१७॥ १२	१७॥ २२४	२० ४+	२० ३४	२८ ३	२७॥ ०	३३॥	२२॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४
	स्वा १	२२॥ ३	२४	२५॥	२५॥ ४	२७॥ ४+	२१ ४+	२८	२८ ३	२० ०३	९ ३४०	२१॥ ४	१६॥ ४
	वि ॥।	१६॥ ३	१८॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ ४+	२६ ४-	३३॥	१९ ३	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२२॥ ४
वृश्चिक	वि १	२४॥ ३	२२॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२६	२१॥ ४	७ ३४	१५ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥
	अनु १	२४॥	२०॥ ३	२८॥	२४	२५	२१ ३	६॥ ३४	२०॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०
	ज्ये १	३१	२३॥ १	१५॥ १३	११ १३	११ ३	२४	१६॥ ४	१४॥ ४	१६ ४	३१॥	३०	२८ ३
धनु	मू १	२४ ५+	१८ १५	१६॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२६	२६	२१	२६	२२॥ ४+	१६॥ +२४	१९ ३४
	पूषा १	१६ -१५	१७ ३५	२५ ५+	२८॥	२७	१२ १३	१२ १३	२७	२० १	१६॥ -१४	१५॥ ३४	१७॥ -१४
	उषा १	८॥ १५३	२४ ५+	२ ५+	२८॥	२८॥	२० १	२० १	१६ ३	१२ १३	८॥ १३४	२३॥ ४+	१७॥ -१४
मकर	उषा ॥।	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४ ५+	२४ ५	१५॥ १५	२२॥ -१	२१॥ ३	१४॥ १३	१२ ३१	२७	२१ १
	श्र १	५॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३ ५+	२४ ५+	१६ ५	२४	२१॥ ३	१४॥ ३	१२ ३	२७	२१
	ध ॥	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १६	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	१९ ३	२४	२८॥	२६	१२ ३	२६
कुम्भ	ध ॥	२४॥	१०॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१६ ६+	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५
	शत १	२५॥	१९॥ १	११॥ १३	२०॥ १३६	२०॥ २३६	२५ ६	२६ +५	२१ २५+	२६ ५+	२६॥	२०	१८ ३
	पूभा ॥।	२८॥ १	२४॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५-	२६ ५+	२० -१५	२०॥ १	२६॥	११ १३
मीन	पूभा १	१६॥ -१६	२२॥ ६+	१४॥ ३६	१६ ३	१६ ३	१८ १+	११ १६	१८॥ ६	१२॥ १६	११ -१५	२५ +५	८॥ १३५
	उभा १	२७॥ -१६	१५ ३६	२५॥ ६+	२७	२६	९ १३२	२ २३६२	११ ५	११॥ १६२	१८ १५२	१८ १५	२० -१५
	रे १	२२ ३६	२२॥ ६+	२२॥ ६-	२४	२५	१३	१२ ६	१० १३६	४ ३६	२०॥ ३५	२६ ५+	२९ ५+

कन्यायाः	वरस्य →	धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	भानि	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ॥।	श्र १	ध ॥	ध ॥	शत १	पूभा ॥।	पूभा ।	उभा १	रे १
तुला	वि ॥	२७	१३ १३	२१ १	२३॥ १	२५	२३ ३	१८॥ ३५	२६ ५+	१८॥ १५	२२ १६	३ १३६२	१२ ६
	स्वा १	२३	२७	१८ ३	२१॥ ३	२२॥ ३	२६	२१ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८॥ ६	१६ ६	११ १६
	वि ॥।	२७	२१ १	१३ १३	१५॥ १३	१५॥ ३	२९॥	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३॥ १६	१२॥ १६२	४ ३६
वृश्चिक	वि १	२१॥ ४+	१५॥ ४१	७॥ १३४	११ १३	११ ३	२५	२४	२५॥	१६॥ १	१६ १५	१८ १५२	९॥ ३५
	अनु १	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४॥	२४ ५+	१७ ३५	२६ ३+
	ज्ये १	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	६॥ १३५	२० १५	२० +५
धनु	मू १	२८ ३	२८ ०१	१५॥ १	१३॥ १४	१४॥ ४	१६॥ ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६॥ १३	२४॥ १	२६
	पूषा १	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२॥ ४	५॥ १३४	४॥ ३	२३॥ १	२८॥	२६॥	२२॥ ३	३०॥
	उषा १	२५ -२	३५	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१३॥ १४	२२॥ १	२३॥ १	२८॥	२६॥	३०॥	२२॥ ३
मकर	उषा ॥।	१४॥ १४	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२७ ०३	२५॥ १+	१५॥ १४	६॥ १+	२१॥ ४+	२९॥	१०॥	२२॥ ३
	श्र १	१४ ४	२२॥ ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७ -०	१७ ०४	१७॥ ४+	२०॥ ४+	२८॥	२६॥	२३ २
	ध ॥	२०॥ ४	६॥ ३४१	१४॥ ४१	२५॥ १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ०४	१७॥ १४	२४॥ १	१५ १३	२३॥ +२
कुम्भ	ध ॥	२९॥	१५॥ १३	२३॥ १	१६॥ १४	१८ ४+	१८ ३४	२८ ३	३३ ०	२७॥ १	१६॥ १४	६॥ १३४	१३॥ ४२
	शत १	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१७ १४	१७॥ ४+	२४ ४+	३३	२८ ३	१६ ०१३	८ २३४०	१४॥ १४	१५॥ ४
	पूभा ॥।	१५ १३	२१॥	२९॥	२२॥ +४	२२॥ -४	१८॥ -१४	२८ -१	१६ १३	२८ ३	२६ १४	२२ ०४	१६॥ ४२
मीन	पूभा १	१४ १२	२८॥	२८॥	२८॥	२८॥	२४॥ १	१५॥ १४	७ १३४	१५ ३४	२८ ३	३३ ०	३०॥ +
	उभा १	२३॥ -२	२१॥ ३	२६॥	२९॥	२६॥	१४॥ १३	५॥ १३४	१६ १४	२१ ४	३३	२८ ३	३३ ०
	रे १	२६	२८॥	२०॥ ३	२६॥ ३	२१॥ ३	२२॥ -२	१३॥ ४२	१५॥ ४	१७॥ ४२	२६॥ +२	३३	२८ ३

ग्रह-मेलापक-विचार—वर की कुण्डली में जन्मलग्न, चन्द्रमा से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना, यदि कन्या के जन्मलग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर का नाशक होता है।

अपवाद—वर की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थानों में मंगल हो और कन्या की जन्म-कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। यदि एक की कुण्डली में मंगल हो दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाय तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है और जितने ग्रह कन्या की कुण्डली में अशुभ होकर पड़े हों उतने या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़े हों तो शुभ जानें। इसी प्रकार कन्या के जन्मलग्न में ७।८ स्थान तथा वर का २।७ स्थान अवश्य विचार लेना चाहिए और दोनों का पञ्चम भाव विशेषता से देखना चाहिए। कन्या के सप्तमेश तथा शुक्र आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि होने से सौभाग्य योग का विचार अत्यावश्यक है। अथवा—वैधव्ययोग वाली कन्या को शालिग्राम या कुम्भ से यथाविधि विवाह करके दीर्घायु वाले वर के साथ विवाह करे।

विवाहार्थ वर के गुण—कुल, शीलस्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप, विद्या, धन, सनाथता ये सात गुण जिस वर में उत्तम मिलें उसको कन्या देनी चाहिए।

वर के दोष—दूरदेश वाला, द्वीपान्तरवासी, अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन नास्तिक, आजीविका से रहित अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढ्य, मूर्ख, शूर, मोक्ष की चाह वाला, संसार से विरक्त, वृद्ध, कन्या से छोटा ऐसे २ दोषों से युक्त वर को कन्या नहीं देनी चाहिए।

विवाहार्थ कन्या के दोष—अत्यन्त चौड़े मस्तक वाली, कुबड़ी, लज्जाहीन, झूठ बोलने वाली, रोगग्रस्त, अंगहीन, अतिस्थूल अथवा अतिदुर्बल लम्बी व पतली झगड़ालू [illegible] (वाली) ऐसे व किसी भी दोषवाली कन्या को सुखार्थी वर्जित करे।

गोत्र में विवाह निषेध—समान गोत्रवर में विवाह से उत्पन्न सन्तान चाण्डाल होती है [illegible] से च्युत हो जाते हैं सुलक्षपिण्ड मातृगोत्र या तुल्य पितृगोत्र [illegible] का सा होता है।

[illegible] से पहले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना [illegible] सामुद्रिक तथा ज्योतिष-शास्त्र में कहे हुए [illegible] और कुण्डली मिलान के समय निम्नलिखित [illegible] विचार लेना, [illegible]—(१) दारिद्र्य, (२) मृत्यु, (३) वैधव्य, [illegible] (४) [illegible] (५) सन्तान का अभाव।

वर-वरण मुहूर्त—[illegible] पू. ३. रो. कृ. पूर्वा ३. [illegible] को छोड़कर शुभ [illegible] अथवा कन्या का भ्राता वर [illegible] [illegible] के मस्तक पर केशर [illegible] तथा यथोचित द्रव्य से वर को [illegible] (मु. अक्षत) देकर यह मन्त्र पढ़े [illegible] "[illegible] प्रयच्छामि" [illegible] के स्थान में "[illegible] प्रयच्छति" कहे।

कन्या-वरण मुहूर्त—उ. फा., स्वा., अ. पूर्वा. ३, अनु. ७, कृ. विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ समय देखकर [illegible] (सगाई) करना चाहिए।

विवाह काल-निर्णय—२० वर्ष पहले पुरुष का और ८ वर्ष से पहले तथा रजोदर्शन के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता है। अतः रजोदर्शन पूर्व (कुचों के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान कर) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्वसम्मत श्रीपतिनिबन्धोक्त वर्षों में गुरुचन्द्र शुद्धि देखकर विवाह कर देवें। तथा "मासत्रया-दूर्ध्वमयुग्म वर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत्। विवाहशुद्धि प्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादयो गर्गवराहमुख्याः॥ द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है। यदि किसी योग्य वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे तो माता पितादि को कोई विशेष दोष नहीं लगता। वात्स्यः—रजस्वलायाः कन्यायाः गुरु-शुद्धि न चिन्तयेत्। वशिष्ठः-तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहोमतः॥ विवाह लग्न के समय कन्या ऋतुमती हो तो—स्नापयित्वा तु तां कन्यामर्चयित्वा यथाविधिः। युंजानामाहुति हुत्वा ततः कर्मणि योजयेत्।

कितनी कम उमर कन्या की हो—विवाह के समय पति की उमर आजकल वर से कितनी कम उमर कन्या की हो—विवाह के समय पत्नी को दो से भाग देवें जो आवे उसमें ६ जोड़ने से जो वर्ष आवे वह विवाह के समय पत्नी की उमर होनी चाहिए। यथा वर की उमर यदि ३० वर्ष की हो तो वधु की उमर २१ वर्ष की होनी चाहिए, यह सुखी विवाह का फार्मूला है।

विवाह के पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और वर के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर का नहीं कन्या का नाम रखने के लिए मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझ कर ऋण (—) का चिह्न लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अधिक मिले उसी के बाईं ओर जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार निर्दोष शुद्ध नाम रख लेना चाहिए। बहुत से विद्वान् कन्या संकल्प के समय "वरस्य पञ्चमे कन्या कन्यायाः नवमे वर" बोलते हुए नाम बदल देते हैं। ऐसे नाम बदलना व्यर्थ है अतः पहिले सारिणी आदि देखें।

प्रयोग चक्रम्

सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना करें।

स्थान	नक्षत्र	फलानि
शीर्षे	३	कार्यसिद्धिः
मुखे	३	सुमंत्रसिद्धिः
कंठे	३	मृत्युदायकः
हस्ते	४	शत्रुभीतिः
हृदि	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	धनहानिः
कटिषु	३	आयतार्थः
चरणे	४	साधनाशिनः

मंत्र-दीक्षा मुहूर्त—अधिकमास रहित वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. इन मासों में, शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियों में तथा कृष्णपक्ष की २।३।५ तिथियों में, शुभवार में वृष मि. सिंह. क. तु. ध. मी. लग्न हो, लग्न से १।५।७।१० में शुभग्रह हों, ३।६।११ में पापग्रह हो तब मंत्रदीक्षा लेना उत्तम है। विशेष—सतीर्थ पर सूर्यचन्द्रग्रहण के समय तथा श्रावणीपर्व में मंत्रदीक्षा लेते समय मास तथा पञ्चांगशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिए।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त—वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. मासों की २।३।५।७।१०।१२।१३।१५ तिथियों में अथवा यां तिथि-र्यस्य देवस्य तस्या वा) रो. मृ. पुन. पु. उ. ३, ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे. (स्वस्त्रारिश नक्षत्रे वा) चन्द्रतारा अनुकूल होने पर गुरु शुक्र के उदय में शुभ लग्न में १२वां स्थान शुद्ध होने पर (विष्णुमन्त्र स्थिरे, शिवस्य चरे, दुर्गायाः द्विस्वभावे लग्ने) प्रारम्भ करना श्रेष्ठ है।

लग्न-गण्डान्त—कर्क सिंह वृश्चिक धनु मीन और मेष के अन्त एवं आदि की आधी घड़ी लग्न-गण्डान्त होता है। वह भी जन्म में भयप्रद होता है।

अथ विवाह मासः—(विवाहशुद्धौ)-मीनार्कञ्च बिना प्रोक्तमुत्तरायणमुत्तमम्। त्याज्यो उर्को धनुपश्चान्ये मध्यमाः स्युः करग्रहे ॥ वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद् वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र ॥१॥केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया ॥२॥

अथ जन्म-मासादिषु निषेधः—सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्मामास(अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन), जन्मनक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं। **अत्यावश्यके परिहारः**—जातं दिनं दूषयते वसिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च ॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो—एक घर में दो शुभ काम करना निषिद्ध है परन्तु अति आवश्यकता में ६ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग २ मण्डप बनाकर जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका है, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मंडप गाड़ कर कार्य को करे।

अथ ज्येष्ठ विचार—ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका सूर्य को छोड़कर दानादिपूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय—दो सगी बहिनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करे तो निस्सन्देह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करे और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करे अर्थात् पहले करने और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्धतिलतर्पण भी न करे और मुण्डन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करे। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभ कार्य करले। वहां छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभकार्यों में मरणाशौच—साहेचिट्ठी (कुंकुमपत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से १ साल, स्त्री के मरण से ३ मास, भाई व पुत्र के मरण से १॥ मास कुलवालों के मरण से २२॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करे। अति संकट में ३० दिन के बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करे।

विवाह के शुद्ध मुहूर्त पंचांग के अन्त में दिये गये हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर **और उसी दिन वर की राशि में सूर्य चन्द्र देखिए और कन्या राशि से चन्द्र गुरु** देखिए, बस इसी को त्रिबलशुद्धि कहते हैं। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह दिन उत्तम है। यदि रवि—गुरु पूज्य हो तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा, ऐसा कहना। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु. सू. चं.) शुद्धि प्रथम देखें। "झष-चाप-कुलीरस्थो जीवोऽप्यशुभगोचरः। अतिशोभनता दद्याद्विहोपनयनादिषु ॥ बृहस्पतिः ॥ अत्यावश्यकता में "द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽप्यष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्चे उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिला भादिगोऽपि चेत् ॥ (रणवीर ज्यो. नि.)

तुलाराशौ अपूज्यः रविः—धर्म-धी-धन-गतो दिवाकरस्तौलिराशि-जनितस्य शोभनः। **आवश्यके पूज्यरवि-परिहारः**—गार्ग्याङ्गिरोवत्स-वशिष्ठ गौतम-पराशराद्या मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः। (मु०प्र०मा०)।

विवाहादौ त्रिबल-शोधनम्

पूज्यगुरुः—१०।६।३।१
श्रेष्ठगुरुः—६।५।११।२।७
नेष्टगुरुः—४।८।१२
श्रेष्ठरविः—३।६।१०।११
पूज्यरविः—२।५।६
विशेष पूज्य रविः—१।७
नेष्टरविः—४।८।१२
नेष्टचन्द्रः—४।८
श्रेष्ठचन्द्रः—१।२।३।५।६।७।६।१०।११।१२

ध. मी. कर्क राशि में हो तो नेष्ट गुरु भी श्रेष्ठ है।

कन्या-वरयोः तैलादि-लापन (बन्न) दिन संख्या

राशि→	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल सं.→	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि वार नक्षत्राणि

रो. मृ. उत्तरा ३, भ. ह. स्वा. अनु. मू, रे. एतद्वेध-रहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षय-रहित-तिथिषु कात्यायन-मते अश्वि. चि. श्र. धनिष्ठास्वपि शुभम् ॥

सभी कार्यों में लग्नशुद्धि—जन्म राशि से आठवीं, बारहवीं राशि न हो तथा लग्न से आठवें बारहवें कोई ग्रह न हो तो लग्न शुद्धि समझें।

अथ विवाहाङ्गकृत्यारम्भ मुहूर्त—वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाह दिन से पहिले ३।६।९ इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पसीना, कूटना, मगल कलशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगन सफाई, भूषण घड़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना चन्दोवा बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध मंगल स्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुद्ध होता है।

विवाह-मुहूर्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि—इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सब का विचार करके इसवर्ष के विवाह मुहूर्त लग्न दिये हुये हैं। इन दसों दोषों में जो जिस मुहूर्त में है वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

(१) लत्तादोष-ज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहा
१२ दक्षिण धननाशः	२२ वाम भयम्	३ दक्षिण मृत्युः	७ वाम भयम्	६ दक्षिण बन्धुनाशः	५ वाम कार्यहानिः	८ दक्षिण कुलक्षयः	९ वाम मरणं	लग्ननक्षत्र दिशा फलम्

यथा—सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ. फा. १२वां हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

(२) पातदोष-ज्ञानार्थं चक्र

रा.	मृ.	मघा	उफा	ह.	स्वा.	अनु	मू.	उषा	उभा.	रे	चि.	नक्षत्र
आर्द्रा पुन. श्रव. पूफा चि. मू.	मृ. आ ज्ये ध. म. ह.	अ. मृ. ज्ये पुष्य ह. रे.	कृ आ वि पूफा उभा पूभा	भ मृ श पूभा स्वा. म	कृ श्र ध पुष्य ह रे	अ आ. उषा पूभा पूषा पूफा	रो ज्ये ध श्ले मू उभा.	भ पुन श वि अनु उषा	भ श वि उषा. पूफा. मृ.	अ ज्ये ध म पूफा स्वा.		सूर्याधिष्ठित नक्षत्र

हर्षण वैधृति साध्य व्यतिपात गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

(३) **युति**—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता किन्तु श्रेष्ठ है। सू. मं. बु. श. रा. के. की युति दारिद्र्य मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेधदोष चक्रम्

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेधदोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिए।

(५) [illegible] दोष चक्रम्

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उ. षा.	उ. भा. रे	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

विवाह लग्न से सामने ग्रह होने पर [illegible] दोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र है और नीचे ग्रह नक्षत्र है, [illegible] नक्षत्र में [illegible] का [illegible] दोष वर्जनीय है।

(७) एकार्गल-दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कुम्भ शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हो और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रह

सूर्य के नक्षत्र से ५वें ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २१वें, २२वें, २३वें, २४वें और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल-क्रांतिसाम्य-दोष चक्रम्

मे०	वृ०	मि०	क०	क०	तुला
सिंह०	म०	ध०	वृश्चि०	मी०	कु०

नीचे और ऊपर की राशि पर सूर्य और चन्द्रमा हों तो स्थूल रूप से क्रांतिसाम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य, सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य, मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रांतिसाम्य भी सर्वत्र वर्जित है, जिसका निर्णय महापात गणित से करना चाहिए।

(६) बाणदोष ज्ञानार्थं चक्रम्

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	बाणः वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्ध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्नि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृपसेवायां	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चोर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	११०।१९।२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोः वर्ज्यम्

(१०) दग्धातिथि बोध:

९	२	४	६	५	१०	सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशयः
२	४	६		८	१०	तिथय

इन संक्रांतियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतः ये मध्य प्रदेश में ही वर्ज्य है।
—कश्यप

भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीनं विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्॥

लत्तादि-दोषाणां परिहार वाक्यानि—लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्त) दशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र, बांगर) जांगले (फिरोजपुर; भटिण्डा प्रान्त)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्।॥ उपग्रहक्षं कुरु वाह्लीकेषु (आगरा प्रान्त) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्। सौराष्ट्र (काठियावाड) शाल्वे (उज्जैन प्रान्ते) च लत्तितं भं त्याज्यन्तुविद्धं किल सर्वदेशे॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाले) यामित्रस्य च यामने (मथुरादि प्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिता:॥

विशेष-परिहार—चित्रा गते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धा।
पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातं सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः॥

युति-परिहार—स्वक्षेत्रग: स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दाम्पत्योः श्रेयसे तदा॥ अत्यावश्यके **वेधपरिहार**:—पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभैनैव कृत्स्नतः (नारदः)॥ ग्रह प्रथम चरण में हो तो दूसरे नक्षत्र के चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरणमात्र का त्याग किया जाता है। भुक्त भोग्य तथाक्रान्त विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु भुक्त्वा वर्जनीयं प्रयत्नतः॥ अत्यापवादः—एतानि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते।—एकार्गलोपग्रहपात-लत्ता-यामित्रकर्तयुं दयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क-बलोपपन्ना लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥ मु. चि.।

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थ: सितो वाऽपि पन्नगान् गरुडो यथा॥

विवाहे लग्न-शुद्धि चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
चं पाप	०	गु	रा.	०	चं. शु. लग्नेशः	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेशः	०	मं.	०	श.	त्याज्याः
चं. नं.	कुलिक क्रांतिसाम्यञ्च				चं.	म.	चं. मं.	विद्धभञ्च				गोधूली त्याज्याः

लग्न-भंग योगा—व्यये शनि मेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ता: । लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तेऽब्जगुरूसमौ) ॥ वर्गोत्तमं बिनान्त्यांशो विवाहो न शुभप्रद: । वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांश: पुत्रपौत्रादि वृद्धिद: ॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च । यदि लग्नगत: सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रद: ॥ पग्वन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्याग:, बादरायण:—मासशून्याह्वयास्तारा राशयो बधिरादय: । गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिता: ।

कर्तरी दोष:—लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वो: सा कर्तरी स्यादृजु-वक्रगयो: । तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्ति: ॥ इयं कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहार:—पापौ कर्तरीकारकौ रिपुगृहनीचास्तगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न । भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीच नवांशके शशिनि रि:फाष्टारिदोषोऽपि न ॥

दोषापवादा: ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहव: सन्ति गुणा: स्वल्पा: कलौ युगे । तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगणै: सह ॥ अपवादान्तरम्—उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरु: । केन्द्रसंस्थ: सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा ॥ मुहूर्तलग्न-षड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवा: । ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशग: शशी ॥ अब्दायनर्तु भा-सोत्था पक्षतिथ्यर्क्ष सम्भवा: । ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे ॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रेलग्नादेकादशालये । सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत ॥ बलवान् केन्द्रग: सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम् । द्यूनं विहाय दैत्येज्य: सहस्रं लक्षमंगिरा ॥ स्मरण रहे, कि—पूर्वोक्त अपवाद-वाक्यों में सप्तम रहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना ।

तारा शुद्धि—अपने जन्मनक्षत्र से अभीप्सित दिन के नक्षत्र तक की संख्या गिन कर ९ से भाग दें । यदि २, ४, ६, ८ या ९ शेष बचे तो तारा शुद्धि समझें ।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद स्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	केतु	ग्रहा	मुहूर्त गणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३	३	स्थानानि	लग्नं शुभं विवाहे स्याद्दश विंशोपकाधिकम् ।
६	३	६	२	२	२	६	६	६		
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	६॥		विंशोपका बलम्

अथ गोधूलि लग्न विचार—यत्र चैकादशश्चन्द्रो द्वितीयो वा तृतीयक: । गोधूलिक: स: विज्ञेय: शेषा: धूलिमुखा: स्मृता: ॥ लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी । । तदा वै सर्व वर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम ॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति । लग्नं विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते ॥ मार्ग . माघ, फाल्गुन में संध्या समय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होनें पर, चै. वै. में गौओं की धूलि से आकाश आच्छादित होने पर ज्येष्ठ आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रा. मा. अश्वि. का. मे सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है ।

गोधूलिके त्याज्य दोष:—कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी । तथा गोधूलिके त्याज्य: पञ्चदोषैस्तु दूषित: । "अस्त याते गुरुदिवस सौरे सार्के" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्य अस्त में पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना ।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त:—कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र, आयु, प्रीति लाभ देता है । ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं ।

पुनर्विवाहे (रोत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम् ।

३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	मृत्यु	दुर्भग	श्री	उन्नति	फल

अन्यच्च—सूर्यभात् ४।११।१८।२५ संख्यक साभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्यु: । अत्र तिथि-मासवेध भृगु-गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीय: ।

वधु प्रवेश का मुहूर्त—जब वधु विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधुप्रवेश कहा जाता है । विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन, इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वे वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधूप्रवेश शुभ है । ५ वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता । १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना । व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा । अमासंक्राति-तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत् ॥ रे. अश्वि रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३, पुष्य, अनु. इन नक्षत्रों में और चं. बु. बृ. शु. श. इन वारों में १। २। ३। ५। ६। ७। ८। १०। ११। १२। १३। १५ तिथियों में ५। ८। ११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधुप्रवेश शुभ है ।

वधु-प्रवेश-समय :—वधुप्रवेशो न दिवा प्रशस्त: राजप्रवेशो न निशि प्रशस्त: ।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेश: सत्कीर्तिद: स्यात्त्रिविध: प्रवेश: ।

विवाहत: प्रथमे वर्षे वधु-निवास फलम्—विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षयमास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है । विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर है तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव, में उसमास का कोई दोष नहीं ।

द्विरागमन का मुहूर्त—प्योके (पितृगृह) से दूसरी वार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते है । विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक, कुम्भ, मेष के १४ में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम. बुध. गुरु. शुक्रवार को, २. ३. ६. ७ या १२ वीं राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्. तीनों उत्तरा. रा. स्वा. पुन. श्र. ध. श. म. मृ. रे. चि. अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है । शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है ।

विशेष:—द्विरागम: षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु ।
न चात्र ऋक्षं न तिथिनियोगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम् ।

मतान्तरेण शुक्रस्य सम्मुखे दक्षिणे निषेध :—जिस दिशा में शुक्र उदय हो, वह दिशा 'सम्मुख' होती है । अथवा मेष, सिंह, धनु में शुक्र हो तो पूर्व में; वृष, कन्या, मकर में हो तो दक्षिण में; मिथुन, तुला, कुम्भ में हो तो पश्चिम में; कर्क, वृश्चिक, मीन में हो तो उत्तर में शुक्र का वास माना जाता है । ऐसे सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि युवति वधु जावे तो बन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे । यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीडन आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवं विवाहसम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता । यदि रेवती से मृग-शिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है ।

नोट—यात्रा के समय शुक्र की पूर्व-पश्चिम कपाल में स्थिति के अनुसार ही पूर्व पश्चिम समझें ।

विशेष:—निहस्थे वा गते शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा । शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेश: पतिमन्दिरे ॥ अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः—राजते वाऽथ सौवर्णे वा [illegible] पुनः । मुक्तपुष्पाम्बरयुते श्वेततण्डुलपूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं प्रतिमु-क्तापलान्वितम् । महाश्वेतगया युक्तं सम्भाव्य निवेदयेत् ।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्त—रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्रि के बाद सम-रात्रि में, (पञ्चदशादर्वाक् रजोदर्शनाभावेऽपि) रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध. उत्तरा ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि में प्रथम पहर को छोड़कर शुभ समय में स्त्रीसंगम करे । मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्तव्य—स्त्री को प्रसन्न कर प्रथम दिन स्त्रीसंगम करे । विशेष गुप्त बात न कहे । और अपमान या तिरस्कार न करे, आदर-सत्कार करे । [illegible] नहीं आ सकती । [illegible] न दे, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती । [illegible] प्रबल शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना [illegible] सकती है । [illegible] प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है । पशु-[illegible] बन्दर आदि अपनी स्त्री पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं ।

[illegible] मुहूर्त—द्विरागमनोत्तर म. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. ध.श्र.श. [illegible] रिक्तावारहितातिथौ, २।३।६।८।११ [illegible] शुभम् ।

[illegible] मुहूर्त:—हु. चि. स्वा. अनु. धनि. रे. [illegible] रहित तिथिषु, [illegible]

[illegible]

[illegible] सर्वविचार्य ।

[illegible]

दुकान खोलने का मुहूर्त:—ह. चि. रो. रे. उत्तरा ३, पुष्य. अश्वि. धनि. [illegible] नक्षत्रों में ४।६।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३।६ में पापग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पाप रहित हो, अपनी शुभदशा भी चलती हो तो दुकान खोलना शुभ है । चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है ।

भर्तृगृहात्पितृगृहागमन मुहूर्त:—पूर्वा ३ भ., मू., म., ज्ये., आ., आश्ले. एतद्भिन्नेषु, चं. बु. गु. शु. वारेषु सतिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्त: ॥

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त:—भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पू. ३ ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़ कर शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है ।

हट्टचक्र—सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन तक नक्षत्र अभिजित सहित गिनकर चक्र से शुभाशुभ फल जाने ।

गुरुपुष्य एवं रविपुष्य में व्यापार प्रारम्भ करना शुभ है । साझे व्यापार में गुण दोष एवं अशुभ षडष्टक न हो, देव-राक्षस में वैर, अपने गण में परम प्रीति जाने ।

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	भासन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोर भय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाक्रम (नौकरी)—मुहूर्त:—अ.मृ.चि.ह. पुष्य.अनु. रे. एषु भेषु रिक्तामा रहित-तिथौ.र.बु.बृ.शु. वारेषु शुभ: । लग्नस्थे, १०।११ सूर्ये भौमे वा स्वामिसेवकयो: राशीश-योनि-मैत्र्यां सत्यां शुभ: ।

व्यवहार (बही)—पत्रारम्भ मुहूर्त—अश्वि.रो.मृ. पुन. पू. उत्तरा ३ ., चि. अनु. श्र.रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू.चं.बु.बृ.श. वारेषु शुभयुते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्टरहिते पापै: केन्द्र कोणग: शुभ: स्यात् ।

द्रव्यप्रयोग मुहूर्त:—पुन. स्वा. मृग. रे. चि. अनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु ६।५।८ शुद्धरहिते द्रव्यप्रयोग: शुभ: । अत्रावसरे ३।८ शुभ:, ग्रहाणां तु न कोऽपि दोष: ।

ऋण लेने के लिए वर्जित काल—मंगलवार संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो । मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है । बुध वार को धन नहीं देना चाहिए । कृ. रो. आर्द्रा श्ले. उ. ३, वि. ज्ये. मू. नक्षत्रों में भद्रा व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं, या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है ।

ईंट के भट्टा में आग देने का मुहूर्त—शाम का समय शुभ चौघड़िया तथा मंगल रवि और शनैश्चर वार शुभ माने जाते हैं । बुधवार नई ईंट बनाने में विशेष शुभ है ।

श्रीकाशीनाथ-मते क्रयविक्रय मुहूर्त:—पुष्य., पू.भा., अनु. श्र.ह.म. स्वा. उत्तरा ३, आश्ले.रे. एषु भेषु, सतिथौ शुभदिने उत्तमशकुन विचार्य क्रयविक्रयण कार्यम् ।

वस्तु खरीदने का नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि. वारों में बुध और रवि श्रेष्ठ माने गए हैं ।

वस्तु बेचने का नक्षत्र—पू. फा. पू. भा., पू. षा., वि., कृ., श्ले., म. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, शुक्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं ।

नोट—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ६५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं । सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी

अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सच हैं।

नालिश (अर्जी) का मुहूर्त—४।१।१४ तिथि हो, मं. श. वार हो, कृ. आर्द्रा. भ. अ. श्ले. म. ज्ये. मू. वि. पूर्वा ३ नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आयविचार

ग्रामभात् वासकर्तुर्नक्षत्रं यावद् गणना कार्या स्थान नक्षत्र फलम्		
मस्तक	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानि:नै:स्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवे, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वजा, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ स्वान, ५ वृषभ, ६ गदर्भ., ७ हस्ती, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि समसंख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है, और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ हैं।

घर का नक्षत्र और व्ययज्ञान

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणा कर २७ का भाग दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवे। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजनपूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा, एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें। यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है!

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परोक्षा

सूर्य राशि के अनुसार खात दिशा देख मकान की नींव को इतना गहरा खोदे कि दूसरी मिट्टी निकल आवे। अथवा साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे। खोदते समय जो जमीन में पत्थर या काली ईंट निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़ राख कोला बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भ मुहूर्त—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम है। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं. बु, गु. शु. श. वारों में, रो. म. चित्रा ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे वेधरहित नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में, पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व वासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाह
अ. पादे	४	शून्यमसत्
प. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्ति।
द कुक्षौ	४	लाभः शुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेष—पुष्य. उ. ३ रो. म. आश्ले. पू. पा. इनमें से जिस पर वृहस्पति हो उस नक्षत्र में और वृहस्पति वार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो. ह. अ. उफा. चि इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुध-वार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि. बु. चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

प्रसुप्त-भूमि-ज्ञानम्—'संक्रांति मिति दिन पांचवें सप्तम् नवम जोय। दस इक्कीस २४ में षट् दिन पृथवी साव। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१०एताः घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। अन्यच्च—सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी-शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूप-विचारः

मध्ये	ई.	पू.	आ.	द.	नै	प.	उ.	वा.
अर्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्तिः	पुत्रनाशः	स्त्रीनाशः	गृहेशनाशः	संपत्	सुखम्	शत्रुभयम्

नक्षत्रवारो तिथिसंप्रयुक्तो वेदाहृतं तद्गणकेन कार्यम्। एकावशिष्टे च जलं हि नागे द्वाभ्यां च शेष सलिलं च स्वर्गे। त्रिशून्यशेषभुवि संस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञाः॥

अथ चुल्लिचक्र विचारः

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चूल्हा तंदूर, स्टोव, गैस, चूल्हा बनावे तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतन-गृहप्रवेश मुहूर्त

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठमासेषु शोभनः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग) कार्तिकमासयोः॥ (यहां चान्द्रमास लेना)। उत्तरा ३., अनु., रो., मृ., चि., रे इन नक्षत्रों में रिक्तामा रहित तिथियों में चं.वृ. श. इन वारों में २।५।८।११ लग्नों में, अत्यावश्यकता में ३।६।९।१२ लग्न में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर हों, १।६।८।१२ में चन्द्रमा न हो, चौथा ८वां स्थान शुद्ध हो, जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण-पुष्पमालायुक्त-कलश शंखध्वनि मंगलगान के साथ दम्पति को गृहप्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण या तृण कुटीर अथवा अग्नि वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै. श्रा. का. मार्ग. फा. मास में शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशि-वश-खात-ज्ञान

देवालय की नींव खोदनी हो तो सौर चैत्र. वैशा०. ज्ये० में आग्नेय, आषा., श्रा., भा. में ईशान, आश्वि. कार्ति., मार्ग. में वायव्य, पौ० माघ० फा० में नैऋत्यकोण में शुभ है।

जलाशयारम्भ समय—वैशा. ज्ये. आषा. ईशान, श्रा. भा. आश्वि. में वायव्य कार्तिक मार्ग. पौष में नैऋत्य, माघ फा. चैत्र में आग्नेय कोण में नींव खोदना।

गृहारम्भ समय—वैशाख में वायव्य, ज्येष्ठ श्रावण में नैऋत्य, भादों कार्तिक में आग्नेय, मार्ग, माघ, में ईशान, में और फाल्गुन में वायव्य कोण में नींव खोदना शुभ है।

द्वारशाखा (देहली) चक्रम् सूर्यनक्षत्रात्

स्थानं.	नः	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्ति
कोण	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिद विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम् सूर्यभात्

५	८	८	७
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु.ह. तीनों उ., रो. ध. श. म., पू. षा., रे. पुष्य, मृ. नक्षत्र हों, लग्न में बुध या गुरु हों, शुक्र १० वें स्थान में हो पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।८।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है। और जलाशयखात सूर्य राशि से देखें।

सूर्यनक्षत्रात्कूप-जल चक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ [illegible]	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ [illegible]	मध्य ३ [illegible] शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैऋत्य ३ अमृत जल

सूर्यभात्तडागचक्रम्

ई. ३ जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उ. ३ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वा. ३ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

[illegible]—[illegible] आग्नेय [illegible] [illegible] [illegible] की 'मुहूर्त कूप विचार' से भूमि पर विचारें।

[illegible] 'वाटिकाद्' [illegible] [illegible] वाटिकाद्दे [illegible] नक्षत्र—पूर्व आग्नेय द० ई० प० आ० उ० ई० [illegible] वाटिकाद्।

रोहिणीभात् वापी चक्रम्

ईशान अ. भ. कृ. मध्यजल	पूर्व पुन.पु.श्ले. जलाभाव	आग्नेय म.पूफा.उफा. मध्य जलम्
उत्तर पूभा.उभा.रे. मिष्ठ जलम्	मध्य रो.मृ.आर्द्रा शीघ्र जलम्	दक्षिण ह.चि.स्वा जलाभाव
वायव्य श्र.ध.श. क्षार जलम्	पश्चिम मू.पू.षा.उषा. अमृत जलम्	नैऋत्य वि.अनु.ज्ये बहुजलम्

जलाशयाराम देव-प्रतिष्ठा मुहूर्त

देवतारामवाप्यादि प्रतिष्ठामुत्तरायणे।
माघादि-पञ्च मासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने ॥
मातृभैरव वाराहनारसिंह त्रिविक्रमाः।
महिषासुर हन्त्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने ॥

गुरु-शुक्र के अस्तादि रहित शुद्ध समय में शुक्लपक्ष उत्तरायण में रिक्ता-अमा. शनि-मंगल तिथि वार छोड़ कर शुभ तिथि वारों में, अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा एवं रेवती नक्षत्र में, स्थिर लग्न में केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हो तथा ३।६।११ में पापग्रह हो, कृष्णपक्ष में पंचमी तक देव-प्रतिष्ठा तथा जलाशय बाग आदि की प्रतिष्ठा भी शुभ है।

अपने अपने मास तिथि नक्षत्र में दक्षिणायन में भी प्रतिष्ठा के लिए शास्त्राज्ञा है। जैसे चतुर्दशी में शङ्कर की, चतुर्थी में गणेश की, भाद्रपद में कृष्ण की, आश्विन में देवी प्रतिष्ठा प्रशस्त है।

॥ श्री रामायणादि कथा प्रारम्भ का मुहूर्त ॥

गुरु के नक्षत्र में दिन नक्षत्र १६ तक अर्थलाभ सिद्धि, २४ तक मृत्यु, राजभय २७ तक मोक्षप्रद होता है। शुभवार तिथ्यादि विचारपूर्वक देवप्रीत्यर्थं शुक्ल पक्ष में और पितृ व प्रेतशान्त्यर्थं कृष्णपक्ष में करे।

वास्तुशान्ति मुहूर्त—श्र० ध० मृ० अनु० रे० ह० चि० स्वा० उत्तरा ३, पुन. पु. रो० अश्वि० एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदान पुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है—जिसदिन हवन करना हो उसदिन तिथि और वार की संख्या जोड़ कर एक और जोड़ना। पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाए (० शेष रहे) अथवा ३ शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुख कारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुति-चक्र जरूर देखिए।

ग्रहमुखे होमाहुति ज्ञानाय चक्रम् (सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू.	बु०	शु०	श०	च०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेष—यात्रा-विवाह-व्रत-गोचरेषु चौलोपनीतादिखिल व्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुत-प्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्। महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कस्यराहुणा। नित्य-नैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ त्रिस्वाहेष्वथवा घोरे ग्रहार्त्ते भूमिकम्पने। केतुना-मुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत् ॥ लक्षकोटिहवने क्वचिदपि चातिरुद्रकरणे महाविधौ। [illegible] सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः ॥ दुर्गमम गृहे वाऽपि विवादे धर्मविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत् ॥

(१५६)

हवन में शाकल्य-विचार—तिल का आधा चावल, चावल का आधा यव, यव का आधा शक्कर और सब का आधा घृत, असमर्थता में यथाशक्ति घृत लेना चाहिये।

पापग्रहमुखे हवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शांति विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसी प्रतिमा कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम् ॥ गोमूत्र-मधुगन्धाद्यैरचितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय संपूज्य तत्र होमो विधीयते ॥

अथ ऋणी-धनी विचारः—स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ॥

यथा—अपने नाम के 'अ' वर्गादिवर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना, फिर ८ से भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना; जिसका भाग शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना। ऋणी नौकर रखना हितकर होता है। राशि के अनुसार आने से उच्च वर्ण की राशि का नौकर रखना निषिद्ध है, समान वर्ण प्रीतिकारक है।

भूमि का लेन-देन—गुरु, शुक्रवार १,५,६,११,१५, तिथि, मृग. पुन. श्ले. म., पू. फा., वि., अनु., मूल, पू. षा., उ. भा. नक्षत्र में-घर जमीन का सौदा करना शुभ है।

हल-प्रवहण मुहूर्तः—मृ.रे.चि. अनु.रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य. अभि.स्वा. पु.श्र. ध.श.म.मू.वि.एषु भेषु रिक्तामावष्ठ्यष्टमीरहित सतिथौ शुभग्रहस्य वासरे.१।५।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयन-भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम् सूर्य-भुक्त नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने				
३	८	६	८	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्

बीजवपने राहुचक्रम् राहु नक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीज वपने मुहूर्तः—ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा ३. चि. अनु. मृ. रे. स्वा. ध. एषु भेषु सतिथौ भौमातिरिक्त-वारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः-रवौ रौद्रा (आर्द्रा) चपादस्थे भूमौ संजायतेरजः। तस्माद्दिनत्रयं तत्र बीजवापे परित्यजेत्

नवान्न भक्षण मुहूर्त:—मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है; नन्दा रिक्ता तिथियों और पौष चैत्र को छोड़कर सू. बु. च. गु. शुक्रवार शुभ है।

गाय बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त

उ. फा. नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक गणना करे। यदि वर्तमान नक्षत्र, उ. फा. नक्षत्र से चतुर्थ पंचम छब्बीसवां या सत्ताईसवां हो, तो गाय लेना अशुभ है। उ.फा. नक्षत्र से गणना करने पर उल्लिखित (४,५,२६,२७ वें) नक्षत्रों को छोड़कर शेष सभी नक्षत्रों में गाय लेना शुभ है। भैंस लेने के लिए भी यही क्रम है, परन्तु वहां उ.फा. से न गिनकर सूर्य नक्षत्र से गणना करे, नक्षत्रों की शुभाशुभ व्यवस्था पूर्ववत् ही है। बैल खरीदना हो तो भी उ. फा. से वर्तमान नक्षत्र तक गणना करे, परन्तु यहां उ.फा. से तीसरे चौथे २६वें एवं २७वें नक्षत्र में बैल लेना अशुभ है, शेष नक्षत्रों में बैल लेना लाभदायक समझें।

"नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हानि करे घर आया ॥"

सूर्यनक्षत्रात्मकाष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापन चक्रम्							
६ उत्तमपाक शुभ	३ शवदहन नेष्ट	४ सर्पभय नेष्ट	४ मित्रलाभ शुभ	४ रोगभय नेष्ट	४ बन्धकर्म नेष्ट	४ सुख शुभ	नक्षत्र संख्या फलम्

लता-वृक्षाद्यारोपण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अन. उत्तरा ३, रो ह- पुष्य, अश्वि. श. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तामा रहित शुभ तिथियों में और चं. बु. बृ. शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१०।११।१२ लग्न में शुभ है तृणकाष्ठादिसंग्रहनिषेधः—तृणकाष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि काम कुम्भ मीन के चन्द्रमा में नहीं करने चाहिए।

सिंगी (फस्त) लगाने का मुहूर्त—कृष्णपक्ष में रिक्ता तिथि एवं क्रूरवार को सिंगी (फस्त) और जोंक लगवाना रोगी के लिए आरोग्यप्रद होता है।

कुलदेवता-स्थापन मुहूर्त—शुभ वार, तिथि, अश्वि. रो. मृ. पुष्य, उफा. ह. चि. स्वा ऽनु. उषा. उभा. रे. नक्षत्र स्थिर लग्न भद्रादिदोष-रहित समय में शुभ है।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त—धनि., अश्वि., हस्त., चित्रा., अनु., पुष्य., ज्ये., पुन., एवं रेवती नक्षत्र में शनि की होरा में तथा मशीनरी चालू करने के लग्न में श. म. शु.च. शुभ स्थान में हों तब चालू करनी चाहिए, इसके लिए वारों में बुधवार उत्तम है।

औषध सेवन का मुहूर्त—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे, चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल और जन्म नक्षत्र को छोड़कर इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़ कर शुभ तिथियों में, भौम, शनि को छोड़कर अन्य वारों में शुभ है।

अथ यात्रा मुहूर्तः—

ह. मृ. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रो, उत्तरा ३, पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या, भ. कृ. आर्द्रा, आश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एषु भेषु निन्द्या। तत्रात्यावश्यकत्वेऽपि यात्रायां भरण्या-

दिग्द्वारलग्नानि				
१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	शुभम्
२।२।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्यम
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	भयम्
३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१	म०म०

दिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका गमन-कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु दिग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।१०।११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा १० वें शनि, ६ वें शुक्र, १२।६।८ वें लग्नेश हो। अन्यच्च, यात्रायामष्टम शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने ॥

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों या मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा या देव-दर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित हैं।

दिक्शूल-ज्ञानाय चक्रम्						
पूर्व. आ.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय	उत्तर.	ईशा.
चं.श. च.श.	गुरु	सू.शु.	सू. शु.	भौम	मं.बु.	बु.श.

नक्षत्र-शूल चक्रम्			
दिशा पू०	द.	प.	उ.
नक्ष. ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ. फा.

दिक्शूल-परिहारः—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्य दैत्येज्य-दिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ॥१॥

आवश्यकता में दिक्शूल शान्त्यर्थ-रविवार को घृत, सोमवार को दूध, मंगल को गुड़, बुध को तिल, गुरु को दधि शुक्र को यवान्न, शनि को उड़द तैलकी वस्तु खाकर जाए तो शुभ है।

सं. २०४० में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल शुद्धि

अर्थात् किसराशि वाले वर और कन्या के लिए सं २०४० में कुल कितने विवाह मुहूर्त किन-किन तारीखों को बनते हैं ?

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह मुहूर्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाह मुहूर्तों में त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है इस झंझट से ज्योतिषी लोगों को छुटकारा देने के लिए यहां नीचे "त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक" दे रहे हैं। सं. २०४० के शुद्ध विवाह मुहूर्त इस पंचांग में पृ. १५१ पर दिए गए हैं। किस-किस महीने की किस-किस तारीख वाले विवाह मुहूर्त में किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह त्रिबल-शुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए "त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक में लिख दिया गया है। अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इसवर्ष कुल कितने विवाहमुहूर्त किन-किन तारीखों को बनते हैं—यह कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है कि अमुक राशि वाले लड़कों का विवाह इसवर्ष किन-किन तारीखों को हो सकता है। लड़का-लड़की की राशियों वाले कालमों में जो-जो तारीखें समान रूप से मिलती हों उन तारीखों में लड़के और लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे—मकर राशि वाले लड़के और धनु राशि वाली लड़की का विवाह सं. २०४० में अगस्त के महीने में किन-किन तारीखों को हो सकता है—यह मालूम करना है। नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' देखें। लड़के वाले कालम में मकर के आगे अगस्त की केवल ३, ४, ५ तारीखें हैं। जबकि लड़की वाले कालम में धनु के आगे अगस्त की १, ३, ४, ५ तारीखें हैं। इस लिए यह समझना चाहिए कि अगस्त में इन दोनों का विवाह ३, ४, ५ तारीखों को ही हो सकता है, क्योंकि अगस्त की केवल यही तारीखें दोनों में एक सी मिलती हैं। उपरोक्त प्रकार से विवाह की तारीखों का निश्चय करके पृ. १५२ पर दिए गए शुद्ध विवाह मुहूर्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए। क्योंकि आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ-अष्टम द्वादशस्थ गुरु को नेष्ट न मानकर पूज्य मानना चाहिए। यहां दी गई अंग्रेजी तारीखें सूर्योदय से आरम्भ होकर सूर्योदय पर समाप्त होने वाली हैं।)

त्रिबलशुद्धि कोष्ठक (सं. २०४० वि.) (१४ अप्रै. १९८३ ई. से १ अप्रै. १९८४ ई. तक के लिए)

	लड़का	लड़की
मेष	अप्रै. १६, १७, १८, २२, २४, २५, २६, मई ४, ५, ६, ९, १९, २०, २१, २२, २४, जून १, २, ५, ६, ७, १६, १८, १९, २०, २१, २८, २९, जुला. २, ३, ४, ५, ७, सितं. ८, ९, १०, १९, अक्तू. ११, १२, १५, २०, २१, २४, २५, २६, ३०, नवं. ८, ११, १२, १३, जन. १५, २०, २२, २३, फर. ६, ७, ८, १६, १८, २०, २५, २७, मार्च ४, ५, ६, ९, १०	अप्रै. १६, १७, १८, २२, २४, २५, २६, मई ४, ५, ६, ९, १९, २०, २१, २२, २४, जून १, २, ५, ६, ७, १६, १८, १९, २०, २१, २८, २९, जुला. २, ३, ४, ५, ७, २५, २६, २७, ३०, ३१, अग. १, ३, ४, ५, सितं. ८, ९, १०, १९, अक्तू. ११, १२, १५, २०, २१, २४, २५, २६, ३०, नवं ८, ११, १२, १३, २२, २८, २९, जन. १५, २०, २२, २३, फर. ६, ७, ८, १६, १८, २०, २५, २७, मार्च ४, ५, ६, ९, २०
वृष	मई २१(१५।३५ उ.), २२, २६, २७, जून १, २, ५, ६, ७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २८, २९, जुला. २, ३, ४, ५, ७, १९, २०, २५, २६, २७, ३०, ३१, अग. १, ३, ४, ५, सितं. १९, अक्तू. १०, १५, १९, २०, २१, २४, २५, २६, नवं. ६, ११, १२, १३, २२, २९, जन. १५, २२(१३।१२ उ.), २३, २६, २७, फर. ६, ७, ८, १८, (२३।६ उ.), २०, २७, मार्च ४, ५, ६, ९, १०	अप्रै. १६, १७, १८, २४, २५, २६, मई ४, ५, ६, ९, २१ (१५।३५ उ.), २२, २६, २७, जून १, २, ५, ६, ७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २८, २९, जुला. २, ३, ४, ५, ७, १९, २०, २५, २६, २७, ३०, ३१, अग. १, ३, ४, ५, सितं. ८, ९, १०, १२, १३, १९, अक्तू. १०, १५, १९, २०, २१, २४, २५, २६, नवं. ६, ११, १२, १३, २२, २९, जन. १५, २२, (१३।१२ उ.), २३, २६, २७, फर. ६, ७, ८, १८ (२३।६ उ.) २०, २७, मार्च ४, ५, ६, ९, १०
मिथुन	अप्रै. १६, १७, १८, २२, मई ६, ९, जून १६, २०, २१, २२, २३, २९, जुला. २, ३, ४, ५, ७, १९, २०, २७, ३०, ३१, अग. १, ३, ४, ५, सितं. १०, १२, १३। १४, अक्तू. १९, २०, २१, २४, २५, २६, ३०, नवं. ६, ८, १३, २२, २८, फर. १६, १८ (२३।६ या.), २०(२३।४० उ.), २५, मार्च ४, ५, ६, ९, १०	अप्रै. १६, १७, १८, २२, मई ६, ९, १९, २०, २१ (१५।३५ या.), २४, २६, २७, जून ५, ६, ७, १६, २०, २१, २२, २३, २९, जुला. २, ३, ४, ५, ७, १९, २०, २७, ३०, ३१, अग. १, ३, ४, ५, सितं. १०, १२, १३, १४, १९, अक्तू. १०, ११, १२, १९, २०, २१, २४, २५, २६, ३०, नवं. ६, ८, १३, २२, २८, जन. १५, २०, २२ (१३।१२ या.), २६, २७, फर. ६, ७, ८, १६, १८, (२३।६ या.), २०(२३।४० उ.), २५, मार्च ४, ५, ६, ९, १०
कर्क	अप्रै. १६, १७, १८, २२, २४, २५, २६, मई ४, ५, ९, १९, २०, २१, २२, २६, २७, जून १, २, ५, ६, ७, जुला. १९, २०, २५, २६, ३०, ३१, अग. १, ३, ४, ५, सितं. ८, ९, १२, १३, १४, अक्तू. १०, ११, १२, १५, नवं. २२, २८, २९, जन. १५, २०, २२, २३, २६, २७, फर. ६, ७, ८	अप्रै. १६, १७, १८, २२, २४, २५, २६, मई ४, ५, ९, १९, २०, २१, २२, २६, २७, जून १, २, ५, ६, ७, १६, १८, १९, २२, २३, २८, जुला. २, ३, ४, ५, ७, १९, २०, २५, २६, ३०, ३१, अग. १, ३, ४, ५, सितं. ८, ९, १२, १३, १४, अक्तू. १०, ११, १२, १५, १९, २०, २१, २४, २५, २६, ३०, नवं. ६, ८, ११, १२, २२, २८, २९, जन. १५, २०, २२, २३, २६, २७, फर. ६, ७, ८, १६, १८, २०(२३।४० या.), २५, २७, मार्च ४, ५, ६, ९, १०
सिंह	अप्रै. १६, १७, १८, २२, २४, २५, २६, मई ४, ५, ६, १९, २०, २१, २२, २४, जून १, २, ७, १६, १८, १९, २०, २१, २८, २९, जुला. ४(१७।४३ उ.), ५, ७, सितं. ८, ९, १०, १४, १९, अक्तू. ११, १२, १५, २४, २५, २६, ३०, नवं. ८, ११, १२, १३, जन. १५, २०, २२, २३, फर. ७,(२८।५९ उ.), ८, १६, १८, २०, २५, २७, मार्च ३, ९, १०	अप्रै. १६, १७, १८, २२, २४, २५, २६, मई ४, ५, ६, १९, २०, २१, २२, २४, जून १, २, ७, १६, १८, १९, २०, २१, २८, २९, जुला. ४ (१७।४३ उ.), ५, ७, २५, २६, २७, अग. १, ३, ४, ५, सितं. ८, ९, १०, १४, १९, अक्तू. ११, १२, १५, २४, २५, २६, ३०, नवं. ८, ११, १२, १३, २२, २८, २९, जन. १५, २०, २२, २३, फर. ७(२८।५९ उ.), ८, १६, १८, २०, २५, २७, मार्च ६, ९, १०

मुण्डनमुहूर्त (सं. २०४० वि.)

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख १९८३-८४	नक्षत्र	काल (भा.स्टै.टा.)
चैत्रशु.५ चं.	वैशा.५	अप्रै. १८	मृग.	७।२२ तक
,, ,, १३चं.	,, १२	,, २५	हस्त	१४।४६ तक
वैशा.कृ. ७बु.	,, २१	मई ४	श्रव.	११।५९ से १९।५८
वैशा.शु. ६बु.	ज्ये. ४	,, १८	पुष्य	११।१० से १२।३५
ज्ये.कृ. ५बु.	,, १८	जून १	श्रव.	८।५५ तक
,, ,, ७शु.	,, २०	,, ३	शत.	१२।४२ से १३।३८
ज्ये.शु. ३चं.	,, ३०	,, १३	पुन.	
,, ,, १०चं.	आषा.६	,, २०	चित्रा	५।५२ बाद
माघ शु. १गु.	माघ२१	फर. ३	धनि.	शत. (७।४० बाद)
फाल्गु.कृ.१३बु.	फाल्गु.१७	,, २९	श्रव.	१४।३८ से १९।१९

अक्षरारम्भ मुहूर्त (सं. २०४० वि.)

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	काल
चैत्रशु. ५चं.	वैशा.५	अप्रै. १८	आर्द्रा.	११।१२ तक
वैशा.कृ. २शु.	,, १६	,, २९	अनु.	१७।५ बाद
वैशा.शु. ४चं.	ज्ये. २	मई१६	पुन.	
ज्ये.कृ. ५बु.	,, १८	जून १	श्रव.	
ज्ये.शु. ३चं.	,, ३०	,, १३	पुन.	स्वा(५।५२ बाद)
,, ,, १०चं.	आषा. ६	,, २०	चित्रा	८।२९ तक
फाल्गु.कृ. ६बु.	फाल्गु.१०	फर.२२	स्वा.	१२।२० बाद
फाल्गु.शु. ३चं.	,, २२	मार्च ५.	रेव.	

विपणि (दुकान खोलने के) मुहूर्त (सं. २०४० वि.)

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	काल
चैत्रशु. ४र.	वैशा.४	अप्रै. १७	मृग.	१३।१३ बाद
,, ,, ८बु.	,, ७	,, २०	पुष्य	१४।२६ बाद
,, ,, १२र.	,, ११	,, २४	उ.फा.	१०।० तक
,, ,, १३चं.	,, १२	,, २५	हस्त	१४।४६ तक
वैशा.कृ. २शु.	,, १६	,, २९	अनु.	
७बु.	,, २१	मई ४	उ.षा.	६।४४ बाद
,, ,, १२चं.	,, २६	,, ९	उ.भा.	
वैशा.शु. ६बु.	ज्ये. ४	,, १८	पुष्य	

विपणि (दुकान खोलने के) मुहूर्त (सं. २०४० वि.)

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख १९८३-८४	नक्षत्र	काल (भा.स्टै.टा.)
वैशा.शु.१०श.	ज्ये. ७	मई २१	[illegible]	[illegible]
,, ,, ११र.	,, ८	,, २२	हस्त	[illegible]
,, ,, १२चं.	,, ९	,, २३	[illegible]	७।१६ तक
ज्ये.कृ.१ बु.	,, १३	,, २७	अनु.	९।१४ तक
,, ,, १२बु.	,, २४	जून ८	अभि.	७।५३ तक
ज्ये.शु. ९र.	आषा. ५	,, १९	मूल.	सिद्ध {(११।१२ से १०।३९)
ज्ये.शु. १०चं.	,, ६	,, २०	चित्रा	{५।५२ बाद
पौषशु. १२र.	माघ २	जन. १५	रोहि.	
माघकृ. १गु.	,, ६	,, १९	पुष्य	
,, ,, ५र.	,, ९	,, २२	उ.फा.	७।४३ से ११।२३
,, ,, ६चं.	,, १०	,, २३	हस्त	
माघशु. ६बु.	,, २६	फर. ८	अश्वि.	
,, ,, १३बु.	फाल्गु.२	,, १५	पुष्य	१३।३५ तक
फाल्गु.कृ.४चं.	,, ८	,, २०	चित्रा	१५।५० बाद
,, ,, ७गु.	,, ११	,, २३	अनु.	
फाल्गु.शु. २र.	,, २१	मार्च ४	उ.भा.	रेव (१२।२० बाद)
,, ,, ३चं.	,, २२	,, ५	उ.भा.	९।२ बाद
,, ,, ४बु.	,, २४	,, ७	अश्वि.	१२।१३ तक
,, ,, ७श.	,, २७	,, १०	रोहि.	११।४२ तक
,, ,, ८र.	,, २८	,, ११	मृग.	

चार स्वयंसिद्ध मुहूर्त

(१) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
(२) अक्षय तृतीया (वैशाखशुक्ल तृतीया)
(३) विजया दशमी (आश्विन शुक्ल दशमी)
(४) दीपावली (प्रदोष के समय)

ये चार स्वयं-सिद्ध मुहूर्त कहलाते हैं। ग्रामीण पंजाबी जनता इन्हें 'अणपुछ मुहूर्त' कहती है। इनमें कोई भी शुभकार्य करने के लिए नक्षत्रादि देखने की आवश्यकता नहीं होती।

भारतीय पञ्चाङ्गों मीमांसा

दृग्गणित पर किए गए आक्षेपों का प्रतिवाद [illegible] एक [illegible] और [illegible]

(लेखक — [illegible] शर्मा, [illegible] शर्मा)

[illegible] भारत के विभिन्न [illegible] पंचाङ्ग [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] फिर भी [illegible] [illegible] के विरुद्ध तर्क [illegible] में दृग्तुल्य विरोधी [illegible] सिद्धान्तों [illegible] प्रतिवाद, तथा दृग्तुल्य [illegible] शास्त्रीय प्रमाणों का प्रौढ़ [illegible] द्वारा किया गया है। [illegible] संस्कृत भाषा में [illegible] है। व्रत-पर्वों की तिथियों में [illegible] करने वाले कारणों के प्रतीकार पर भी [illegible] ६० पृष्ठ हिन्दी भाषा में लिखे गए हैं।

सभी पंचाङ्गकारों एवं भारतीय सिद्धान्तज्योतिष के क्रमिक विकास पर अनुसन्धान करने वालों के लिए अनिवार्य [illegible] योग्य है।

पुस्तक इन सात अध्यायों में विभक्त है—१. दृग्गणितैक्यापादनायैव सिद्धान्तैकाराणां प्रवृत्तिः। २. दृक्तुल्या तिथिरेव शास्त्रसम्मता। ३. बीज सोपपत्तिका: संस्काराश्च। ४. अयनांशमाने वैमत्यम्। ५. दृग्गणितं धर्मशास्त्रं च। ६. [illegible] विविधा विषयाः। ७. व्रतपर्वों में वैमत्य का प्रतीकार।

पृष्ठ संख्या २६०, पांच रंग के [illegible] आकर्षक टाइटल में बढ़िया कागज पर मुद्रित। मूल्य ५० रुपए।

प्राप्त करने का स्थान :—
श्रीमार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय
मु.पो. कुराली (रोपड़) पंजाब

सं. २०४० में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल शुद्धि

अर्थात् किसराशि वाले वर और कन्या के लिए सं २०४० में कुल कितने विवाह मुहूर्त किन-किन तारीखों को बनते हैं?

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह मुहूर्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाह मुहूर्तों में त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है इस झंझट से ज्योतिषी लोगों को छुटकारा देने के लिए यहां नीचे "त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक" दिए जा रहे हैं। सं. २०४० के शुद्ध विवाह मुहूर्त इस पचांग में पृ. १५१ पर दिए गए हैं। किस-किस महीने की किस-किस तारीख वाले विवाह मुहूर्त में किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह त्रिबल-शुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए "त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक में लिख दिया गया है। अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इसवर्ष कुल कितने विवाहमुहूर्त किन-किन तारीखों को बनते हैं—यह कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक में यह भी तुरन्त जाना जा सकता है कि अमुक राशि वाले लड़कों का विवाह इसवर्ष किन-किन तारीखों को हो सकता है। लड़का-लड़की की राशियों वाले कालमों में जो-जो तारीखें समान रूप से मिलती हों उन तारीखों में लड़के और लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे—मकर राशि वाले लड़के और धनु राशि वाली लड़की का विवाह सं. २०४० में अगस्त के महीने में किन-किन तारीखों को हो सकता है—यह मालूम करना है। नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' देखें। लड़के वाले कालम में मकर के आगे अगस्त की केवल ३, ४, ५ तारीखें हैं। जबकि लड़की वाले कालम में धनु के आगे अगस्त की १, ३, ४, ५ तारीखें हैं। इस लिए यह समझना चाहिए कि अगस्त में इन दोनों का विवाह ३, ४, ५ तारीखों को ही हो सकता है, क्योंकि अगस्त की केवल यही तारीखें दोनों में एक सी मिलती हैं। उपरोक्त प्रकार से विवाह की तारीखों का निश्चय करके पृ. १५२ पर दिए गए शुद्ध विवाह मुहूर्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए। क्योंकि आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ-अष्टम द्वादशस्थ गुरु को नेष्ट न मानकर पूज्य मानना चाहिए। यहां दी गई अंग्रेजी तारीखें सूर्योदय से आरम्भ होकर सूर्योदय पर समाप्त होने वाली हैं।)

त्रिबलशुद्धि कोष्ठक (सं. २०४० वि.) (१४ अप्रं. १९८३ ई. से १ अप्रं. १९८४ ई. तक के लिए)

राशि	लड़का	लड़की
मेष	अप्रं. १६, १७, १८, २२, २४, २५, २६, मई ४, ५, ६, ९, १९, २०, २१, २२, २४, जून १, २, ५, ६, ७, १६, १८, १९, २०, २१, २८, २९, जुला. २, ३, ४, ५, ७, सितं. ८, ९, १०, १९, अक्तू. ११, १२, १५, २०, २१, २४, २५, २६, ३०, नवं. ८, ११, १२, १३, जन. १५, २०, २२, २३, फर. ६, ७, ८, १६, १८, २०, २५, २७, मार्च ४, ५, ६, ९, १०	अप्रं. १६, १७, १८, २२, २४, २५, २६, मई ४, ५, ६, ९, १९, २०, २१, २२, २४, जून १, २, ५, ६, ७, १६, १८, १९, २०, २१, २८, २९, जुला. २, ३, ४, ५, ७, २५, २६, २७, ३०, ३१, अग. १, ३, ४, ५, सितं. ८, ९, १०, १९, अक्तू. ११, १२, १५, २०, २१, २४, २५, २६, ३०, नवं ८, ११, १२, १३, २२, २८, २९, जन. १५, २०, २२, २३, फर. ६, ७, ८, १६, १८, २०, २५, २७, मार्च ४, ५, ६, ९, २०
वृष	मई २१(१५।३५ उ.), २२, २६, २७, जून १, २, ५, ६, ७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २८, २९, जुला. २, ३, ४, ५, ७, १९, २०, २५, २६, २७, ३०, ३१, अग. १, ३, ४, ५, सितं. १९, अक्तू. १०, १५, १९, २०, २१, २४, २५, २६, नवं. ६, ११, १२, १३, २२, २९, जन. १५, २२(१३।१२ उ.), २३, २६, २७, फर. ६, ७, ८, १८, (२३।१६ उ.), २०, २७, मार्च ४, ५, ६, ९, १०	अप्रं. १६, १७, १८, २४, २५, २६, मई ४, ५, ६, ९, २१ (१५।३५ उ.), २२, २६, २७, जून १, २, ५, ६, ७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २८, २९, जुला. २, ३, ४, ५, ७, १९, २०, २५, २६, २७, ३०, ३१, अग. १, ३, ४, ५, सितं. ८, ९, १०, १२, १३, १९, अक्तू. १०, १५, १९, २०, २१, २४, २५, २६, नवं. ६, ११, १२, १३, २२, २९, जन. १५, २२, (१३।१२ उ.), २३, २६, २७, फर. ६, ७, ८, १८ (२३।१६ उ.) २०, २७, मार्च ४, ५, ६, ९, १०
मिथुन	अप्रं. १६, १७, १८, २२, मई ६, ९, जून १६, २०, २१, २२, २३, २९, जुला. २, ३, ४, ५, ७, १९, २०, २७, ३०, ३१, अग. १, ३, ४, ५, सितं. १०, १२, १३, १४, अक्तू. १९, २०, २१, २४, २५, २६, ३०, नवं. ६, ८, १३, २२, २८, फर. १६, १८ (२३।१६ या.), २०(२३।४० उ.), २५, मार्च ४, ५, ६, ९, १०	अप्रं. १६, १७, १८, २२, मई ६, ९, १९, २०, २१ (१५।३५ या.), २४, २६, २७, जून ५, ६, ७, १६, २०, २१, २२, २३, २९, जुला. २, ३, ४, ५, ७, १९, २०, २७, ३०, ३१, अग. १, ३, ४, ५, सितं. १०, १२, १३, १४, १९, अक्तू. १०, ११, १२, १९, २०, २१, २४, २५, २६, ३०, नवं. ६, ८, १३, २२, २८, जन. १५, २०, २२ (१३।१२ या.), २६, २७, फर. ६, ७, ८, १६, १८, (२३।१६ या.), २०(२३।४० उ.), २५, मार्च ४, ५, ६, ९, १०
कर्क	अप्रं. १६, १७, १८, २२, २४, २५, २६, मई ४, ५, ९, १९, २०, २१, २२, २६, २७, जून १, २, ५, ६, ७, जुला. १९, २०, २५, २६, ३०, ३१, अग. १, ३, ४, ५, सितं. ८, ९, १२, १३, १४, अक्तू. १०, ११, १२, १५, नवं. २२, २८, २९, जन. १५, २०, २२, २३, २६, २७, फर. ६, ७, ८	अप्रं. १६, १७, १८, २२, २४, २५, २६, मई ४, ५, ९, १९, २०, २१, २२, २६, २७, जून १, २, ५, ६, ७, १६, १८, १९, २२, २३, २८, जुला. २, ३, ४, ५, ७, १९, २०, २५, २६, ३०, ३१, अग. १, ३, ४, ५, सितं. ८, ९, १२, १३, १४, अक्तू. १०, ११, १२, १५, १९, २०, २१, २४, २५, २६, ३०, नवं. ६, ८, ११, १२, २२, २८, २९, जन. १५, २०, २२, २३, २६, २७, फर. ६, ७, ८, १६, १८, २०(२३।४० या.), २५, २७, मार्च ४, ५, ६, ९, १०
सिंह	अप्रं. १६, १७, १८, २२, २४, २५, २६, मई ४, ५, ६, १९, २०, २१, २२, २४, जून १, २, ७, १६, १८, १९, २०, २१, २८, २९, जुला. ४(१७।४४उ.), ५, ७, सितं. ८, ९, १०, १४, १९, अक्तू. ११, १२, १५, २४, २५, २६, ३०, नवं. ८, ११, १२, १३, जन. १५, २०, २२, २३, फर. ७,(२८।५९उ), ८, १६, १८, २०, २५, २७, मार्च ३, ९, १०	अप्रं. १६, १७, १८, २२, २४, २५, २६, मई ४, ५, ६, १९, २०, २१, २२, २४, जून १, २, ७, १६, १८, १९, २०, २१, २८, २९, जुला ४ (१७।४४ उ), ५, ७, २५, २६, २७, अग. १, ३, ४, ५, सितं. ८, ९, १०, १४, १९, अक्तू. ११, १२, १५, २४, २५, २६, ३०, नवं ८, ११, १२, १३, २२, २८, २९, जन. १५, २०, २२, २३, फर. ७(२८।५९ उ.), ८, १६, १८, २०, २५, २७, मार्च. ६, ९, १०

द्विरागमन मुहूर्त (सं. २०४० वि.)

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख १९८३-८४	नक्षत्र	लग्नकाल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र शु. ८बु.	वैशा.७	अप्रै. २०	पुष्य	{१४।२८ से २१।३३ तक}
" " १३चं.	" १२	" २४	हस्त	१४।४६ तक
वैशा.कृ. २शु.	" १६	"	अनु.	
" " ७बु.	" २१	मई ४	श्रव.	११।५९ तक
" " ८गु.	" २२	" ५	धनि	१५।१० बाद
" " १२चं.	" २६	" ९	उ.भा	
कार्ति.शु.१३शु.	मार्ग. २	नवं. १८	अश्वि,	७।६ तक
मार्ग.कृ. ४गु.	" ९	" २४	पुन.	११।५० बाद
फाल्गु.कृ. ४चं.	फाल्गु. ८	फर. २०	चित्रा	१५।५० बाद
" " ७गु.	" ११	" २३	अनु.	९।२३ बाद
" " ८शु.	" १२	" २४	अनु.	८।४१ तक
" " १३बु.	" १७	" २९	श्रव.	{१४।३८ से १९।१९ तक}
फाल्गु.शु. ३चं.	" २२	मार्च ५	उ.भा.	७।७ तक
" " ३चं.	" २२	" ५	रेव.	८।१९ बाद
" " ४बु.	" २४	" ७	अश्वि.	९।१२ से १२।१९ तक

द्विरागमन में विशेष—विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर द्विरागमन के ऊपर दिए मुहूर्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव विवाहित-वधू का द्विरागमन दीपावली के दिन दीप के प्रकाश में हो तो बहुत अच्छा समझा जाता है।

उपनयन मुहूर्त (सं. २०४० वि.)

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	लग्नकाल
चैत्र शु. ४र.	वैशा.४	अप्रै. १७	रोहि	९।६ बाद
" " १२र.	" ११	" २४	उ.फा.	१०।१० तक
वैशा.कृ. २शु.	" १६	" २९	अनु.	
वैशा.शु.११र.	ज्ये. ८	मई२२	उ.फा.	
" " ११र.	" ८	" २२	हस्त	
माघकृ. २शु.	माघ७	जन. २०	आश्ले.	११।४५ तक
" " ५र.	" ९	" २२	उ.फा.	११।२३ तक
माघशु. ३र.	" २३	फर. ५	पू.भा.	
फाल्गु.शु. २र.	फाल्गु. २१	मार्च ४	उ.भा.	

उपनयन में विशेष :—अत्यावश्यकता में चन्द्रबल देखकर उपनयनमुहूर्त के बिना भी किसी तीर्थ पर यज्ञोपवीत लिया जा सकता है। ऋषितर्पण (श्रावण शुक्ल पूर्णिमा) का दिन भी यज्ञोपवीत लेने के लिए शुभ माना जाता है।

गृहारम्भ मुहूर्त (सं. २०४० वि.)

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख १९८३-८४	नक्षत्र	लग्नकाल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र शु. १३चं.	वैशा.१२	अप्रै.२५	हस्त	१४।४६ तक
वैशा.कृ. २शु.	" १३	" २९	अनु	
" " १२चं.	" २६	मई ९	उ.भा.	
श्राव.कृ. २बु.	श्राव.१२	जुला.२७	धनि.	१४।१६ तक
" " २बु.	" १२	" २७	शत.	१५।१८ बाद
" " ५श.	" १५	" ३०	उ.भा	
" " १०गु.	" २०	अग ४	रोहि	१६।२२ बाद
आश्वि.शु. १३बु.	कार्ति.३	अक्तू.१९	उ.भा.	१५।५२ बाद
माघकृ. १०गु.	माघ १४	जन.२७	अनु.	९।३२ तक
फाल्गु.कृ. ४चं.	फाल्गु. ८	फर.२०	चित्रा	१५।५० बाद

नूतन गृहप्रवेश मुहूर्त (सं. २०४० वि.)

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	लग्नकाल
वैशा.कृ. १गु.	वैशा.१५	अप्रै. २८	अनु.	२५।१८ बाद
" " २शु.	" १६	" २९	अनु.	२२।४७ तक
" " १२चं.	" २६	मई ९	उ.भा.	२१।५६ तक
वैशा.शु. १शु.	" ३०	" १३	रोहि	११।४४ बाद
" " १०श.	ज्ये. ७	" २१	उ.फा.	१७।३६ बाद
" " १५गु.	" १२	" २६	अनु	१२।१८ बाद
ज्ये.कृ. १शु.	" १३	" २७	अनु	९।१४ तक
" " १०चं.	" २३	जून ६	रेव.	१७।२५ बाद
मार्ग.कृ. ९चं.	मार्ग.१३	नवं. २८	उ.फा.	२५।१४ बाद
माघकृ. १०शु.	माघ १४	जन. २७	अनु.	{२१।३८ से २६।४९ तक}
माघशु. ४चं.	" २८	फर. ६	उ.भा.	१५।१५ बाद
फाल्गु.कृ.२श.	फाल्गु. ६	" १८	उ.फा.	
" " ४चं.	" ८	" २०	चित्रा	१५।५० बाद
" " ७गु.	" ११	" २३	अनु.	
फाल्गु.शु. ३चं.	" २२	मार्च५	उ.भा.	७।७ तक
" " ३चं.	" २२	" ५	रेव.	१७।२० बाद
" " १५श.	चैत्र ५	" १७	उ.फा.	

देवप्रतिष्ठा मुहूर्त (सं. २०४० वि.)

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख १९८३-८४	नक्षत्र	लग्नकाल (भा.स्टैं.टा.
	सात्त्विक देवप्रतिष्ठा			
चैत्र शु. ४र.	वैशा. ४	अप्रै. १७	रोहि.	{९।६ से १२।१९ तक}
" " १२र.	" ११	" २४	उ.फा.	१०।१० तक
" " १३चं.	" १२	" २५	हस्त	
वैशा.कृ. २शु.	" १६	" २९	अनु.	
" " १०श.	" २४	मई ७	शत.	
" " १२चं.	" २६	" ९	उ.भा.	
वैशा.शु. ६बु.	ज्ये. ४	" १८	पुष्य	
" " १०श.	" ७	" २१	उ.फा.	९।५१ बाद
" " ११र.	" ८	" २२	हस्त	९।१ बाद
ज्ये.कृ. ६गु.	" १९	जून २	धनि.	१०।१९ तक
	तामसदेव प्रतिष्ठा			
आषा.कृ. ५गु.	आषा.१६	जून ३०	शत.	८।५७ बाद
" " ८र.	" १९	जुला.३	उ.भा.	
आषा.शु. १चं.	" २७	" ११	पुष्य	८।३५ बाद
	सात्विकदेव प्रतिष्ठा			
पौष शु. १बु.	पौष २०	जन. ४	उ.षा.	
" " २गु.	" २१	" ५	श्रव.	
माघ कृ. ६चं.	माघ १०	" २३	हस्त	
माघ शु. ६बु.	" २६	फर. ८	अश्वि.	
फाल्गु.कृ. ७गु.	फाल्गु. ११	" २३	अनु.	९।२३ बाद
फाल्गु शु. २र.	" २१	मार्च ४	उ.भा.	
चैत्रकृ. २चं.	चैत्र ७	" १९	चित्रा	
" " १२गु.	" १७	" २९	शत.	

शुद्ध-विवाहमुहूर्त्त (सं. २०४० वि.)

तिथि	वार	प्रविष्टा	तारीख १९८३ ई.	विवाह नक्षत्र	दश-दोष रेखाएं	लग्न, दान-पूजा एवं अन्य विवरण
वैशा.कृ.	७बु.	वैशा.२१	मई ४	श्रव.	ऽगु.।।।।ऽअ.।ऽ।।	ल.११, १२
,, ,,	८गु.	,, २२	,, ५	श्रव.	ऽगु.।।।।ऽअ.।ऽ।।	दि.ल.२(गु.दा.),४(चं.दा.)
,, ,,	८गु	,, २२	,, ५	धनि.	।।।।।ऽअ.ऽऽ।।	ल.गोधू.,११.१२(२८।२८या.)
,, ,,	९शु.	,, २३	,, ६	धनि.	।।।।।ऽऽ।।	दि.ल.२(गु.दा.)सिहमें श्रा.सा.
,, ,,	१२च.	,, २६	,, ९	उ.भा.	।ऽ।।ऽचो.।।।।	दि.ल.४
,, ,,	१२चं.	,, २६	,, ९	रेव.	।।।।।ऽ।।।	ल.११
वैशा.शु.	७गु.	ज्येष्ठ ५	,, १९	मघा	।।।।ऽनृ.ऽऽ।।	ल.११(२५।३३उ.)(चं.दा.)
,, ,,	८शु.	,, ६	,, २०	मघा	।।।।ऽनृ.ऽऽ।।	दि.ल.४(९।४५या.)
,, ,,	१०श.	,, ७	,, २१	उ.फा.	।ऽ।।ऽचो.।ऽ।।	{दि.ल.४(९।५१उ.),गोधू., १२(चं.दा.)}
,, ,,	११र.	,, ८	,, २२	हस्त	ऽरा.।।।।ऽ।।।	दि.ल.४,५,रा.ल.१२(चं.दा.)
,, ,,	१३मं.	,, १०	,, २४	स्वा.	।ऽ।।ऽरो.ऽ।।।	दि.ल.५,गोधू, ११
,, ,,	१५गु.	,, १२	,, २६	अनु.	।।ऽगु.ऽबु.।ऽअ।ऽ।।	ल.११,१२
ज्ये.कृ.	१गु.	,, १३	,, २७	अनु.	।।ऽगु.ऽबु.।ऽअ.।ऽ।।	दि.ल.४(९।१४या.)
,, ,,	५बु	,, १८	जून १	श्रव.	ऽगु.।।।।।ऽ।।	ल.गोधू.
,, ,,	५बु.	,, १८	,, १	धनि.	ऽबु.।।।ऽरो.।ऽ।।	ल.१२
,, ,,	६गु.	,, १९	,, २	धनि	ऽबु.।।।।ऽ।।।	दि.ल.४(१०।३९या.)(चं.दा.)
,, ,,	९र.	,, २२	,, ५	उ.भा.	।।।।ऽअ.।।।।	दि.ल.४,गोधू.
,, ,,	१०च.	,, २३	,, ६	रेव.	।।।।।ऽऽ।।	ल.गोधू.,११
,, ,,	११मं.	,, २४	,, ७	अश्वि.	।।।।ऽश.ऽनृ.ऽ।।।	दि.ल.५,रा.ल.१२(रा.दा.)
ज्ये.शु.	६गु.	आषा. २	,, १६	मघा	।ऽ।।।।।।।	दि.ल.४,६(१३।३० या).
,, ,,	८श.	,, ४	,, १८	हस्त	ऽरा.ऽ।।।ऽ।।।	ल.१२(चं.दा.)
,, ,,	९र.	,, ५	,, १९	हस्त	ऽरा.ऽ।।।ऽ।।।	दि.ल.४,५
,, ,,	१०चं.	,, ६	,, २०	स्वा.	।।।।ऽनृ.।।।।	ल.गोधू
,, ,,	११मं.	,, ७	,, २१	स्वा.	।।।।।।।।।	{दि.ल.५(१०।१३उ),६ (१३।२३ या.)}
,, ,,	१२बु.	,, ८	,, २२	अनु.	ऽसू.ऽऽगु.।।ऽचो.।।।।	ल.गोध.११
,, ,,	१३गु.	,, ९	,, २३	अनु.	ऽसू.ऽऽगु.।।।।।।	दि.ल.४,६
आषा.कृ.	३मं.	,, १४	,, २८	श्रव.	ऽगु.ऽ।।।।।।।	ल,१२,२(गु.दा.)
,, ,,	४बु.	,, १५	,, २९	धनि.	।।।ऽश.ऽगु.ऽनृ.ऽऽ।।	ल.गोधू.,१२,२(गु.शु.दा.)
,, ,,	७श.	,, १८	जुला. २	उ.भा.	।।।।।।।।।	ल.गोधू.,१०,२(गु.दा.)

तिथि	वार	प्रविष्टा	तारीख १९८३ ई.	विवाह नक्षत्र	दश-दोष रेखाएं	लग्न, दान-पूजा एवं अन्य विवरण
आषा.कृ.	८र.	आषा.	जुला.३	उ.भा.	।।।।ऽरो.।।।।	दि.ल.४,६(चं.दा.)
,, ,,	८र.	,, १	,, ३	रेव.	।।।।ऽरो.ऽऽ।ऽ	{ल.गोधू.,१०(२१।६या.),२ (गु.दा)}
,, ,,	८चं.	,, २०	,, ४	रेव.	।।।।।ऽऽ।।	दि.ल.४,६(चं.दा.)
,, ,,	८चं.	,, २०	,, ४	अश्वि.	।।।।।।ऽ।।	ल.गोधू.,१०,१२,२(गु.दा.)
,, ,,	९मं.	,, २१	,, ५	अश्वि.	।।।।।।ऽ।।	दि.ल.४,५(१०।१०या.)
,, ,,	१२गु.	,, २३	,, ७	रोहि.	।ऽ।।ऽगु.।।ऽ।।	ल.१२,२(२६।५४या.)(गु.दा.)
आषा.शु.	१०म.	श्राव. ४	,, १९	अनु.	।।ऽगु.।।ऽअ.।।।।	ल.१२
देशाचारानुसार केवल पंजाब और द्विगर्त्त प्रदेश के लिए						
,, ,,	११बु	,, ५	,, २०	अनु.	।।ऽगु.।।।।।।	दि.ल.५(८।३०या.)
श्राव.कृ.	१चं.	,, १०	,, २५	श्रव.	ऽगु.।।ऽसू.ऽरो.।।।।	दि.ल.६,रा.ल.१२,
,, ,,	१मं.	,, ११	,, २६	श्रव.	ऽगु.।।ऽसू.ऽरो.।।।।	दि.ल.५,६(११।६या.)(मं.दा.)
,, ,,	१मं.	,, ११	,, २६	धनि.	।।।।।।।।।	ल.१२(रा.दा.)
,, ,,	२बु.	,, १२	,, २७	धनि.	।।।।।।।।।	दि.ल,५(चं.दा.)
,, ,,	५श.	,, १५	,, ३०	उ.भा.	।।।।ऽनृ.ऽ।।।	दि.ल.६(चं.दा.),गोधू.
,, ,,	६र.	,, १६	,, ३१	रेव.	।।।।ऽनृ.।।।।	दि.ल.६(चं.दा.),गोधू.
,, ,,	७बु.	,, १७	अग. १	अश्वि.	।।।।ऽचो.।ऽ।।	दि.ल.५.गोधू.
,, ,,	९बु.	,, १९	,, ३	रोहि.	।।।।ऽगु.ऽरो.।ऽ।।	{ल.३(२०।०३.२९।८या.) (शु.दा)}
,, ,,	१०गु.	,, २०	,, ४	रोहि.	।।।ऽगु.ऽरो.।ऽ।।	ल.गोधू.,१२
,, ,,	१०गु.	,, २०	,, ४	मृग.	।।ऽरा.।ऽके.।ऽऽ।।	ल.३(२६।४९उ.)
,, ,,	१०शु.	,, २१	,, ५	मृग.	।।ऽरा.।ऽके.।ऽऽ।।	दि.ल.५,९
भाद्र.शु.	[illegible]गु.	भाद्र.२२	सितं. ८	उ.फा.	।ऽबु.।।।।।।	दि.ल.९(१४।२१या.)
,, ,,	२गु.	,, २३	,, ८	हस्त	ऽरा.।।।।ऽ।।।	ल.३
,, ,,	३शु.	,, २४	,, ९	चित्रा	।।।।ऽनृ.।।।।	दि.ल.९(मिः र म कां.सा.)
,, ,,	४श.	,, २५	,, १०	चित्रा	।।।।।।।।।	दि.ल [illegible]
,, ,,	६चं	,, २७	,, १२	अनु.	।ऽऽगु.।।।ऽ।।	ल.गोधू.,३
,, ,,	७मं.	,, २८	,, १३	अनु.	।ऽऽगु.।।ऽरो.।।।	दि.ल.६
,, ,,	८बु.	,, २९	,, १४	मूल.	।।।ऽरा.।।।।	ल.गोधू.,३(चं.दा.)
,, ,,	१३चं.	आश्वि.३	,, १९	धनि.	ऽसू.।।।।।।।।	ल.३(२४।५३उ.)
आश्वि.शु.	४चं	,, २४	अक्तू.१०	अनु.	ऽगु.।ऽनृ.।।।।	दि.ल.९,गोधू.
,, ,,	५मं.	,, २५	,, ११	मूल	।।।ऽरा.ऽचो.ऽऽ।।	ल ३(२१।४०उ.)(चं.दा.)
,, ,,	६बु.	,, २६	,, १२	मूल	।।।ऽरा.ऽचो.ऽऽ।।	ल.गोधू.

धर्म दीक्षा-फल (२०)
१ धर्म में प्रीति थोड़ी हो।
२ धर्म में अधिक प्रीति हो।
३ धर्म करते रोग हो।
४ धर्म में मन बढे।
५ धर्म में आकुलता हो।
६ धर्म में नाम स्थिर रहे।
७ धर्म करते मृत्यु हो।
८ धर्म से वृत्ति उखड़े।
९ धर्म-दीक्षा से शांति मिले।

अनाज खरीद फल (२१)
१ अनाज में भारी लाभ होगा।
२ नफा टोटा समान रहेगा।
३ घाटा रहेगा।
४ अन्न के खराब होने का भय है।
५ सांझी व्यापार न करें।
६ देर से बिकेगा।
७ अनाज में सवाये होंगे।
८ बेचना ठीक है, लेना मत।
९ प्रश्न फल अशुभ है।

पुत्र गोद में लेने का फल (२२)
१ गोद लेने से लाभ रहेगा।
२ यह लड़का वफादार नहीं।
३ लड़का खर्च करायेगा।
४ लड़का अच्छा नहीं है।
५ अच्छी निभेगी।
६ सावधानी से गोद लेना।
७ बे-मुहब्बत निकलेगा।
८ घर में अनबन रहेगी।
९ बुराई नहीं है

तबादले का प्रश्न (२३)
१ तबादला होगा।
२ कुछ रुकावट के साथ होगा।
३ तबादले में विघ्न आवे।
४ तबादला अभी नहीं।
५ तबादला होगा।
६ तबादले में देर है।
७ तबादला जरूर होवे।
८ अभी ठहरो।
९ देरी से होगा।

कर्ज लेने देने का परिणामक्याहै(२४)
१ यहां से कर्ज लेना देना अच्छा है।
२ जैसा प्रेम अब है आगे नहीं रहे।
३ लेने देने का नतीजा खराब रहेगा।
४ अन्त मे मुश्किल होगी।
५ दिया सो खोया, लिया सो कमाया।
६ इस जगह हानि-लाभ समान है।
७ लेने देने में कोई हरज नहीं।
८ अन्त समय अदालत मे जाना होगा।
९ नफा नुकसान बराबर रहेगा।

गर्भ में क्या है ? फल (२५)
१ इस गर्भ की मुआशा नहीं।
२ पुत्री का जन्म होगा।
३ शुभ लक्षण वाला पुत्र है।
४ लड़की होगी पर आयु कम।
५ गर्भ अधूरा रहे या बच्चा मरे।
६ पुत्र का जन्म होगा।
७ दीर्घायु पुत्र होगा।
८ कन्या जन्मेगी।
९ जोड़े बालक होंगे।

विवाह शादी का फल [२६]
१ विवाह देरी से होगा।
२ विवाह होगा पर स्त्री अच्छी नहीं।
३ विवाह न होगा।
४ विवाह जरूर होगा।
५ विवाह में रुकावट होगी।
६ किसी की खुशामद करो।
७ खर्च करो काम बनेगा।
८ थोड़ी विलम्ब से होगा।
९ स्त्री गुण वाली मिलेगी।

रोजगार प्रश्न फल [२७]
१ रोजगार जल्दी ही अच्छा होगा
२ विशेष परिश्रम करने से रोजगारहोगा
३ किसी प्रकार की ठेकेदारी करो।
४ जल मिट्टी, कोयला से लाभ होगा।
५ अब इस व्यापार में हानि होगी।
६ दुश्मन नुकसान करेंगे, सावधान।
७ रोजगार ठीक होने मे देर है।
८ खोटे ग्रह की दशा है। अभी चुप रहो
९ जो विचार है वह पूर्ण नहीं होगा।

चोरी गई का फल [२८]
१ वस्तु शीघ्र मिलेगी।
२ खर्च करने पर माल मिलेगा।
३ पता पूरा लगे पर माल न मिलेगा।
४ चोर पक्का है माल न मिलेगा।
५ किसी की मदद से माल मिलेगा।
६ चोर ने तेरी वस्तु और को दे दी है।
७ माल आधा नष्ट हो गया है।
८ माल नहीं मिलेगा आशा छोड़ दो।
९ चोर छोटी आयु का है माल मिलेगा।

गुप्त चिन्ता का फल [२९]
१ मन की इच्छा पूर्ण होगी।
२ काम बनने में कुछ देर है।
३ काम का नतीजा खराब होगा।
४ किसी का भरोसा मत करो।
५ चिन्ता न करो काम बनेगा।
६ मन की मन ही मे रहेगी।
७ तेरा दुष्ट से वास्ता पड़ा है।
८ देरी से काम बनेगा।
९ चिन्ता सच्ची है किसी की मदद लो।

क्या मुझे सांझा व्यापार से लाभ होगा [३०]
१ सांझे में लाभ होगा।
२ सांझे में लाभ कम होगा।
३ सांझे में हानि का भय है।
४ लाभ होगा परन्तु ठहर कर।
५ हानि का भय है।
६ लाभ होगा।
७ लाभहोगा,परन्तु अंतमेंगड़बड़ी कामयही।
८ लाभ की आशा व्यर्थ है।
९ लाभ होगा विश्वास रखो।

खोया पशु किधर मिलेगा [३१]
१ पशु दक्षिण में है, नहीं मिलेगा।
२ पश्चिम में गया है, मिलेगा।
३उत्तर-पश्चिमकेकोणमेंगयाहै,नहींमिलेगा
४ उत्तर दिशा में ढूंढो, मिलेगा।
५ पूर्वकी ओर गयाहै,जल्दीढूंढनेसेमिलेगा
६ उत्तर मे ही मिलेगा।
७ पूर्वोत्तरकोण में गया है, मिलनाकठिनहै
८ दक्षिण में गया है मिलेगा।
९ पश्चिम में गया है, खर्च से मिलेगा।

मेरा यह वर्ष कैसा है [३२]
१ यह वर्ष शुभ रहेगा।
२ वर्ष कष्टप्रद है।
३ वर्ष मध्यम है।
४ वर्ष अधिक कठिनाइयों वाला है।
५ वर्ष शुभ लाभप्रद है।
६ वर्ष साधारण है।
७ वर्ष शुभ है।
८ वर्ष हानिकारक है ग्रहशान्ति करो।
९ इस वर्ष भाग्यवृद्धि होगी।

यह प्राणी जीवित है या नहीं [३३]
१ जीवित नहीं।
२ यह जीवित है।
३ जीवित नहीं है।
४ जीवन में सन्देह है।
५ जीवित है।
६ जीवित नहीं।
७ जीवित है।
८ जीवित नहीं।
९ जीवित है।

यह व्यक्ति विश्वास-योग्य है कि नहीं (३४)
१ विश्वास-योग्य है।
२ विश्वास-योग्य कम है।
३ विश्वास योग्य नहीं।
४ ईमानदार है।
५ भरोसा कर सकते है।
६ भरोसा मत करो।
७ विश्वास-पात्र है।
८ विश्वास योग्य नहीं है।
९ विश्वास-पात्र है।

इस काम में लाभ है कि नहीं [३५]
१ इस काम से सुख लाभ होगा।
२ इस काम में दुःख एवं हानि होगी।
३ इस काम में हानि-लाभ समान होगा।
४ इस काम में हानि दुःख होगा।
५ इसमें लाभ सुख है।
६ लाभ सुख मध्यम है।
७ सुख लाभ होगा।
८ सावधान, हानि दुःख होगा।
९ सुख लाभ होगा।

मुझे यहां लाभ होगा या अन्य स्थान पर [३६]
१ अन्य स्थान पर जाओ, लाभ होगा।
२ इसी स्थान पर लाभ होगा,धैर्य करो।
३ अन्य स्थान पर जाना लाभप्रद है।
४ अन्य स्थान पर लाभ रहेगा।
५ यहींठहरो,कुछदिनबाद लाभहोनेलगेगा।
६यहीं पर ठहरो,दूसरी जगहभीकष्टहोगा
७ यह स्थान मत छोड़ो देर से लाभहोगा।
८ दूसरी जगह जाना ठीक है।
९ यहींपरिश्रमकरो,ग्रहशांतिसे लाभ होगा

यह खबर झूठी है या सच्ची [३७]
१ यह खबर ठीक सच्ची है।
२ यह बात झूठी है।
३ बात सच्ची है।
४ बात झूठी है।
५ बात सत्य है।
६ सत्य है।
७ कुछ कुछ सत्य है।
८ निराधार, झूठी है।
९ सच्ची है।

मेरा आज का दिन अच्छा है या बुरा ? [३८]
१ आज का दिन अच्छा है।
२ आज सावधान रहें।
३ अच्छा दिन है।
४ खराब है।
५ अच्छा दिन है।
६ अशुभ चिन्ताप्रद है।
७ शुभ दिन है।
८ बहुत ज्यादा खराब है।
९ मध्यम है।

इसे कोई रोग है या ग्रह-दोष या कोई और पीड़ा [३९]
१ कर्मजन्य शारीरिक कष्ट है।
२ रोग से ही पीड़ित है।
३ ग्रहकृत मानसिक रोग है।
४ प्रेतपीड़ा है, शान्ति करावें।
५ शत्रुकृत टोना आदि कसर है।
६ ग्रहपीड़ा है, शान्ति करावें।
७ शत्रु ने कुछ कराया है, रामरक्षा पढ़ें।
८ रोग कष्टसाध्य है, शिवार्चन करें।
९ कर्मजन्य फल से विवश है।

क्या नलकूपादि लगाना ठीक है[४०]
१ शीघ्र जल मिलेगा।
२ खण्डित जल मिलेगा।
३ सुन्दर जल मिलेगा।
४ जल नहीं मिलेगा।
५ अमृत जल मिलेगा।
६ जल मिलेगा।
७ मिश्रित कम जल मिलेगा।
८ अभी जल नहीं मिलेगा।
९ जल कम या क्षार मिलेगा।

इस व्यक्ति से मेरा कार्य सिद्ध होगा कि नहीं [४१]
१ इस व्यक्ति द्वारा सफलता होगी।
२ इसके द्वारा कार्य सिद्ध नहीं होगा।
३ कार्यसिद्धि में सहायता मिलेगी।
४ इससे काम सिद्ध न होगा।
५ इसके द्वारा कार्य सिद्ध हो जाएगा।
६ यह दिल से काम नहीं करेगा।
७ बड़ी खुशामद से सिद्ध होगा
८ इससे कुछ आशा न करो।
९ मिलो, कार्य बनेगा।

मुझे इस काम में सफलता मिलेगी कि नहीं ? [४२]
१ सफलता की कम आशा है।
२ बड़े परिश्रम से सफलता मिलेगी।
३ सफलता मिलेगी।
४ सफल होना मुश्किल है।
५ सफल हो जाओगे, डटे रहो।
६ सफलता देर से मिलेगी।
७ किसी की सहायता से सफलता मिलेगी
८ सफलता की आशा नहीं।
९ निराशा के बाद सफलता मिलेगी।

सिद्ध होरा मुहूर्त :—यस्य ग्रहस्य वारेषु कर्म किञ्चित्प्रकीर्तितम्
तस्य ग्रहस्य होरायां सर्वं कर्म विधीयते ॥

सूर्य की होरा—टैण्डर देने, नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है।
चन्द्र की होरा—सब कार्यों के लिए अच्छी होती है।
मंगल की होरा—युद्ध, द्यूत, यात्रा, कर्ज देना, सभा सोसाइटी में जाना, मुकद्मा के कार्यों में उत्तम होती है।
बुध की होरा—विद्या (कला काव्य) का आरम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार करना, नवीन-लेख पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करने के लिए शुभ होती है।
गुरु की होरा—विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलने, कोष संग्रह, नवीन काव्य लेखन प्रकाशन आदि अनेक शुभ कार्यों के लिए शुभ है।
शुक्र की होरा—यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, सौभाग्य-वर्धक कार्य व सिनेमा शूटिंग के लिए शुभ होता है। **शनि की होरा**—द्रव्य संग्रह, भूमि मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी मिल्स कार्यारम्भ, समस्त स्थिर कार्यों के लिए शुभ होती है।

सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिए ज्योतिशास्त्र में होरा (क्षणवार) मुहूर्त पूर्ण फलदायक माना है। सात ग्रहों की सात ही होरा हैं। प्रत्येक वार को एक घण्टे की सूर्योदय के समय उसी वार की पहली होरा होती है। फिर दिन रात के २४ घंटों में २४ होरे व्यतीत होने से अगले वार के सूर्योदय के समय उसी वार के स्वामी की होरा आ जाती है। होरा का समय ढाई घटी, यानि एक घण्टा का होता है। दूसरे वार की होरा उसी वार के छठे छठे वार के क्रम से स्वामी की होती है। इसी प्रकार प्रत्येक घण्टे की होरा समझनी चाहिए।

ध्यान रहे कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वराशि के स्वामी ग्रह के शत्रु ग्रहों की होरा में यात्रा-विवाहादि तथा शुभ कर्मों का त्याग कर देना चाहिए, अन्यथा अशुभफल मिलेगा। स्वराशि के मित्र ग्रहों की होरा में कार्यारम्भ श्रेयस्कर रहेगा।

निम्नलिखित चक्र द्वारा दिन-रात के जिस किसी घण्टे की अभीष्ट कार्य-सिद्धयर्थं ग्रह होरा देखनी हो, सहज में ज्ञात हो सकेगी।

वार →	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो. २४
सू.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.
चं.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.
मं.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.
बु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.
बृ.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.
शु.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.
श.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.

उदाहरण—कल्पना करो, कि—आज मंगलवार है। आपने कार्य-सिद्धयर्थं किसी बड़े पुरुष से मिलने जाता है। तो इसके लिए उपरोक्त पंक्तियों में गुरु की होरा उत्तम होती है—ऐसा लिखा है। अतः उस दिन गुरु की होरा मालूम करनी है कि—किस-किस समय पर होता है। उपरोक्त चक्र में मंगलवार के सामने खाने में देखा तो उस दिन सातवें चौदहवें और इक्कीसवें घण्टे में गुरु की होरा मिली। अतः मंगलवार को स्थानीय सूर्योदय से छठे व तेरहवें अथवा बीसवें घन्टे के बाद एक-एक घण्टे तक की गुरु होरा में आपको बड़े व्यक्ति से मिलने जाना फलप्रद है। इसी प्रकार अन्य दिनों में अन्य कार्यों के लिए भी समझ कर कार्य करना चाहिए। जिस वार को जो कार्य करना है, वह वार न मिले तो वह कार्य उस वार की होरा में कर सकते हैं। जैसे—दक्षिण में जरूरी यात्रा करनी है परन्तु उस दिन शुक्रवार है। इस दिन दिक्शूल के कारण दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान अशुभ माना जाता है। ऐसी स्थिति में उस दिन गुरु की होरा छोड़ कर शुक्र की होरा में जाए तो शुभ रहेगा।

ठेकेदारों का टेंडर देने का समय—सू. चं. बु. गु. शु. की होरा में टेंडर देना लाभप्रद रहता है।

सद्यः नई गद्दी स्थापना व नई बही लगाने का मुहूर्त—दीपमाला के दिन या जब भी समय नियत हो, प्रातः सूर्योदय के बक्ते सूर्य में मध्याह्न तक मंगलवार ४।९।१४ तिथि तथा भद्रा को छोड़ कर शुभ लाभ व अमृत के चौघड़ियों में या शुभग्रहों की होरा में करें, मध्याह्नोत्तर उतरते सूर्य में नहीं।

सूर्यादि वारेषु कुयोग-सारिणी—

	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
सर्वकार्येषु वर्ज्या	ति. ५ न. ह.	ति. ५ न. मृ.	ति. ७ न. अ.	ति. ८ न. अनु.	ति. ९ न. पु.	ति. १० न. रे.	ति. ११ न. रो.
मृत्युयोग (अधमाः तिथयः)	१।६।११	२।७ १२	१।६।११	३।८ १३	४।९ १४	२।७ १२	५।१०।१५
क्रकच योग	ति. १२	ति. ११	ति. १०	ति. ९	ति. ८	ति. ७	ति. ६
दग्धा तिथि	१२	११	५	३	६	८	९
विषाख्य तिथि	४	६	७	२	८	९	७
हुताशन तिथि	१२	६	७	५	९	१०	११
स्या जन्म तिथि	७	१४	१०	१२	९	८	१५
दग्ध नक्षत्र	भ	चि	उषा	घ.	उफा.	ज्ये.	रे.
कुलिक मुहूर्त	१४	१२	१०	८	६	४	२
कालवेलामुहूर्त	८	६	४	२	१४	१२	१०
यमघंटकमुहूर्त	१०	८	६	४	२	१४	८
कण्टकमुहूर्त	६	४	२	१४	१२	१०	२१
दुर्मुहूर्त	१४	९।१२	४।७	८	६	९	१।२
यमघण्टयोगः	म	वि.	आ.	म.	कृ.	रो.	ह.

(दिन में कल्पना की हुई वस्तु को देखना), षष्ठ भाविक (न देखी न सुनी उसको [illegible]).
सप्तम दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से)। पूर्वोक्त सात प्रकारों में से [illegible]
अनुभूत प्रार्थित, कल्पित' ये पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। छठे भाविक
स्वप्न का फल उत्तम मिलता है। सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में
आता है। इतना विशेष है कि—बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। शुभ
स्वप्न देखकर पुनः स्नानादि से शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी
पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल, पुष्प दक्षिणा रखे, स्वस्थचित्त से स्वप्न का वर्णन करे, शुभा-
शुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे।

शुभस्वप्न—राजा हाथी, गौ, बैल, विप्र, देवता, अनेक बालक, वृक्ष, गुरु, श्वेत-
वस्त्र वाली स्त्री, रत्न, इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना, महल पर्वत, सिंह, अश्व एवं
अन्न की ढेरी पर चढ़ना व दर्शन करना, रक्त से स्नान रथ शय्यादि का ज्वलन; स्व-शिर
का छेदन, स्व-रुदन, अपना मरण, वेद-ध्वनि श्रवण, रक्त पीत पुष्प दर्शन, दर्पण, प्राप्ति
दही चावल भोजन, जुआ, रण विवाद में अपनी जय, इन्द्रधनुष का देखना, छाछ, अस्थि
कपास, नमक, इन चार वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु, स्वप्न में देखना धनै-
श्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि कोई क्लर्क या मुन्शी यह स्वप्न
देखे कि उसने दफ्तर के रजिस्टरों या बहियों में गल्तियां की हैं तो उसे उसके मालिक से
अच्छा काम करने की शाबाश या तरक्की मिलेगी।

दर्पण में मुख देखें तो प्रेमी से मिलाप हो। यदि स्वप्न में फल-पुष्प सहित वृक्ष पर
अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट जाय तो
निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वप्न में बिच्छु, या सर्प के जल में पैर पर काटने से
रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर होकर सुख हो। श्वेतवस्त्र वाली स्त्री का स्नान
करना, हाथों में हथकड़ी पैरों में जंजीर का बन्धन पड़ना, नर या नारी के हाथ से जूता
व खड़ाऊ छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना, अपने पैर व भुजा
के मांस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना, ऐसे स्वप्न दीखे तो लक्ष्मी की प्राप्ति व
सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने सिर के मांस को खाना राज्यलाभ
करता है। गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्यमण्डल का दीखना, अपना मरना दीखे
तो रोगी पुरुष का रोगनाश और नीरोग पुरुष को लाभ होता है। बगला, मुर्गा, कुञ्ज
का दीखना चतुर स्त्री प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त व मद्य का पीना, विप्र को
उत्तम विद्या लाभ, क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस, चरबी का खाना, विष्ठा
अपने अंग में लगाना, श्वेत चन्दन, श्वेत वस्त्र पुष्प से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष
की देह देखना, लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर दे जाय तो भी
लाभ हो। नदी समुद्र में तैरना, तालाब में तैर कर पार जाना, सूर्योदय का देखना कोष्ट-
वृत्ति करता है। ऊंचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय
करता है। राजा, गौ, ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दरफल संयुक्त
देखना बिछड़े काम सिद्ध होंगे, ऐसा जानना। घ: में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों
तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई
दुकानदार स्वप्न में देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाए बिना भाग गया है तो उसका
समझ लेना चाहिए कि रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे, यदि
किसी की बहन स्वप्न देखे कि उसके भाई पर भारी विपत्ति पड़ा है और उसकी जान
खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो उसका किसी बड़े आदमी के साथ विवाह हो
जाएगा और यदि वह विवाहित है तो उसके घर में सब प्रकार से, सुख शान्ति रहेगी।

शुभ स्वप्न के बाद पीछे से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः पीछे नहीं।

अशुभ स्वप्न—[illegible] पहिनना, सर्प-सिंह [illegible] दीखना, तारों का
[illegible] देखना, नीम पलाश के वृक्ष
[illegible] घर में शुभ वृक्ष के किसी [illegible] संकट व मृत्यु हो।
पर पड़ना, रुई, कपास, [illegible], तेल, [illegible] मृत्यु व भारी कष्ट को
शरीर में [illegible] किसी के द्वारा तेल से स्नान का होना [illegible] दांतों का गिरना, [illegible]
सूचित करता है। सिर के [illegible] भोजन करना, [illegible] वस्तु को
का नाश करता है। [illegible]
[illegible] हानि व कष्ट करता है। [illegible]
मिलना रोग सूचक है। [illegible] ऊंट, गधे, भैंस पर
कष्ट या मृत्यु हो। हाथ, नाक का कटना, [illegible] अपने पर
चढ़कर तेल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और [illegible]
को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, [illegible]
करना, बन्दर सर्प पर चढ़ना, [illegible] इत्यादि स्वप्न
साथ मिलना, अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर [illegible] बिना ऋतु के
मृत्यु कारक होते हैं। नदी में डूबना अथवा [illegible] दिशा का
वर्षा देखना, बाघ, रीछ गीदड़ बिलाव, [illegible] है। गौ, हाथी,
तथा बड़ी महल-ध्वजा का गिरते देखना अशुभ कष्ट व विनाशकारक है। अगर
देव, विप्र इन के सिवा सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ व [illegible] है तो
"विधवा स्त्री" यह स्वप्न देखे कि उसने शादी करने का [illegible] से मास
उस पर कोई सख्त बीमारी आवे या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर [illegible] आपके साथ
काटे तो शत्रु गुप्तभाव से अनिष्ट करेगा। यदि स्वप्न में कोई कुत्ता प्रेम से आपके साथ
खेलता दिखाई दे तो लाभ हो। यदि अपने को कैद में देखे तो दुःख से छूटे। 'बकरी को
चरती देखे तो शुभ दिन नजदीक समझे। तूफान देखे तो दुःख के अन्त की सूचना समझें।
घर में आग लगी देखे तो जीवन में कोई विशेष परिवर्तन हो। स्वप्न में बिडाल
(बिल्ला) दिखाई दे तो किसी से ठगा जाए। दीपक बहुत टिमटिमाता दिखाई दे तो
नीरोग व्यक्ति के लिए रोग की सूचना तथा रोगी व्यक्ति के लिए मृत्यु की सूचना देता
है। मुंडित-केश नर, भिक्षुक तथा सूखी-नदी, सूखा पेड़ आदि का दिखाई देना भी रोग
कष्ट एवं मृत्यु सूचक है।

स्वप्न का फल कब मिलेगा

रात्रि के प्रथम प्रहर का एक वर्ष में, द्वितीय का ८ मास में, तृतीय का ३ मास
में तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय
से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है। अथवा—रात्रि में जिस समय स्वप्न
दिखाई दे, उस समय से जितनी घड़ी रात्रिशेष रहे, उस घड़ी को चार से गुणा करें,
जितनी संख्या हो उतने ही दिनों में स्वप्नफल मिलेगा।

अशुभस्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम, यथाशक्ति
स्वर्ण तथा गोदान, अश्वत्थ-पूजन, विष्णुसहस्र नाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ, ब्राह्मण
भोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देखकर फिर तत्काल सो जाना भी
दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

अंग-स्फुरण-फलम्

पुरुषों का दायां अंग और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फड़कना) स्त्री पुरुष दोनों के लिए शुभ है।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्ष:स्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाघ:	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसगम	उदर	कोषलाभ	बस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्रपक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व-वृद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल वा खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

उत्पात-फल-चक्रम्

उत्पात	फल	उत्पात	फल	उत्पात	फल
दिग्दाह	वर्षा न हो	भूकम्प	प्रजा को भय	सर्वग्रहअतिचार	शुभ फल
धूल वर्षे	दुर्भिक्ष पड़े	पहाड़ टूटे	राजा की मृत्यु	मूसल निकले	युद्ध महघंता
पत्थर वर्षे	अकाल हो	वृक्ष टूटे	राजा का भय	धूम्रकेतु उदय	राजभंग करे
तारे टूटें	जनक्षय	उलटी ऋतु	रोग विशेष	२।३।४ शूलोद	राजनाश
बिजली टूटे	जल सूखे	आदलीकेपशुहो	राजविघ्न	सुवर्ण पंक्ति	राजनाश
दिन अंधेरा	प्रजाक्षय	गहयुद्ध	राजाओंमेंविग्रह	त्रिकोणतारा	प्रजानाश
ग्रहसयुति	अकाल	सूर्यचंद्रमंद पड़ें	देश क्षय	वनपशुगांव बसे	मनु. शून्य
श्वेतमण्डल	भय हो	कृष्ण मंडल	राज नाश	घर उल्लू बोले	गह शून्य
पीतमडल	रोग हो	धूम्र मंडल	बर्फ पत्थर पड़े	बांबी कबूतर	गहस्वा. ना.
नीलमडल	वर्षा हो	बिना ऋतु फल	अन्न नाश	घर में बसे	
रक्तमडल	युद्ध हो	सूखीभूमीगीली	बहुत वर्षा	सू. चं. बिम्ब	[illegible]भय
स्त्री वध हो	दुर्भिक्ष पड़े	विप्रबालक वध	दुर्भिक्ष पड़े	अधिक देख पड़े	[illegible]नाश
देवध्वंस	राजनाश	सर्वग्रास	सबवस्तु महंगी	भूमिकम्प	दुर्भिक्ष
ग्रहास्तोदय	भयंकर वर्षा	भौमादिक वक्र	दुर्भिक्ष पड़े	१३ दिन का पक्ष	प्रजानाश

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं-विधिश्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वारा:
तापम्:	सुकांति	मृति	श्री:	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग	फलम्
पुष्पं	०	मृत्तिका	०	दूर्वा	गोमय	०	दानम्

तैलाभ्यंगे वर्ज्यानि

रवौ भौम व्यतीपाते संक्रांतौ वैधृतावपि। पाठ्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु।

विशेष—यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातारोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

काक-स्पर्शादी फलम्—मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट वा इष्टकार्य नाश करता है। विशेषकर दक्षिण दिशा में कुयोग के समय इसके दोष को दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काक प्रतिमा मृण्मय पात्र में स्थापना कर उड़द, चावल, घी, मीठा, नैवेद्य देवे, ग्राम से दक्षिण की ओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध पुष्प, धूप, चतुर्मुख दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (या करादे)। घृतच्छाया पात्र दान और पञ्चगव्य से स्नान भी करे, यह विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते हैं।

काकविष्ठा विचार—शिरसि—मृत्यु: वा कष्टम्। स्कन्धयो:-रोग:। भुजयो:—प्रियार्ति:। उदरे-शोक:। गुह्ये-सन्तान-कष्टम्। जंघयो:—वाहनपीड़ा। पादयो:-प्रवास:।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ, या पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किये किसी के ऊपर काली बीठ कर देवे तो अशुभ जानो। यदि किसी हरे भरे या फूले फले या पीपल, बड़ आदि श्रेष्ठ पेड पर बैठा हुआ सफेद बीठ करदे तो शुभ जानो।

घर में उल्लू आदि—घर में उल्लू गिरे तो स्थान, मान, आयु की हानि हो। जंगली कबूतर घर में बसे-यह भी अशुभ है। शान्त्यर्थं हवन पूजन जप-दान आदि करना चाहिए।

अंकप्रश्न तथा फल वर्णन—प्रश्नकर्त्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलावें या लिखावें। उसमें बारह का भाग देकर पीछे यदि १।६।७ बचे तो देर से कार्यसिद्धि होवे। यदि ४।५।८।१० बचे तो कार्य नाश होवे। ११ बचे तो सिद्धि २ बचने से वृद्धि, ३।६।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि होवे यह फल कहे।

अथ स्वप्न-विचार

स्वप्न ७ प्रकार का होता है, प्रथम दृष्ट (दिन में देखे हुए को देखना), द्वितीय श्रुत (सुने हुए को सुनना), तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई वार्ता को स्वप्न में देखना), चतुर्थ प्रार्थित (जागृतावस्था में इच्छा की गई बात को देखना), पञ्चम कल्पित

विशा शूल ले जावे वाले । राहु योगिनी पूठ ॥
सम्मुख लेवे चन्द्रमा । लावे लक्ष्मी लूट ॥

यात्रा से सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाँव आगे उठाकर चलें। इसी तरह सवारी पर चढ़ें, कार्यसिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रा मुहूर्त—चि. ह. पु. मृ. पूर्वा. ३, अनु. श्र. ध. एषु भेषु अश्विनी शुभेऽह्नि चन्द्रताराहुल्ये सति शुभम्।

यात्रा निवृत्तौ प्रवेश मुहूर्त—म.रे.चि.अनु.रो..उ. ३, ह.अ. पुष्य, स्वा. श्र. ध. श. एषु भेषु च. बु. गु.शु.श. वारेषु १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु २।५।६।८।१०।११।१२ एषु लग्नेषु, १।४।७।१०।५।६ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८ शुद्धौ सत्यां वि. कृ. पू. ३ भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा आश्ले. नक्षत्राणि ।४।६।९।८।६।१२।८।३० तिथयः मं. म. वारौ १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मंगल का मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है। विशेष :—प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्।
नवमे जातु नो कुर्यादिनेवारे तिथावति ॥

घातचन्द्र, घातवार आदि का चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
मे.	क.	कु.	सि	मं.	मि.	ध.	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ	घातचन्द्र
र.	श.	च.	बु.	श.	श	वृ.	शु.	शु.	मं.	वृ.	शु.	घातवार
मं.	ह.	स्वा	अनु	मू.	श्र.	श	रे	भ.	रो.	आ.	श्लेषा	घातनक्षत्र
मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष	स्त्रीच.घात
का.	मार्ग	पौ.	माघ	फा.	चैत्र	वै.	ज्ये.	अ.	श्राव	भा.	आ.	घातमास
वि.	सु.	प.	धृ	प्री.	सु.	अ.गं.	वृद्धि	वैधृ.	गं.	व्या	व.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	६	६	८	९	८	१०	"
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	"

कार्य सिद्ध्यर्थ यात्रा में, युद्ध, विवाद, राजदर्शन, वाहन तथा रोगादि कार्यों में घाततिथि आदि घातचन्द्र देखें। तीर्थयात्रा, विवाह एवं उपनयन आदि शुभ कार्यों में घातचन्द्र देखने की आवश्यकता नहीं। "घात-तिथिर्घात-वारः घात-नक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञस्त्वन्य कर्मसु शोभनम् ॥" कार, स्कूटर, बाईसाइकिल आदि की खरीद घातचन्द्र में वर्जित है।

छिपकली कोढ़-किरली गिरने का फल

अग्रिम चक्रोक्त सर्वफल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का कहा है, वही फल सरट (गिरगिट) के चढ़ने का जाने। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

[illegible] छिपकली पल्ली (छिपकली कोढ़ किरली) पतन फलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ललाटे	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	[illegible]	[illegible]	[illegible]
अंसयोः	शुभम्	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
द. मणिबन्धे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभ	[illegible]	

पल्ली-पतने प्रशस्त वार-तिथ्यादि—[illegible] इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा [illegible] फल देती है। पु. अश्विनी. रो. मृ. पुन. [illegible] शुभ फलदायक है। अतोऽन्येषु भेषु निन्दाः।

पल्लीपाते कर्तव्यं कर्म—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर [illegible] सहित स्नान करें। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा दिन भद्रा आदि से दूषित दिन को पात सहित स्नान करें। ग्रह युक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा में पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप या तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छाया पात्र दान करना भी उत्तम है।

छिक्का फलम्—छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग अथवा—छींक सुधनी छल कर [illegible] करती घाम फल हीनी। छींकि पीठि की कुशल उचारे, बाई कारज सब सवारे ॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भारे। छींक दाहिनी द्रव्य बिनाशे ॥२॥ ऊँची छींक कहे जयकारी। नीची छींक होय भय कारी। अपनी छींक महा दुखदाई। ऐसे छींक विचारे भाई ॥३॥ कन्या विधवा मालन धोबिन रजस्वला वैश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्का—आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामाङ्गे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहा ॥ सन्ध्या वन्दन जपादि के आरम्भ में भी छिक्का शुभ है। एक नाक दो छींक काम बने सब ठीक ॥

यात्रा में प्रथम बार अपशकुन होवे तो ११ स्वास तक ठहर कर चले द्वितीय बार १६ स्वास तक ठहरे और तीसरी बार के अपशकुन में कदापि न जावे। यदि एक कोस के बाद शुभाशुभ शकुन हो तो उसका कुछ फल न समझें।

यात्रा में काल ज्ञान

शनौ	पूर्वे
शुक्रे	आग्नेय्यां
गुरौ	दक्षिणे
बुधे	नैर्ऋत्ये
भौमे	पश्चिमे
चन्द्रे	वायव्ये
रवौ	उत्तरे
सम्मुखेनष्टः पृष्ठे शुभः	

योगिनी-वास चक्रम्

पू०	अग्नि०	दक्षि०	नैर्ऋ०	पश्चिम	वाय०	उत्तर०	ईशा०दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०तिथि

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहने अशुभ होती है, पीछे और बाएं की शुभ, युद्ध यात्रा की बाएं ओर की ओर सम्मुख की विशेष त्याज्य है। समयशूल :—उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्ध रात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। गर्गगुरु अङ्गिरामूहूर्त गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे, गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषा काल: सप्तपञ्च (५७) अरुणोदय: । अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रात: शेषं सूर्योदयो भवेत्।

चन्द्र-वास चक्रम्

पूर्व	दक्षि.	पश्चि.	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके तात्कालिक यात्रायां घट्यात्मक चन्द्र-वास चक्रम्

पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	पू.	उ.	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	१०	१४	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास

जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषा लयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥इति॥ सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा— करण-भगणदोषं, वारसक्रान्ति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं, यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमा सम्मुखस्थः।

सर्वाङ्क सिद्धि योग:—शुक्लादि तिथि वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रखे क्रमश: ७।८।३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्रअंक आने से सौख्य, जय, लाभ हो। **विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है।** बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैऋत को मत जाओ हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे, क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है। नोट—श्वास खींचते हुए सवारी पर पैर रखें तो यात्रा सुरक्षित होती है।

वर्ण क्रमेण प्रस्थान विधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाये तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेउ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु घृत व रुपया और शूद्र खट्टे फल को अपने वस्त्र में बांध किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान से पूर्व रक्खे। अथवा सब लोग मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख दें। प्रस्थान (पैता) रखने के दिन से तीन दिन के अन्दर ही चल देना चाहिए।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तु—यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पाँच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करें। अशुभ मुहूर्त में यात्रा करने पर हानि का भय रहता है। यदि यात्रा का मुहूर्त शुभ न हो और यात्रा भी न टाली जा सकती हो तो चतुर्घटिका या होरा मुहूर्त देख यात्रा करें।

दिने चतुर्घटिका मुहूर्तम् / रात्रौ चतुर्घटिका मुहूर्तम्

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि	घटी	सू.	चं.	मं	बु.	गु.	शु.	श.
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३॥	शु.	च	का.	उ.	अ.	रो.	ला.
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७॥	अ.	रो	ला.	शु.	च.	का.	उ.
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	११।	च.	का	उ.	अ	रो.	ला.	शु.
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१५	रो.	ला	शु	च.	का.	उ.	अ.
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१८॥	का.	उ	अ	रो	ला.	शु.	च.
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	२२॥	ला.	शु.	च	का.	उ.	अ.	रो.
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	२६।	उ	अ	रो	ला.	शु.	च.	का.
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३०	शु.	च.	का	उ.	अ.	रो.	ला.

चतुर्घटिका मुहूर्त में चर लाभ अमृत शुभ हैं शेष अशुभ हैं।
सूचना—यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग घटी पल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभ शकुनानि—मृग बायते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी गृह मिले चलते प्रातःकाल। विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, शीशा, श्वेत वृषभ गोदधि सर्षप, कमल निर्मलवस्त्र, वाद्य, वैश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस दीप्ताग्नि, मत्स्य, रोदनरहित मृतक, मंगल गान, वेदध्वनि ससुतस्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्ध वाक्य, सजलपूर्णघट, पश्चाद्रिक्त घट यात्रा समय देखने शुभ हैं। **अशुभ शकुनानि**—वन्ध्या स्त्री, चर्म अस्थि, इन्धन, सन्यासी, रिक्त-घट भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जार-युद्ध, कुटुम्बकलह, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन छिक्का, दुष्ट-वाणी, दुखिया का रोना, भैंस पर सवार, नगा-मनुष्य, दक्षिण में गर्दभ शब्द, यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

रामदैवज्ञोक्त आवश्यक यात्रा मुहूर्त चक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौम्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्र्य	दारिद्र्य	मित्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	कष्ट	सौम्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौम्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट